समाज गौरव

चिरंजीलालजी बड़जाते

[जीवन-परिचय तथा संगी-साथियों की चिट्ठियाँ]

(दूसरा भाग)

सम्पादक

जमनालाल जैन

प्रकाशक :
मूलचन्द बड़जाते,
तिलक चौक,
वर्धा (महाराष्ट्र)

•

पहली बार : १,०००
जनवरी : १९६४
मूल्य : दो रुपया

•

मुद्रक :
शंकर राम,
शिव प्रेस,
प्रह्लादघाट, वाराणसी

सम्पादकीय

सन् १९६० में श्री चिरंजीलालजी के अभिनंदन-समारोह के अवसर पर एक पुस्तक प्रकाशित हुई थी। उसीका यह दूसरा भाग कुछ मित्रों की सलाह से प्रकाशित हो रहा है।

इस पुस्तक में चिरंजीलालजी का जीवन-परिचय तो है ही, सबसे महत्त्वपूर्ण सामग्री है चिट्ठियाँ। चिरजीलालजी का सम्बन्ध सारे देश मे फैला है और अनेक लोग अनेक कामो से उनको चिट्ठियाँ लिखते रहते है। स्व० राजेन्द्रबाबू से लगाकर मामूली लोगो तक की चिट्ठियाँ इसमें है। श्री रिषभदासजी राका के लगभग ८० पत्र है, जिनमें अधिकतर भारत जैन महामंडल की ही चर्चा है। ये दोनो मित्र सपने में भी भारत जैन महामंडल का ही चितन करते है। श्री प्रेमराजजी दोशी के पत्र अध्यात्म और वैराग्य-रस से भरे है, जिनमें त्याग और अनासक्ति की प्रेरणा है।

पत्र-व्यवहार जीवन को सही और वास्तविक रूप में पढने का बढिया माध्यम है। उसमें हृदय बोलता है। इसका यह मतलब नही कि पत्रो मे भावों को छिपाया नही जा सकता। कई बार आदमी शब्दो का ऐसा कपट-जाल फैलाता है कि हृदय पर शिष्टता, औपचारिकता, ऊपरी चमक हावी हो जाती है।

पत्रों को देखना, छाँटना और छापना तलवार की धार पर चलने जैसा काम है और जानते हुए भी यह मेरे सिर पडा। शायद चिरंजीलालजी भी मुझसे रुष्ट होगे। मै पत्र लिखनेवालों और चिरंजीलालजी से विनय-पूर्वक क्षमा चाहता हूँ।

चिरंजीलालजी अब ७० के करीब है। शरीर बेबस है और शक्ति क्षीण हो रही है। इस पुस्तक को वे मेरी विनम्र श्रद्धाजलि समझें।

उनके तीनों पुत्र बडे सुयोग्य और कर्मठ है। वे अपने पूज्य पिताजी के आदर्श गुणों को परिवार मे टिकाये रखेंगे, इसमें संदेह नही।

वाराणसी
मकर-संक्रान्ति
१५-१-'६४

अनुक्रम

परिशिष्ट

मंगलाचरण

णमो अरिहंताणं ।
णमो सिद्धाणं ।
णमो आइरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं ।
णमो लोए सव्व साहूणं ॥ १ ॥

एसो पंच-णमोक्कारो सव्व पावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं ॥ २ ॥

चत्तारि मंगलं । अरिहंता मंगलं ।
सिद्धा मंगलं । साहू मंगलं ।
केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं ॥ ३ ॥

चत्तारि लोगुत्तमा । अरिहंता लोगुत्तमा ।
सिद्धा लोगुत्तमा । साहू लोगुत्तमा ।
केवलि-पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा ॥ ४ ॥

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि । अरिहंते सरणं पव्वज्जामि ।
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि । साहू सरणं पव्वज्जामि ।
केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि ॥ ५ ॥*

* यह मंगलाचरण भारत जैन महामंडल के मुरार-अधिवेशन में सब ... के लिए एक मंगलाचरण के रूप में स्वीकृत हुआ है। सब ... उत्सवो मे इसीका पाठ होना चाहिए ।

महावीर-वचनामृत*

१. धर्म सर्वश्रेष्ठ मंगल है। (कौनसा धर्म?)—अहिंसा, संयम और तप। जिस मनुष्य का मन उक्त धर्म में सदा संलग्न रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं।

२ अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह—इन पाँच महाव्रतों को तथा ऐसे ही लघुव्रतों को स्वीकार करके बुद्धिमान् मनुष्य जिन भगवंत द्वारा उपदेशित धर्म का आचरण करे।

३. जो रात और दिन एक बार अतीत की ओर चले जाते हैं, वे फिर कभी वापस नहीं आते; जो मनुष्य अधर्म (पाप) करता है, उसके वे रात-दिन बिलकुल निष्फल हो जाते हैं।

४. जो रात और दिन एक बार अतीत की ओर चले जाते हैं, वे फिर कभी वापस नही आते, जो मनुष्य धर्म करता है, उसके वे रात-दिन सफल हो जाते है।

५. हे राजन्! जब कभी इन मनोहर काम-भोगों को छोडकर आप परलोक के यात्री बनेंगे, तब एक मात्र धर्म ही आपकी रक्षा करेगा। हे नरदेव! धर्म को छोड़कर जगत् में दूसरा कोई भी रक्षक नहीं है।

६. संसार में जितने भी त्रस और स्थावर प्राणी हैं, उन सबको जाने-अनजाने न खुद मारे और न दूसरों से मरवाये।

७. सब जीवों के साथ संयमपूर्वक व्यवहार रखना तथा परस्पर के व्यवहार में समभाव से पेश आना ही निपुण तेजस्वी अहिंसा है, वह सब सुखों को देनेवाली मानी गयी है।

---

* ये वचन पंडित बेचरदासजी दोशी द्वारा संपादित 'महावीर-वाणी' पुस्तक से संकलित किये गये है।

८. जो मनुष्य स्वयं प्राणियो की हिंसा करता है, दूसरों से हिंसा करवाता है और हिंसा करनेवालों का अनुमोदन करता है, वह संसार में अपने लिए वैर को ही बढ़ाता है।

९. संसार में प्रत्येक प्राणी के प्रति, फिर भले ही वह शत्रु हो या मित्र, समभाव रखना तथा जीवन पर्यन्त छोटी-मोटी सभी प्रकार की हिंसा का त्याग करना, वास्तव में बड़ा ही दुष्कर है।

१०. सदा अप्रमादी और सावधान रहकर, असत्य को त्यागकर, हितकारी सत्य वचन ही बोलना चाहिए। इस तरह सत्य बोलना बड़ा कठिन होता है।

११. अपने स्वार्थ-के लिए अथवा दूसरों के लिए, क्रोध से अथवा भय से—किसी भी प्रसंग पर दूसरों को पीड़ा पहुँचानेवाला असत्य वचन न तो स्वयं बोले, न दूसरों से बुलवाये।

१२ श्रेष्ठ मनुष्य पापकारी, भयकारी और दूसरों को दुःख पहुँचाने-वाली वाणी न बोले। श्रेष्ठ मानव इसी तरह क्रोध, लोभ, भय और हास्य में भी पापकारी वाणी न बोले। हँसते हुए भी पाप-वचन नहीं बोलना चाहिए।

१३. ब्रह्मचर्य-रत साधक को शीघ्र ही वासना-वर्धक गरिष्ठ भोजन-पान का सदा के लिए परित्याग कर देना चाहिए।

१४. ब्रह्मचर्य-रत स्थिरचित्त साधक को संयम-यात्रा के निर्वाह के लिए ही हमेशा धर्मानुकूल विधि से प्राप्त परिमित भोजन करना चाहिए। कैसी भी भूख क्यो न लगी हो, लालसावश अधिक मात्रा में कभी भी भोजन नहीं करना चाहिए।

१५. ज्ञानी पुरुष संयम-साधक उपकरणों के लेने और रखने मे कहीं भी किसी भी प्रकार का ममत्व नहीं रखते। और तो क्या, अपने शरीर तक पर भी ममता नहीं रखते।

१६ संग्रह करने की वृत्ति होना या थोडा-सा भी संग्रह करना, लोभ की झलक है। जो साधक मर्यादाविरुद्ध कुछ भी संग्रह करना चाहता है, वह गृहस्थ है—साधक नहीं है।

१७ अन्न आदि चारों ही प्रकार के आहार का रात्रि में सेवन नहीं करना चाहिए। दूसरे दिन के लिए भी रात्रि मे खाद्य-सामग्री का संग्रह करना निपिद्ध है। अरात्रिभोजन वास्तव मे बड़ा दुष्कर है।

१८ इन पाँच कारणो से मनुष्य सच्ची शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकता: अभिमान से, क्रोध से, प्रमाद से, कुष्ठ आदि रोग से और आलस्य से।

१६-२० इन आठ कारणों से मनुष्य शिक्षाशील कहलाता है: हर समय हँसनेवाला न हो, इद्रिय-निग्रही हो, मर्मभेदी वचन न बोलता हो, अस्थिराचारी न हो, रसलोलुप न हो, सत्य मे रत हो, क्रोधी न हो—शात हो।

२१. जो गुरु का आज्ञाकारी है, उनकी निगरानी मे रहता है, उनके इंगितों तथा आकारों को जानता है, वही शिष्य विनीत कहलाता है।

२२-२३. जो बार-बार क्रोध करता है, जिसका क्रोध शीघ्र ही शान्त नहीं होता, जो मित्रता रखनेवालों का भी तिरस्कार करता है, जो शास्त्र पढ़कर गर्व करता है, जो दूसरों के दोषों को ही उखाड़ता रहता है, जो अपने मित्रों पर भी क्रुद्ध हो जाता है, जो अपने प्यारे-से-प्यारे मित्र की भी पीठ-पीछे बुराई करता है, जो मनमाना बोल उठता है—बकवादी है, जो स्नेही-जनों के साथ भी द्रोह करता है, जो अहकारी है, लोभी है, इन्द्रियनिग्रही नहीं है, सबको अप्रिय है, वह अविनीत कहलाता है।

२४. जो शिष्य अभिमान, क्रोध, मद या प्रमाद के कारण गुरु की विनय-भक्ति नही करता, वह अभूति अर्थात् पतन को प्राप्त होता है। जैसे बाँस का फल बाँस के ही नाश के लिए होता है, वैसे ही अविनीत का ज्ञान-बल भी उसीका सर्वनाश करता है।

२५. जो प्राणी काम-वासनाओं से विमूढ़ हैं, वे भयंकर दुःख तथा वेदना भोगते हुए चिरकाल तक मनुष्येतर योनियों मे भटकते रहते हैं।

२६. सद्धर्म का श्रवण और उस पर श्रद्धा–दोनों प्राप्त कर लेने पर भी उनके अनुसार पुरुषार्थ करना तो और कठिन है। क्योंकि संसार मे बहुत-से लोग ऐसे हैं, जो सद्धर्म पर दृढ़ विश्वास रखते हुए भी उसे आचरण मे नहीं लाते।

२७. जो मनुष्य निष्कपट एवं सरल होता है, उसीकी आत्मा शुद्ध है। जिसकी आत्मा शुद्ध होती है, उसीके पास धर्म ठहर सकता है। घी से सींची हुई अग्नि जिस प्रकार पूर्ण प्रकाश को पाती है, उसी प्रकार सरल और शुद्ध साधक ही पूर्ण निर्वाण को प्राप्त होता है।

२८. जीवन असंस्कृत है–अर्थात् एक बार टूट जाने के बाद फिर नहीं जुडता, अतः एक क्षण भी प्रमाद न करो।

२९. ससारी मनुष्य अपने प्रिय कुटुम्बियों के लिए बुरे-से-बुरे पाप-कर्म कर डालता है, पर जब उनके दुष्फल भोगने का समय आता है, तब अकेला ही दुःख भोगता है, कोई भी भाई-बन्धु उसका दुःख बँटानेवाला—सहायता पहुँचानेवाला नहीं होता।

३०. संसार में जो कुछ धन, जन आदि पदार्थ हैं, उन सबको पाशरूप जानकर मुमुक्षु बड़ी सावधानी के साथ फूँक-फूँककर पाँव रखे। जब तक शरीर सशक्त है, तब तक उसका उपयोग अधिक-से-अधिक सयम-धर्म की साधना के लिए कर लेना चाहिए। बाद मे जब वह बिलकुल ही अशक्त हो जाय, तब बिना किसी मोह-ममता के मिट्टी के ढेले के समान उसका त्याग कर देना चाहिए।

३१. जैसे ओस की बूँद कुशा की नोक पर थोडी देर तक ही ठहरी रहती है, उसी तरह मनुष्यों का जीवन भी बहुत अल्प है–शीघ्र ही नष्ट हो जानेवाला है। इसलिए हे गौतम! क्षणमात्र भी प्रमाद न कर।

३२. अनेक प्रकार के विघ्नों से युक्त अत्यन्त अल्प आयुवाले इस मानव-जीवन में पूर्वसंचित कर्मों की धूल को पूरी तरह झटक दे। इसलिए हे गौतम ! क्षणमात्र भी प्रमाद न कर।

३३. दीर्घकाल के बाद भी प्राणियों को मनुष्य-जन्म का मिलना बड़ा दुर्लभ है, क्योंकि कृतकर्मों के विपाक अत्यन्त प्रगाढ़ होते है। हे गौतम ! क्षणमात्र भी प्रमाद न कर।

३४ तेरा शरीर दिन-प्रति-दिन जीर्ण होता जा रहा है, सिर के बाल श्वेत होने लगे है, शारीरिक और मानसिक सभी प्रकार का बल घटता जा रहा है। हे गौतम ! क्षणमात्र भी प्रमाद न कर।

३५ जैसे कमल शरत्काल के निर्मल जल को भी नहीं छूता, अलग—अलिप्त—रहता है, उसी प्रकार तू भी ससार से अपनी समस्त आसक्तियाँ दूर कर सब प्रकार के स्नेह-बन्धनों से रहित हो जा। हे गौतम ! क्षणमात्र भी प्रमाद न कर।

३६ प्रमाद को कर्म कहा है और अप्रमाद को अकर्म, अर्थात् जो प्रवृत्तियाँ प्रमाद-युक्त हैं, वे कर्म-बन्धन करनेवाली है और जो प्रवृत्तियाँ प्रमाद से रहित है, वे कर्म-बन्धन नहीं करतीं। प्रमाद के होने और न होने से ही मनुष्य क्रमशः मूर्ख और पडित कहलाता है।

३७. राग और द्वेष दोनों कर्म के बीज हैं, अतः कर्म का उत्पादक मोह ही माना गया है। कर्मसिद्धान्त के अनुभवी लोग कहते हैं कि संसार में जन्म-मरण का मूल कर्म है, और जन्म-मरण ही दु ख हैं।

३८ जिसे मोह नहीं है, उसका दुःख चला गया, जिसे तृष्णा नही है, उसका मोह चला गया, जिसे लोभ नहीं है, उसकी तृष्णा चली गयी, जिसके पास लोभ करने जैसा कुछ भी पदार्थ-सग्रह नहीं है, उसका लोभ चला गया।

३९. जो मूर्ख मनुष्य सुन्दर रूप के प्रति तीव्र आसक्ति रखता है, वह अकाल मे ही नष्ट हो जाता है। रागातुर व्यक्ति रूप-दर्शन की लालसा

में वैसे ही मृत्यु को प्राप्त होता है, जैसे दीये की ज्योति देखने की लालसा में पतंग।

४०. जो मनुष्य अपना हित चाहता है, वह पाप को बढ़ानेवाले क्रोध, मान, माया और लोभ—इन चार दोषों को सदा के लिए छोड़ दे।

४१. क्रोध प्रीति का नाश करता है, मान विनय का नाश करता है, माया मित्रता का नाश करती है और लोभ सभी सद्‌गुणों का नाश कर देता है।

४२. शान्ति से क्रोध को मारो, नम्रता से अभिमान को जीतो, सरलता से माया का नाश करो और सन्तोष से लोभ को काबू में लाओ।

४३. अनेक प्रकार के बहुमूल्य पदार्थों से परिपूर्ण यह समग्र विश्व भी यदि किसी एक मनुष्य को दे दिया जाय, तब भी वह सन्तुष्ट नहीं होगा। अहो! मनुष्य की यह तृष्णा बड़ी दुष्पूर है।

४४. ज्यों-ज्यों लाभ होता जाता है, त्यों-त्यो लोभ बढ़ता जाता है। देखो न, पहले केवल दो मासे सुवर्ण की आवश्यकता थी; पर बाद मे वह करोड़ों से भी पूरी न हो सकी।

४५. क्रोध से मनुष्य नीचे गिरता है, अभिमान से अधम गति पाता है, माया से सद्‌गति का नाश होता है और लोभ से इस लोक तथा परलोक मे महान् भय है।

४६. गीत सब विलापरूप हैं, नाट्य सब विडम्बनारूप है, आभरण सब भाररूप हैं। अधिक क्या, संसार के जो भी काम-भोग हैं, सब-के सब दुःखावह हैं।

४७. जो मनुष्य भोगासक्त है, वही कर्म-मल से लिप्त होता है; अभोगी लिप्त नहीं होता। भोगी संसार में परिभ्रमण किया करता है और अभोगी संसार-बन्धन से मुक्त हो जाता है।

४८. काल बड़ी द्रुत गति से चला जा रहा है, जीवन की एक-एक करके सभी रात्रियाँ बीतती जा रही हैं, फलस्वरूप काम-भोग चिरस्थायी

नहीं हैं। भोग-विलास के साधनों से रहित पुरुष को भोग वैसे ही छोड़ देते हैं, जैसे फल-रहित वृक्ष को पक्षी।

४९. मूर्ख मनुष्य धन, पशु और जातिवालों को अपना शरण मानता है और समझता है कि 'ये मेरे हैं' और 'मैं उनका हूँ', परन्तु इनमे से कोई भी आपत्तिकाल मे त्राण तथा शरण का देनेवाला नहीं।

५० जिस तरह सिंह हिरण को पकडकर ले जाता है, उसी तरह अत समय मे मृत्यु भी मनुष्य को उठा ले जाती है। उस समय माता, पिता, भाई आदि कोई भी दुःख में भागीदार नहीं होते—परलोक में साथ नहीं जाते।

५१. जैसे कछुआ आपत्ति से बचने के लिए अपने अंगों को सिकोड़ लेता है, उसी प्रकार पडितजन भी विषयों की ओर जाती हुई अपनी इन्द्रियों को आध्यात्मिक ज्ञान से सिकोड़कर रखें।

५२ सद्गुरु तथा अनुभवी वृद्धों की सेवा, मूर्खों के ससर्ग से दूर रहना, एकाग्र चित्त से सत्शास्त्रों का अभ्यास और उनके गम्भीर अर्थ का चिन्तन करना और चित्त में धृतिरूप अटल शान्ति टिकाये रखना, यह निःश्रेयस का मार्ग है।

५३ जो वीर दुर्जय सग्राम में लाखों योद्धाओं को जीतता है, यदि वह एकमात्र अपनी आत्मा को जीत ले, तो यह उसकी सर्वश्रेष्ठ विजय है।

५४. अपनी आत्मा के साथ ही युद्ध करना चाहिए, बाहरी स्थूल शत्रुओं के साथ युद्ध करने से क्या लाभ? आत्मा के द्वारा आत्मा को जीतनेवाला ही वास्तव मे पूर्ण सुखी होता है।

५५. सिर काटनेवाला शत्रु भी उतना अपकार नहीं करता, जितना दुराचरण में लगी हुई अपनी आत्मा। दयाशून्य दुराचारी को अपने दुराचरणों का पहले ध्यान नहीं आता, परन्तु जब वह मृत्यु के मुख में पहुँचता है, तब अपने सब दुराचरणों को याद कर-करके पछताता है।

५६. शरीर को नाव कहा है, जीव को नाविक कहा है और संसार को समुद्र बतलाया है। इसी संसार-समुद्र को महर्षि जन पार करते है।

५७. जो परोक्ष में किसीकी निन्दा नहीं करता, प्रत्यक्ष मे भी कलह-वर्द्धक बातें नहीं बकता, पीड़ा पहुँचानेवाली एवं भयकारी भाषा भी नहीं बोलता, वही पूज्य है।

५८. गुणों से साधु होता है और अगुणों से असाधु, अतः हे मुमुक्षु! सद्गुणों को ग्रहण कर और दुर्गुणों को छोड। जो साधक अपनी आत्मा द्वारा अपनी आत्मा के वास्तविक स्वरूप को पहचानकर राग और द्वेष दोनों मे समभाव रखता है, वही पूज्य है।

५९. समता से श्रमण होता है, ब्रह्मचर्य से ब्राह्मण होता है, मनन से—ज्ञान से—मुनि होता है और तप से तपस्वी बना जाता है।

६०. विरोधियों के दुर्वचनों की चोटे कानों मे पहुँचकर मर्मान्तक पीड़ा पैदा करती हैं; परंतु जो क्षमाशूर जितेंद्रिय पुरुष उन चोटों को अपना धर्म जानकर समभाव से सहन कर लेता है, वही पूज्य है।

६१. भन्ते! (साधक) कैसे चले? कैसे खड़ा हो? कैसे बैठे? कैसे सोये? कैसे भोजन करे? कैसे बोले? जिससे पापकर्म का बन्धन न हो।

६२. आयुष्मान! विवेक से चले, विवेक से खडा हो, विवेक से बैठे, विवेक से सोये, विवेक से भोजन करे और विवेक से ही बोले, तो पाप-कर्म का बंधन नहीं हो सकता।

६३. मैं समस्त जीवों से क्षमा माँगता हूँ और सब जीव मुझे भी क्षमा करें। सब जीवों के साथ मेरी मैत्री है, किसीके साथ मेरा वैर नहीं है।

श्री चिरंजीलालजी बड़जाते का
जीवन-परिचय

राजस्थान के जयपुर जिले में उग्रास गाँव है। वहाँ दिगम्बर जैन धर्मावलंबी खडेलवाल जाति के बड़जात्या गोत्र का परिवार था। चिरंजीलालजी उसी परिवार के हैं।

चिरंजीलालजी के पिता चार भाई थे : गौरीलालजी, मोहरीलालजी, गणेशीलालजी और विजयलालजी। मोहरीलालजी अपने काका रामलालजी के दत्तक चले गये थे। मोहरीलालजी के दो पुत्र और एक पुत्री हुई। एक चिरंजीलालजी और दूसरे कुन्दनमलजी। पुत्री का नाम रतनबाई था।

बचपन और पढ़ाई

चिरंजीलालजी का जन्म आश्विन बदी ८ वि० संवत् १९५२ को हुआ। गाँव का वातावरण और लगभग ७० वर्ष पहले की स्थिति! चिरजीलालजी को ७ वर्ष की उम्र में मोजमाबाद मामा के यहाँ पढ़ने के लिए भेज दिया गया। मौलवी साहब से उर्दू तथा जोशीजी से गिनती और बारहखड़ी सीखी! उस जमाने में अच्छे अक्षर लिखना और पहाडे याद कर लेना कामकाज के लिए काफी माना जाता था। जोशीजी को महीने में एक सेर आटा दिया जाता था! मौलवी साहब को भी विशेष कुछ नहीं दिया जाता था।

रोज सवेरे नहा-धोकर मंदिर जाने का रिवाज पुराना है। आजकल शहरों मे रहनेवाले तथा अधिक पढ़े-लिखे लोग मदिर आदि नहीं जाते या इस प्रकार की प्रवृत्ति को विशेष महत्त्व नहीं देते, लेकिन उस

जमाने मे मंदिर जाना, देवदर्शन करना महत्त्व की बात थी। उसमें समाज का संगठन भी था। शास्त्र-सभा, पूजा-अर्चा, व्रत-नियम रखने के सामूहिक उपक्रम होते थे। छोटे-छोटे बालक भी बडे उत्साह और भक्ति से मंदिर जाते थे। अनेक पद विनतियाँ और स्तोत्र उन्हें अपने-आप कंठस्थ हो जाते थे। व्रत-उपवास का अभ्यास भी होता था। चिरंजीलालजी भी नियम से मंदिर जाते थे। दशलक्षण व्रत के दिनों मे व्रत आदि रखते थे। नानाजी का स्वर्गवास हो जाने से चिरंजीलालजी ननिहाल नहीं रह सके और अपनी माँ के साथ दुर्ग चले आये, जहाँ उनके पिताजी नौकरी करते थे।

पहली नौकरी

अब तो चिरजीलालजी को भी कामधधे में लगना था। पिताजी ने श्री बागमल जुगराज की फर्म में रख दिया। वहाँ इनको कुछ व्यावहारिक ज्ञान मिला। कुछ समय बाद चिरंजीलालजी को भाटापारा के श्री हीरालालजी भट्टड के यहाँ रख दिया। हीरालालजी चिरंजीलालजी पर खूब प्यार करते थे, खूब सिखाते थे। यहाँ तक कि जब चिरंजीलालजी भोजन करते, तभी वे भोजन करते। लेकिन वे पीटते भी खूब थे। मन से वे पीटना नहीं चाहते थे, लेकिन पीटना उनका स्वभाव बन गया था। जरा-जरा-सी बात पर पीट देते थे।

एक बार की बात है कि भाटापारा मे गुरु गोपालदासजी बरैया आये हुए थे। उनका व्याख्यान होनेवाला था। चिरंजीलालजी व्याख्यान मे जाना चाहते थे। हीरालालजी ने कहा कि जाना हो, तो रोकड मिलाकर जाओ! रोकड़ मिलाने लगे, तो सौ रुपये घटने लगे। चिरंजीलालजी चिन्तित तो हुए, लेकिन व्याख्यान में जाने की धुन इतनी सवार थी कि रोकड मिल गयी कहकर व्याख्यान में चल दिये। व्याख्यान से लौटने पर सौ रुपये की चिन्ता सवार हो गयी। उन दिनों सौ रुपये बहुत बड़ी बात थी। बहुत सोचने पर भी इनके

ध्यान में नहीं आया कि सौ रुपये कहाँ गये, किसको दिये। आखिर भयभीत होकर इन्होंने तय किया कि कुएँ में गिर पड़ना चाहिए। कुएँ पर चले भी गये। सयोग से कुआँ पुलिसचौकी के पास था। पुलिसवाला चिरजीलालजी को पहचानता था। उसने खूब डाँटा। उन्होंने टट्टी लगने का बहाना कर दिया। वापस लौट आये।

सबेरा हुआ। सेठ हीरालालजी ने स्वयं रोकड़ मिलायी। चिरंजीलालजी ने सौ रुपये की बात कह दी। इतने में पड़ोस का दूकानदार सौ रुपये लेकर आया। देकर भूल गये थे। अब रोकड़ मिल गयी। पुलिसवाला भी आ गया। उसने सेठ से रात की बात कह दी। इस पर सेठ ने खूब पीटा। सारी बात सच-सच बता दी तो और पीटा।

बाद में जब गोपालदासजी बरैया रायपुर गये, तब चिरजीलालजी भी सेठजी को चाभी सौंपकर रायपुर चले गये। बरैयाजी के साथ उन दिनों ब्र० मोतीलालजी रहते थे। उनका वैराग्य पर बड़ा अच्छा भाषण हुआ। इनकी इच्छा भी ब्रह्मचारी बनने की हो गयी। उन दिनों चिरंजीलालजी के पिता भागलपुर रहते थे। पिताजी के एक मित्र ने तार करके मोहरीलालजी को बुलाया। इनकी माँ द्रुग में थी। पिताजी आये और फुसला-मनाकर बेटे को द्रुग ले गये। वहाँ माँ की ममता में ब्रह्मचारी बनना भूल गये। द्रुग में चिरंजीलालजी सेठ जुहारमल छोगालाल के यहाँ नौकरी करने लगे।

दत्तक जाना

द्रुग अनाज की अच्छी मंडी थी। वर्धा-हिंगणघाट के लोग अनाज खरीदने द्रुग की तरफ जाया करते थे। एक विवाह मे हिंगणघाट के सेठ निहालचदजी दोशी द्रुग गये। उन्होंने चिरजीलालजी को देखा। उन दिनों चिरजीलालजी पर तरुणाई का तेज था। बहुत सुंदर दीखते थे। गला भी मधुर था। निहालचदजी ने इनसे कहा कि "वर्धा में सेठ पन्नालालजी का स्वर्गवास हो गया है, बडजाते गोत्र के लड़के की जरूरत है। क्या तुम गोद जाओगे ?"

चिरंजीलालजी ने इनकार कर दिया। कहा कि "गोद तो नहीं जाऊँगा, अगर अच्छी नौकरी मिलती हो, तो जरूर जाऊँगा।"

निहालचन्दजी ने अपने पिता श्री चाँदमलजी से जिक्र किया। हिंगणघाट में ही स्व० पन्नालालजी के बहनोई हरकचन्दजी दोशी रहते थे। आखिर वर्धा-हिंगणघाटवालों के सलाह-मशविरे से पन्नालालजी के मुनीम दुग गये और चिरंजीलालजी को वर्धा ले गये। उस समय चिरंजीलालजी के पिता राजस्थान में थे। चिरंजीलालजी नौकरी के आश्वासन पर वर्धा चले गये।

चिरंजीलालजी की गाडी शाम को ५ बजे वर्धा पहुँची। स्टेशन पर दिगम्बर जैन बोर्डिङ्ग हाउस के १५ विद्यार्थी स्वागत के लिए उपस्थित थे। बोर्डिङ्ग के सेक्रेटरी श्री जयचन्द्रजी श्रावणे फूल-माला लिये हुए थे। उन्होंने चिरंजीलालजी को माला पहनायी। यह सब देखकर चिरंजीलालजी तो अवाक् और स्तब्ध रह गये। उनके लिए यह एकदम नयी और अनोखी बात थी।

स्टेशन से चिरंजीलालजी घर गये। घर पर दो विधवा महिलाएँ थीं। दोनों को चिरंजीलालजी ने प्रणाम किया। दोनों ने उनको आशीर्वाद दिया। मीठा भात का भोजन बना था। उस समय चिरंजीलालजी की उम्र १५ वर्ष थी। दोनों महिलाओं में एक स्व० जेठमलजी की पत्नी थीं और दूसरी स्व० पन्नालालजी की। रात को दिगंबर जैन मंदिर में शास्त्रसभा हुई। शास्त्रसभा के अन्त मे चिरंजीलालजी ने एक भजन गाया। लोग बहुत खुश हुए। रात को चिरंजीलालजी बड़ी माँ यानी स्व० जेठमलजी की पत्नी के पास सोये। बड़ी माँ की गोद मे सोकर चिरजीलालजी को ऐसी अनुभूति हुई कि उनकी जननी यही हैं और वे स्वर्ग में आ गये हैं। कुछ ऐसा प्रभाव पड़ा कि अब उन्होंने तय कर लिया कि वे नौकरी करें या दत्तक आयें, यहीं रहेंगे।

वर्धा की दूकान

वर्धा मे सेठ कुन्दनमल चंपालाल नाम की बड़ी प्रसिद्ध और सम्पन्न फर्म थी। कपडे का कारोबार था। कुन्दनमलजी और चंपालालजी भाई थे। तीसरे भाई मन्नालालजी अलग हो गये थे। कुन्दनमलजी और चपालालजी मिलकर काम करते थे। कुन्दनमलजी के पुत्र जेठमलजी थे और चपालालजी के पन्नालालजी। जब चिरजीलालजी वर्धा आये, तब जेठमलजी और पन्नालालजी दोनों भाइयों का स्वर्गवास हो चुका था। जेठमलजी के बाद छोटे भाई पन्नालालजी ने बड़ी शालीनता और बुद्धिमानी से घर तथा दूकान को सँभाला। अपनी भौजाई की श्रद्धा और आदरपूर्वक सार-सँभाल की। बडे सफल और कुशल व्यापारी थे। उदार तथा प्रभावशाली थे। आन के पक्के थे। लाखों रुपये कमाये थे। दिगबर जैन मदिर में नीचे एक वेदी बनवायी। प्रतिष्ठा करायी। खडेलवाल पचायत के लिए एक हजार रु० के बर्तन मँगा दिये। जैन बोर्डिङ्ग में २१०१) दिये। सरावगियो के मुखिया थे। अपने स्वर्गवास के समय वे एक मृत्युपत्र लिख गये और अपनी जायदाद तथा कारोबार की देखरेख के लिए सेठ जमनालालजी बजाज, चैनसुखजी छावड़ा, कृष्णरावजी काणे आदि को ट्रस्टी नियुक्त कर गये। यह भी लिखा कि एक लडका भौजाई के नाम पर और एक मेरे नाम पर दत्तक लिया जाय। दोनों यानी जिठानी-देवरानी राजी हों, तो एक ही लड़का लिया जा सकता है। दोनों ने एक-एक लड़का लेना ठीक समझा।

दूकान पर चिरजीलालजी को बहीखाते का काम दिया गया। उन्हें बहीखाता आता ही था। सेठ जमनालालजी के दर्शन के लिए उनको मुनीमलोग ले गये। चिरजीलालजी ने विनयपूर्वक प्रणाम किया। बात-चीत हुई। जमनालालजी ने कुछ जानकारी पूछी। लिखवाया भी। बहुत खुश हुए। सेठजी ने चिरजीलालजी के पिता को तार देकर बुलाया।

चिरंजीलालजी के पिताजी का आग्रह था कि चिरंजीलालजी की जो सगाई मोजमाबाद में हो गयी है, वह कायम रहे और वहीं शादी हो। सेठ जमनालालजी तथा चिरंजीलालजी की माँ के अलावा सब कुटुंबीजन चाहते थे कि यह आग्रह न रखा जाय। लेकिन चिरंजीलालजी के पिताजी के आग्रह के कारण वही सगाई कायम रही।

सूरजमलजी का दत्तक आना

चिरंजीलालजी की काकीजी की इच्छा थी कि उनके लिए भी लडका दत्तक लाया जाय। अतः बुलढाना के श्री दलसुखजी बड़जाते के पुत्र श्री सूरजमलजी को पन्नालालजी के नाम दत्तक लाया गया।

दोनों दत्तकविधान शानदार हुए। उत्सव मे बडे-बड़े धनी, अफसर, नेता आदि शरीक हुए।

विवाह

चिरंजीलालजी का विवाह मोजमाबाद में श्री सूवालालजी गोधा की कन्या प्रमिलादेवी के साथ हुआ। बरात वर्धा से गयी। लगभग १०० बराती थे। पाँच रोज बरात ठहरी। मोजमाबाद मे पॉच सौ रिश्तेदार शरीक हुए। २८ कनस्तर घी खर्च हुआ। बरात मेजवानी और स्वागत पाते-पाते १५ रोज मे वर्धा लौटी।

पत्नी की पढाई

उस जमाने में जब लड़कों की ही पढ़ाई नहीं होती थी, तब लड़कियों की पढ़ाई की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती। चिरजीलालजी की पत्नी अपढ थी, रहन-सहन का ढग भी नहीं था। बाद मे चिरंजीलालजी की काकीजी और उनकी पत्नी मे कुछ अनबन भी रहने लगी। चिरंजीलालजी के मन में भी असंतोप था। उन्होंने जमनालालजी बजाज के सामने सारी परिस्थिति रखी। उसी अर्से में स्व० माणिकचन्दजी जे० पी बंबई की पुत्री विदुषी मगनबाई वर्धा आयी थीं।

जमनालालजी का उनसे परिचय था। उन्होंने चिरजीलालजी की माँ को समझाया कि बहू को मगनबाई के पास बंबई पढ़ने के लिए भेज दो। पर वे इनकार हो गयीं। लेकिन जमनालालजी ने चतुराई से चिरंजीलालजी की पत्नी को बंबई भेज दिया। लेकिन जैसे ही उनकी माँ को यह बात मालूम हुई, खूब क्लेश हुआ। बहू दो महीने भी बबई नहीं रह पायी कि बुला लेना पड़ा। बबई जाने से रहन-सहन मे थोडा सुधार हुआ। वर्धा मे ही एक शिक्षिका रखकर पढ़ाने का प्रबंध किया गया। धीरे-धीरे सामाजिक वातावरण मे रहने और सुधारों के असर के कारण चिरंजीलालजी के विचारों के अनुकूल अपने को ढालने में उनकी पत्नी पीछे नहीं रहीं।

बटवारा

चिरजीलालजी और सूरजमलजी लगभग बारह बरस तक संयुक्त रहे, कारोबार सयुक्त चलता रहा। चिरजीलालजी का झुकाव धीरे-धीरे सार्वजनिक कार्यों, देशभक्ति तथा समाज-सुधार की ओर होने लगा। सेठ जमनालालजी के संपर्क के कारण यह भावना जोर पकड़ने लगी। नेताओं, सुधारकों तथा देशभक्तों से घनिष्ठता बढ़ने लगी। खर्च भी बढ़ने लगा। भाइयों मे खिंचाव-तनाव बढ़ने लगा। अनबन जैसी परिस्थिति हो गयी। ऐसी शंका भी होने लगी कि कहीं मामला कोर्ट-कचहरी तक न चला जाय। श्री चैनसुखदासजी छावड़ा ने प्रयत्न करके आपस में मामला निपटा दिया। पाँच पंच मुकर्रर हुए, जिनमें जमना-लालजी, जाजूजी, श्री मनोहर पत देशपांडे, काणे साहब आदि थे।

नुकसान और नौकरी

सार्वजनिक तथा राष्ट्रीय प्रवृत्तियों में भाग लेने के कारण चिरंजी-लालजी दूकान की तरफ ध्यान नहीं दे सके और हालत यह हो गयी कि दूकान ठप हो गयी। लोगों की तरफ लगभग सवा लाख रुपया

लेना था, वह डूब गया और इतना ही कर्ज सिर पर चढ़ गया।' लेनी रकम के लिए किसी पर नालिश नहीं की जा सकी। जमनालालजी को सारी परिस्थिति समझायी गयी। उन्हें काफी दुःख हुआ। कुटुंबियों ने चिरंजीलालजी को सलाह दी कि वे दिवालिया बन जायँ, लेकिन जमनालालजी ने ऐसा करने से रोका। उन्होंने सारी जायदाद बिकवा-कर और अपने पास से २५ हजार रुपये कर्ज देकर लोगों की पाई-पाई चुकायी। आगे चलकर चिरंजीलालजी ने ये रुपये चुका दिये।

ऐसी स्थिति में नौकरी के सिवा कोई चारा नहीं था। चिरंजी-लालजी पढ़ेलिखे नहीं थे, सम्पन्न घर में आये थे, राजसी ठाठ में रहे थे और दुनिया का दूसरा यानी अभावग्रस्त पहलू नहीं देखा था। मालिक रहे हुए व्यक्ति के लिए नौकरी करना कितना मुश्किल होता है, इसे भुक्तभोगी ही जान सकता है! लेकिन परिस्थिति के आगे आदमी विवश होता है। यह तो चिरञ्जीलालजी का परम भाग्य था कि इन्हें सेठ जमनालालजी बजाज जैसे आदर्श पुरुष का संपर्क सधा, उनकी सहानुभूति और आत्मीयता मिली। सन् १९२७ में नौकरी स्वीकार की और जमनालालजी का जो पल्ला पकड़ा सो अब तक उनका रोम-रोम जमनालालजी के उपकारों से प्लावित है। ३० वर्ष तक उनके यहाँ नौकरी की, लेकिन जमनालालजी ने भी इनकी शान को निबाहा, आदर दिया। चिरंजीलालजी ने भी जमनालालजी के चरणों मे अपने को संपूर्ण रूप से, हर क्षण के लिए समर्पित कर दिया। कभी उन्होंने अपनी वेतनवृद्धि के लिए नहीं कहा, कभी मदद के लिए नहीं कहा, कभी पुत्रों की छात्रवृत्ति के लिए नहीं कहा! जब भी चिरंजीलालजी को किसी तरह की आवश्यकता हुई, वह अपने-आप पूरी होती चली गयी। स्वयं चिरंजीलालजी को आश्चर्य होता है कि जमनालालजी ने उनमें ऐसी क्या बात देखी कि एक नाचीज को इतना बढ़ावा दिया! जमनालालजी वस्तुतः जीवनपारखी जौहरी थे।

चिरंजीलालजी जीवन में लगभग १५ कंपनियों के डाइरेक्टर, सेक्रेटरी, चेअरमैन आदि रहे, बडे-बडे मुकदमों मे काम किया। देश-भक्तों, व्यापारियों, त्यागियों से सबंध आया।

समाज-सेवा का बीजारोपण

समाज-सेवा का बीज चिरजीलालजी में बचपन से ही था। वह बीज जानदार था। १०-१२ वर्ष की उम्र में ही वे रोकड मिलाना छोड-कर गुरु गोपालदासजी का भाषण सुनने दौड पडे थे। फिर ब्रह्मचारी होना चाहते थे। समाज-सेवा के क्षेत्र में आने में सेठ जमनालालजी के सपर्क ने सिंचन का काम किया। उन्हींकी प्रेरणा से चिरजीलालजी सन् १९२३ में झडा-सत्याग्रह मे तथा १९३० में जगल-सत्याग्रह में जेल गये। हौसला बढ़ता गया, कदम आगे बढ़ते गये। जीवन मे ऐसे ही निमित्त मिलते गये कि चिरजीलालजो उत्तरोत्तर समाज-सेवा की ओर अग्रसर होते गये।

पं० उदयलालजी काशलीवाल की मित्रता

पं० उदयलालजी ने चिरजीलालजी का नाम सुन रखा था। पढे-लिखे भावनाशील व्यक्ति थे। उन्होंने एक पत्र चिरंजीलालजी को लिखा कि दुनिया में मेरा कोई नहीं है—न भाई, न पिता, न माता। आप मेरे भाई बन जायँ। पत्र का चिरजीलालजो पर कुछ ऐसा असर हुआ कि उन्होंने तुरंत लिख दिया कि मैं आपका भाई हूँ। दोनो में से किसीने एक-दूसरे को देखा नहीं, जाना नहीं, फिर भी कुछ ऐसी आतरिक प्रेरणा हुई कि भाई बन गये।

इस अर्से मे महात्मा भगवानदीनजी, अर्जुनलालजी सेठी से संपर्क बढ़ा। महात्माजी और सेठीजी वर्धा आये। हमेशा उनके संपर्क में रहने के कारण चिरजीलालजी समाज-सेवा और राजनीति की तरफ झुकते गये, हिम्मत बढ़ती गयी। एक जैन पोलिटिकल कान्फरेंस भी वर्धा में हुई। वह अपनें ढंग की अनूठी थी।

जाति-बहिष्कार

चिरंजीलालजी का मन तो खूब उछलता था, लेकिन उनकी माँ पुराने विचारों की थीं। चैनसुखदासजी छावड़ा, जो एक ट्रस्टी थे, स्थितिपालक थे। वे सरल और सेवाभावी तो थे, लेकिन चिरंजीलालजी उनसे बहुत डरते थे। इस कारण आगे बढ़ नहीं पाते थे। इसी बीच एक ऐसी घटना हो गयी कि उसने चिरंजीलालजी को 'बागी' बना दिया।

वर्धा मे महात्मा गाधीजी को मानपत्र देने का विचार हुआ। मानपत्र म्युनिसिपल कमेटी की ओर से देना था। गाधीजी ने शर्त रखी कि वे मानपत्र तब स्वीकार करेंगे, जब वर्धा के सब कुएँ हरिजनों के लिए खोल दिये जायें। म्युनिसिपल कमेटी ने उनकी यह शर्त मंजूर कर ली और ७० कुएँ हरिजनों के लिए खुले कर दिये। इसका एक समारोह जमनालालजी बजाज के बगीचे में हुआ। वहाँ हरिजन भाई आये और उन्होंने कुएँ से पानी निकाला। चिरंजीलालजी ने भी अपने हाथ से पानी खींचकर पीया। चिरंजीलालजी के इस कार्य को जैन समाज में 'अपराध' माना गया। पंचायत एक महीने तक चलती रही। सिवनी से चैनसुखदासजी छावड़ा को बुलाया गया। पंचायत ने फैसला सुनाया कि चिरंजीलालजी रामटेक की यात्रा करें, शातिनाथ भगवान् की पूजा करें, ११) भंडार में चढ़ायें और आगे से ऐसे कामों में भाग न ले। अगर चिरंजीलालजी को यह बात मंजूर हो तो उनसे सम्बन्ध रखा जाय, नहीं तो उनके साथ खान-पान बंद कर दिया जाय।

समाज के लोगों ने चिरंजीलालजी के साथ खानपान बन्द कर दिया। इतना ही नहीं, जो लोग बाहर से आते थे, उनको भी रोका जाता था और कहते थे कि ढेड़ (महार) के यहाँ मत जाइये। (महाराष्ट्र में 'ढेड़' नामक एक अस्पृश्य जाति होती है। उसीका नाम लेकर चिरंजीलालजी को उस कोटि का बताया जाता था। एक प्रकार से यह गाली ही थी।)

चिरजीलालजी पूरी तरह सुधारक तो बने नहीं थे, समाज और जाति का मोह भी उनमें था ही। बल्कि डर भी था। अगर वे चुप रह जाते, तो भी कुछ नहीं था। उन्होंने नागपुर प्रातीय खडेलवाल सभा मे अपील कर दी। उन दिनों इस सभा का संगठन मजबूत था। सभा ने चिरजीलालजी को निर्दोष सिद्ध कर दिया। इस पर भी वर्धा के लोगों ने जिद नहीं छोडी। उनकी माँ पर व्यंग्य कसते और जब वे मदिर जातीं, तो बहकाते भी। उनको भी लोग ढेडनी कहते। वर्धा के पचों ने चिरजीलालजी के विरुद्ध खडेलवाल महासभा में अपील की। यह अखिल भारतीय सगठन था। सभा का अधिवेशन मोजमाबाद मे था। चिरजीलालजी का भी वहाँ एक व्याख्यान हुआ। वहाँ २५ हजार जैनी एकत्र हुए थे। उन सबमें एक चिरजीलालजी ही खादीधारी तथा मूँछ-रहित थे। लोग चिरजीलालजी को देखते और इशारा करते, यह आया है राडों का विवाह करानेवाला! जब चिरजीलालजी मन्दिर गये, तब कुछ लडके दरवाजे पर गाना गा रहे थे। गाने की पक्ति इस प्रकार थी: 'वर्धा के भ्रष्टाचारी ने रांडों का ब्याह रचाया है।'

असल में चिरजीलालजी उस समय तक विधवा-विवाह के प्रचारक या समर्थक भी नहीं थे, लेकिन लोगों ने जबरदस्ती बना ही दिया। कभी-कभी ऐसी घटनाएँ भी बड़ी काम की साबित हो जाती हैं। बुराई में से भलाई निकलना इसीको कहते हैं! उनमे अपने-आप हिम्मत आ गयी।

खडेलवाल महासभा ने चिरजीलालजी के मामले के लिए एक कमेटी बैठायी। कमेटी ने फैसला सुनाया कि चिरंजीलालजी मंदिर में एक नारियल चढ़ा दे। चिरंजीलालजी ने फैसले को अस्वीकार कर दिया और यह बात समाचार-पत्रों में प्रकट कर दी।

माँ की व्यथा

चिरंजीलालजी की माँ पुराने विचारों की सात्विक महिला थीं। चिरंजीलालजी के सुधारप्रिय विचारों से तथा समाज के असहयोग और व्यंग्यों से वे दुःखी थी। एक बार १९३० के आसपास, वर्धा में ऐलक पन्नालालजी का चातुर्मास हुआ। दोपहर को शास्त्र-प्रवचन होता था। चिरंजीलालजी भी उसमें जाते थे। ऐलक महाराज हमेशा ताना मारते रहते कि सुधारक लोग अपनी माँ का व्याह क्यों नहीं करते! वे नाम तो नहीं लेते थे, लेकिन इशारा चिरंजीलालजी की ओर ही रहता। ऐसी स्थिति में एक भावनाशील धर्मभीरु माँ के दिल को कितनी चोट पहुँच सकती है, इसकी कल्पना की जा सकती है! चिरंजीलालजी कहते हैं कि जब वे सोने गये, तो उनकी माँ खूब रोयीं! अंत मे तो चिरंजीलालजी ने भी चतुराई और सेवा से ऐलक महाराज को खुश कर लिया और महाराज ने ऐसी बातें करना छोड़ दिया।

माँ के दुःखी हृदय को समाधान देने के लिए सेठ जमनालालजी ने श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर में संत एकनाथ, ज्ञानेश्वर, तुकाराम आदि के सबंध में व्याख्यान कराये, नाटक भी कराये। इनका चिरंजीलालजी की माँ पर काफी असर हुआ। सेठानी जानकीदेवी बजाज भी उनको समझाती रहती थीं। इससे चिरंजीलालजी की माँ में हिम्मत आयी।

समाज-सुधार की लगन

आज तो हम १९६३ में जी रहे हैं। देश स्वतंत्र हो गया है। दुनिया के और देशों के साथ हमारे सम्बन्ध बढ़ गये हैं, बढ़ते जा रहे है। देशों ही नहीं, चन्द्रलोक की दूरी भी क्षण-क्षण पर कम होती जा रही है। कानून भी हमारा साथ दे रहे हैं। लेकिन कल्पना कीजिये, चालीस-पचास वर्ष पहले की! वह ऐसा समय था, जब लोग अपनी जाति को ही सर्वश्रेष्ठ मानते थे और ऐसा नियम लेने मे गर्व का अनुभव

करते थे कि वे और किसी जाति के हाथ का नहीं खायेंगे । खंडेलवाल जैनी सैतवाल जैनी के हाथ का भोजन नहीं करते थे । क्या जमाना था वह ! एक तरफ तो मानवता की ऊँची-ऊँची बाते होती थीं, अध्यात्म की दुहाई दी जाती थी और दूसरी ओर व्यवहार मे जाति और परम्परा का इतना प्राबल्य था कि मानवता काँप उठती थी । क्रातदर्शी वही होता है, जो युग के आगे की, बुनियाद की सोचता है । चिरजी लालजी क्रातदर्शी तो नहीं थे, किन्तु इतना पहचान गये थे कि युग का निर्माण करनेवाले हो सही मार्ग पर है । युग के प्रवाह मे तो जनता बहती ही है । सयोग ऐसे मिलते गये कि चिरजीलालजी सुधारको के सपर्क में आते गये ।

वर्धा के पास देवली नामक एक कसबे का स्थान है । वहाँ पर श्री रुखबसावजी मेघल नामक सज्जन रहते थे । बडे परोपकारी और धर्मनिष्ठ थे । उन्होंने देवली मे एक जैन मेला भराया । उसमें उन्होंने घोषित कर दिया कि सब जैन एक है और सैतवाल जाति की बहनों को चौके मे प्रवेश करने दिया जाय । धीरे-धीरे पद्मावती परवार, बन्नोरे, बघेरवाल और गगेरवाल जातियों मे रोटी-बेटी व्यवहार शुरू हो गया । सैतवालों में भी ऐसे सबंध होने लगे । वर्धा में पहला अतर-जातीय विवाह श्री आर० पी० काले ने किया । बाद में तो आपने विधवा-विवाह ही किया । इस तरह अंतरजातीय विवाह का प्रचार बढ़ता गया । चिरंजीलालजी के भाई गुलाबचन्दजी बडजाते (सूरज-मलजी के सगे भाई) ने अपना दूसरा विवाह सैतवाल समाज मे किया । उस विवाह को लेकर समाज में पचायत बैठी थी । लेकिन कोई खास परिणाम नहीं निकला । फिर तो समाज में सैकडों' विवाह होने लगे । ज्यों-ज्यों शिक्षा का प्रचार होने लगा, गाधीजी की बातों का असर होने लगा, लोगों की हिम्मत खुलने लगी । और अब तो अंतरजातीय ही नहीं, अतरप्रातीय ही नहीं, अतरदेशीय विवाह तक होने लगे हैं ।

पर्दा-प्रथा के विषय में चिरंजीलालजी पर जमनालालजी और जानकीदेवीजी का बहुत असर रहा। सेठजी के यहाँ देशभर से अनेक विदुषी और कार्यकर्त्री बहनें आती रहती थीं। उनको देखकर चिरञ्जीलालजी के विचार पर्दाप्रथा के खिलाफ बनते गये। उन्होंने अपने घर में पर्दा हटाने का प्रयत्न किया, लेकिन शुरू मे सफलता नहीं मिली। उनकी माँ के स्वर्गवास के बाद चिरञ्जीलालजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री प्रतापचन्द्र का विवाह कोटा के स्व० मोतीलालजी पहाड्या की पुत्री सौ० रतनप्रभादेवी के साथ हुआ। विवाह मे पर्दा नही रखा गया। स्वामी सत्यभक्तजी ने सत्यसमाजी पद्धति से सप्तपदी करायी। दहेज बिलकुल नहीं लिया। मजे की बात यह थी कि बहू खुलेमुँह रहती थी और सास लंबा पर्दा रखती थी। सास-बहू दोनों जब मंदिर जातीं, तो जाति की बहू-बेटियाँ सास की तो तारीफ करतीं और बहू को चिढ़ातीं! यहाँ तक कहा जाता कि यह बहू है या बेटी! सास यानी प्रतापचन्द्र की माँ को इससे बडी तकलीफ होती थी।

लेकिन एक रोज चिरञ्जीलालजी की पत्नी का पर्दा अपने-आप खुल गया। घटना यह हुई कि एक दिन श्रद्धेय डॉ० राजेन्द्र प्रसादजी तथा अन्य कुछ लोगों को भोजन का निमंत्रण चिरञ्जालालजी ने दिया। जानकीदेवी भी निमंत्रण में थीं। उन्होंने सब अतिथियो से कहा कि इनके यहाँ कोई भोजन मत करो, क्योंकि चिरञ्जीलालजी की पत्नी पर्दा करती है। अब तो परिस्थिति ही बदल गयी। जानकीदेवी उठीं और चट से पर्दा सरका दिया। उस दिन से चिरञ्जीलालजी के घर मे से पर्दा समाप्त हो गया।

इसी तरह जब चिरञ्जीलालजी की माँ का स्वर्गवास हुआ, तब कुटुम्बियों ने मोसर करने पर काफी दबाव डाला, लेकिन चिरञ्जीलालजी ने मोसर नहीं किया।

तीनों पुत्रों के विवाह मे चिरञ्जीलालजी ने दहेज भी नहीं लिया। दहेजप्रथा को वे शुरू से बुरा मानते रहे हैं और सैकड़ों शादियाँ जो

करायीं वे भी बड़ी मितव्ययता से। चिरंजीलालजी का एक नाम शादी-लालजी भी मशहूर हो गया है।

वेदी-प्रतिष्ठा और परिषद् का अधिवेशन

एक बार चिरञ्जीलालजी की माँ बहुत बीमार हो गयीं। उन्होंने संकल्प किया कि अगर स्वस्थ हो गयी, तो जैन-मंदिर मे एक गुम्बद बनवाऊँगी। चिरजीलालजी पहले तो टालते रहे और माँ से 'हाँ' 'हाँ' भी कहते रहे। लेकिन जब चिरञ्जीलालजी ने समझ लिया कि अब अपना कारोबार कमजोर होता जा रहा है और न जाने कब क्या परिस्थिति हो जायगी, तब उन्होंने मंदिर में ऊपर की ओर एक वेदी बनवायी और उस पर गुम्बद बनवायी। वेदी-प्रतिष्ठा करायी। नागपुर के प० रामभाऊजी शास्त्री प्रतिष्ठाचार्य थे। इसी अवसर पर वर्धा में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का दूसरा अधिवेशन भी हुआ। अधिवेशन के सभापति अकोला के प्रसिद्ध वकील जयकुमारजी देवी-दासजी चवरे थे। श्री दौलतरामजी खजानची स्वागताध्यक्ष थे। यह अधिवेशन भी अपने ढंग का अनूठा था। बाहर से बैरि० चंपतरायजी, बाबू रतनलालजी वकील बिजनौर, ताराचन्दजी नवलचन्दजी जवेरी बम्बई, वालचन्दजी कोठारी पूना, अजितप्रसादजी लखनऊ आदि अनेक विद्वान्, वकील, नेता आये थे। प्रतिष्ठा आदि मे दस हजार रुपये खर्च हुए।

स्वागत आदि के प्रमुख सेठ जमनालालजी बजाज थे। अन्तिम दिन लगभग दो हजार लोगों का मिष्टान्न भोजन बच्छराज-भवन की विशाल छत पर हुआ। यह सारा उत्सव और व्यवस्था देखकर चिरञ्जी-लालजी की माँ को परम सतोष हुआ।

सिंघई पन्नालालजी की मैत्री

सिं० पन्नालालजी अमरावती रहते थे। आप चिरजीलालजी के अनन्य मित्रों तथा हितैषियों में थे। यों भी कहा जा सकता है कि जब

चिरंजीलालजी धर्म से विचलित होने लगे, तब आपही ने उन्हें बचाया। इस संबंध मे एक घटना का उल्लेख करना जरूरी है।

एक बार वर्धा में आचार्य शांतिसागर महाराज का मुनि-संघ आया। उस संघ में आठ-नौ मुनि तथा अनेक त्यागी, ब्रह्मचारी थे। उनमें मुनि चन्द्रसागरजी भी थे। चन्द्रसागरजी अपनी गृहस्थावस्था मे चिरंजीलालजी के मित्र भी रह चुके थे। वे नाँदगाँव (नासिक) के थे। वर्धा भी आ चुके थे। चिरञ्जीलालजी भी नाँदगाँव गये थे। अब वे मुनि थे। जब वे आहार के लिए निकलते थे, तब चिरञ्जीलालजी तथा उनकी माँ अपने घर के सामने पड़गाहने के लिए खड़े रहते थे। वे दो-एक चक्कर भी उनके घर तक लगाते थे। उनका आग्रह था कि जो शूद्र-जल का त्याग करेंगे, उन्हींके यहाँ आहार करेंगे। उनके साथ जो भक्त लोग रहते थे, वे गृहस्थों से ऐसा नियम लिवाते थे। चिरञ्जीलालजी ऐसा नियम लेना नहीं चाहते थे। उनकी माँ अवश्य कहती थीं कि मैं नियम लेने को राजी हूँ, मैं आहार दूँगी। लेकिन भक्त लोग कहते थे कि चिरञ्जीलालजी नियम लेंगे, तब ही आहार होगा। आखिर उनके यहाँ आहार नहीं हुआ।

इसी बीच एक ऐसी घटना हो गयी, जिसने आग में घी का काम किया। एक भाई ने एक परचा छपवाकर बाँटा, जिसमें लिखा था कि आचार्य शातिसागरजी अमुक जाति के हैं और उस जाति मे विधवा-विवाह प्रचलित है, तब वे उन लोगों के घर आहार क्यों नहीं ग्रहण करते, जिनके यहाँ विधवा-विवाह हुए हैं। वह परचा आचार्य महाराज के सामने जलाया गया। काफी उत्तेजना फैली।

जब सघ ने वर्धा से प्रस्थान किया, तब चिरञ्जीलालजी भी पवनार तक गये। वहाँ से लौटते समय उन्होंने चन्द्रसागरजी को वन्दन किया। उनका चरण-स्पर्श किया। इससे मुनिजी भडक उठे और कहा कि 'ऐ पापी, हाथ मत लगा!' इससे चिरञ्जीलालजी को काफी

आघात लगा। एक तो मुनि और फिर इतनी कटुता! धर्म तो पतितों के उद्धार के लिए है। इस समय चिरञ्जीलालजी एकदम विचलित हो उठे और धर्म को छोड देने की सोच बैठे!

बस, इसी समय डूबते को तिनके का सहारा मिल गया—पन्नालालजी सिघई ने उबार लिया। अपने स्नेह और मधुर व्यवहार से सिंघईजी ने चिरंजीलालजी को समझाया। यों उनका आपसी सम्पर्क सन् '१७ से ही था। वे पुराने विचार के थे, परन्तु सुधारकों से काफी प्रेम रखते थे। जब चिरञ्जीलालजी सन् '२३ और '३० में जेल गये, तब भी वे बीच-बीच में वर्धा आकर चिरञ्जीलालजी के कारोबार को देखते रहते थे।

एक समय चिरञ्जीलालजी को निमोनिया या टाइफाइड हो गया। पन्नालालजी को लगा कि इस बीमारी मे काफी खर्च हो गया होगा। उन्होंने किसीसे बिना कुछ कहे-सुने तकिये में तीन सौ रुपये के नोट रख दिये और स्टेशन चले गये। चिरञ्जीलालजी की माँ की नजर तकिये पर गयी और लगा कि इसमे नोट जैसा कुछ है। निकालकर देखा। माँ को यह निश्चय करने मे देर नहीं लगी कि हो न हो, यह नोट पन्नालालजी ने ही छोडे हैं। उनको स्टेशन से बुलाया गया और किसी तरह समझा-बुझाकर नोट वापस किये गये!

सन् १९४३-४४ में कलकत्ता में वीरशासन-जयन्ती उत्सव था। उसमे पन्नालालजी गये थे। वहाँ रात को चिरञ्जीलालजी और सिंघईजी एक ही कमरे में सोये! बातों-बातों में सिघईजी बोल पड़े, 'चिरञ्जीलाल, मुझे अपनी मृत्यु नजदीक दीखती है, पता नहीं कब चल बसूँ। तुमसे इतना ही अनुरोध है कि जैनधर्म को कभी मत भूलना। उसीसे तेरा कल्याण होगा।' क्या मालूम था कि वे घर भी नहीं लौट पायेंगे! लौटते हुए आरा में उनका स्वर्गवास हो गया!!

दौलतरामजी खजानची

वर्धा के जैन समाज के इतिहास में दौलतरामजी खजानची का स्थान बडा महत्त्वपूर्ण रहा है। वर्धा का समाज उनकी सद्भावना के लिए सदा ऋणी रहेगा।

खजानचीजी रायबहादुर बंसीलाल अबीरचन्द के खजानची थे। खजाने मे बैठते थे। उन दिनों बैंक नहीं थे। सरकारी खजाने का काम बसीलाल अबीरचंद के मार्फत चलता था। बहुत धनी फर्म थी। खजानचीजी समाज के भले के लिए हमेशा सोचते रहते थे। कुछ धर्म-भाइयों को कारोबार के लिए रकमें भी देते रहते थे। इसमे कुछ रकम फँस गयी। एक ओवरसियर की कुछ रकम बसीलाल अबीरचंद के यहाँ जमा थी। उसने बंसीलाल अबीरचन्द पर मुकदमा कर दिया। बसीलाल अबीरचन्द के एक मुनीम खजानचीजी को कामठी ले गये। वहाँ उनको धमकाया, पीटा और उनकी सारी जायदाद बिक्री करा ली। यह बिक्री बोगस (गैर-कानूनी) थी। जब चिरंजीलालजी को मालूम हुआ कि ऐसी पोकल बिक्री हुई है, तो उन्होंने खजानचीजी से कहा कि इसे रद्द कराया जा सकता है। लेकिन खजानचीजी सा० सरल और सात्त्विक वृत्ति के थे। उन्होंने ऐसा करने से इनकार कर दिया। रुपया तो उनका लगभग २० हजार ही फँसा था। लेकिन जायदाद लगभग ४० हजार की चली गयी। खजानची सा० ने जैन मन्दिर के लिए जैन बोर्डिंग के पीछे की एक जमीन भी साढ़े चार हजार में ली थी। समाज के पंचों ने उनको आश्वासन दिया था कि यह रकम चंदा करके दे दी जायगी, लेकिन पूरी रकम नहीं ही दी गयी। जैन भाइयों ने भी उनकी देनी रकम नहीं लौटायी। कामठी से लौटकर उन्होंने एक बैलगाड़ी ४५) मे चिरञ्जीलालजी को दे दी और वर्धा छोडकर चले गये। बाद मे पता ही नहीं चला कि उनका स्वर्गवास कैसे हुआ।

बन्सीलाल अबीरचन्द ने आश्वासन दिया था कि ओवरसियर की रकम चुकाने पर जो रकम बचेगी, वह लौटा दी जायगी। लेकिन अब तक यह प्रामाणिकता नही बरती गयी और आज तो इस बड़ी फर्म के भी पाँव उखड गये हैं। समय एक-सा नहीं रहता। अन्याय और पाप का पैसा सारी प्रतिष्ठा को खोखला कर डालता है और कीर्ति का वृक्ष इस तरह सूख जाता है कि आखिर वह जलावन के ही काम आता है। वर्धा के जैन समाज का कर्तव्य है कि खजानची सा० की स्मृति को हमेशा ताजा बनाये रखने के लिए कुछ कदम उठाये। बोर्डिंग हाउस के साथ उनका नाम अंकित रहे, ऐसी कोई स्मृति कायम करनी चाहिए।

ब्र० शीतलप्रसादजी का संपर्क

चिरंजीलालजी का ब्रह्मचारीजी से भी काफी सपर्क आया। वे लेखक, वक्ता, त्यागी और सुधारक थे। जैन समाज की उन्होंने बहुत सेवा की। सारे देश का भ्रमण किया। जब वे विधवा-विवाह के समर्थक हो गये, तब वर्धा आये और सनातन जैन समाज की स्थापना की। 'सनातन जैन' पत्र के प्रकाशन के लिए सेठ जमनालालजी ने उनको ५००) प्रदान किये। स्थितिपालकों ने उनका विरोध किया और सुधारकों ने स्वागत। सनातन जैन समाज के सचालन और सगठन में वर्धा के स्व० हीरासावजी डोमे का बड़ा हाथ था।

स्वामी सत्यभक्तजी

सन् १९३६ के लगभग स्वामी सत्यभक्तजी वर्धा आये। पहले वे समाज में प० दरबारीलालजी के नाम से प्रसिद्ध थे। उन दिनों अजमेर से निकलनेवाले 'जैनजगत्' के आप सपादक थे और समाज-सुधार की दृष्टि से यह पत्र क्रातिकारी था। चिरंजीलालजी के सुधारक विचारों का समर्थन इसने खूब किया। चिरंजीलालजी के स्नेह के कारण ही सत्यभक्तजी वर्धा में बसे। सेठ जमनालालजी का भी उनको काफी

सहयोग रहा है। वर्धा से एक मील की दूरी पर बोरगाँव में उनका सत्याश्रम है, जहाँ सर्वधर्म समभाव की उपासना होती है।

गुलाबचन्दजी बड़जाते

वर्धा मे श्री लक्ष्मीचंदजी गुलाबचंदजी बडजाते की कपडे की एक दूकान थी। गुलाबचंदजी चिरंजीलालजी के गोत्र-भाई थे। जब चिरंजीलालजी का जाति-बहिष्कार हुआ, तब यही एक ऐसे हिम्मत-वाले थे जिन्होंने समाज और कुटुम्ब की परवाह न करके चिरंजीलालजी का साथ दिया। यहाँ तक कि जब गुलाबचंदजी की द्वितीय कन्या चंदाबाई का विवाह हुआ, तब समाज ने इतना विरोध किया कि उनको वर्धा में नाई-धोबी तक का सहयोग नहीं मिला। फिर भी उन्होंने चिरंजीलालजी का साथ नहीं छोड़ा और अपनी ससुराल, वाशिम से काफी लोग बुला लिये।

श्री गुलाबचंदजी के तीन पुत्र हैं। उनमें से वर्धा मे कनिष्ठ पुत्र श्री मूलचंदजी रहते हैं। मूलचंदजी सामाजिक कार्यों में काफी दिलचस्पी रखते हैं और जो भी उनके पास पहुँचता है, उसे यथासंभव पूरा सहयोग देते हैं। सरल प्रकृति के होनहार युवक हैं। चिरञ्जीलालजी की बैठक का एक स्थान श्री मूलचन्दजी का घर भी है। श्री मूलचन्दजी से समाज को काफी आशाएँ हैं। श्री चिरञ्जीलालजी के तीनों ट्रस्टों के वे ट्रस्टी भी हैं।

पारिवारिक स्थिति

श्री चिरञ्जीलालजी सम्पन्न परिवार मे आये। समाज और राजनीति मे पड़े। सन् १९२७ मे कारोबार ठप हो गया, उधारी डूब गयी। लेना-पावना बही-खातों में ही रह गया। देना पाई-पाई चुकाना पड़ा और आर्थिक स्थिति बिगड़ गयी। सामान्य भाषा में वे 'गरीब' हो गये। लेकिन यह 'गरीबी' ही चिरञ्जीलालजी के लिए वरदान साबित हुई। अगर वे गरीब न होते, तो आज उनके पास वह 'पूँजी'

कहाँ होती, जो समाज-सेवा के फलस्वरूप उनकी रग-रग में व्याप्त है। उस आर्थिक गरीबी ने उनको सेवा-'सम्पन्न' बना दिया।

चिरञ्जीलालजी ने अपनी संपत्ति और जायदाद का बँटवारा बहुत पहले ही कर दिया है। आपके तीन पुत्र हैं : श्री प्रतापचन्द्र, श्री विजयकुमार और श्री किशोरकुमार। किशोरकुमार एम० कॉम० है और हिन्दी में 'साहित्यभूषण' हैं। तीनों को संपत्ति का उचित भाग समान रूप से दे दिया है और वे अपनी स्थिति मे सुखी और प्रसन्न हैं।

दो पुत्रियाँ थीं, जिनमे बडी पुत्री सौ० राजमती का देहात विवाह के कुछ वर्षों बाद हो गया। स्व० राजमती राष्ट्रीय विचार की थीं। सन् '४२ के आदोलन में जेल भी गयी थी। उसका विवाह उदयपुर के श्री अनूपलालजी अजमेरा वकील के साथ हुआ था। वह अपने पीछे दो कन्याएँ छोड गयी है। बहुत ही सहिष्णु, समझदार थी। खादी के वस्त्र ही पहनती थी।

दूसरी पुत्री सौ० शाताकुमारी का विवाह कोटा के श्री नरोत्तमलालजी वकील के साथ हुआ है।

चिरञ्जीलालजी की धर्मपत्नी सौ० प्रमिलादेवी बडजाते पढा-लिखी तो नहीं हैं, लेकिन चिरञ्जीलालजी के साथ रहते-रहते अनुभव में काफी प्रौढ़ हैं। आपके नाम पर एक ट्रस्ट भी है। उसकी आय से गरीब विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति दी जाती है। समाचार पत्र आते हैं। एकाध छोटी-मोटी पुस्तिका भी प्रकाशित की जा सकती है।

अभी-अभी श्री प्रमिलादेवीजी ने रामनगर (वर्धा) स्थित जैन मन्दिर मे धर्मशाला जैसा एक हॉल बनवाया है, जिसमे ५०००) खर्च हुआ है। इसी तरह महारोगी सेवा-मंडल तथा जैन विद्यार्थी-गृह को एक-एक हजार रुपया दिया है। जब साहू शातिप्रसादजी जैन को मालूम हुआ कि उनके मामले के निपटारे की खुशी में यह धर्मशाला बनी है, तो उन्होंने चिरञ्जीलालजी को छह हजार रुपये भेज दिये। लेकिन चिरञ्जीलालजी ने यह रकम लौटा दी।

प्रमिलादेवीजी को संस्कारों के कारण बहुत बरदाश्त करना पड़ा है। भारतीय महिला होने के कारण वे सब कुछ सहन करती रही हैं। यह उनकी कमजोरी नहीं, साहस ही है। पैसे का लोभ तो खैर बडों-बड़ों से नहीं छूटता, सो हम कैसे कहें कि प्रमिलादेवीजी भी इससे बच पायी है। कभी-कभी चिरञ्जीलालजी विनोद में उनसे कहते हैं कि 'सुनो प्रताप की माँ, मैं लाख रुपये की बात कहता हूँ।' तो वे उतने ही सहजभाव से कह देती हैं, 'मुझे लाख रुपये की बात नही सुननी, आप उस बात के बदले हजार रुपये ही दे दीजिये।' तरह इन दोनों का सात्विक विनोद चलता रहता है।

श्री चिरंजीलालजी के नीचे लिखे पारिवारिक ट्रस्ट हैं :

१. प्रमिलादेवी बडजाते जैन सेवा ट्रस्ट– २०,०००)। यह ट्रस्ट १९४४ में बना। इस ट्रस्ट द्वारा गरीब छात्रों को छात्रवृत्ति दी जाती है। रामनगर (वर्धा) मे रात्रि-पाठशाल चलती है।

२. सुगणाबाई बडजाते चेरिटेबल ट्रस्ट– २०,०००)। यह ट्रस्ट चिरञ्जीलालजी की माताजी के नाम पर है। सन् '४९ मे बना। इससे गंगापुर में जमनालाल गोनस्ल सुधार केन्द्र चलता है। ट्रस्ट की आमदनी ७००) वार्षिक है, जो गोसेवा में खर्च होती है।

३. चिरञ्जीलाल बड़जाते ट्रस्ट– ४०,०००)। सन् '४९ मे बना है। यह ट्रस्ट पारिवारिक है। इस ट्रस्ट की आमदनी मे से लगभग १२००) वार्षिक गरीब छात्रों को छात्रवृत्ति के रूप में तथा फुटकर सहायता दी जाती है।

इन तीनों ट्रस्टों में अधिकतर जमीन ही है।

चिरञ्जीलालजी के पास अब लगभग १३ हजार रु० के शेयर बचे हैं। इनकी आमदनी से ही उनका खर्च चलता है।

अपने तथा परिवार के सम्बन्ध मे एक बार (३१. १०. '५१ को) चिरञ्जीलालजी ने अपने स्मरण रजिस्टर में नीचे लिखी बातें लिखीं, जो बड़े महत्त्व की हैं :

"एक अप्रैल के बाद अच्छे मुहूर्त में सेठ को अपने विचार तथा त्याग-पत्र देकर मुक्त होने में भला है।

प्रभु वह शक्ति दे, जिससे अन्तिम जीवन सुख-शान्तिपूर्वक बीते। किसी प्रकार का भी अहंकार या घमंड या धनसग्रह की बुद्धि या कुटुम्बीजनों मे मोह न रहे और अन्तिम जीवन सात्त्विकता से बीते, ऐसी प्रभु से अर्ज है। नीचे मुजब कार्यक्रम रोज नियमित हो :

(१) स्वाध्याय, (२) देव-दर्शन, (३) दान, (४) तप, (५) संयम (६) मन की शांति व प्रसन्नता।

उपर्युक्त बातों को जीवन में बने वहाँ तक कुछ-न-कुछ उतारने का प्रयत्न करते रहना।

जीवन में जितनी भी झझटे कम हों और जवाबदारी कम हो, ऐसी कोशिश करना, जिससे जीवन सुख-शाति से बीते।

तीनों लड़कों से मेरी अर्ज है कि सेठ जमनालालाजी के फर्म के काम के लिए कभी भी श्री कमलनयनजी या रामकृष्णजी कोई काम कहे, वह नटना नहीं। तन, मन, धन से इस खानदान की—जो भी आप लोगों से बने, सेवा करनी चाहिए। सब एक जूट से (मिलजुलकर) रहें।

तीनों भाइयों के अलग-अलग रहते हुए भी प्रेम में फर्क न आये और एक-दूसरे के दुख-दर्द मे काम आवे।

निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना :

(१) कर्जा नहीं लेना।

(२) शराकत (साझेदारी) मे व्यापार नहीं करना।

(३) सट्टा नहीं करना।

(४) आमद से ज्यादा खर्च नहीं करना।

(५) कोर्ट-कचहरी से बचना।

(६) कानून के खिलाफ कोई कार्य नहीं करना।

प्रत्येक संस्था से आपका थोडा-बहुत संबंध रहा है और अनेक तरह से सेवा करते ही रहते हैं, पर कुछ खास संस्थाओं का नामोल्लेख करना उपयुक्त होगा :

(१) दि० जैन बोर्डिंग—इस बोर्डिंग हाउस का प्रारम्भ स्व० माणिकचद्रजी जे० पी० बबई के हाथों हुआ था। चिरंजीलालजी के काका श्री पन्नालालजी ने रु० २१०१) देना स्वीकार किया था। यह रकम दी गयी। लगभग १२ वर्ष तक चिरञ्जीलालजी ने इस बोर्डिङ्ग की तन-मन-धन से सेवा की। हर साल वार्षिकोत्सव कराते रहे। उत्सव के लिए समय-समय पर प्रतिष्ठित लोग आते रहे। श्री पूर्णसावजी सिवनी, गोपालदासजी बरैया, धन्नालालजी कासलीवाल, नत्थूसावजी एलिचपुर, नवलचन्द हीराचन्द बम्बई, चुन्नीलाल हेमचन्द बम्बई जैसे लोग उत्सवों पर पधारे।

(२) मारवाड़ी सेवा समाज—इसके चिरञ्जीलालजी दो वर्ष तक सभापति रहे और दस साल तक समासद। इस सस्था की ओर से एक धर्मार्थ औषधालय चलता था। इसकी ओर से बाढ़-पीडितों की सहायता भी हुई।

(३) म्युनिसिपल मेंबरी—लगभग १२ वर्ष तक वर्धा की म्युनिसिपल कमेटी के मेंवर रहे। इसी अर्से मे हरिजनों के लिए कुएँ खोले गये।

(४) मारवाड़ी शिक्षा-मंडल—यह वर्धा की एक ख्यातिप्राप्त संस्था है। स्व० सेठ जमनालालजी ने यह संस्था स्थापित की थी। लगभग १२ वर्ष तक चिरञ्जीलालजी इसके मंत्री रहे। अभी भी कार्य-कारिणी के सदस्य हैं।

(५) जमनालाल सेवा-ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी और श्री लक्ष्मी-नारायण देवस्थान के ट्रस्टी हैं।

(६) चिरञ्जीलालजी के पास एक खासा पुस्तकालय भी था। वे चाहते थे कि यह पुस्तकालय सुचारुरूप से चले। किताबों की सूची

ढंग से रहें। उन्होंने इसके लिए वहुत कोशिश भी की। उन्होंने अपना पुस्तकालय कारंजा के जैन गुरुकुल को तथा बाहुबली आश्रम को प्रदान कर दिया। कारंजा आश्रम को १००१) नकद भी दिये। बाहुबली जैन गुरुकुल को ५०१) दिये। कुछ किताबें अन्य पुस्तकालयों में भी दी गयीं।

(७) अपनी माता के नाम पर आपने एक ग्रंथमाला भी भारत जैन महामंडल में शुरू की। इस 'सुगणाबाई बडजाते ग्रंथमाला' में आपने ४०००) के लगभग लगाया। उसके अंतर्गत नीचे लिखी किताबें प्रकाशित हुईं—

१. मणिभद्र, २. महावीर वाणी (चार बार), ३. महावीर का जीवन-दर्शन ४. जो सन्तों ने कहा, ५. आँखों देखे आन्दोलन।

महावीर वाणी से तो चिरंजीलालजी इतने प्रभावित हैं कि इसका केवल हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करके बाँटते रहते हैं।

(८) चंदेरिया (चित्तौड) में मुनि जिनविजयजी ने एक आश्रम स्थापित किया है। आश्रम के कुएँ के लिए आपने [illegible] प्रदान किये हैं।

रोज ब रोज जरूरतमंद लोगों की सहायता करते रहते हैं, उसका तो कोई हिसाब ही नहीं है। शादी-ब्याह के निमित्त जो खर्च करते रहते है, वह अलग ही।

भारत जैन महामंडल के उद्धारक

सन् १९३७ की बात होगी। बैरिस्टर जुगमदरलालजी ने चिरञ्जीलालजी से कहा कि 'यह उनका बोया हुआ पोधा है। किसी दिन इसकी उपयोगिता को समाज समझेगा। आप इसे सँभालिये।' और चिरञ्जीलालजी थे कि भारत जैन महामडल के पौधे को बच्चे की तरह उठा लाये। सभा-सम्मेलनों का चस्का था ही। लेकिन यह तो धरोहर थी। एक ओर तो समाज में यह वातावरण था कि जातियाँ भी अपनी अहंता और कट्टरता में आकठ डूबी हुई थीं, इधर यह महामडल था कि सब सप्रदायों में एकता की घोषणा करता था। कौन इसे सहायता देता, किसको जरूरत थी? लेकिन चिरञ्जीलालजी थे कि हताश नहीं हुए और जहाँ भी मडप का संकेत मिला, महामडल का मच तैयार कर लेते थे। किसीके यहाँ शादी हो, दत्तकविधान हो, मडल का जलसा कर ही लेते थे। और तो और मित्रगण भी मजाक उडाते रहते कि क्यों इस तरह का तमाशा करते रहते है? ऐसी सस्था को दफना ही क्यों नहीं देते? चिरजीलालजी थे कि सुन लेते और मन ही मन दुःख मानकर चुप हो जाते। वे जानते थे कि जो आज ताना कसते हैं, वे एक दिन इसमें रस लेंगे और इसकी उपयोगिता को पहचानेंगे। सतोष का फल मीठा होता है। धीरज रखा, तो आज महामंडल ही महामंडल दिखाई दे रहा है।

यों कहा तो जा सकता है कि महामडल ने विधायक काम क्या किया? लेकिन गिनाये नहीं जा सकते, ऐसे कितने ही अप्रत्यक्ष काम महामडल से हुए हैं। रात-दिन चिरजीलालजी देश का दौरा करते रहते है। लोगों के, कार्यकर्ताओं के संपर्क मे आते रहते हैं और उनमे समाज-सुधार तथा समाज-सेवा की भावना का सचार करते रहते हैं।

भगवान् निराकार होते हैं, लेकिन कितने करोड प्राणी उस अप्रत्यक्ष की प्रेरणा से जीवन में कृतकार्य होते हैं। महामंडल का कार्य गणित के अंकों से नहीं, भावना की गहराई से मापा जा सकता है। जब मौज में या लहर में आते हैं, तो चिरञ्जीलालजी एक के बाद एक, पचीसों काम ऐसे गिना जाते हैं कि सुनकर महामंडल की महत्ता स्वीकार कर लेनी पडती है! सम्पर्क और विचार-जाग्रति से बहुत काम अपने-आप हो जाते है।

आज चिरंजीलालजी का रोम-रोम महामडल का गीत गाता है। वे स्वय महामंडलमय हो गये है।

व्यक्तित्व

चिरञ्जीलालजी का व्यक्तित्व 'भानुमती की पिटारी' है। वे बहुत भोले है, तो बहुत चतुर भी। बहुत अधीर हैं, तो उतने ही दृढ़ भी। सामान्य व्यवहार मे सहिष्णु तनिक नहीं हैं, लेकिन जितना उन्होंने सहन किया है, वह मामूली बात नहीं है।

एक बार भी वे जिस व्यक्ति के सम्पर्क में आ जाते हैं, उसके साथ सम्बन्ध निभाने मे चाहे जितनी हानि उठानी पडे, तैयार रहते है। समाज के होनहार युवक युवतियों के विवाह कराने का तो उन्हें व्यसन ही है। साथियों के बीच वे 'शादीलाल' नाम से विख्यात है। एक बार जिसकी शादी करा दी, उसके वे पिता बन ही गये।

एक बार एक भाई उनके पास आया। कहने लगा 'सेठजी, मेरी पत्नी बीमार है। कुछ रकम दीजिये।' चिरञ्जीलालजी बोले, 'भाई, मैं आजकल कोई कामकाज नहीं करता, कर्ज नहीं देता।' फिर भी उसने आग्रह किया, तो पचास रुपये दे दिये। मैं देखता रह गया। मैंने उनसे बाद मे कहा कि 'आप इतने ढीले कैसे हो गये? 'ना' कहने की हिम्मत तो आपको दिखानी ही चाहिए। इस तरह कैसे चलेगा।' तो बोले, 'भाई, तुम्हारा कहना ठीक है। समझता हूँ। लेकिन क्या करूँ! किसीकी तकलीफ देखी नहीं जाती। दूसरी

बात यह कि एक बार मैं उनके यहाँ भोजन कर चुका हूँ।' यह सुनकर तो मेरी आँखें खुल गयीं! इनके व्यक्तित्व का रहस्य ऐसी सैकड़ों घटनाओं में समाया है। घटनाओं के तो वे भण्डार हैं।

मेरे हितचिंतक

मेरा और चिरजीलालजी का इधर पच्चीस वर्ष से निकट संपर्क रहा है। यों हमारे तथा चिरञ्जीलालजी के परिवार मे रिश्तेदारी तो है ही और पिताजी उनके कारोबार के मुनीम भी बरसों रह चुके थे। इसलिए मेरे लिए चिरञ्जीलालजी का परिचय नयी बात नहीं है। उतने बचपन से मै उनको जानता हूँ, जहाँ तक स्मृति पहुँचती है। काम का पहला पाठ मैंने उन्हींसे सीखा। एक समय था, जब पिताजी और इनमे जातिगत विचारों तथा पक्षपातों के कारण मतभेद भी थे। कभी-कभी कुछ बातें इन्हींसे सुनने को भी मिलीं। क्या वह जमाना था, क्या वह जातीयता थी कि अपने भी पराये लगते थे! लेकिन मुझे इन्होंने बड़ी आत्मीयता से अपनाया। चिरञ्जीलालजी के विचारों को मैं निकट से पढ़ता रहा। इनके पत्र-व्यवहार को देखता था, अतिथि-सत्कार को देखता था। सभा-सम्मेलन में शरीक होता था। इन सबका यह असर हुआ कि एक अत्यल्प पढ़ा हुआ लड़का विकास की सीढ़ियो पर चढ़ने लगा। उसमें आत्मविश्वास पैदा होने लगा। नहीं कह सकता कि अगर चिरंजीलालजी का वरदहस्त मुझपर न होता, तो मेरी क्या स्थिति होती। मैंने काम-काज को दुनिया मे पैर रखा ही था कि पिताजी चल बसे और माँ दुनिया से बेखबर (पागल) हो गयीं।

भारत जैन महामंडल में काम करने और सीखने का अवसर मिला। 'जैनजगत्' के प्रकाशन के साथ उसमें मुझे भी जोड दिया। मेरे लिए आप काम जुटाते रहे, मैं उनमें जुटता गया। धीरे-धीरे विचारों मे परिवर्तन होता गया। इन्हींकी कृपा और तत्परता से मैं अन्तर्जातीय विवाह की ओर कदम बढा सका और यह हिम्मत भी मुझमे इन्हींके

संपर्क से आयी कि मैं जाति और रूढ़ि की गुलामी की बेड़ियों को तोड़ने मे समर्थ हुआ। यह मेरा सद्भाग्य है कि उनका मुझ पर पुत्रवत् स्नेह है। हमारे आग्रह पर आप दो-तीन बार काशी भी आ गये। मैं तो चाहता हूँ कि वे अब अपना उत्तर-जीवन काशी मे ही शांतिपूर्वक बितायें। काशी विश्वप्रकाशी है। लेकिन जानता हूँ, वे इसे स्वीकार नहीं करेंगे।

अब चिरञ्जीलालजी ६८ वर्ष पूरे करके ६९ वे मे प्रवेश कर चुके हैं। हमारी उनसे प्रार्थना है कि अब वे अपने शरीर पर दया करें और प्रवास रोककर घर पर ही रहें। इस बारे मे श्री कमलनयनजी ने तो बहुत पहले अपने एक पत्र में इन्हे लिख दिया था :

'अब आपकी अवस्था ऐसी हो गयी है कि जिसमे काम और सेवा का भी अधिक लोभ नहीं रखना चाहिए। एक-न-एक रोज महान् यात्रा करनी ही है, तो अब छोटे-मोटे पर्यटन बन्द किये जा सके, तो उसका खयाल रखना चाहिए। किसी एक स्थान पर बैठकर शाति व समाधान का जीवन गुजारने का खयाल रखे। आपके लिए वही तपस्या हो जायगी और उसमे सुख भी मिलेगा।'

चिरञ्जीलालजी ने भारत का भ्रमण कम नही किया है। न केवल जैनतीर्थ, वल्कि चारों धाम की यात्रा भी कर चुके हैं। पर्यटन का तो जैसे उनको व्यसन ही है। लेकिन अब इससे मुक्त होना चाहिए। कमलनयनजी के शब्दों में यही उनकी 'तपस्या' हो जायगी। खुशी की बात है कि इस वर्ष महावीर-जयंती के अवसर पर आपने भगवान महावीर की जन्मपुरी वैशाली मे संकल्प कर लिया है कि अब प्रवास नहीं करेंगे।

वाराणसी
२-१०-'६३

—जमनालाल जैन

स्व० श्रीमती सुगणाबाई

अजमेर जिले में रूपनगढ नामक एक छोटा-सा ग्राम है। वहाँ पर श्री मन्नालालजी पाटनी और उनका परिवार रहता था। उनके दो पुत्र श्री जुहारमलजी तथा हसराजजी और दो कन्याएँ थीं। उसमें से एक सुगणाबाई थीं। श्री मन्नालालजी का परिवार विदर्भ में अकोला जिले के वाशिम नामक ग्राम में आकर बस गया। उनके वंशज कुशल व्यापारी, सम्पन्न तथा सुखी हैं।

श्रीमती सुगणाबाई का जन्म विक्रम संवत् १९३४ के आसपास हुआ और विक्रम सवत् १९४७ में वर्धा के श्री जेठमलजी बड़जाते के साथ उनका विवाह हुआ।

श्री जेठमलजी के पिता कुन्दनमलजी अपने बन्धु चपालालजी के साथ वर्धा मे आकर कपडे का व्यवसाय करने लगे थे। विवाह के पाँच वर्ष पश्चात् ही श्री जेठमलजी का स्वर्गवास हो गया। अब सुगणाबाई के विधवा हो जाने से उनके सरक्षण का भार श्री पन्नालालजी पर आ पड़ा। श्री पन्नालालजी चंपालालजी के पुत्र थे।

पन्नालालजी अत्यन्त व्यवहारकुशल और मँजे हुए व्यवसायी थे। कपडे के व्यापार में आपने करीब दो-ढाई लाख रुपयों की कमाई की। वर्धा के दिगम्बर जैन समाज की प्रवृत्तियों तथा हलचलों में उनका प्रमुख स्थान रहता था। आपने जीवनभर श्रीमती सुगणाबाई को मातृत्व की दृष्टि से देखा। बाल-विधवा होने पर भी सुगणाबाई को परिवार मे किसी प्रकार का कष्ट नहीं हुआ, बल्कि सबने उन्हे आदर ही दिया।

पन्नालालजी धार्मिक तथा सात्त्विक वृत्ति के थे। अपनी मृत्यु के समय वे एक ट्रस्ट बना गये थे और मृत्यु-लेख मे श्रीमती सुगणाबाई, तथा अपनी धर्मपत्नी को एक-एक लडका दत्तक लेने का अधिकार भी लिख गये थे।

निश्चयानुसार दोनों के नाम पर दो लड़के दत्तक लिये गये। उग्रोस (मारवाड़) मे श्री मोहरीलालजी बडजाते रहते थे। उनका एक लड़का श्रीमती सुगणाबाई ने लिया। यही पुत्र श्री चिरंजीलालजी के नाम से सुप्रसिद्ध है, जो व्यावहारिकता और समाज-सेवा से जैन-समाज मे सुपरिचित है। श्री पन्नालालजी की पत्नी मोहनादेवी के भी एक लडका दत्तक लिया गया, जिनका नाम श्री सूरजमलजी बडजाते था। उनका स्वर्गवास ता० १५ फरवरी '४२ को ही गया। उनकी धर्मपत्नी और दोनों पुत्र नागपुर रहते है। सूरजमलजी की धर्मपत्नी श्रीमती चम्पादेवी अपना सारा समय धर्म-ध्यान और स्वाध्याय मे लगाती हैं। सूरजमलजी के बडे पुत्र गेंदालाल लाइफ इन्शुरस कारपोरेशन मे है और छोटे श्री शातिलाल कामर्स कॉलेज मे प्रोफेसर हैं।

सारा परिवार सम्मिलित रूप से रहता था। लेकिन बाद मे श्री चिरंजीलालजी और सूरजमलजी अलग-अलग होकर स्वतन्त्र रूप से व्यवसाय चलाने लगे। बँटवारा ता० २३-८-'२१ को हुआ।

श्रीमती सुगणाबाई सात्त्विक विचारों की साहसी महिला थीं। अलग होने पर जब चिरंजीलालजी ने रूई आदि के व्यापार मे करीब-करीब डेढ़ लाख की सम्पत्ति स्वाहा कर दी, तब भी सुगणाबाई ने किसी प्रकार का दुःख प्रकट नहीं किया और न चिरञ्जीलालजी से कुछ कहा। दत्तक पुत्र होने पर भी सुगणाबाई तथा चिरञ्जीलालजी मे माँ-बेटे का स्नेह और वात्सल्य बना रहा और चिरंजीलालजी उनकी बराबर सेवा करते रहे।

वे धार्मिक विचारों की थीं। सवत् १९५७ में वर्धा में जब प्लेग फैला, तब उन्होंने श्री दिगम्बर जैन-मंदिर पर गुम्बद बनवाने का

संकल्प किया। मंदिर के ऊपरी भाग में वेदी-प्रतिष्ठा महोत्सव सन् १९२४-२५ में किया गया। उसी समय श्री भारतवर्षीय दि० जैन-परिषद् का अधिवेशन भी वर्धा में हुआ। अधिवेशन तथा प्रतिष्ठा मे बाहर के कई सज्जन सम्मिलित हुए थे। बा० अजितप्रसादजी लखनऊ, बै० चंपतरायजी, ब्र० शीतलप्रसादजी जैसे व्यक्ति का लाभ प्राप्त हुआ था। समस्त आगत सज्जनों के भोजन आदि का प्रबंध सुगणाबाईजी की ओर से था। एक बार वे अपने कुटुंबियों के साथ भगवान् गोम्मटेश्वर-बाहुबली की यात्रा को भी गयी थीं।

यद्यपि वे पुराने विचारों की भद्र-परिणामी महिला थीं, तथापि चिरंजीलालजी को उनकी सामाजिक सेवाओं के समय बराबर साथ और साहस देती रही हैं। अब से २५-३० वर्ष पहले की इन बातों को जब हम देखते हैं, तो आश्चर्य होता है आज के शिक्षितों की शाब्दिक सुधारकता पर। म्युनिसिपल कमेटी के मेम्बर की हैसियत से जब चिरंजीलालजी ने सार्वजनिक कुँओं को सबके लिए खुलवा दिया, तब जातिवालों ने उन्हे बहिष्कृत कर दिया। उनकी माँ सुगणाबाई को भी बहकाया गया, धमकी दी गयी; परतु उन्होंने चिरञ्जीलालजी का साथ नहीं छोड़ा। कई बार ऐसे भी अवसर आये, जब उन्हे समाज की ओर से होनेवाले अपमान को सहना पडा है। एक बार उन्हे मन्दिर जाते समय 'ढेड़नी' शब्द से सम्बोधित किया गया, लेकिन इस बारे में उन्होंने सहनशीलता ही दिखाई। समाज के भय से चिरंजीलालजी को उनके मार्ग से विचलित नहीं किया। यदि यह बात उनमे न होती, तो आज चिरजीलालजी का जो सामाजिक रूप दीख रहा है, वह न दीखता। ऐसे अवसरों पर स्व० सेठ जमनालालजी बजाज उन्हें ढाढ़स बँधाते और साहस की प्रेरणा देते। स्व० सेठ साहब के हृदय में उनके प्रति बहुत आदर था।

स्नेह और सौजन्य की तो वे मूर्ति थीं। उन्हे अतिथि-सत्कार और दूसरों की सेवा करने में बहुत आनंद आता था। चिरजीलालजी का

जीवन-निर्माण उनकी गोदी में ही हुआ और कहना चाहिए कि उनके स्नेह तथा सौजन्य ने ही इन्हें मनुष्य बनाया है। प० अर्जुनलालजी उनका आतिथ्यसत्कार प्राप्त कर चुके हैं। यह चिरञ्जीलालजी का सौभाग्य है कि उन्हें ऐसी माँ मिली, जिसने सेवा और सौजन्य के संस्कार प्रदान किये। यह उनकी माताजी के जीवन तथा स्व० जमनालालजी बजाज की प्रेरणा का ही प्रभाव है कि उनमे समाज, धर्म तथा राष्ट्र के प्रति प्रेम है, दूसरों का आदर करना वे जानते हैं और अतिथि-सत्कार करने में आनन्द का अनुभव करते हैं।

पं० उदयलालजी काशलीवाल का भी सुगणाबाईजी से काफी आत्मीय सम्बन्ध रहा है। वे वर्धा मे एक-एक मास तक ठहरते और उनके हाथ का भोजन पाकर आनन्द का अनुभव करते। जिस दिन चौके में सुगणाबाईजी न होतीं, तो उदयलालजी की इच्छा ही भोजन की नहीं होती थी—उस दिन वे अधभूखे ही उठ जाते और यह बात प्रकट भी कर देते। मालूम होता है, पंडितजी का पूर्वजन्म संस्कारजन्य सम्बन्ध ही विशेष रहा है। इस तरह पंडितजी चिरञ्जीलालजी के परिवार से काफी समरस हो गये थे।

श्रीमती सुगणाबाई का स्वर्गवास सवत् १९९५ मे ता० २१-३-'३८ को हुआ। उनकी स्मृति मे श्री चिरञ्जीलालजी ने 'सुगणाबाई ट्रस्ट' स्थापित किया है, जो पारिवारिक है।

●

संगी-साथियों की चिट्ठियाँ

स्व० डॉ० राजेन्द्र प्रसादजी के पत्र

रेलगाडी से
२०-५-३५

प्रिय श्री चिरंजीलालजी

आपका पत्र मिला था मगर बहुत विलब करके। इधर मथुरा बाबू का पत्र मिला जिससे मालूम हुआ कि आप सब काम समाप्त करके वर्धा वापस चले गये। मैं ऐसे स्थानों में घूम रहा था कि मुझे बराबर पत्र भी नहीं मिल सकते थे और न मैं पत्र लिखने का समय ही निकाल सकता था। आज रेल से समय निकालकर लिख रहा हूँ। आपने जो कष्ट उठाया है उसके लिए ईश्वर ही आपको फल देगा। मैं क्या धन्यवाद लिखूँ। आशा है आप सब काम से संतोष करके आये होंगे। मैं अभी जाकर जीरात जमीन के सम्बन्ध में जो कुछ हो सकेगा करूँगा। फिर जैसी खबर होगी आपको दूँगा।

मैं जून में वर्धा आऊँगा और आपसे आशा है मिलने का अवसर होगा। यों तो मैं ता० ३१-५ को बंबई पहुँचता हूं।

और सब आनन्द है।

आपका
राजेन्द्र प्रसाद

प्रिय श्री चिरंजीलालजी

जेल से छूटते ही मुझे बंबई और शिमला दौड जाना पडा। लौटती बार दिल्ली में बीमार पड़ गया और अब यहाँ आराम के लिए आ गया हूँ। प्रायः १ मास रहने का विचार है। चि० कमल ने सीकर बुलाया था पर उस समय यहाँ का निश्चय हो गया था, इसलिए यहाँ ही आ गया। आशा है आप सब लोग अच्छे होंगे। जब उधर आना होगा तो आप लोगों से भेंट होगी।

मुझे उधर का मालूम नहीं है कि हमारे हिसाब में अब कितना बाकी है। शायद आपने लडके लोगों के पास भेज दिया होगा पर मुझे आज सब स्मरण नहीं है। कृपाकर उधर का हिसाब भेज देते कि पिछली दीवाली तक क्या बाकी था और अब इधर कुछ और पहुँचा है या नही। हम यह जानना चाहते है कि गत बरस में यानी पिछली दीवाली को समाप्त हुए साल मे कितना भुगतान हुआ और दीवाली के इधर कितना, जिससे हमको मालूम हो जाय कि क्या अदा हुआ और अब क्या बाकी है।

कष्ट के लिए क्षमा कीजियेगा और ऊपर के पते से यहाँ ही हिसाब भेज दीजियेगा।

आपका
राजेन्द्र प्रसाद

बिरला भवन
पो० पिलानी।
जयपुर स्टेट (राजपूताना)
२६-८-४५

प्रिय श्री चिरंजीलालजी,

कल श्री जनार्द्दन प्रसाद वर्म्मा ने मेरे पास पत्र लिखा है कि उन्होंने श्री कमलनयन को ……का चेक श्री बछराज जमनालाल को चुकता करके अदा करने के लिए दे दिया है। यह तो अब आप लोगों तक पहुँच गया होगा। और आपको सब मालूम हो ही गया होगा।

ईश्वर की दया से यह भारी बोझ हम लोगों के सिर पर से उतर गया। आपको तो सब हाल मालूम ही है कि कैसा बुरा समय हमारे ऊपर गुजरा है। कैसी खराब अवस्था में सेठ जमनालालजी ने हमारी मदद की थी और कैसा हम उस समय परेशान थे। हम उस उपकार (को) नहीं भूल सकते। रुपये तो अदा हो गये, पर उस सहानुभूति और आत्मीयता का कौन बदला दे सकता है ? वह ऋण कभी हमारे ऊपर से उतर नहीं सकता। आपने भी जितना कष्ट उठाकर हमारी मदद की थी, वह क्या हम कभी भूल सकते हैं ? ईश्वर ने यह बोझ उतार दिया, यह उसकी दया है।

मेरी तबीयत अब ठीक है। देखें उधर कब आना होता है और कब आप लोगों से भेंट होती है। सब भाइयों को प्रणाम।

आपका
राजेंद्र प्रसाद

राष्ट्रपति भवन
नई दिल्ली।
३० अक्टूबर १९५२

प्रिय चिरंजीलालजी,

मैं एक पत्र कमलनयन को लिख रहा हूँ और उसकी नकल इस पत्र के साथ भेज रहा हूँ। उससे सब बाते मालूम हो जायेगी। आपने एक समय मे बड़ी सहायता की थी, इसीलिये आपको फिर भी कष्ट देना चाहता हूँ। अगर कमलनयन आपको जाने की स्वीकृति दे तो छपरा आदि जाने की तिथि लिख भेजूँगा। धन्नू बाबू आजकल यहाँ ही आये हुए हैं और यहाँ ५-६ दिनों तक रहेगे। इस बीच मे उत्तर मिल जायगा तो उनसे तिथि इत्यादि निश्चित करके लिख भेजूँगा।

आपका
राजेन्द्र प्रसाद

प्रिय श्री चिरंजीलालजी,

५ नवम्बर १९५२

आपका ३-११-५२ का पत्र मिला। आप अपने भतीजे की शादी मे शरीक होने के बाद ही छपरा जायें जिसमे आप निश्चिन्त से और अगर कुछ अधिक समय भी लगे तो उसे लगाकर सब कुछ ठीक कर दे। इस काम मे कोई जल्दीबाजी नही है। २२-११-५२ के बाद आप किस तारीख को वहाँ जायेंगे इसकी सूचना मुझे भी दे दीजियेगा।

आपका
राजेन्द्र प्रसाद

President's Camp
India

रास्ते में से : भोपाल, ता० ६ जुलाई १९५५

प्रिय श्री चिरंजीलालजी,

आपका बम्बई से लिखा पत्र कल सेवाग्राम मे मिला। यह जानकर बडी प्रसन्नता हुई कि आप श्री बद्रीनाथजी व श्री केदारनाथजी के दर्शन कर आये है। यह बडे भाग्य की बात है।

मेरा हमेशा यह मानना है कि हम सब एक ही परिवार के हैं और चाहे हम आज भिन्न-भिन्न जगहों मे, अपने-अपने कार्यवश इधर-उधर विखरे पडे हुए क्यों न हों, पर हमारा आपसी सम्बन्ध कैसे टूट सकता है ? कल सेवाग्राम में जो थोडा-बहुत समय बिता सका, उस थोडे से समय में ही अनेक पुरानी स्मृतियाँ फिर ताजी हो गयीं और यह स्वाभाविक ही है। अनेक भाई-वहनों से भेंट-मुलाकात हुई। चि० रामकृष्ण से भी बातें हुईं। मेरा स्वास्थ्य ठीक चल रहा है।

आपका
राजेन्द्र प्रसाद

प्रिय श्री चिरंजीलालजी, जुलाई १४, १९५६

आपका २५ जून का पत्र मुझे यथा समय मिल गया था। आपके पत्र से यह जानकर खुशी हुई कि आप अपना सारा समय सेवाकार्य में बिता रहे हैं और स्व० भाई जमनालालजी ने जिन सत्कार्यों को आरम्भ किया था, उसीमें आप जुटे हुए हैं। देखा जाय तो अप्रत्यक्ष रूप से आप उन्हीं की सेवा कर रहे हैं। आपने अपना शेष जीवन गो-सेवा के कार्य में लगाने का निश्चय किया है और इसके लिए आपने योजना भी बना ली है, यह बहुत खुशी की बात है। आप अपने इस लक्ष्य में सफल हों। भगवान् आपको बल दें यही मेरी कामना और प्रार्थना है।

मैं ४ अगस्त को यहाँ से हैदराबाद जा रहा हूँ और वर्धा से ही मेरी गाडी गुजरेगी। मुझे ठीक मालूम नहीं कि वहाँ किस समय मेरी गाडी पहुँचेगी। यदि आप स्टेशन पर आना चाहे तो समय आदि दरयाफ्त कर लीजियेगा।

मैं अच्छी तरह हूँ।

आपका
राजेन्द्र प्रसाद

प्रिय श्री चिरंजीलालजी, जनवरी २९, १९६०

वहिन की मृत्यु पर भेजा आपका सहानुभूति व संवेदना का पत्र मिला जिसके लिये मैं आपका कृतज्ञ हूँ। आप जैसे स्नेहीजनों की सहानुभूति से मुझे बडी सान्त्वना मिलती है यह कहने की आवश्यकता नहीं।

आपका
राजेन्द्र प्रसाद

प्रिय श्री चिरंजीलालजी, १४ सितम्बर, १९६१

जुलाई महीने मे मेरे अस्वस्थ हो जाने पर आपने चि० ज्ञान (श्रीमती ज्ञानवती दरबार) को पत्र लिखकर मेरे बारे मे चिन्ता प्रकट की थी और मेरे स्वास्थ्यलाभ के लिए प्रार्थना की थी। उस समय मैं इस स्थिति मे नहीं था कि स्वयं उत्तर देता। मैं आपका बहुत ही आभार मानता हूँ।

आशा है आप सब अच्छे होंगे।

आपका
राजेन्द्र प्रसाद

बजाज-परिवार के पत्र

श्री चिरंजीलालजी, कलकत्ता : १०-७-४४

आपके पत्र मिले।...

बाबू राजेन्द्र प्रसादजी के काम में अपनी तरफ से तो उन्हें यही लिख भेजें कि जो कुछ छूट वे चाहते हों ले लें। जितना भी वे दे देंगे हम पूरे संतोप से ले लेंगे। हमारे मन में कोई खयाल नहीं रह सकता। पू० काकाजी से उनका जो सम्बन्ध रहा है उसके बीच में हम बच्चे कुछ भी बोलने के अधिकारी नहीं हैं। उनका प्रेम और बाबूजी का जो व्यवहार हम लोगों से रहा है उससे ही हमें पूरा सतोष है।

यह ख्याल रहे कि ज्यादा कसर खानी पडे तो बिरलाजी को नहीं सहनी पडे। अपन लोगों को ही सहन करना उचित होगा।"..... मैं वहाँ ता. १४ को शाम को पहुँच रहा हूँ।

कमलनयन

प्रिय श्री चिरंजीलालजी, गोला गोकर्णनाथ : ८-३-४५

.....आपको अरविन्द आश्रम मे जाकर के शाति मिली, जानकर सन्तोष हुआ। सुख व शांति तो मिला नहीं करती है। यह तो एक मन की अवस्था मात्र है। फिर भी यदि आपने इसी स्थिति का अरविन्द आश्रम में अनुभव किया है तो उसी स्थिति को जीवन में कायम रख करके जीवन में टिकाऊ बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। अन्यथा हजारों सन्तों को देख कर के भी आपका क्लेश तो उतना का उतना ही रहेगा। .. ..

कमलनयन

प्रिय किशोर कुमार, वर्धा १२-४-४८

तुम्हारे विवाह की निमंत्रण पत्रिका मिली। भाई चिरंजीलालजी का हमारे परिवार से जो संबंध है, उस हिसाब से मुझे विवाह में उपस्थित होकर ही आशीर्वाद देना चाहिए था। लेकिन कुछ ऐसी कठिनाइयाँ आ गयी है कि जिनके कारण भाई चिरंजीलालजी को मुझे यहीं छोड़ने का तय करना पडा। अतः इस मंगल प्रसग पर मैं तुम दोनों की यहीं से शुभ कामना करता हूँ।

पिता न मालूम कितनी अनगिनत कठिनाइयों के बीच पुत्र का पालन करता है। वह आशा लगाये रहता है कि पुत्र उसका कार्य आगे बढ़ावेगा। भाई चिरंजीलालजी ने अपने जीवन में सेवा को प्रथम स्थान दिया है। अपनी अधिक शक्ति ऐसे ही कामों में लगाई है और उसीमे उन्होंने अपना जीवन सार्थ माना है। मैं आशा करता हूँ कि तुम दोनों भी उसी मार्ग को आगे बढ़ाओगे और देश के सच्चे सेवक साबित होगे। भगवान तुम दोनों का जीवन आनन्दमय करे और तुम्हे सेवा के मार्ग मे आगे बढ़ने की शक्ति दे। —राधाकृष्ण बजाज

भाई चिरंजीलालजी, २१-१२-५१

... नगीना में पू० विनोबाजी से मिल आया। वे प्रसन्न थे। शरीर थक रहा है। रोज १५-२० मील चलना बडा कठिन पडता है। सर्दी खूब पड रही है। आगे और भी सर्दी बढेगी।

एक साइकिलवाला पीछे से आकर रास्ते में उनपर पडा, सो वे गिर गये। घुटनो मे चोट आयी है। और चोट आयी है। तीन-चार रोज से खुर्ची (कुर्सी) पर उन्हें उठाकर ले जाते हैं। बीच मे वे पैदल भी चले, पर उससे तकलीफ अधिक बढ़ गयी। दौरा बराबर चालू है। भाई दामोदरजी, उनकी लडकी मृदुला चि० गौतम सब प्रसन्न हैं।

आप काम जोरों से चलने दें। सफलता आपको ही मिलेगी।

आपका
राधाकृष्ण बजाज

Bombay,
7th March 1952

Priya Chiranjilalji,

I have received your 3 or 4 letters from you in these days I am taking up one by one.

Re The Bank of Nagpur.— It is unfair to say that we have not been paying attention to the proposals you have made from time to time regarding the improvement of the Nagpur Bank. I have myself discussed your proposals with Shri Keshavdeoji when I had received your proposals for the first time. But there were some other things which did not make it possible for us to follow your suggestions. Even now your suggestions are there but if you had known the latest position you yourself would not have pressed for the suggestions that you have made. You should be glad to know that we have been seriously considering about the future of the Bank and some concrete steps have already been taken. I will discuss with you the details only when we meet. I would not like to write the details just at present in this letter. According to the new schemes we are thinking of the position of the Bank will be much improved. Till something is decided about those sugges-

tions, no changes can be done in the present setup of the Bank. Therefore the question of bringing back .... does not arise at present. I hope this will clarify the position.

I have known about the theft at Amravati.

You need not get nervous about the Nagpur Bank and also you should not lose your interest in its work I will still press that if the Nagpur Bank requires your services for their work in Jalgaon you should not deny the same Shri Hanumanprasadji himself came here and asked me to lend your services to him for some days. Do you think it will be proper to refuse them any help ? I hope you will reconsider your views after reading what have written here and let me know your decision.

I am sending our scheme herewith but I am retaining your letter for future use.

Yours sincerely,
Ramkrishna

श्री चिरंजीलालजी, बंबई : नवंबर २२, १९५५

श्री भिडेजी की पत्नी का स्वर्गवास हो गया जानकर बहुत दुख हुआ। वृद्धावस्था मे उनका सहारा निकल गया। उन्होंने सारे जीवन मे कर्म में ही निवृत्ति समझी है और बिना किसी काम के और बिना किसी जिम्मेदारी को लिये जीना भी शायद उनके लिए असभव सा ही हो। फिर भी उनकी अवस्था को देखते हुए मुझे लगता है कि उनको अपनी जिम्मेदारी काफी हदतक कम कर लेनी चाहिए और इसी तरह के अन्य दूसरे हलके कामों मे व्यस्त रहने का प्रयत्न करें जिससे शारीरिक परिश्रम भी कम हो।

श्री भिडेजी को मेरी ओर से कहे कि खुद के "आयुष्यातील आठवणी" याने निजी जीवन के सस्मरण अवश्य लिख रखने की कृपा करें जो कि भावी पीढी के लिए अत्यत लाभप्रद सिद्ध होंगी। मारवाडी शिक्षण मडल के वे पुराने और आखिरी स्तभ रह गये हैं। उनसे आप मिलकर के समझाने का प्रयत्न करे। उनके भोजन का प्रबध दूकान पर किया जा सकता है। उसका खर्च जमनालाल सेवा ट्रस्ट बडी खुशी से उठाना पसन्द करेगा।

पू० काकाजी के साथ में शिक्षा क्षेत्र में श्री भिडेजी का जो शुरू से ही संबंध रहा है उसको देखते हुए मुझे विश्वास है कि श्री भिडेजी को भी इसमे किसी प्रकार का संकोच नहीं होगा। उनकी व्यवस्था समाधान और सुख के वास्ते अपने से और भी कुछ हो सकता हो तो वह भी प्रयत्न होना चाहिये।

विमला और राम एकाध रोज मे दिल्ली से आवेंगे। सावित्री और बच्चे अभी तक राँची ही है। वहाँ से इस माह के आखिर में वे लोग कलकत्ता आने की सोच रहे हैं। मेरा स्वास्थ्य ठीक है। आपकी यात्रा बिना किसी विशेष घटना के संपूर्ण हुई होगी।

अब आपकी अवस्था ऐसी हो गई है कि जिसमें काम और सेवा का भी अधिक लोभ नहीं रखना चाहिये। एक न एक रोज महान्

यात्रा करनी ही है तो अब छोटे मोटे पर्यटन बन्द किये जा सकें तो उसका खयाल रखना चाहिये। किसी एक स्थान पर बैठकर शांति व समाधान का जीवन गुजारने का ख्याल रखें। आपके लिए वही तपस्या हो जायगी और उसमें सुख भी मिलेगा।

मैं ता० २८ को दिल्ली जा रहा हूँ। ता० २ दिसबंर को जयपुर पहुँचूँगा। ता० ४ या ५ के अन्दाज उदयपुर जाने का विचार है। वहाँ से यहाँ लौट आऊँगा।

आपका

कमलनयन

प्रिय चिरंजीलालजी, बबई : ८-१०-५८

आपका पत्र भाई के तथा मेरे नाम का मिला। यह जानकर बहुत संतोष हुआ कि वहाँ के डाक्टर कन्सल साहब ने अपाका आपरेशन बहुत अच्छी तरह से कर दिया है। आप आपरेशन के बाद भी आँखों पर ज्यादा बोझ पड़े, इस तरह का काम न करना। जितना आराम लेने की जरूरत हो, उससे दो दिन ज्यादा लेना। मुसाफरी मे भी जाने की तुरंत आवश्यकता नहीं, क्योंकि गर्दा वगैरह जाने से कुछ नुकसान हा पहुँचेगा।

मैं यहाँ से ता० ११-१०-५८ को वर्धा जाऊँगा और गोंदिया, इटारसी, आगरा, देहली होते हुए देहली से ता० १६-१०-५८ गुरुवार को जनता एक्सप्रेस से निकलकर आबू जाने का विचार है—जयपुर उतरूँगा नहीं। जनता ट्रेन भी शायद रात को जयपुर पहुँचेगी। तब तक आप वहाँ हो, तब भी आपको इतनी रात को देरी से तकलीफ देने की इच्छा नहीं है। नहीं तो मिलकर खुशी होती।

आप जल्द ही अच्छे हो जावें, ऐसी हम सबकी इच्छा है।

आपका

कमलनयन

प्रिय चिरंजीलालजी, बंबई : ३ नवंबर १९५९

आपको भाई कमलनयन ने इंदौर जाने के बारे में कहा ही होगा, नहीं तो आप उनसे बात कर लेवें। ..... के लिए कोई अच्छा लड़का अब जल्दी ही ढूंढना है। इंदौर में कई अच्छे कुटुंब हैं। माहेश्वरी, ओसवाल व अग्रवाल में से कोई भी अच्छा कुटुंब और लड़का हो तो चलेगा। सो आप वहाँ ७-८ दिन जाकर बैठें और जो जो अच्छे लड़के संभव हों उन सबकी विगत लेकर एक बार बंबई आ जायं तो अच्छा रहेगा। साथ में सभव हो तो गोवर्धनलालजी को भी ले जा सकें तो अच्छा होगा। मैं ता० ५ को दिल्ली जाकर करीब ता० २५ तक लौटूंगा, उसके आसपास एक बार आपको यहाँ आना है। प्रह्लाद भाई को भी आपसे काम है सो वैसा प्रोग्राम बना लीजिये।

इंदौर का काम जरूरी समझकर जितनी जानकारी हो सके लाने की कोशिश करें :

१. श्री शांतिप्रसादजी जैन के सबंधी श्री तायल की लड़की भी अब इंदौर में ब्याही है, वह कुटुंब भी अच्छा है।

२. श्री सुभद्रकुमारजी पाटनी की बहन जहाँ ब्याही है उनके कुटुंब की भी तपास कर सकते है। शेष कुशल।

आपका

रामकृष्ण बजाज

प्रिय चिरंजीलालजी, बंबई : १६ फरवरी १९६०

आपका पत्र मिला। ...... के बारे में ...... आपको विगत लिख रहा है। उसकी सारी व्यवस्था करवा दी थी, अब कोई विशेष चिन्ता की बात नहीं है। आपके जाने की जरूरत नहीं।

जयना परिवार के बारे में आपने विगत भेजी सो ठीक। आवश्यकता होगी तो तपास करवा लूँगा। इस बारे में दो तीन जगह

बातचीत चल रही है इसलिए फिलहाल अभी आप अपनी तरफ से कोई विशेष प्रयत्न कुछ रोज के लिए मुल्तवी रखें। यदि आवश्यकता होगी तो मैं फिर आपको लिखूंगा।

सर्वोदय-सम्मेलन की तारीखे पहले २५-२६-२७ थीं, अब "जागरण" मे २६-२७-२८ छपी है सो पक्की तारीखें कौनसी हैं तुरन्त खबर देवे।

उन्हीं दिनों दिल्ली में फेडरेशन की मीटिंग होने से शायद कमलनयनजी नहीं आ सकेंगे। मैं आने का सोच रहा हूं।

आपका
रामकृष्ण बजाज

प्रिय चिरंजीलालजी, बंबई: ७ नवंबर १९६१

आपको यह जानकर खुशी होगी कि मेरे बडे लड़के चि. राहुल का विवाह सौ. का. रूपारानी घोलप के साथ शनिवार ता० १६ दिसंबर को बबई में होना निश्चित हुआ है। उसका निमंत्रण पत्र मैं आपको भिजवाऊँगा ही। आप विवाह मे उपस्थित हों तथा बच्चों को आशीर्वाद दें ऐसी हम सबकी ख्वाहिश है। आपके आने से हम सबको अत्यन्त खुशी होगी। आप कब आ रहे हैं इसकी सूचना देंगे ही।

आपका
कमलनयन

प्रिय चिरजीलालजी, बंबई: ३० जुलाई, १९६२

आप और गोकुलदास के पत्र मिले। हरिकिसन ने मुझे किताब दी थी। मैंने उसको काफी देखा है। बातें उसमें झूठी हैं और जैसा आपने लिखा दिल को दुखानेवाली भी हैं। लेकिन उसकी आत्मा को इससे ही शाति मिलती है तो भले मिले। अभी इसमे मुझे कुछ

करने जैसा लगता नहीं है। आपको भी उससे झगड़ा करके कोई फायदा नहीं है आखिर सच्चे लोगों का भगवान है ही। विशेष आपके मन मे अगर कुछ हो तो जापान से लौटने पर बातें कर लेंगे।

आपका
कमलनयन बजाज

लालसिंह का बंगला
मैनपुरी यू० पी०

श्री. चिरंजीलालजी, १४-३-४४

आपका ता० २४-२ का पत्र और साथ मे जमनालाल सन्स का मेरे नाम का डिव्हिडेंट वारंट मिला। दूसरा पत्र उमा बाई के नाम का ता० १-३ का और साथ में चाँदा मैच वर्क्स लि० का डिविडेंट वारंट भी मिला। दोनों पर सही करके लौटा रही हूँ।

आपके पत्र हल्द्वानी होकर मुझे यहां कल ही प्राप्त हुए।

आप सब सानन्द होंगे, हम यहाँ आनन्द से हैं। ता० ७ को चल कर हल्द्वानी से शिकोहाबाद में साथ होकर ८ ता० की शाम को हम यहाँ पहुँच गये थे।

होली के आप सबको शुभ राम राम। अब तो भाई रामकृष्ण के घर आ जाने की प्रतीक्षा है!

आधी मेह और ओला की असामयिक वृष्टि से अबकी सी. पी. की खेती को भारी नुकसान पहुँचा है जानकर बहुत अफसोस हुआ। लिखे कि गेहूँ गन्ना आदि का अब क्या हाल है।

अपने स्वास्थ्य का ध्यान रक्खें और किसी बात की ज्यादा चिंता न करे।

बाई राजमती के शुभ संबंध के समाचार की उत्कंठा है !

पत्र दे। अभी तो करीब १ महीना तो हमारा यहीं रहने का इरादा है। आप कभी आग्रा भूपाल आवे तो यहाँ भी जरूर आवें।

विनीत

मदालसा अग्रवाल

२ फिरोजशा रोड

पू० भाई श्री चिरंजीलालजी, नई दिल्ली : २८-९-५५

सादर सविनय प्रणाम। आपका ता० १६-८ का कृपापत्र प० पू० माताजी के पुण्य स्मरण का यथासमय मिल गया था। मेरा स्वास्थ्य बीच मे फिर गड़बड हो जाने से अबतक पहुँच न दे सकी। अब मैं ठीक हूँ। प० पू० पिताजी के यहाँ आ जाने रहने से बड़ी धीरज और शान्ति मिलती रही। अबतक प्रार्थना कथा-प्रवचन और अध्यात्म-चर्चा का क्रम चालू रहने से घर मे वातावरण पवित्रता का बना हुआ है।

पू० पिताजी के सादर साभार नमस्कार स्वीकारें।

ये तो ज्यादातर दौरे ही पर रह रहे हैं। आज पू० विनोबाजी के पास से शाम को लौट कर आवेंगे।

फिर ता० २ अक्टूबर को शायद वर्धा पहुँचे। तब आशा है आपसे मिलना हो सकेगा। पू० माँ १ को जाजूजी साहब के साथ राजस्थान दौरे पर जावेंगी। उनकी अनेक शुभ कामनाएँ।

हम सबके आपको और काकीजी को सादर प्रणाम। भाई, भाभियो को सस्नेह वन्दे।

सादर

मदालसा

प्रिय श्री चिरंजीलालजी, सप्रेम वन्दे ।   मैनपुरी : १५-३-४४

आपका कार्ड मिला । धन्यवाद । चूँकि अब कालिज तो शीघ्र ही गर्मी की छुट्टियों के लिये बन्द हो जायगा और मुझे कुछ समय आराम की भी जरूरत है और पू० माता-पिताजी के पास भी रहना उचित है, इसलिये जून के अन्त में ही वर्धा आने का विचार है ।

मेरे वर्धा पहुँचने तक, तथा मडल की सारी परिस्थिति समझे बिना, मैं मंडल की जिम्मेदारी कैसे ले सकता हूँ ? अभी तो आपकी ही जिम्मेदारी है ! हाँ, यदि किसी बात में मेरी सलाह लेनी हो, तो आप अवश्य मुझे लिखने की कृपा करें और मैं अपनी राय जरूर दूँगा ।

मेरा स्वास्थ्य साधारण ठीक है ! आशा है आपकी तबीयत भी बिल्कुल ठीक होगी ।

भवदीय

श्रीमन्नारायण

प्रिय श्री चिरंजीलालजी,   नई दिल्ली : जुलाई २५, १९५२

आपका ता० २२–७ का पत्र मिला । हाँ, काग्रेस की जिम्मेदारी तो बहुत बड़ी है । और इस काम में आप सब लोगों का सहयोग चाहिये । नम्रतापूर्वक देश की सेवा करनी ही है ।

मैं ता० ८–१० अगस्त के करीब वर्धा आने की आशा रखता हूँ । करीब एक हफ्ते वहाँ रहूँगा ।

आपका

श्री. ना. अग्रवाल

प्रिय चिरंजीलालजी,   नवम्बर २१, १९५८

आपका तारीख १७ नवम्बर का पत्र मिला । धन्यवाद । आप की आँख के आपरेशन के सम्बन्ध में मुझे जानकारी मिली थी । आशा करता हूँ कि कुछ समय बाद आपकी आँख बिल्कुल ठीक हो जाएगी ।

जमीन के सिलसिले में जो विदर्भ मे कानून बने हैं उनके बारे में कुछ विशेष सुझाव हों तो आप लिखवा दीजिएगा । जो कानून पास

हो गए है उनमें अब कुछ विशेष फरक करना कठिन होगा। फिर भी, यदि कोई विशेष बात हो तो मैं जरूर ध्यान दूंगा।

आपका
श्रीमन्नारायण

प्रिय चिरंजीलालजी, फरवरी २५, १९५९

आंपका "उनका उपकार" नामक पत्रक पढ़ा। आपने जिस गहरी भावना से उसे लिखा है उससे मन पर बहुत असर हुआ। जानकर खुशी हुई कि आपका ६४ वाँ वर्ष चल रहा है। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि आप दीर्घायु हों।

वर्धा में इस समय आप सब लोगों से मिलकर बहुत प्रसन्नता हुई।

आपका
श्रीमन्नारायण

प्रियवर चिरंजीलालजी, दिसम्बर १९, १९६२

आपका तारीख १७ दिसम्बर का पत्र मिला। जानकर चिन्ता हुई कि उस दिन आपकी तबीयत खराब हो गई थी। आशा है अब आप स्वस्थ होंगे।

यह जानकर संतोष हुआ कि देश की संकट अवस्था को देखकर आपने कुछ नियम लिया है और सुरक्षा फंड के लिए रकम देने का भी निश्चय किया है।

मुझे दुःख है कि जब वर्धा आता हूँ तब आपसे शान्ति से बात नहीं कर पाता। काम इतना रहता है कि सचमुच एक मिनट की फुरसत नहीं मिलती।

आपके ध्यान मे कोई भी बात आवे तो मुझे निस्संकोच लिखते रहे।

आपका
श्रीमन्नारायण

श्री रिषभदासजी रॉका के पत्र

प्रिय भाईजी, वर्धा : १८-५-४९

बिना आपके 'राम के बिना अयोध्या सूनी' की तरह वर्धा सूना-सूना सा लगता है। यह बात सही है कि आपको वर्धा की अपेक्षा बाहर अधिक संतोष रहता है। क्योंकि यहा हम आपकी न तो कदर ही करते है और न आपकी भावना का ही खयाल रखते हैं। आपके दिल में हमारे कल्याण की भावना कूट कूट कर भरी हुई है। और हम ऐसे अभागे हैं जो आपके अनुभव का लाभ न उठा भावना को ठुकराते रहते हैं। जमनालालजी ने सवेरे घूमते समय बडे खेद के साथ आप पर जो बीती सो कह सुनाया। मैंने देखा वे भी बडे दुःखी थे। आपके साथ व्यवहार से उन्हे भी दर्द हुआ। खैर, मुझे लगा कि आपको पत्र लिखूँ, लेकिन आप तो जानते ही हैं कि मैं कितना आलसी हूँ। दो दिन बीत गये। आज आपको खुश खबर सुनानी थी सो पत्र लिख रहा हूँ। केशर बाबू सेकण्ड डिविजन में पास हो गये। भगवान् अब उसे ठीक काम मे लगा दे यही मनोकामना है। लेकिन काम मिलाने मे आसानी जरूर हो जावेगी। और आपकी पुण्याई से जरूर उसे अच्छा काम मिल जावेगा।

चि० चंपालालजी भी पास हो गये! बाबाजी से मिलते रहता हूँ। कल उन्हे स्टेशन पहुँचा दूँगा।

रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाईजी, हैदराबाद :

मैं कल तो आपको पत्र नहीं लिख सका। आज चि० राजमती को लिखा है, सो आप उसे पढ़कर सुनाना। न मालूम क्यों मैं चि० राजमती का विचार मन से नहीं निकाल पाता हूँ। भगवान् उसे आरोग्य दे, यही प्रार्थना है।

बकरियाँ मिली होगी। राजमलजी के आग्रह को टालना कठिन था इसलिए आया, लेकिन इस बार बाहर जाने का जरा भी इरादा न था। जमनालालजी देहली गये होंगे? घर के तरफ ध्यान देवे।

राजेन्द्र की माँ इस बार मेरे आने से काफी दुःखी थी। यों तो घर मे बच्चियाँ उसे आराम देती ही हैं; लेकिन उसे जो राजेन्द्र के जाने का दुःख है वह किस तरह मिटाया जा सकता है; भाई साहब! क्या बताऊँ, उस लड़के को भूला जाय, ऐसा नहीं था। इतनी छोटी उम्र मे उसमे कितने गुण थे। सचमुच ऐसे सद्गुणी बालक को भूलना माँ के लिए बहुत ही कठिन बात है। मैं भी क्या कहूँ? मुझे उसका शोक नहीं है, पर उसका स्मरण तो हो ही जाता है। और मेरा वैराग्य यदि कोई जाग्रत रखता है तो वह राजेन्द्र ही; नहीं तो मेरे जैसे अनिश्चित विचार के आदमी से क्या बन पड़ता। खैर आप राजेन्द्र की माँ की तरफ ध्यान रखने को चि० ईश्वर से कहना।

आज बिरदीचंदजी आये थे, उनसे बातें हुई। शायद अपने काम का कुछ न कुछ निपटारा हो जावेगा। बहुत ही प्रेम व अपनेपन से बात की। श्री चंपालालजी यहीं पर हैं।

रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब, पूना : १२-५-५३

मैं आज बाहुबली से यहाँ आया। वहाँ पर आपकी बहुत याद की गई। पू० समंतभद्र महाराज ने भी आपको याद किया। बहुत अच्छा

होता यदि आप आ सकते। जरूरी काम और आपकी इच्छा का खयाल कर मैंने आग्रह तो नहीं किया था, लेकिन मेरी बहुत तीव्र इच्छा थी कि आप आवें। बहुत शाति मिलती आपको। इन दिनों स्वामीजी का तेज बहुन बढ़ गया है। उनकी मुद्रा की शाति और अनुभवयुक्त वचन बहुत परिणामकारक होते हैं। मैंने दो प्रवचन सुने। बहुत शाति माल्रूम दी। महाराज की इच्छा थी कि मैं कुछ दिन और रहूँ। यदि आप होते तो मैं भी रह जाता, लेकिन फिर जून के बाद आठ दिन आकर रहने का वादा किया है। मैं सत्संग के साथ कुछ काम भी चाहता हूँ, सो वह स्वामीजी देनेवाले हैं। इधर के दक्षिण समाज के कार्य की दिशा निश्चित करने के लिए बातचीत करना तथा साथ मे घूमना, यह इरादा है।

५० रुपये की रसीद साथ मे भिजवा रहा हूँ। अब आपको सभा-सोसायटी मे रस नहो रहा, इसलिए वहाँ जो कुछ हुआ उस विषय में लिख कर आपका समय नष्ट नहीं करता पर मुझे तो इधर आने से पूरा सतोष रहा और उससे भी ज्यादा सब लोगों को मेरा आना अच्छा लगा।

यदि आपका दिल दुखाने जैसी बात मेरे जान या अनजान मे बन भी पड़ी हो, तो माफ कर दे और मुझसे आप निःसंकोच भाव से ऐसी सेवा ले कि जिससे आप खुश रह सके आपका मन प्रसन्न और आनदी रहे। मुझे इससे ज्यादा खुशी और किसी बात मे नहीं होगी कि आपको मैं सतोष देनेवाला काम कर सकूँ। यदि मुझसे आपकी कोई भी किसी प्रकार की सेवा बन पड़ी तो सचमुच मुझे बहुत सुख मिलेगा। कम से कम मुझे सुख मिले इसलिए तो भी आप मेरी सेवाएँ ले।

आप प्रसन्न होंगे। तखतमलजी तथा दूसरे मित्रों को मंडल के जल्से पर जरूर बुलावें। मेरी हार्दिक इच्छा है कि यह जल्सा अच्छा और सफल बने, क्योंकि इस बार हम अपने मित्र को अध्यक्ष बना रहे हैं।

रिषभदास के प्रणाम

प्रिय श्री भाई साहब, पूना : १८-१२-५४

आपको देने के लिए मैंने गंगाबिसनजी भाईजी से कहा था, संभव है समाचार मिले होंगे। मैं बम्बई १०½ बजे पहुँचा। गाडी बहुत लेट हो गई। आप चार मित्रों के आशीर्वाद व सहयोग से काम ठीक आ रहा है। आगे के विषय में बात की। वे खर्चा बढ़ावेंगे ऐसी उम्मीद है। उन्होंने भले ही आराम लेने को कहा हो, पर मैं तो काम में ही लगा रहूँगा; इसीमे हित है। हाँ, अपने को किसीकी कांपीटीशन नहीं करनी है। जो कुछ भी काम मिले, मिलाने का प्रयत्न करना चाहिए। दूसरे को बुरा बताकर या दूसरों से कमीशन बढ़ाकर काम लेने की चेष्टा बिलकुल नहीं करनी है। दोपहर को कमलनयनजी और रामकृष्णजी से मिला। दोनों भाइयों की बड़ी कृपा रही। घर भोजन को ले गये। फिर सी. वसंतलाल के यहाँ शादी में गया। रात को नारायणगाँव वालों से मिलने गया। उनकी बहुत मदद हो रही है। उनकी मदद से बम्बई का भी काम बढ़ेगा। फिर दूसरे दिन ऑफिस का काम किया। ६ बजे शाम को ताराचंद भाई के साथ उद्योग-गृह देखने गया। ९ बजे वापिस लौटकर सो गया। १७ तारीख को साहूजी के यहाँ गया। शातिप्रसादजी साहब भी मिले। बहुत ही प्रेम दर्साया। इन दोनों भाइयों की मंडल और अपने प्रति बड़ी सहानुभूति है। ९ तारीख को मंडल का ऑफिस पू. नाथजी के हाथों से खोलने का निश्चित हुआ। ८ जनवरी को कार्यकारिणी की मीटिंग रखी है। १ जनवरी से या २-३ से बम्बई रहकर मंडल का प्रचार करना है। मैंने १ जनवरी से बम्बई जाने की बात कही। यह सब ताराचंद भाई पर छोड़ा है। जैसा वे कहेंगे करके उनका काम सरल कर देना है। पू. नाथजी ने उद्घाटन की मंजूरी दे दी है।

अब आपके प्रश्न का उत्तर देना है। आपने कहा था कि हम जानते हैं कि अमुक बात बुरी है, फिर भी गलती क्यों कर बैठते हैं?

पिछले अनुभव से सीखते क्यों नहीं ? इसमें बात यह है कि हमारे अच्छे विचारों से बुरे विचारों का हम पर अधिक प्रभाव है। हमारे पुराने सस्कार और आदतें तथा आसपास का वातावरण यह सब हमारे हाथ से भले के एवज में बुरे काम करवा लेते हैं। हम जो संकल्प करते हैं उनमें दृढता रहे, पर मन पर काबू आ जाय तो यह बात आसान हो सकती है।

सवाल यह है कि मन पर काबू कैसे आवे। प्रथम मन को स्वस्थ, प्रसन्न, दृढ़ और एकाग्र बनाने के लिए क्या करना चाहिए ? शरीर स्वस्थ रहे तभी मन स्वस्थ रहता है। हमारा खान-पान, आहार-विहार ऐसा हो जिससे हमारा स्वास्थ्य अच्छा रहे, पर उसमे प्रमाद भी न बढ़े। न तो शरीर के लाड़ लड़ाये जायँ और न उसे नाहक का कष्ट दिया जाय, खाना कम, पर सात्विक रहे। सवेरे जल्दी उठे, रात को जल्दी सोवें। दोपहर को भोजन के बाद भी थोड़ा आराम करें। जल्दी उठकर घूमने जावें। एकान्त में कुछ ध्यान करें।

ध्यान मे हमारा चित्त जिस अच्छी बात पर लगता हो, लगावें। लेकिन जिस विषय पर चित्त को लगावें उस समय वह इधर-उधर बुरे या भले किसी विचार मे न दौडे। इस तरह चित्त को एकाग्र करने से आपका चित्त स्वस्थ, प्रसन्न होगा और आपमें दृढ़ता बढ़ेगी। पर यह करने में उस पर होनेवाले सुख-दुःख के आघातों को आप शान्त चित्त से सहन करें। उसका मन पर परिणाम न होने दें। धीरे-धीरे इस तरह के अभ्यास से आपका मन आपके अधीन बनेगा। उसमें जैसी-जैसी शक्ति बढ़ेगी वैसी-वैसी शुद्धि भी बढ़ानी चाहिए। मलीन, अशुद्ध या बुरे विचार ही न आने दें। किसीकी निंदा सद्हेतु से भी नहीं करनी चाहिए। बुरे विषय की चर्चा मन पर संस्कार छोड़ती है और आगे चलकर वे सस्कार प्रबल हो जाते हैं। हमारे आस-पास जो लोग हम देखते हैं, वे भी प्रायः ऐसे ही होते हैं। इसलिए

बुरे काम इच्छा न रहते हुए भी हमसे हो जाते हैं। यदि हम बुरे कामों को सचमुच छोडना चाहे और वैसा संकल्प कर दृढ़तापूर्वक उसें निभाने का प्रयत्न करें, तो वह बात बहुत कठिन नहीं है। पर संकल्पों में दृढ़ता और अपने पर नियत्रण रख सकें, ऐसा संयम हममें नहीं है। विचारों की स्थिरता भी नहीं रहती। किसी बात को गहरा विचार कर निश्चित नहीं करते। लेकिन दूसरे के कहने पर हमारे विचारों मे परिवर्तन होता रहता है। इसी कारण से हम किसी एक विचार या बात पर दृढ़ नहीं रहते। यह दोष अपने में आ ही जाता है। लेकिन कुछ बातें तो हमे निश्चित रूप से ही धारण कर लेनी चाहिए और मन पर ऐसा धीरे-धीरे काबू आ जाना चाहिए कि बुरे विचारों की ओर मन जावे ही नहीं। उसे हम जहाँ ले जाना चाहें, वहाँ वह जाय।

नाना विषयों में निरर्थक चित्त की शक्ति को बाँटकर हम उसें शक्तिहीन बना देते हैं। आवश्यक और उपयोगी विषय के अतिरिक्त चित्त को हम न लगावें। बिना जरूरत के विषयों पर विचार करना छोड़ें। यह तभी होगा जब हम चित्त को खाली रखना सीख लें। इससे बहुत लाभ होता है। जैसे नींद से शरीर में ताजगी आती है वैसे ही मन को खाली रखने से भी होता है। यह सब हम प्रयत्न करते रहे, तो आदत बन सकती है, पर प्रयत्न सतत रहना चाहिए।

रिषभदास के प्रणाम

वर्धा : २४-१२-५४

प्रिय भाई साहब,

आपका कृपा पत्र मिला। मैं ७ जनवरी को बंबई आऊँ, ऐसा श्री ताराचद भाई का हुक्म है; उस मुताबिक ७ तारीख से ५-७ रोज बबई रहना है। आपका वहाँ हाजिर रहना जरूरी है। ८ तारीख को साहूजी या लालचंदजी के यहाँ वर्किंग कमेटी की बैठक है। फिर ५-७ रोज रहकर प्रचार-काम करना है। आपने मुक्ति की बात लिखी सो मंडल के काम के लिए आपकी जरूरी है। मुक्ति मैं कैसे दे सकता हूँ।

अहमदाबाद में पंडितजी, धीरजभाई, सुखलालजी तथा शंभुभाई से मिलना। शंभुभाई के यहाँ जयभिक्खु तथा मनुभाई जोधाणी व रतुभाई आदि मिल जावेंगे। मैं पंडितजी व धीरजभाई को लिखता हूँ।

रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब, पूना : २१-१-५५

अभी मैं यहाँ बंगले का निश्चित कर आया। १३० रुपये किराये से बंगला मय गॅरेज के लिया। वहाँ २६ तारीख को रहने के लिए जावेंगे।

जैसे आपकी इच्छा मेरे वर्धा रहने की तीव्र थी, वैसे ही मैं आपके साथ रहने के लिए बहुत ही उत्सुक था। बात यह है कि साथ रहने से एक-दूसरे को सहारा रहता, संतोष रहता, पर योग नहीं, उसे आप हम क्या करेंगे।

नया मकान स्वतंत्र है। बगीचा है और बहुत ही शान्त और अच्छी बस्ती में है। ऐसा लगता है वहाँ कुछ लिखना-पढ़ना और ध्यान-चिंतन ठीक से हो सकेगा।

भाई बांठियाजी तो व्यावहारिक और विवेकशील हैं। आप-हम जैसे भावुक नहीं, इसलिए उनकी सलाह योग्य ही रही।

गरमी तो अब उधर बढ़ ही रही होगी। यहाँ भी सर्दी कम हुई है, पर जगह ठंडी है।

सौ. राजकुमारी का कहना है कि अब मकान बेचकर जहाँ रहना हो वहीं खरीद लेना चाहिए। यहाँ १५ से २० हजार तक में अपने रहने लायक अच्छा मकान बन सकता है।

आप मन में किसी तरह का विचार न लावें। मन को अच्छा रखें। मन ही मनुष्य के बंध और मोक्ष का कारण है। स्वाध्याय, चिंतन और ध्यान में समय अधिक लगावें। रात को ८ बजे के बाद मौन ले लेवें।

अब मध्यम स्थिति के लोगों की हालत ज्यादा बिगडेगी। खाने पहनने की किसीको तंगी नहीं रहेगी, परंतु मंदी के कारण सब चीजों के दाम कम होंगे। व्यापार मंदा होगा, आमदनी घटेगी। यदि उस प्रमाण में खर्च में उचित परिवर्तन नहीं किया, तो कठिनाई पडेगी। वास्तव मे बड़प्पन के खर्चे ही मनुष्य को भारी पडते हैं। सो उन्हें कम करना ही पडेगा। जितने फैशन, विवाह-शादियाँ, लेन-देन के खर्चे बढ़े हुए हैं, उन्हे घटाये बिना चारा नहीं। आमदनी भी वे ही कर सकेंगे जिन्हें मेहनत करने में शर्म न मालूम पडे, फिर भी ज्ञानी और व्यवहार-कुशल हों।

आप खुश रहिये। मन को शान्त रखिये। भगवान् सब कुछ अच्छा करेगा। जो भगवान् पर भरोसा रखकर अच्छे काम करते हैं, उन्हें पछताना नहीं पड़ता। आपका सब कुछ अच्छा होगा, ऐसा ही मन कहता है। अभी-अभी सोहनलालजी दुगड का पत्र मिला। अच्छा पत्र था।

रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब, पूना : २७-१-५५

आपके सब पत्र मिले। सभी दृष्टि से मेरा पूना रहना और यहीं पर मकान बनवा लेना इष्ट है। अभी मकान बनवाने की मैं जल्दी नहीं करूँगा। पहले तो जिनके देने-लेने है, वे साफ कर दूँगा; फिर पैसा इकट्ठा हो जाने पर यहाँ पर ही मकान बनवा लूँगा। बीस हजार में छोटासा हम लोगों को रहने के लिए सुभीते का मकान बन जावेगा। इस दृष्टि से आप वर्धा का मकान बेच दें, यही इष्ट है। यों लागत साढ़े चौदह हजार की है। यदि १४००० आ जाते तो ठीक रहता पर जो भी आवे अच्छा ही है। क्योंकि आपसे बढ़कर मेरा हित देखनेवाला कौन होगा। आप जितने भी अधिक आ सके, उतने दिलवाने का प्रयत्न करेंगे ही। पर एक बात यह ध्यान मे रखनी है कि बन सके मकान विजय के रहे, यह अच्छा लगेगा। थोडे से फर्क के

-लिए तो दूसरे को मकान देना नहीं है। हाँ, बहुत ही अन्तर पड़ता हो तो बात दूसरी है।

रिषभदास

प्रिय भाई साहब,

पूना : ४-२-५५

आपके पत्र बम्बई में मिल गये थे। मकान के बारे मे आपने जो कुछ लिखा सो मुझे उस विषय मे सब बातें मंजूर ही हैं, परतु राजेन्द्र की माँ का कहना है कि मकान वेचने पर यह रकम मुझे नकद मिलनी चाहिए जिससे मैं वह रकम मेरे नाम पर सुरक्षित जगह जमा रखूँ या गवर्नमेंट पेपर में लगाऊँ। बात उसकी भी ठीक ही है। इसलिए भाई विजय जितनी भी रकम दे सके वह अधिक-से-अधिक दें, बाकी के हवाले डाले जायँ और वह रकम मैं उसे (राजकुमारी को) दूँ। मुझे भी रकम इतनी देने मे कुछ कष्ट तो पडेगा ही, पर करना तो पडेगा ही। इसलिए आप मेरी ओर से भाई विजय से प्रार्थना करें। वह ३ के एवज में ४–५ दे सके तो अच्छा, नहीं तो फिर मुझे व्यवस्था करनी पडेगी।

मैंने तो केशर कुमारको पत्र लिख दिया था। चेक भी वापिस भेज दिया था।

चि० रतन के विषय में सोचना जरूरी है। जब आप पधारेंगे, बात करेंगे।

शेअरवाले का नोटिस आया लिखा सो जाना। चिंता की बात है। बाकी भगवान् ही सबकी टेक रखता है।

रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब,

पूना : ५-२-५५

आपका ३-२-५५ का पत्र मिला। श्री शिवाजी महाराज वहाँ आये, यह जाना। पू० माताजी भी वहाँ हैं और मेरी याद करती हैं, लेकिन मैं अब यहाँ कुछ माताजी के काम मे ही लग रहा हूँ। पू० बापूजी व काकाजी ने गाय के काम की मुझसे आशा रखी थी।

लेकिन वह काम उनकी अपेक्षा के अनुसार कर नहीं पाया था। अब कुछ ऐसा लग रहा है कि वे दोनों इस काम का आदेश दे रहे हों।

पू० बापूजी ने कहा था तुम गोमाता की सेवा करोगे तो तुमको वह सब कुछ देगी। ऐसा ही कुछ योग जम रहा है।

यों सोहनलालजी का भी पत्र आया था। वे गाय के काम के लिए कुछ करना चाहते हैं। मेरा भी सहयोग चाहा है। फिर यहाँ पूना पिंजरापोल का शताब्दी-महोत्सव था। श्री मुरारजीभाई वहाँ आये थे। 'हमारा आहार और गाय' किताब मैंने उनको तथा श्री मुकुन्दलालजी पित्ती को दी थी। उन पर काफी असर हुआ और मुरारजीभाई ने गाय के विषय में बहुत अच्छा कहा और उस काम में सहायता उनसे मिल सकती है। मुकुन्दलालजी पर भी उस पुस्तक का बहुत असर हुआ। वे भी चाहते है कि कुछ काम हो। फिर बम्बई में श्री रामप्रसादजी खंडेलवाल जो एक करोड़पति हैं और मेरे पुराने मित्र हैं, उनसे भी बात हुई। म्हात्रेजी जो बहुत ही विचारक और अच्छे कार्यकर्ता हैं, उनसे चर्चा हुई। अब ऐसा लग रहा है कि गाय को बचाने और सेवा के लिए प्रयत्न किया जाय तो अवश्य फल आवेगा। आज श्री मुकुन्दलालजी का फोन था। उन्होंने मुझे कल बुलाया है। मेरी श्रद्धा है कि गोमाता की सेवा से मेरा कल्याण ही होगा। मैं पूना बम्बई रहकर, जो गो-सेवा में रस लेते हैं, वे मेरी जो कुछ भी सेवा लेंगे, दूँगा। इस निमित्त से कुछ बडे-बडे लोगों का संपर्क भी आवेगा और काम भी होगा।

पिछला साल मेरा घूमने और काम जमाने मे गया। अब कुछ तो काम जमा और ज्यादा बम्बई मे ही जमाना श्रेयस्कर लगता है। वैसा मेरा प्रयत्न चल रहा है और उसमें यश भी मिलने की आशा है। इसलिए ज्यादा न घूमकर बम्बई में ही काम बढ़ाऊँगा। गोमाता के आशीर्वाद या शुभ प्रवृत्ति के कारण मेरा काम भी अच्छा जमेगा

इसलिए मैं अब मेरा कार्य-क्षेत्र सेवा तथा व्यापार इधर बढ़ाऊँ यही इष्ट है।

आप यह तो ध्यान मे रखिये कि मैं कोई नई जिम्मेवारी नहीं लूँगा, पर बन पडे वह सेवा करता रहूँगा। और वह भी चुपचाप, जो कि मेरा पहले से ध्येय रहा है। रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब, बबई : ८-२-५५

आपका पत्र और श्री ताराचद भाई ने आपको दिया हुआ पत्र मिला। आपने ताराचद भाई का पत्र भेजकर बहुत अच्छा किया।

मेरी आपसे बिलकुल शिकायत नहीं है। जब मेरे मन में यह शक हुआ कि आप मुझसे नाराज हैं, तो मैंने वैसे लिख भी दिया था। पर जब आपने लिखा कि आप बिलकुल नाराज नहीं हैं तो आपसे मिल कर सब सफाई हो गई। किसी तरह कोई गलतफहमी नहीं रही। उसके बाद मैंने श्री ताराचद भाई से आपके विषय में कोई शिकायत नहीं की और आपके विषय मे बात भी नहीं की।

मेरी श्री‥ ‥ ‥ के साथ शिकायत तो नहीं है, पर उनसे डर अवश्य लगता है। वे कब किसके साथ भिड़ा देंगे या क्या कह देंगे इसका कोई भरोसा नहीं। यदि उनके साथ काम करना हो तो सफाई यानी साफ बात करना चाहिए, नहीं तो वे कब क्या आक्षेप कर बैठेंगे, कह नहीं सकता। इसलिए 'जैन जगत' के विषय मे मेरी जिम्मेवारी सिर्फ सपादक की ही रहेगी। व्यवस्था, हिसाब की जिम्मेदारी से मैं मुक्त रहना चाहता हूँ। वह काम श्री कनकमलजी के जिम्मे रहेगा और वे अच्छी तरह से करेंगे। यहाँ से 'जैन जगत' निकालना हो तो जैसी भी बात हो उस मुताबिक खर्च उनके पास पहुँच जाना चाहिए।

जैसे आपने मुझे सावधान किया था कि मैं श्री‥‥‥‥‥ से मडल पुरता ही सबध रखूँ, इससे अधिक बातचीत करने में या घरेलू सबध बढ़ाने में खतरा है। उस मुजब करना ही श्रेयस्कर समझकर मैं

ज्यादा संपर्क से इसलिए डर रहा हूँ कि वे घर की बातें चाहे जहाँ और चाहे जिस तरह से कहने में संकोच नहीं करते। श्री दादा धामणस्कर यहाँ आये थे, तब उन्होंने कहा कि............ने जामनेर वालों से कहा कि भाई साहब को लड़कियाँ मार रही थीं, मैंने छुड़ाया। घर है वहाँ कुछ बात न हो यह संभव नहीं, पर उस बात को बढ़ा-चढ़ा कर भी कहा जा सकता है और कई बातें चर्चा के योग्य भी नहीं होतीं। उसकी चर्चा नहीं की जा सकती। दरअसल वैसा कुछ बना भी नहीं था। पर मैं ....से डरता इसलिए हूँ कि मनुष्य के नाते से मुझसे भूल न हो यह संभव नहीं। उस भूल को मुझे बताने के एवज में यदि मेरा कोई मित्र उसकी बाहर चर्चा करे, तो उससे न मेरा लाभ है और न उसका। मैं अपने मन को मलीन करना अच्छा नहीं मानता और इसीलिए कम-से-कम संबंध रखना और संबंधों में गलत-फहमी न हो, इसलिए साफ बात करके काम करना उचित मानता हूँ। पर यदि श्री ....को मेरे साथ काम करना मुश्किल ही हो रहा हो तो मैं भी नाहक किसीके मन के खिलाफ गले नहीं पडना चाहता। वे चाहें तो मैं अलग हो सकता हूँ। मुझे किसी प्रकार का मोह नहीं है।

मैं तो आप कहेंगे उस तरह अपनी शक्तिभर बन पड़े वह काम करता रहूँगा। पर जिस काम के करने से बदनामी मिलती हो, प्रेम घटता हो और मन मलीन होता हो, वह काम करने की इच्छा कम रहती है।

मंडल का काम तभी हो सकता है, जब कोई उसके लिए बर्दाश्त करने को, साथियों को निभाने को और दूसरों के दोषों को चला लेने को तैयार हो। हम सब मिट्टी के पुतले हैं, हममें दोष हैं। पर ऐसे दोष कि जो बेईमानी में शुमार न हों, चला लेने की तैयारी चाहिए। दोषों को देखने और उनकी चर्चा करने में लाभ नहीं दिखता।

यदि 'जैन जगत' पूना से निकालने में प्रेम में फर्क आता हो या गलतफहमी बढ़ती हो, तो उसे जहाँ से खुशी हो वहाँ से सब मिलकर सोचकर निकाला जा सकता है।

मैं इन दिनों जो मेरे पर काम की जिम्मेवारी, बीमे के काम की है, उसका ख्याल करते हुए 'जैन जगत' का संपादन और थोड़ा-बहुत किसीने कह दिया और होने जैसा काम हुआ वह करने के सिवा ज्यादा कर नही पाऊँगा। पर मैं कोई ऐसा काम नहीं करूँगा, जिससे मंडल को हानि पहुँचे।

रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब चिरंजीलालजी,

पूना : १४-२-५५

आपके ८-९-११ व १२ के इस प्रकार सब पत्र हैद्राबाद से वापिस लौटने पर मिले। हैद्राबाद ९ तारीख को भाई साहब राजमलजी के साथ गया था। कल १०-११ बजे यहाँ वापिस आया। इस कारण से उत्तर में विलंब हुआ, क्षमा करें।

श्री लालचंदजी बंबई गये हैं, वापिस आने पर श्री केशर बाबू को पन्द्रहसौ रुपये के ड्राफ्ट की रसीद भिजवा दूँगा।

आपने ९ तारीख के पत्र में जो बातें लिखी थीं, वे कुछ अंशों में सही हैं। उनका खुलासा यह है :

श्री चन्दनमलजी एक जगह रहने के खिलाफ थे और उस कारण नाराज थे, लेकिन पूना रहने के खिलाफ नहीं हैं। उल्टे इससे उन्हे खुशी ही है।

सौ० राजकुमारी की इच्छा वर्धा रहने की थी और मकान का मोह उसको था। गरमी के बाद आने का इरादा भी था, पर अब कामकाज इधर बढ़ रहा है। इधर कापीटिशन कम है। यहाँ पर बडे लोगों से संबंध बढ़ रहे हैं, इसलिए पूना या बंबई के पास रहने से मुझे कम घूमना पडेगा और तकलीफ कम रहेगी। इन

सब बातों पर कल राजकुमारी, विमल, रतन आदि ने विचार कर यह निर्णय लिया कि घर चि० विजय को बेच देना चाहिए।

सौ० राजकुमारी को उसकी रकम देनी है, सो मुझे विजय जो रकम देगा वह जाकर बाकी की रकम की मैं तजबीज कर दूँगा। विजय यदि ४००० नगद दे देता और बाकी ९००० के तीन-तीन हजार के तीन हफ्ते कर लेता तो ठीक रहता; पर उसके लिए यह सभव न हो तो जैसी आपने बात की वैसी व्यवस्था की जाय। आपने जो ठहराया, सो मुझे मंजूर। मेरी तो सिर्फ प्रार्थना भर थी। आप ५०० सौ रुपये ले लें, बाकी ३१-३-५५ को दे दें।

आपको यदि इस तरफ काम न हो तो तकलीफ देने की हिम्मत नहीं होती। यों आपके आने से ठीक रहता, आपको भी कुछ शांति मिलती और मुझे भी आपके सत्संग का लाभ मिलता।

आपने लिखा कि हम लोगों को प्लानिंग करके काम करना चाहिए सो यह कमी तो मुझमे भी है, पर यही प्रयत्न रहता है कि सामने जो बात आये उसे उस समय विवेक पूर्वक करने का प्रयत्न करें।

विजय बाबू के रुपये के आने बाबत मुझे रत्तीभर शका नहीं है; वे तो निश्चित ही आवेंगे; लेकिन राजकुमारी का कहना है कि मुझे मेरे मकान के रुपये नकद मिलने चाहिए यानी विजय बाबू दे व बाकी के मैं दूँ, पर उसे यह रकम नकद चाहिए यानी वह इस रकम के लिए मुझ पर विश्वास नहीं रख सकती, क्योंकि मैं खर्च कर डालूँगा, यह उसे डर है। इसलिए आप या विजय बाबू इस विषय में किसी तरह की गलतफहमी न करें।

मेरा इस वक्त उधर आने का कार्यक्रम नहीं है। श्री गेदालाल की सगाई हो गई, बहुत खुशी हुई। चि० रतन का इलाज चल रहा है। अभी ८-१० रोज चलेगा। आपके आने पर उसके विषय में विचार करेंगे।

चि० शांतिलालजी काम कर रहे हैं और धीरे-धीरे वे इसमें तरक्की कर लेंगे। मोटर लेकर ही गये थे।

खर्च कम करने बाबत लिखा सो सौ० राजकुमारी के हाथ से खर्चा कम हो, यह उम्मीद नहीं। पर किया भी क्या जा सकता है। मैं तो आप कहें वैसे कम खर्च में रह सकता हूँ।

मैं मार्च में वर्धा आऊँगा तब सब लेन-देन का आकडा तैयार कर लूँगा। लखनऊवालों के विषय में लिखा सो वह बात मेरे ध्यान में है। मैं एक पैसा भी कर्ज का रखना नहीं चाहता।

आपका ११-२-५५ का पत्र भी अभी मिला। रात को जो आपको वेदना हुई सो विचार पूर्वक देखेंगे तो वह अपने ही कारण हुई। वैसे अपने को कौन दुःख देता है। हम ही नाहक अधीर बनकर सामने वाले की बात पर पूरा विचार न कर गुस्सा होते हैं। वेदना बढा लेते हैं। कोई हमे कहता है और यदि वह ठीक है तो उसपर विचार करें और यदि बेवाजिब बात हो तो उस आदमी के अज्ञान पर दया करे।

रिषभदास

प्रिय भाई साहब, पूना : २३-२-५५

आपका पत्र मिला। पहले भी दो पत्र मिले। आपकी लिखी हुई बातों पर मैं गहराई से विचार कर योग्य सीख लूँगा। मैं वर्धा नहीं आया, यह एक तरह से अच्छा हुआ। क्योंकि मैं रुवी की बहुत कापिटिशन करता हूँ, इस कारण से रुबो को नुकसान पहुँच रहा है—ऐसा सेटलवाड से कहा गया। जब कि मैं इतना डरकर चलता हूँ। फिर भी मेरी बदनामी की जाती है तो वहाँ रहकर यदि मुझसे कोई भूल होती, तब तो फिर न मालूम क्या होता। खैर यह तो आप जानते ही हैं कि मैं वैसे बदनामी या लोगों से डरकर काम करता हूँ, ऐसी बात नहीं; पर मेरा चित्त मलीन न बने यही मेरा प्रयत्न है। यदि मैं वर्धा रहता या वर्धा में आऊँ तब तो मेरी बदनामी और भी ज्यादा होती या की जावेगी।

लोग मकान के विषय मे चाहे जो कहें, आप किसी तरह का विचार मन मे न लायें। मैं स्वप्न में भी आपको दोष दूँगा, तो नर्क में पड़ूँगा। आप मेरे परम हितैषी हैं और आगे भी रहेंगे। रिषभदास

प्रिय भाईजी, पूना : २६-२-५५

आपका पत्र मिला। चर्चा शांत हो गई, लिखा सो खुशी हुई। कल तुलसीजी महाराज बंगले पर ३० साधुओं के साथ रहे। यहाँ उनका बहुत अच्छा प्रभाव अजैनों पर पड़ा। हम दोनों ने बहुत चर्चा की। घर की भी बात हुई। घर बेच देना है और वह भी विजय को।

नम्रता वाला लेख निकलने से इधर भी लोग बहुत असंतुष्ट हैं। उसकी जरूरत नहीं थी, पर हो गया उसका इलाज क्या?

मैं जमनालालजी का ही साथ दूँगा और इस कारण से मुझे जैन-जगत छोड़ना पड़ेगा। क्योंकि ऐसे लेखों से मंडल को लाभ नहीं है, पर उनको रोकने से उन्हे स्वतंत्रता में बाधा मालूम पडेगी। वे जैन-जगत छोड़ें, यह भी संभव है। ऐसे मौके पर मेरा यही कर्तव्य हो जाता है कि साथी का साथ दूँ।

जो घटना हो गई, उसे सुधारने का मेरे हाथ में नहीं है। उन्हीं के हाथ में है। पर मैं उन पर कोई जोर-जबर्दस्ती करना नहीं चाहता। वे जो कुछ करेंगे, उनका साथ दूँगा, जबतक वे साथी हैं। साथियों के लिए बर्दाश्त करना आता है और वह करूँगा। रिषभदास

प्रिय भाई साहब, पूना : १२-३-५५

सत्य समाज का जल्सा अच्छा हुआ, जानकर खुशी हुई। मंडल का जल्सा २३-२४ मई को करने बाबत लिखा, सो इस विषय में अंतिम निर्णय तो श्री ताराचंद भाई ही करेंगे। चिंचवड़ में मई मे जल्सा करने की सुविधा नहीं है। अप्रैल में हो सकता था, पर अमरावती का जल्सा है और अबतक अध्यक्ष का कोई निश्चित नहीं हो पाया; इसलिए यहाँ तो अब जल्सा अक्तूबर में ही हो सकता है।

अमरावती आने का प्रयत्न रहेगा। क्योंकि इन दिनों यहाँ काम काफी बढ गया है, चिंचवड़ के काम मे बहुत समय देना पड़ रहा है। इसके अतिरिक्त बीमे का काम भी ज्यादा बढ़ जाने से समय नहीं मिल पाता।

मैं २० तारीख को अहमदाबाद जाऊँगा। पं० बेचरदासजी के पास १-२ रोज ठहरने का इरादा है। वहाँ से मेवाड जाऊँगा। यदि बन पड़ा, तो सतबालजी के पास भी हो आऊँगा। देवगढ, राणावास, छोटी सादडी, उदयपुर का कार्यक्रम है। उदयपुर मे चि० सूरज की जिठानी का स्वर्गवास हो गया, इसलिए जाना है। २-४ रोज सूरज के पास रहूँगा। छोटी सादड़ी में जल्सा है गुरुकुल का, वहाँ से ३-४ तारीख तक वापिस लौटना होगा।

यदि संभव हुआ तो अमरावती आऊँगा। आप प्रसन्न होंगे। जमनालालजी शायद नाराज हुए होंगे, क्योंकि मैंने उनको बिना जरूरत की सलाह दी थी।

आशा है आप प्रसन्न होंगे। कृपा भाव रखें।

रिषभदास के प्रणाम

चि० विमल को प्लूरिसी हो गई। चिंता है, पर इलाज चल रहा है। बुखार, खाँसी और कमजोरी है। रिषभदास

प्रिय भाई साहब, कलकत्ता : २७-४-५५,

आपका का पत्र मिला। मैं आज सबेरे कलकत्ता पहुँचा। आपका पत्र आशीर्वाद रूप में पाकर संतोष हुआ। इस चन्दे का सारा श्रेय सुगनचंदजी व ताराचंद भाई को है। यह एक तरह से अच्छा काम ही हुआ। पर मंडल का काम अच्छी तरह से चलाने की जिम्मेवारी अब हम सब पर आ गई है। लोग मंडल के काम और नीति को पसंद करते हैं और यह काम बढे ऐसी इच्छा भी लोगों में पाई जाती

है। अपने साहित्य और 'जैन जगत' ने लोगों में परिचय बढ़ाने मे काफी मदद की है। अब इस काम को अपनी मर्यादा में चलाना ही पड़ेगा। खासकर 'जैन जगत' को अनेक दृष्टि से चलाना जरूरी हो गया है।

जमनालालजी बनारस जावेंगे और उनके हित की दृष्टि से वहाँ जाना हो अच्छा व श्रेयस्कर लगा। बनारस से 'जैन जगत' निकालने में वर्धा से भी कम खर्च लगता पर वहाँ से 'जैन जगत' निकालने में आज अड़चनें होने से बंबई से निकालने का विचार रहा। बंबई से निकालने मे ७००–८०० रुपये साल का छपाई खर्चा बढ़ जावेगा, पर क्या किया जाय। पत्र का संपादन मैं पूना से करूँगा और निकलेगा पत्र बंबई से। सपादक मडल में जमनालालजी, नाहटाजी, शकरजी व धीरजभाई के अतिरिक्त सूरजचंदजी भी रहेंगे। मैंने ताराचद भाई से कहा कि अब हम सबको मडल के काम को मिलकर एक चित्त से करना चाहिए, अपने मे फूट न पडे। पहले की तरह अपनी मंडली एक चित्त से काम करेगी, तो बहुत काम होगा। पैसे की कमी नहीं पड़ेगी।

बुलड़ाने की धर्मशाला के चन्दे के विषय में आपने मुझे पहले भी कहा था और आज भी लिखा। मेरा उस काम में हर तरह का सहयोग देने की इच्छा है और मैंने यह बात भीकमचंदजी से कई बार कही और पत्र भी लिखा कि वे मेरा चाहे जब उपयोग ले सकते हैं। पर सच बात यह है कि उनको ऐसा लगता है कि इस मामले मे मेरा कोई उपयोग नहीं। बात ठीक भी है। उनके निकट सर्कल में रिषभदास के विषय मे जो चर्चा होती है, वह ऐसी ही होती है कि वह एक बदनाम आदमी है, उसे कौन चन्दा देगा। इसलिए उनका प्रयत्न भाई साहब राजमलजी, ताराचंदजी का उपयोग करने की रहती है और वैसा उन्होंने किया भी था। जब वें मुझे कोई समाचार ही नहीं देते अथवा मेरा उपयोग नहीं समझते तो मैं क्या करूँ, यह समझ में नहीं आता।

अगर पिछली कार्यकारिणी के समय वे उपस्थित रहते तो उसका उपयोग भी होता। आगे-पीछे कलकत्ते मे भी उपयोग हो सकता है। लेकिन मैं क्या करूँ। समाज को दोष नहीं दिया जा सकता। समाज बहुत ही उदार है और करोड़ों रुपये देता ही है।

मैं बहुधा यहाँ से जामनेर, जहाँ आचार्य तुलसीजी २९ से ७ तारीख तक हैं, जाकर वहाँ से पूना जाऊँगा। मैं २ तारीख तक पूना पहुँचने की उम्मीद रखता हूँ।

चि० गेंदालाल के विवाह में मेरी ओर से २१ रुपये फूल नहीं फूल की पंखुड़ी के रूप में भेंट कर दें।

कल मैंने महावीर वाणी के आपके बिक्री के रुपये एकसौ अठाईस पाँच आने (अन्दाजन) देने के लिए मोतीचन्द को कहा। वह जमनालालजी को आपके पास जमा कराने के लिए दे देंगे।

कृपा रखें। आप पूना जरूर जावें। मैं जाऊँ तो ठीक, अन्यथा चि० रतन से मिल लें। रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब, पूना : २४-६-५५

आपके दो तीन पत्रों का मैं सविस्तर उत्तर नहीं दे पाया था। कुछ काम में लगा हुआ था और कुछ मेहमानों की गड़बड़ थी। यहाँ दादा धामणस्कर व साबद्राजी सकुटुंब आये हुए हैं। वे अभी ३-४ रोज रहेंगे। आपकी कृपा से इस महीने में लाइफ का ....रुपये का काम मिला। धीरे-धीरे काम जमता जा रहा है। चि० केशर बाबू की नौकरी का क्या हुआ? श्री० लेलेजी का कोई पत्र आया क्या? वीरेंद्र भाई शहा ने क्या किया? कृपया लिखें।

बच्छराज खेतीज का शेअर तथा ट्रांसफर फॉर्म भिजवा रहा हूँ।

डॉ० जगदीशचद्रजी वाली ३५ रुपये की किताब आप कहीं रख कर भूल गए, लिखा सो उसकी मुझे भी कोई याद नही पड़ती। अपने

यहाँ की किताबों मे वह नहीं है। उसी तरह सुगनाबाई ट्रस्ट की भी मालूमात नहीं है।

आपने बंबई जमनालाल सस मे रुपये जमा कराने बाबत लिखा सो मेरा प्रयत्न था, लेकिन यहाँ टेपररी एक बेक में रकम जमा कराई थी, वह १ जुलाई के पहले दे नही सकेगी। इसलिए कुछ अड्चन पैदा हुई है। फिर भी मैं जो कुछ भी बन पडेगा, वह करूँगा।

शेअर सर्टिफिकेट को देख रहा हूँ। यहाँ होगा तो सही करके भिजवा दूँगा।

उस दिन मंडल की मीटिंग मे धीरजभाई से..........ने जो बर्ताव किया, वह उन्हे काफी अखरा ऐसा लगता है। अपनी तो बर्दाश्त की आदत है, पर बंबईवाले इसके आदी नहीं है। बंबई में धीरे-धीरे उनके साथी विरोधी होने का लक्षण दिखता है। वे रमण भाई और जयंती भाई से मंडल से अलग होने की बात कर रहे थे। मैंने उनसे प्रार्थना की है। पर मडल नाम मात्र की संस्था है, कुछ काम-धाम नहीं करती ऐसी ही टीका बबई मे चल रही है। मैंने बबई मे काम करने के लिए ताराचंद भाई से कहा भी था। अभी कुछ हो नहीं पा रहा है। मैं उनकी प्रतिष्ठा को अपनी सबकी प्रतिष्ठा मानता हूँ। इस-लिए मुझे ऐसा लगता है कि इस संस्था में जीवन आना चाहिए और काम बढ़ना चाहिए। यदि यह नहीं हुआ तो हम मंडल की प्रतिष्ठा के साथ-साथ सबकी प्रतिष्ठा को खो बैठेंगे। आप इस बात की ओर ध्यान देने की कृपा करे। मैं आज भी मानता हूँ कि किसी भी संस्था का काम साथियों के बिना हो नहीं सकता और साथी तभी निभते हैं या बने रहते हैं जब बर्दाश्त करने की वृत्ति हो। मंडल को यदि काम करना है तो कार्यकर्ताओं का संग्रह करना जरूरी है। आपने देखा ....के बिना काम नहीं रुकता, पर काम में बाधा कार्यकर्ताओं के बिना आवेगी। मेरी वृत्ति ऐसी है कि जो कुछ कहा जाय कर दूँ, इससे अधिक

नहीं। इसलिए मैं जैनजगत का काम ठीक से करने का प्रयत्न करूँगा और आपका आशीर्वाद तथा सहयोग रहा तो कुछ-न-कुछ सेवा हो ही जावेगी। और आप जो भी आज्ञा देंगे करने का प्रयत्न रहेगा। पुस्तकों के विषय में सोच रहा हूँ और मौका लगेगा वैसा उसका निकाल करते रहूँगा।

मेरे पास अभी-अभी कालेजी का पत्र आया। उन्होंने मुझे नौकरी के लिए लिखा। मुझ से वे ही नहीं और भी लोग अपेक्षा रखते ही हैं कि कुछ करूँ, पर मैं प्रयत्न करने के बावजूद कुछ कर नहीं पाता, इसका मुझे कम दुःख नहीं है।

वे अड़चन में है। चि० केशर खाली है। उसके लिए भी अबतक कुछ हो नहीं पाया। भाई बाठियाजी के लिए भी कोई उपयोग नहीं हुआ। ये सब बातें मुझे बहुत ही अखरती हैं, पर क्या करूँ ?

मेरे यहाँ काम में लगाने की वर्धा मे गुंजाइश नहीं है। कारण एक तो क्षेत्र छोटा फिर वहाँ जो प्रतिस्पर्धा की जा रही है या हो रही है, उसमें तो किसीका हित नहीं है। पूना में, बंबई में घूमने-फिरने पर काम मिल सकता है। किसी तरह मुझे अपनी रोजी चलाने में अड़चन नहीं पड़ेगी, पर मैं कुछ दिन दूसरों के लिए कुछ कर सकूँ, ऐसी परिस्थिति नहीं होने से कालेजी को मुझे लिखना पड़ रहा है कि मैं काम दे नहीं सकूँगा।

पूना में अलग रहने के बाद……रुपया मासिक खर्च हो गया। चि० रतन की जिम्मेवारी है। संपत्तिदान मे कुछ जाता है और कुछ न कुछ दूसरा खर्च करना ही पड़ता है फिर कुछ जिम्मेवारियाँ भी निभानी है। इन सब बातों से यही लगता है कि भगवान् ने दूसरों की सेवा करने की अधिक शक्ति दी होती, तो ठीक होता, पर नहीं तब तक जो है उसी शक्ति में रहकर सावधानी से चलना है।

आपको याद नहीं रहता लिखा सो शरीर का जैसा धर्म है, वह काम होता रहता है। इन्द्रियाँ शिथिल होती रहती हैं, क्या किया जाय।

आप प्रसन्न रहिये। रही जिन्दगी अच्छी तरह से कटे, इसलिए मन शुद्ध और निर्मल रखिये। बाकी संसार सब नाटक है। उसे तटस्थता से देख कर आनंद लीजिये। दुःखी मत बनिये। क्योंकि बाहर दीखनेवाला सब खेल-तमाशा है। अन्दर जो खेलनेवाला है, वह सच्चा है। वह सबसे अलग है। यह समझे हुए तो आप है, बस अनुभव कीजिये।

रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब, पूना : २१-७-५५

आपका १८-७-५५ का पत्र मिला। भाई किशोरकुमार के लिए अवश्य प्रयत्न करना चाहिए। अशुभ कर्म के उदय से कोई बात जम नहीं रही है तो भी कब शुभ कर्म का उदय होगा, यह क्या हम निश्चित रूप से जानते हैं? इसलिए प्रयत्न बंद नहीं करना चाहिए। 'साथ'ही साथ हम जिससे अशुभ कर्म दूर हो या उसका परिणाम कम-से-कम हो, यह भी प्रयत्न करते रहें। पर भाई केशर या आजकल के प्रायः अधिक लोगों का इस पर विश्वास नहीं है कि अच्छे कामों का ही परिणाम अच्छा होता है। उनका अपनी बुद्धि, शक्ति और प्रयत्नों पर अधिक विश्वास होता है। सो तो रखना ही चाहिए, पर, यदि उसके बाद भी जस न मिले तो निराश न होकर या दूसरे को दोष न देकर अपने आपको अच्छे विचार और कामों मे लगाना—यह रास्ता ज्ञानियों ने और संतों ने बताया है। मैं उपदेश नहीं दे रहा हूँ, पर ज्ञानियों की कही हुई बात ही लिख रहा हूँ।

भूलना भी कोई बुरी बात नहीं है। निकम्मी चीजों या बातों को याद रखकर करना भी क्या है। बहुत थोड़ी अच्छी बातें याद रखिए। बाकी कौन मान देता है, कौन अपमान करता है, इसकी याद करने में

सार ही क्या है। अपने यहाँ इसे आर्तध्यान कहा है, जो ममत्व के कारण होता है। वह कर्म-बंधन का कारण है। इसलिए अच्छी बातों का चिंतन कीजिए। जो गया नहीं है वह जानेवाला है, जिसका नाश नहीं हुआ उसका होने ही वाला है। फिर हम शोक किस बात का करें और मोह क्यों करें। जो आत्मा है वह तो अमर है, उसीमें ही लीन क्यों न हो जायँ। परमाणुओं का स्वभाव ही बदलने का है। यदि भगवान ने स्मृति इसीलिए ही कम की हो कि बस अब एक बात याद रहे और आत्मा मे लीन होना, बाकी सब भूल जायँ तो क्या उसमें अपना कल्याण नहीं है?

जब भूलने की आदत हो ही गई है तो दूसरों की बुराइयाँ ही आप भूलते जायँ, जो कि आपने यह बहुत किया है। बहुत थोडा समय बचा है। हम अब मौत के दरवाजे पर खडे है, कब आवेगी पता नहीं। इन्द्रियों की शक्ति नष्ट होना एक तरह से नोटिस ही है। पर हमारा यह विश्वास अटल रहे कि दुनिया भली है। उसमें कभी कभी बुराई के भी दर्शन होते हैं, लेकिन वह स्थायी नहीं है। स्थायी तो भलाई है और उसकी ही याद करते-करते जावें। रिषभदास

प्रिय भाई साहब, पूना : २६-११-५५

आपका २४-११-५५ का उपदेशभरा पत्र मिला। पढ़कर बहुत खुशी हुई।

मैं अकोला गया था, तब श्री जवाहरलालजी से मिलने की पूरी कोशिश की। घर पर गया। जिस दूकान पर वे काम करते हैं, वहा भी मोटर भेजी। जहा तक मेरा खयाल पड़ता है, वे जानबूझकर ही नहीं मिले। मैं वहा ८ बजे से २ बजे तक ठहरा। अन्त मे मुझे वहा से रवाना होना पड़ा।

आपका लिखना वाजिब ही है कि अमीर के बजाय गरीब से मिलने का प्रयत्न अधिक करना चाहिए। आपकी आज्ञा के पालन का प्रयत्न करूँगा।

श्री जवरीलालजी का रास्ता लगाने बाबत आपने लिखा सो ठीक ही है, पर इस विषय में आपको मैंने पहले वचन दिया ही था। मैं उस मुजब उनका कोई रास्ता बैठता हो और उनकी भलाई होती हो, तो मुझे उसमे मदद करने मे उज्र नहीं है। पर मेरा पक्का विश्वास है कि जब तक उनका और.... का साथ रहेगा, उनका भला होना कठिन है। फिर भी आप जो रास्ता निकालें उसमे मुझे आपत्ति क्या हो सकती है। बाकी मेरा जहाँ तक खयाल दौड़ता है, किसीकी भलाई मे साथ जरूर देना चाहिए, पर मोहवश किसीको इसलिए मदद करना कि वे हमारे हैं और उस मदद का दुरुपयोग वे बुरे काम में करें यह बात न उनका हित करनेवाली होती है और न अपना ही श्रेय करती है। जिस आदमी को सट्टे की लत लग जाती है, फिर उससे छुटकारा पाना कठिन है। फिर भी आप जो प्रयत्न करें, मेरा उसमे साथ है ही।

मैं इस बार वर्धा आया था, तब घर नहीं गया। उसका कारण मेरी तबीयत ठीक न होना था। मैं करीब २०-२५ दिन से बीमार हूँ। दाढ़ें निकालने से जो खाता हूँ, पचता नहीं। दस्तें लगती है। यों कमजोरी भी काफी बढ़ गई है। पर घूमे बिना काम होना संभव नहीं था, इसलिए बीमारी की हालत मे भी घूमना पड़ा और घूमना पड़ेगा। कारण यह है कि इस वक्त सीजन हल्का आने से काम कम आ रहा है। कापिटिशन बहुत बढ़ गई है। पहले मैं 'सार्वजनिक कामों के कारण विशेष काम कर नहीं पाता था, इसलिए मुझे जरा भी समय न खोकर भाग-दौड़ करनी पड़ रही है। शक तो यह है कि जो दस्तें लग रही हैं वे संग्रहणी की हों। पतली होती है

और बदबूदार होती है। पर मनुष्य को अन्ततक जब तक शरीर चले काम हंसी-खुशी से करते रहना चाहिए। रोना रोने से लाभ नहीं। शरीर अन्त में जानेवाला तो है ही।

आपने राजकुमारी को पालीताना ले जाने की बात कही, सो मैं ले जाना चाहूँ तो भी वह घर छोड़कर बाहर जाने को तैयार नहीं होती और न उसके स्वभाव मे परिवर्तन की मैं आशा ही रखता हूँ। बस हंसी-खुशी संतोष से निबाहना, इसमे ही ठीक है। बाकी सच तो यह है कि मुझे अपना जीवन, खासकर अंतिम जीवन, परमार्थ या परलोक का हित करने मे यानी धर्म-ध्यान और सेवा मे ही बिताना चाहिए था। पर जो सांसारिक जिम्मेवारियाँ हैं, उन्हें टाला नहीं जा सकता, इसलिए सब कुछ कर रहा हूँ। पर कम-से-कम उसमें यह तो ध्यान रहे कि खून का पानी कर या अपने प्रिय ध्येय का त्याग कर कमाना भी है तो उसका (धन का) दुरुपयोग तो न हो। किसीकी भलाई मे काम आवे तो हर्ज नहीं, पर किसीका अहंकार, बड़प्पन, ईर्षा, द्वेष आदि बढ़ाने में तो मददगार न बने। भारत जैन महामंडल के जल्से के विषय में लिखने बाबत लिखा सो उसके मालिक तो तारा-चंदजी हैं। हम सब वे कहेंगे वैसा करते हैं और करेंगे, इसलिए उन्हें लिखना ही ठीक है।

रिषभदास

प्रिय भाई साहब,

पूना: ५-१२-५५

आपका पत्र मिला। प्रकृति के विषय मे लिखा सो ध्यान रखता ही हूँ। पर दवा लेने की रुचि नहीं है। फिर भी जब ऐसा लगेगा कि दवाई लेना आवश्यक ही है तो आयुर्वेद की दवाई लेने का ही विचार है। पर अभी तो प्राकृतिक इलाज ही करूँगा।

चिंचवड़ का कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा। आप देखते तो आपको बहुत संतोष होता। ताराचन्द भाई आये थे। कलकत्तेवाले सुराणाजी ने स्वयंप्रेरणा से ५५०० रुपये संस्था को दिये। बम्बई

वाले बलदोटाजी से भी दसेक हजार मिलने की उमीद है। उन्होंने मुझे कहा कि आप जो कहे सो भेज दूं। मैंने कहा कि आप पर छोड़ता हूं। तब उन्होंने कहा कि कोई भी एकाध योजना हमारी ओर से पूरी कर दी जावेगी। दूर-दूर से अच्छे-अच्छे लोग आये थे। सबको बहुत सतोष हुआ।

यों भोपाल मे जो काम की बात सोच रहा हूँ, दरअसल वहा काम जमाकर किसीको बैठाने की दृष्टि से, बाकी मेरे खुद के लिए तो काम का पसारा बढ़ाकर क्या करना है। अच्छी कम्पनी है। अगर ठीक से काम वहा जम जाय तो एक अच्छे कार्यकर्ता का निर्वाह हो सकता है।

यों काम समयानुसार अच्छा ही है। क्योंकि यह साल कुछ कमजोर है। इसलिए जो अपेक्षा थी, उससे काम कम होगा। पर पिछले साल से ज्यादा ही होगा।

आपकी प्रसन्नता के समाचारों से खुशी ही है। आप स्वस्थ होंगे। सबको मेरा यथायोग्य। रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब, पूना : ३-२-५६

आपका पत्र मिला। बम्बई में जो कुछ हुआ, वह तो बहुत ही भयानक था। कहा जाता है कि बहनों की लाज तक लूटी गई। गाधी टोपियों की होली, गाधीजी, जवाहरलालजी के फोटो की अप्रतिष्ठा। जो कोई भला आदमी अच्छी बात कहे उसको भी मारना पीटना। यहा तक कि गाधीजी के एक प्रसिद्ध शिष्य अप्पासाहब पटवर्धन ने यह कहा कि बम्बई को केन्द्र सरकार का अपने हाथ मे रखना बुरा नहीं, इस पर उनका आश्रम जला दिया गया। फलों के झाड तोड़ दिये गये। यों लिखने की इच्छा तो बहुत है पर 'जैन जगत' के लिए लिखने का उत्साह नहीं रहा, क्योंकि उसमें उल्टा सुल्टा और गलत आता जिससे दुःख होता है। बालचद हीराचंद के विषय मे मैंने जो कुछ लिखा

था वह प्रारम्भ का अन्त में दिया गया। ऐसे बड़े आदमी के विषय में हुई भूल के कारण मन को ग्लानि होती है। पर पहाड़ी क्या करे, उसको काम बहुत है, बन नहीं पड़ता।

आपका स्वास्थ्य और मन अच्छा है, जानकर बहुत खुशी हुई।

मैं आपकी दया से खुश हूँ। अच्छा चल रहा है।

जीवन-बीमे का काम तो सरकार की तरफ चला गया। फायर, मोटर का भी चला जावेगा ऐसा लग रहा है।

आप बनारस जानेवाले हैं सो जाना। यदि कृपा हो सके तो कुछ दिन चिंचवड़ रहे। अब वहा काफी सुधार हो गये हैं।

सुकाभाऊ के जँवाई का स्वास्थ्य ठीक नहीं है। मैं उनकी धर्मपत्नी को लेने स्टेशन गया था। मुझसे बन पड़े वह करने का प्रयत्न होगा ही। भोजन के लिए भी बुलाऊँगा। इन दिनों काम बहुत ज्यादा रहने से जाना कम हुआ, पर अब जाऊँगा। कार्य की वजह से ही आपको भी उत्तर देने में विलंब हुआ। रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब, पूना : ७-२-५६

चि० चम्पालालजी के द्वारा पू० माताजी का मैं वर्धा बजाजवाडी में आकर रहूँ, ऐसा संदेशा मिला। लेकिन मुझे उन्हें लिखना पड़ रहा है कि मेरा यहां रहना ही सबसे अच्छा और योग्य निर्णय रहा। किसी के साथ कापिटिशन न करके भी अब अपना रून्री में था उससे भी ज्यादा काम हो रहा है, और भी बढ़ने की ही उम्मीद है। यहा अब सेवा भी होने लगी है और उसका बहुत अच्छा फल दिखाई दे रहा है। चिंचवड संस्था का काम लोगों को बहुत ही पसंद आ रहा है और उसके लिए हजारों रुपये मिल भी रहे हैं। वहा बहुत तरक्की आपके आने के बाद हुई है। यों हर महीने हजार दो- हजार तो मिलते ही हैं, पर कलकत्ते के सेठ ने ५५०० रुपये स्वेच्छा से दिये। परसों एक

भाई ने २५०० रु० दिये। जो आता है काम देखता है, देने का मन करता है। मैं भी देखता हूं, अगर मेरे द्वारा लड़कों की कुछ सेवा हुई तो अच्छा ही है।

यों बीमे का काम बहुत ज्यादे रहदा से पिछले महीने मैं आपको विशेष लिख नही पाया, जिसके लिए क्षमा करें। पर आप इधर आवें और उरली तथा चिंचवड़ रहे तो आपको सतोष होगा। बेचरदासजी मार्च में उरली आकर दो महीना रहेगे। पर आप मेरी प्रार्थना नही सुनेंगे और बनारस तथा भोपाल की तरफ जानेवाले हैं सो ठीक है। पर आपके मन को शाति भी यहा अधिक रहती और गर्मी में यहां ठंडक भी रहती है। पर आपने प्रार्थना न सुनने का ही पहले से तय कर लिया है, इसलिए मेरा कुछ भी लिखना व्यर्थ ही है।

कृपा रखे। पत्र दें।

रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब चिरंजीलालजी,

पूना : २७-२-५६

आपका पत्र इन दिनों नहीं सो देने की कृपा करें। मैं इन दिनों कुछ काम मे अधिक व्यस्त रहा, जिससे आपको पत्र देने में प्रमाद होता रहा जिसके लिए क्षमाप्रार्थी हूं।

आपके स्वास्थ्य के समाचारों से खुशी हुई। बनारस से मालूम हुआ कि आप दो मील तक घूम लेते हैं। यों इस उम्र में फल-दूध बहुत उपयोगी रहते हैं। मैं भी आजकल ज्यादातर फल ही लेता हूं। करीब सेर सवासेर दूध फल अन्न, ५-७ तोला भाजो। इससे स्फूर्ति मालूम देती है।

मैंने १०१ रुपया बाहुबली आश्रम को आज भेजा। तीन हफ्ते (किश्त) भेजकर इस कर्ज को उतार देना है।

आपका पत्र नहीं होने से कुछ बेचैनी मालूम होती है। आप नाराज तो नहीं हैं?

आपकी आज्ञा से बंबई के दंगे पर लेख दिया था, देखा होगा।
यहाँ चिंचवड़ संस्था की तरफ विशेष ध्यान दे रहा हूँ। वहाँ काफी काम करना है। करीब पच्चीस तीस हजार रुपये एकत्र करने हैं। उसमे लगाना पडेगा। आपके आशीर्वाद से सफलता मिलेगी, यह आशा है।

रिषभदास

प्रिय भाईजी,

पूना : २-४-५६

मैं आज अहमदाबाद, ब्यावर, उदयपुर तथा छोटी सादड़ी होकर यहाँ आया। उदयपुर मे वैद्यराजजी व प्रतापबाबू से मिला था। प्रतापबाबू के घर मैं तथा पं० बेचरदास जी खाने के लिए भी गये थे। पडितजी उदयपुर ५-६ रोज मेरे साथ रहे और ४ दिन सादडी भी साथ थे। छोटी सादडी में राजमलजी भाईजी, फकीर-चदजी, सौ० पारसरानी तथा पूनमचंदजी नाहटा आये थे। गुरुकुल का वार्षिकोत्सव था। अच्छी सस्था है। उत्तम काम कर रही है।

उदयपुर मे वैद्यराजजी तथा प्रतापबाबू से बात हुई। वैद्यराजजी मामले को निपटाना चाहते हैं। या तो जमनालाल सन्स उस काम को रख ले या उन्हे सौंप दिया जाय। क्योंकि मामला काफी बिगड़ गया है, इसलिए साथ निभना उन्हे कठिन मालूम देता है। जो कुछ भी हो, मिठास से होने मे बुद्धि को लाभ दिखता है। रहें तो प्रेम से, यदि वैसा नहीं हुआ तो परिणाम अच्छा नजर नहीं आता। पर प्रतापबाबू के विचार मे इस तरह निपटाने में मालिक का नुकसान दिखता है। इसलिए मैं किसी तरह की बात करना उचित नहीं समझा, बाकी आपके प्रति वैद्यराजजी का आदर है। वे आपकी बात मान लेते, पर आपका बीच में पडना भी प्रतापबाबू की दृष्टि से ठीक न होने से मैंने मौन ही रखा। पहले तो आपको लिखने का इरादा था।

यहाँ गेंदालाल को मेरी अनुपस्थिति में बुखार हो गया था। अब बुखार तो नहीं है, पर जोड़ों में दर्द और सूजन है। इलाज चल रहा है। अब मैं ध्यान देकर उचित सेवा शुश्रूषा करूँगा।

यहाँ एक बड़ी दुर्घटना हो गयी। भयानक आग लगी, जिसमें श्री कनकमलजी मुणोत का प्रेस जल गया। करीब सवा लाख का नुकसान हुआ, कुछ नहीं बचा। बचा केवल कर्ज। वडे अच्छे आदमी है। अपनी ही कमाई से सब कुछ किया था, पर सब चला गया। बीमा भी नहीं था। बीमे के लिए कहा भी था, पर माने नहीं।

रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब, पूना : १५-९-५६

आपका १३-९-५६ का पत्र मिला। मुझे सार्वजनिक काम में पडने का रंज नहीं है। बल्कि यदि मेरे साथ सार्वजनिक काम न होता, तो यहाँ जो काम जमा है, वह कदापि नहीं जमता। मैंने जो अपने पत्र में लिखा था, वह इतनी ही बात थी कि अब सीजन आ रहा है और काम को हानि न पहुँचे, इसलिए काम पर मर्यादा रखनी पडेगी। कुछ सीमा रखना आवश्यक है।

जब मडल की बैठक में होशंगाबाद की अपेक्षा चिंचवड में मंडल का जल्सा करने की बात सेठ लालचन्दजी ने तथा साहूजी ने कही, तब चिंचवड का तय हुआ और यहावाले बहुत जोरों से तैयारी भी कर रहे हैं। तीन हजार रुपये एकत्र करने का यहावालों ने निर्णय किया है और शहर के धनी और प्रतिष्ठित लोगों ने स्वागत समिति भी बनाई है। हा 'जैन जगत' से यदि मैं अलग हो सकूँ तो अच्छा है, क्योंकि मैं केवल नामधारी संपादक रहूँ यह तो मेरे वश की बात नहीं है और यदि वह काम संभालता हू, तो मुझे समय देना ही पड़ता है। मुझे ३-४ महीना अपने बिजनेस के लिए घूमना पडेगा और फिर २-३ महीने ज्यादा काम रहेगा। फिर मैं कुछ समय निकाल सकूँगा।

मेरा जीवन तो सुख और शाति से ही बीत रहा है। मैं बदनामी के डर से सार्वजनिक काम में मर्यादा नहीं डाल रहा हूँ, पर अपने काम की दृष्टि से। क्योंकि पैसे का व्यवहार मैं करता ही नहीं। श्री शकर-

लालजी पोकरणा के हाथ में है और वे बहुत व्यवस्थित और साफ आदमी हैं।

मैं जानता हूँ कि मंडल का काम, पुस्तकें और 'जैनजगत' का काम यहाँ से अच्छा हो सकता है। उसका कारण है यहाँ के सौथी अच्छा काम करनेवाले हैं, पर मुझे भी उसमें समय देना पडेगा अर वह देना अभी श्रेयस्कर नहीं है इसलिए आप जैसा भी उचित समझें ताराचंद भाई से बात करके निर्णय करें।

यहाँ जल्से की व्यवस्था तो ये लोग अच्छी रखेंगे, पर यदि बाहर से लोग नहीं आये तो प्रभाव अच्छा नहीं पडेगा। इसलिए आप लोग इस बात का प्रयत्न करें कि बाहर से ज्यादा और अच्छे लोग आवें। मुझे समय होता तब तो मैं आपको कष्ट नहीं देता, पर मुझे बिजनेस के लिए घूमना पडेगा, इसलिए आप व ताराचंदभाई यह प्रचार ज्यादा से ज्यादा कीजिये। अब तक अध्यक्ष का भी निश्चित नहीं हो पाया। प्रचार का काम तो आफिस से ही होना चाहिए या जो लोगों से जानकार है उसीको लिखा-पढ़ी करनी चाहिए। मैं कर सकता था, पर मैंने कारण बताया, इसलिए कर नहीं पाऊँगा।

यदि आपकी राय ऐसी हो कि मैं सार्वजनिक कार्य कतई न करूँ तो फिर 'जैनजगत' और मंडल से भी मुक्ति दिलाइये। मुझे खुशी ही होगी। आज भी नाराजी नहीं है। काम की वजह से थोड़ा कम ज्यादा काम हो पाता है, पर मैं सार्वजनिक काम न करूँ यह आप ठीक समझते हों तो प्रथम मुक्ति मंडल के कार्य से दिलवाइये। यही प्रार्थना है।

रिषभदास

प्रिय भाई साहब, पूना : २९-९-५६

आपको ६३ वाँ वर्ष लग रहा है, जिसके लिए हृदय से अभिनदन करता हूँ तथा आपको यह वर्ष सुखदायी और सफल हो, यही कामना है। आप बडे हैं, आपके प्रति आदर प्रकट करना और प्रणाम करना

मेरा कर्तव्य ही है। फिर आपके मुझपर अनेक उपकार हैं, जिन्हे भुलाया भी नहीं जा सकता।

आपने मुझपर कृपा कर मुझे भारत जैन महा मंडल के कार्य तथा 'जैन जगत' से मुक्ति दिलाई, आपकी इस कृपा के लिए मैं अत्यन्त अनुग्रहीत हूँ। कृपा कर श्री रतन पहाड़ी से कह दीजिये कि 'जैन जगत' के सपादक मे मेरा नाम न रखें। इस जैनजगत के विषय में वे श्री ताराचंद भाई से ही पूछें कि क्या करना है। जब मैंने त्यागपत्र ही दिया है, तो मैं क्या लिखूँ?

आपने मुझे जो मंडल के काम में फिर से कुछ न लिखने का निर्णय किया, उसके लिए आभारी हूँ। ऐसी कृपा सदा बनाये रखें।

चि० रतन ने आपको पत्र दिये हैं। वे जब भी आप पधारेंगे, तब लेते आवे। रजिस्ट्री से भेजने की जल्दी नहीं।

मैं बंवई गया था। आज ही यहाँ आया। अब बीमे के काम मे बहुत तकलीफ पैदा हो गई है, बहुत काम करना पडेगा। इसलिए सभी सार्वजनिक कामों से मुक्ति लेना जरूरी हो गया है।

कृपा भाव रखें। पत्र दे। दर्शन की कामना बनी रहती है, जब भी हो जाय, भाग्य समझूँगा।

रिषभदास

प्रिय भाई साहब,

पूना : १-१०-५६

भारत जैन महामंडल के अधिवेशन की यहाँ पूरी तैयारी है। और लोगों में उत्साह भी है, पर अध्यक्षता का मामला पहले जैसा आसान नहीं है। क्योंकि धीरजभाई तथा दूसरे लोग नया अध्यक्ष बनाना हो तो कार्यकारिणी की मीटिंग बुलाये बिना नहीं कर सकते। जो नाम मीटिंग मे मजूर हुए, वे ही अध्यक्ष बनाये जा सकते हैं। उनकी मन्शा धीरजभाई, परमानंदभाई या चिमनालाल चकुभाई को अध्यक्ष बनाने की है। अब मंडल का काम पहले जैसा आसान नहीं रहा। एक समझौता हो सकता है। यदि तख्तमलजी अध्यक्ष बन जावें तो विरोध

नहीं होगा। नहीं तो वे विरोध करेंगे और झगड़ा बढ़ेगा, यह बात मैं यहाँ जल्से के समय होना अच्छा नहीं मानता, इसलिए तख्तमलजी को पत्र लिखा, तार दिया, पर बीमार होने से उत्तर नहीं मिला। मैं राह देख रहा हूँ। यदि मंजूरी आ गई तो जल्सा २ अक्तूबर को होगा; अन्यथा आगे बढ़ाना पडेगा।

श्री० कालेजी के विषय में लिखा सो उस विषय मे निश्चय होने पर ही लिख सकूँगा।

श्री जमनालालजी ने जो लिखा वह योग्य ही है। पहले मैंने लिखा था पर मैं उनकी तरह सुलेखक नहीं होने से उतना उनको पसंद नहीं आया और उन्होंने विस्तृत और अच्छा लिख भेजा, जिससे कि समाज को योग्य परिचय हो। मैंने जो लिखा था, वह पहाडीजी के पास है, आप देखिये।

अपनी कमज़ोरियों और दुर्बलताओं का ख्याल रखना तो अच्छा है, पर अपने को कमजोर या दुर्बल मानने लग जाना विकास में बाधक भी बनाना है। इसलिए आप अपने को छोटा मत समझें। आप अपने गुण और अवगुण दोनों से परिचित रहकर गुणों को बढ़ाते रहे, यही प्रार्थना। कमजोरियाँ छूट ही जावेगी, उनका बहुत ख्याल न करे।

रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब, पूना : ३-१०-५६

आपका १-१०-५६ का पत्र मिला। भारत जैन महामंडल और 'जैन जगत' का इस्तीफा आपने मंजूर कर लिया, वह मेरे लिए काफी है। मैं आपको ही मडल के प्राण और सर्वेसर्वा मानता हूँ। इसलिए अब मेरे लिए ताराचंदभाई या वर्किंग कमेटी को पूछने या मंजूरी देने का सवाल ही नहीं। मेरे तो मालिक आप हैं। बस आपने मुक्ति दे दी, मैं मुक्त ही हूँ। कृपाकर संपादक में नाम कटवाने की व्यवस्था आप कर दें।

श्री तख्तमलजी को अध्यक्ष बनाने का था, यह ताराचंदजी और बबईवालों ने भी मजूर रखा था, पर वे अक्तूबर में आ नहीं सकते, ऐसा तार आने से जल्सा दिसंबर मे करने का तय करना पड़ा।

जल्सा २०-२१ अक्तूबर को था, पर अध्यक्ष पद के झगडे से हमको विवश होकर जल्सा आगे बढ़ाना पड़ा। इसमे मेरा कोई इलाज नहीं है।

आप अपना कार्यक्रम जैसा भी बनाना चाहें, बनाइए।

कृपा रखें, पत्र दें। रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब, पूना ६-१०-५६

आपका ४-१०-५६ का पत्र मिला। पूना मे जल्सा यदि करना हो तो यहाँ प्रभावशाली अध्यक्ष आये बिना यहाँ वाले तैयार नहीं हैं। वर्किंग कमेटी की मीटिंग बुलाना मेरे वश की बात नहीं है।

आपकी कठिनाई और कष्ट को मैं समझता हूँ, पर कमनसीबी यह है कि यहाँ की कठिनाई आपको समझाने में मैं असमर्थ हूँ। वैसे ही बबई में नये मित्र आसानी से पहले जैसे काम करने देंगे, ऐसी भी स्थिति नहीं है। धीरजभाई या उनके साथी झगडा किये बिना नहीं रहेंगे और बारबार मीटिंग के लिए लोगों को बाहर से बुलाना भी आसान नहीं है, पर ये सब अड़चनें श्री ताराचद भाई की हैं वे ही आपको बतावेंगे।

आपको २०-२१-२२ को पूना पधारने से दुःख होता है, तो कृपया अपने को दुःखी न बनावें। क्योंकि आपको दुःखी बनाने या दुःखी देखने की मेरी तनिक भी इच्छा नही है।

मडल के बारे में या अधिवेशन के बारे में आप बार-बार यह लिखते है कि जो भी निर्णय करना हो, वह मैं करके आपको लिखूँ, यह

मेरे वश की बात नहीं है। मैं तो खुद परेशान हूँ और इसीलिए त्यागपत्र तक दे दिया है।

जल्सा २०-२१-२२ को नहीं होगा इसमें हँसी होगी यह आप लिखते है, सो बात तो ठीक है, पर यदि जल्सा अच्छा न हुआ तो हँसी ही नहीं होगी, पर परिणाम भी अनिष्ट आवेगा। जैसा-तैसा जल्सा यहाँ करना मेरे बश की बात नहीं है। मंडल की बुराई होगी, इसका विचार करने को मुझे लिखते हैं सो बात ठीक है। मैं भी यह नही कहता कि मेरी वजह से मडल की बुराई हो। इसीलिए मैंने अब उसमें न रहने का ही निश्चय किया है, सो आशा है अब भविष्य में आपको मेरी ओर से मैं किसी प्रकार का कष्ट नहीं दूँगा। रिषभदास

प्रिय भाई साहब, पूना : ६-२-५७

आपका ४-२-५७ का पत्र मिला। मैं टूर पर से आया रविवार को। सोमवार और मंगलवार जरूरी काम से बम्बई जाना पड़ा। इसी कारण से पावरनामा मैं करवाकर भिजवा ही नहीं सका। इसका दुख है। मैं बराबर टूर पर था, इसलिए विवश था। अब कल वकील को देकर वह काम करवा लेता हूं।

इन दिनों आप जिस तरह के परायेपन से पत्र लिख रहे हैं, उन्हें पढ़कर असीम वेदना होती है। खैर, आप बडे भाई हैं। आपको सब कुछ करने का अधिकार है।

मुझपर व्यापार की इतनी बड़ी जिम्मेवारी आ पड़ी कि एक मिनिट के लिए समय निकालना भी इन दिनों कठिन-सा हो गया। आपके कहने से ही मैंने बिजनेस में फिर से ध्यान देना शुरू किया। जब जिम्मेवारी आ पड़ी तो उसे पूरी करना ही चाहिए। मुझे ऐसा लगता है कि दोनों काम—बिजनेस और सेवाकार्य—साथ साथ करने की मुझमें योग्यता नहीं है। इसलिए मुझे सभी सेवाकार्य छोड़ देना चाहिए। यदि मैंने सब कामों का इस्तीफा दे दिया होता, तो मेरे लिए दूसरों

को कष्ट नहीं होता। पर जब म घर पर ही न होऊँ, तब मेरा क्या इलाज था। मुझे कानूनी बातें समझती नहीं। साइन कर स्टैंप पर भेजने को कहा, भेज दिया। पावरनामे के लिए क्या करना पड़ता है यह मुझे यहा वकील तक ने बताया नहीं। जो काम मैं जानता नहीं, उसमें भूल होवे यह असभव नहीं है। फिर मैं जब यहाँ था ही नहीं तो मेरा क्या वश था।

मेरी इन असमर्थताओं और गलतियों के लिए आप क्षमा करें, यही प्रार्थना है। मैं आपको कष्ट देना नहीं चाहता। पर मेरी कमनसीबी है कि मेरे प्रति आपका दुराव बढ़ता जा रहा है। भगवान् मुझे क्षमा करें और बल दे कि आपको सतोष दिया जा सके। रिषभदास

प्रिय भाई साहब, पूना : १५-२-५७

इस पत्र के साथ चि० रतन के कागज-पत्र भिजवा रहा हूं। मैं जानता हू आप मुझसे असतुष्ट हैं और इसीलिए न तो पत्र देते हैं और पत्र मे जो कुछ लिखते हैं वह मानो एक त्रयस्थ के लिए लिखते हैं। यही कारण है कि आज श्री ताराचन्दजी ने जैनजगत संबन्धी और मंडलसम्बन्धी चर्चा करने के लिए वर्धा चलने को कहा था। इच्छा तो आपके दर्शन की तीव्र थी, पर चलने से इन्कार करना पड़ा। मेरे लिए आपसे बढ़कर मडल-जैनजगत तो क्या, पर स्वर्ग भी नहीं है। आपको दुखाकर मैं कुछ भी नहीं करना चाहता, इसलिए मैंने लिख दिया कि मैं इस कार्य के लिए नहीं चलूँगा।

यों मेरा ही पहले सुझाव था कि हम सब मित्र मिलकर एक दिल से मंडल और 'जैन जगत' का क्या करना इसका निर्णय करें और इस काम को वेग दे, पर जब आपके इन दिनों पत्र आये, उन्हें देखते उत्साह नहीं रहा और ऐसा मालूम पड़ता है कि अब मुझे जैन-जगत या मडल का त्याग करना चाहिए।

जो भी मेरी भूल हुई हो, पर उसके बिना आप नाराज नहीं होते, इसलिए मुझे प्रायश्चित करना ही चाहिए। वह क्या करना, सोच रहा हूं।

रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब,

पूना : २५-२-५७

आपका पत्र मिला। यदि आप नाराज नहीं हैं तो मुझे खुशी है। अपनी भूल मंजूर करने मे मुझे खुशी ही है। बडे भाई के आगे गलती कबूल करने मे जरा भी संकोच मुझे नहीं है। इसलिए ज्यादा पत्र-व्यवहार मे खुलासा करने की अपेक्षा सब प्रकरण का अन्त मीठा हुआ, मन की सफाई हो गई, अच्छा ही हुआ। क्योंकि मेरे लिए आपके प्रेम से बढ़कर इस वक्त दूसरी महत्त्व की चीज नहीं है। अब मेरे वडीलों में आप जैसे कुछ ही लोग बचे हैं। उनका आशीर्वाद और प्रेम मुझे चाहिए। आपके आशीर्वाद और सलाह मे ही मेरा कल्याण है।

मैं बंबई गया था और २७ तारीख को ताराचंदभाई को साथ लेकर जामनेर और वर्धा आ रहा था। मैं बंबई से लौटा, तो मुझे कुछ बुखार की हरारत हुई और कल भी वैसी ही तबीयत बनी रही, इसलिए २८ तारीख तक आराम लेकर और दवाई आदि लेकर तबीयत ठीक करना जरूरी हो गया। मैं २८ तारीख को यहाँ से बंबई होकर आने की सोच रहा था। इतने में यहाँ मुझे एक समन्स आया। मेरी रुबी कपंनी की तरफ से कमीशन पर साक्षी होने से १ तारीख को निकलना पडेगा।

मालिक के लिए सब काम छोडकर आने की तैयारी थी और है, पर तबियत, उनका पत्र और अडचनों की वजह से देरी हुई। मैं जानता हूं कि उनके मुझ पर बहुत उपकार हैं। मैं भूल नहीं सकता, पर पिछले दिनों जो अति परिश्रम हुआ, उसका शरीर पर बहुत असर हुआ। इसीलिए देरी से आने के लिए क्षमा चाहता हूं। मैं सविस्तर पत्र फिर लिखूंगा। पर यह निश्चित समझिए कि मेरे लिए तो आप

भगवान् हैं और आपकी आज्ञा ही सब कुछ है। मंडल के विषय मे भी सब मिलकर जो सोचना होगा, सोच लेंगे। .रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब चिरजीलालजी, पूना : ३-५-५७

बिक्री कराने के बाद कुछ वसूली आई और दो सौ रुपये तथा ब्याज लेना रहा। ब्याज कोई चार साल से लेना है। यदि आसामी पैसा न दे, तो भी फर्याद करनी नहीं है।

सौ० राजकुमारी की वकील-पत्र पर सही कर भेज रहा हूँ।

इन दिनों आपका घूमने का क्या सिलसिला है? मैं तो ५-६ बजे उठकर व्यायाम आसन कर नहा-धोकर घूमने जाता हूँ। फिर ऑफिस में ८॥ से १२॥ और फिर घर लौटकर भोजन कर २ बजेतक विश्राम। २ से ३ कातना ३ से ७ बजे तक ऑफिस, फिर घर जाना। भोजन, वाचन, लेखन, निद्रा यह कार्यक्रम रहता है। स्वास्थ्य ठीक है। मन भी प्रसन्न और स्वस्थ है। अब ज्यादा घूमने से कुछ अस्वस्थता महसूस होती है। धन्य है आपको कि इतना घूमकर भी थकते नहीं।

रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब, पूना : ३-५-५७

इस पत्र के साथ सौ० राजकुमारी के वकील पत्र पर दस्तखत कर भेज रहा हू। आज यहा श्री० कमलनयनजी आये हुए हैं। मैं १० बजे से ७॥ बजे तक उन्हींके साथ था। कल दोपहर को भोर मे आऊंगा। वे भोर गये। वापिस रविवार को आवेंगे।

जैन जगत के ८ पेज छप गए। श्री० कनकमलजी रजिस्ट्रेशन के लिए बम्बई गये हुए हैं। वे बहुत परिश्रम कर रहे हैं। यों अच्छी तरह से अंक निकालना हो और योग्य मैटर देना हो तो ८-१० दिन ५-७ घंटे का काम रहता है। चाहे जैसा अंक निकालने में तो ज्यादा मेहनत नहीं पड़ती। पू० सेठजी पर महात्मा भगवानदीनजी का लेख भी इस अंक में आ रहा है और साहूजी पर अपना लिखा लेख भी दे रहा हूँ।

गर्मी यहां भी काफी है, सो वर्धा मे तो होगी ही। आप प्रसन्न होंगे। पत्र दे, सेवा सूचित करे। रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब, पूना : ६-७-५७

यहाँ से श्री बाबू कमलनयनजी कल रात को बम्बई गये। काफी बातचीत हुई। मैं भोर को गया था। फिर कल बम्बई जा रहा हूं। उन्होंने बुलाया। वे ८ तारीख को देहली जायेंगे। उनका इसी बात पर जोर है कि मैं अभी कुछ दिनों तक व्यापार करूँ। जब पूरा व्यापार छोड़ कर सार्वजनिक काम करने योग्य आर्थिक स्थिति हो जाय, तब व्यापार छोडकर सेवा के काम मे लग जाऊँ। अगर थोड़ा बहुत काम करना भी हो तो वह काम पद न लेकर करूँ, किसी प्रकार की जिम्मेवारी लेकर नहीं। उन्होंने यहा तक कहा कि इससे कोई नाराज होवे तो मेरा नाम बता दो। मुझसे वे लोग बात करे। सोचने जैसी बात तो है ही।

रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब, पूना : ३०-१२-५७

आपके पत्र ३-४ एक साथ ही मिले। मैं टूर से आया अतः इसके पहले नहीं लिख पाया। क्षमा करे।

आपकी मनःस्थिति से मुझे बहुत चिंता हुई। आपके मन पर जो कुछ परिस्थिति का असर हुआ, वह स्वाभाविक है। पर आप जैसे आत्मज्ञानी पुरुष को बाह्य यानी बाहरी संकटों या दुःखों से विचलित होने जैसा नहीं है। संकट तो रात दिन की तरह आते जाते रहते हैं। धीरज से बर्दाश्त करना ही चाहिए! शरीर और शारीरिक सुख दुःखों को आप जैसा आत्मवादी पुरुष कैसे सत्य मानकर उसका मन पर परिणाम कर लेता है। यह मैं समझ नहीं पाता! आपको उपदेश देने की मेरी योग्यता नहीं है। पर छोटे भाई के नाते मैं आपको यह लिख रहा हूँ कि आप वस्तु-स्वभाव को समझकर मन को शात रखें। हम लोग अंतिम छोरपर खडे है। भावनावश होकर अगला जन्म न

बिगाडे। इस सभय जब हमे जल्दी ही विदा लेनी है, तो रागद्वेष मोह को कम करें। चित्त को शुद्ध बनावें।

आपको भविष्य की चिंता करने की कोई जरूरत नहीं। जो मिल जावे उसमें संतोष माननेवाले को क्या कमी है। आपने कभी मुझे अपना समझकर मेरी सेवा नहीं ली। इसका मुझे रंज है। भग वा। की दया और आपके आशीर्वाद से आपकी सेवा करने का हम सबमे सामर्थ्य है! सिर्फ आपका संकोची स्वभाव ही इसके बाधक है! अपना पराया जिसे कि आप समझ रहे है, विचार कीजिये क्या वह सत्य है? जब वह सत्य नहीं है तो असत्य या झूठ के पीछे लगकर हम अपने आपको क्यों बेचैन बनावें!

मै बम्बई रेडियो लॅंप में रुपये जमा करवा रहा हूँ! बड़ोदा का पता और पत्र भेज रहा हूँ।

मैं ६ तारीख को बबम्ई अवश्य आऊंगा। आप यहाँ आ सके तो ज्यादा अच्छा! हम मिलकर बात करेंगे। पत्र दें! वर्धा फोन किया था। आप अहमदाबाद गये, ऐसा मालूम हुआ। यह पत्र वहाँ भिजवा रहा हू।

रिषभदास

•

प्रिय भाई साहब, पूना : २-१-५८

संसार में भले और बुरे दोनों तरह के अनुभव आते हैं। विवेकी पुरुष को सार ग्रहण कर असार की चिंता नहीं करनी चाहिए। आप ज्ञानी हैं, अनुभवी और जानकार हैं, धर्म के ज्ञाता हैं। आपको संसार के बाह्य रूप या पुद्गल के व्यापार से क्षोभ नहीं होना चाहिए। आपको उपदेश देने की मेरी योग्यता नहीं है। पर आपही सोचिये, इन शारीरिक मान-अपमान को लेकर अगला जन्म बिगाड़ने में क्या लाभ? अपना अतिम समय आ गया है। चित्त को निर्मल रखकर ससार त्यागने में ही श्रेय है। भावना के प्रवाह मे वहकर आप कोई निर्णय या निश्चय न करें। आत्मा का श्रेय जिस बात में हो, वही निश्चय या

नियम श्रेयस्कर है। आपके चित्त को शांति मिले'वह बात आप सासारिक मानापमान का या बातों का खयाल न कर निःसंकोच भाव से करें। दूसरों को संतोष देने का भले ही हम कितना ही प्रयत्न करे पर यह असंभव है कि हम सबको राजी रख सकेंगे। इसलिए दूसरों को राजी रखने के प्रयास मे हम अपनी शाति न खोयें। हमारी शक्ति सीमित है। उससे जितना संभव हो उतना ही करें। शक्ति से अधिक कर चित्त को अशांत न बनावे।

आपसे १ घंटा ही नहीं पर मेरी शात चित्त से २-४ घटे बात करने की इच्छा है।

'कल नया साल शुरू हुआ। इस साल के लिए कुछ नियम लेने का सोच रहा हूँ। पर कोई भी बात भावना में बहकर नहीं, पर विवेक पूर्वक और सोच-विचार से ही करनी चाहिए, इसलिए चिंतन चल रहा है। पिछले-साल के अनुभव से अगला साल अच्छा जावे यह प्रयास करना है। पिछले साल में कुछ चित्त की मलिनता के दोष हुए, वे न हों यह प्रयत्न करना है। सबके प्रति मैत्री भाव बढ़े, शत्रु को भी मित्र मानकर उसके हित की कामना रहे, यही भावना है। प्रभु बल दे कि इस विचार को आचार में ला सकूँ।

मन को निर्मल और प्रसन्न रखिए। रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब, पूना : ६-१-५८

आपसे फोन पर बात हुई। बहुत संतोष रहा। आपका मन और शरीर अच्छा रहे, जिसकी सदा चिंता बनी रहती है। आप यदि यहाँ आ जाते तो ३-४ दिन सात्विक खानपान और एकात वातावरण में उरली रहते। हमारे भावी जीवन के विषय मे सोचने की अत्यंत आवश्यकता है। हम लोग प्रवाह में बह रहे हैं या जीवन के विषय में ठीक सोचकर कुछ ऐसा मार्ग लेते हैं जिससे जीवन सफल हो, यह सोचने की बात है। आप मेरी प्रार्थना सुनकर यदि पधार सकें तो

बड़ी कृपा होगी। यदि कमलनयनजी आ पायें और उनसे बात हो पाये तो आप जैसी सूचना करेंगे वैसा करूंगा। मैं बम्बई नहीं गया था, इसलिए रेडियो में वह रकम जमा नहीं करायी। बम्बई जाऊँगा तब वह रकम जमा करवा दूंगा या आप लिखे तो यहाँ से ड्राफ्ट भिजवा दूँ।

मुझे भी नये साल के लिए निश्चय तो करने हैं, लेकिन शांति से सोच-विचार कर करने हैं। निश्चय करने पर उनका पालन न होने से मन की कमजोरी और भी बढ़ती है। इसलिए विचार यही है कि जो कुछ संकल्प किया जाय, उसका पूर्ण रूप से पालन किया जाय।

सुगनचदजी मडल के काम की काफी चिंता करने लग गये हैं। फरवरी में धामणगाव या वर्धा में कार्यकारिणी की मीटिंग भी बुलाना चाहते हैं। उनके उत्साह का लाभ लेकर फिर से मंडल के काम में चैतन्य आ जाय, तो अच्छा है। बम्बईवाले धीरज भाई, रमण भाई, डागीजी आदि से आप मिल लें तो बड़ी कृपा होगी। मैं श्री नेम-कुमारजी जैन से जरूर मिलूँगा और उनके विषय में मेरे मन मे पूरा-पूरा खयाल है।

साथ में जैनजगत् का हिसाब भिजवाया है, रुपयो की जरूरत है। कृपया भिजवा दें। हिसाब आपके पते से वर्धा भी भेजा था। दोबारा भिजवा रहा हू।

आशा है, आप प्रसन्न होंगे। पत्र दें, सेवा लिखें।

रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब, पूना : ७-१-५८

आपका पत्र मिला। मैं यह बात अच्छी तरह से जानता हूँ कि आपको पैसे का मोह जरा भी नहीं है। यदि भावना और मोह कहा भी जाय तो दूसरे की भलाई का है। सबको राजी रखने का है। पूज्य जाजूजी हमेशा कहते थे कि 'मनुष्य सबको कभी राजी रख नहीं

सकता, इसलिए चाहे जैसा करके राजी रखने की अपेक्षा जो उचित हो उसे ही विवेक पूर्वक करना चाहिए। आपके पास जो कुछ हो वह आप दे दें, उससे मुझे शिकायत नहीं है। पर चित्त को अशांति होती हो ऐसा कोई काम न करें, यही प्रार्थना है। देकर प्रसन्नता होती हो तो अवश्य दें। फिर भले ही आपको भूखों मरना पडे तो भी मुझे आपत्ति नहीं, क्योंकि मैं शरीर की अपेक्षा मन को ज्यादा महत्त्व देता हूँ।

अब आदतों मे बहुत फर्क होगा, ऐसी आशा नहीं करनी चाहिए। फिर इनसे किसीका बुरा तो होता नहीं इसीलिए उन आदतों को आप बुरी न समझते हुए शक्ति के अनुसार काम करते रहिए। भावावेश में आकर शक्ति से ज्यादा न करें और न दूसरों के सामने अपना दुखड़ा रोवें। आपका खयाल है कि इससे बोझ हल्का होता है, पर मन कमजोर बनता है।

स्वभाव नाजुक बनाने से काम नहीं चलेगा। यदि कोई कटुवचन बोले, अपमान करे तो उस समय विचार करना चाहिए कि इसमे अपनी तो कोई भूल नहीं है। यदि न हो तो यह समझकर शांत रहना चाहिए कि बेसमझ व्यक्ति की कही हुई बात का मन पर परिणाम क्यों करें? अपने मन को दुःखी क्यों बनावें?

माफ करें, भाभीजी के ऊपर आप अन्याय करते हैं। उनके स्वभाव, रुचि, विचारों का ख्याल न कर जबर्दस्ती उनसे अपने मन जैसी बात करवाना चाहते हैं। उनका आप पर प्रेम है, आपकी सेवा भी करना चाहती हैं, पर वे उनके विचार से जो बात ठीक समझती हैं, उस प्रकार से करना चाहती हैं। वे जो कुछ करती हैं उसके लिए धन्यवाद दीजिये। इस उम्र में इतना परिश्रम करनेवाली और इतने लोगों को खिलाने पिलानेवाली कहा दीखती है। घर-घर यही रोना है। आप शांत चित्त से सोचिये।

आप एक दो सप्ताह मेरे साथ उरलीकाचन रहे तो बड़ी कृपा होगी। हम शांति से सब सोच सकेंगे।

मैंने श्री जमनालालजी को आपका पत्र आने के पहले ही लिख दिया था। पत्र आने पर सूचना दूगा। वह काम जरूर करवा लेना है।

आपका आशीर्वाद रहा तो समाज की थोड़ी-बहुत सेवा बन पडेगी, वह करने का प्रयत्न रहेगा।

रिषभदास

प्रिय भाई साहब, पूना : १३-१-५८

आपने कहानी लिखी। मैंने गहराई से पढ़ी। आपकी भावना और दुःख मैं समझता हूँ। अपने माता-पिता के उपकारों की याद करें और उनके प्रति आदरभाव रखे, ऐसे लोग बहुत कम होते हैं। हम बच्चों पर जो मोह रखते हैं और लाड़प्यार तथा उनके शारीरिक सुख का ध्यान रखकर उनके साथ बर्ताव करते हैं, उसीका यह परिणाम है कि वे शरीर-सुख को ही सबकुछ माननेवाले स्वार्थी और उपकार को भूलनेवाले होते हैं। हम उनकी कड़ी बातों को ध्यान में रखकर उनके स्वभाव को बिगाड़ने में मददगार बनते हैं। वे कहें और हम उनके कहे मुजब चले, इससे उनकी स्वच्छंदता बढ़ती है। पर मैं कितना भी लिखूं आप अपने मन पर ऐसी बातों का परिणाम नहीं होने देंगे, दिल को कडा रखेंगे, यह संभव नहीं है। इसलिए आप जो कुछ करते हैं सो अच्छा ही है। ऐसा मानकर मैं आपके कामों की नुक्ताचीनी नहीं करता। पर मुझे, आपके लिए काफी विचार रहता है। आज भी बलवंतसिंहजी से काफी देर तक बात-चीत हुई। अगर आप उरली आ जायें तो अच्छा होगा। मैंने इस साल कई नियम लेने का सोचा था। किन्तु कोई भी काम भावनावश या जल्दी में न हो, इसलिए गहरे चिंतन की जरूरत है। उरली में मैं सोच रहा हूँ। कोई ऐसी बात नहीं करना चाहता कि निश्चय करने पर बदलना पडे। इससे मन कमजोर होता है, इसलिए गहराई से सोच रहा हूँ। आपने जब कहानी लिखी ही है, तो मैं भी आपको चि०

रतन के दो पत्र भेज रहा हूँ जो उसने मुझे लिखे थे। मेरे स्वभाव को तो आप जानते ही हैं। मैं कई बातों को बरदाश्त करना सीख गया हूँ। मुझे इन पत्रों पर से क्षणभर के लिए भले ही क्षोभ हुआ हो, पर मैं भूल गया। हमें अपने कर्तव्य को करते रहना चाहिए ऐसा मान कर मैं शात चित्त से उस बात को भूलकर काम करते रहता हूँ। जीवन में ये सब अनुभव आते ही हैं। ऐसी बातों को लेकर अपने जीवन को दुःखी और चित्त को मलिन बनाने से भी क्या लाभ है?

मैं २० तारीख को बंबई जाऊँगा। तब शाताबाई की रकम जमा करा दूँगा। २८ को मीटिंग अवश्य साहूजी के यहाँ बुलायें। सुगनचंदजी का पत्र आ गया है। उन्हे मैंने भी लिख दिया है।

आशा है, आप प्रसन्न होंगे। रिषभदास

प्रिय भाई साहब, २५-१-५८

आपके कई पत्र मिले। मैं उत्तर नहीं दे पाया। क्षमा करें।

मैं उरली आराम के लिए था। वहाँ कुछ सोचना भी था। जो निश्चय किये वे ये हैं: (१) अपने लिए सालभर में कपडे-जूते के लिए १०० रु०, लेखन और पुस्तके ५०० रु०, संपत्तिदान १००० रु०, सामाजिक कार्य १००० रु०। (२) घर खर्च ६००० रु०। आमदनी के बाबत खर्च जाकर के कम-से-कम १०,००० रुपया पीछे डाला जाय, किन्तु २०,००० से अधिक नहीं। इससे अधिक आमदनी हो तो शुभ-कार्य में लगायी जाय। (३) एक साल तक पान, चावल नहीं खाना और सौ गुडी सूत कातना। (४) किसी भी संस्था का पद नहीं लेना। संस्था का पैसा अपने पास न रखना और अपने हाथ से खर्च न करना। जिस संस्था में एक भी व्यक्ति विरोधी हो, वहाँ काम न करना।

आप तथा मित्रों का आशीर्वाद मुझे बल दे। मैं बंबई गाया, सोचा कि बाबू साहब यहाँ मिल जावेंगे, पर वे पहले ही रवाना हो गये।

आप बाबू साहब से बात करें। रिषभदास के प्रणाम

पुनश्चः मैं.बंबई में साहूजी से मिला। वे ७ तारीख को बबई से देहली जावेंगे। इसलिए बबई में मीटिंग फरवरी मे हो नहीं सकेगी। लालचंद सेठ भी देहली जावेंगे। मार्च में बंबई मीटिंग हो सकेगी। मैंने औद्योगिक कमेटी के विषय मे बात की। उन्होंने कहा कि जो लोग काम करना चाहते हैं उनकी एक एक की समस्या अपने सामने आवे और हम लोग सुलझाते रहे। उन्हे मदद करें। जो लोग स्वयं-प्रेरणा से आवेंगे, उन्हे मदद करने से लाभ होगा। आप 'जैन जगत' में यह प्रकाशित कर दें। अपने सामने प्रपोजल आने पर विचार करेंगे। आज मैं फिर उनके पास जानेवाला हूँ। वे सेंटर के उद्योग मंत्री मनुभाई शाह को पत्र देनेवाले हैं कि जो छोटे-छोटे उद्योगों की योजना है, जिनको सरकार मदद करती है, उसकी जानकारी दे। लालचंदजी से भी काफी बातें हुई। वे पूना भी आवेंगे।

आज मैं बाबू साहब के यहाँ भी गया था। सौ० सावित्री देवी से मिला। दोनों भाइयों मे से कोई नहीं थे।

रुपये रेडियोलेंप में मैंने आज जमा करवा दिये।

रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब, बम्बई : २९-१-५८

मैंने आपको दो पत्र कल दिये। एक में सात सौ सत्तर रुपये रेडियो लॅम्प में भरे उसकी रसीद थी। और दूसरे मे सेठ लालचंदजी तथा साहूजी से मिलने सबधी समाचार थे। वे दोनों फरवरी मास मे राज्यसभा की मीटिंग मे देहली जायेंगे। इसलिए फरवरी में बम्बई में सभा बुलाना चाहे तो बुला सकते हैं, लेकिन उनकी हाजिरी नहीं रहेगी।

मैं लक्ष्मीचदजी के पत्र का उत्तर दे रहा हूँ। मीटिंग फरवरी में ही बुलाना हो तो सुगनचदजी और आप जब भी बुलायेंगे तब वर्धा या धामणगाँव आ जाऊँगा। मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। मैं सेठ के घर गया था। बहुत चिंता होती है, कुछ करना पडेगा। हमसे सेठ का अहित

देखा नहीं जा सकता। और चुप भी नहीं बैठ सकते। भगवान् हम को शक्ति दे, कि जिसमे हमारे द्वारा सेठ की भलाई हो। रिषभदास

पूज्य भाई साहब, पूना : १३-२-५८

आपका ता० ७-२-५८ का पत्र मिला। मैं बंबई से अभी आया हूं। मैंने जे. एल. जैनी ट्रस्ट के श्री जौहरीलाल जी साहब को एक पत्र दिया था। उनका पत्र यहाँ आया है। सन् १९५६ में रु० १८२०) और सन् ५७ में १२००) रुपये सहायता दी जाने की बात उन्होंने लिखी है, सो यह सहायता संपूर्ण आ गयी या नहीं, यह लिखे। सन् १९५८ मे अधिक सहायता देने के बारे में मैंने आज लिखा है। आप भी अपनी तरफ से लिखें।

श्री रमणलाल शाह से मिला। उनका विचार बंबई मे अगला जलसा और हीरक जयंती महोत्सव मनाने का है, क्योंकि ६० साल भारत जैन महा मंडल को हुए हैं। रमणलाल भाई अत्यंत परिश्रमी और लगनशील कार्यकर्ता हैं। बड़ा ही व्यवस्थित और परिश्रमपूर्वक काम करते हैं। उनमें आगे जाकर अपना बड़प्पन बताने की वृत्ति नहीं होने से वे बहुत अच्छे कार्यकर्ता होकर भी पीछे रहे। अगर उन्हें बढ़ावा और सहयोग दिया जाय तो वे बहुत काम कर सकेंगे, ऐसा लगता है। वे एक कार्यक्रम विधान सभा के सदस्यों का, जैन मंत्रियों का और गाँव के सज्जनों का परिचय कराने के लिए रखने का विचारते है। उन्होंने अपने और अपने साथियों के 'जैन जगत्' के चंदे के पैसे भिजवाये हैं। इस तरह से काम करनेवाले लोग बहुत कम मिलते हैं, बातें करनेवाले ज्यादा हैं। मैंने कुसुम बेन, नेमीचंद भाई, रमणिक भाई, अभयराज जी आदि से मंडल के भविष्य के बारे में चर्चा की। सबमें उत्साह है।

अगर जमनालाल जी आवेंगे तो मैं वर्धा निश्चित आऊँगा। धीरज भाई बंबई नहीं थे, वे अहमदाबाद गये।

पत्र दें। सेवा सूचित करें। मैं वर्धा आ रहा हूँ इसलिए पत्र में अधिक लिखने की अपेक्षा प्रत्यक्ष बात करेंगे। रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब, पूना : १३-६-५८

मैं कल रात को बंबई से आया। आपके पत्रों में हिसाब जैनजगत में देने की बात लिखी सो यह पत्र आने के पहले ही अंक छप गया था, इसलिए अगले अंक मे हिसाब दिया जा सकेगा। यदि पहले मालूमात होती तो इस अक में हिसाब दे देता।

जैन जगत में सिर्फ ३२ पेज रहते हैं, जिसमें से २७ पेज ही हाथ में रहे, ५ विज्ञापन में चले गये। व्यापारियों तथा विद्यार्थियों को उपयोगी हो सके ऐसी जानकारी भी पूरी नहीं दी जा सकी। मैं जैनजगत को उपयोगी तथा अच्छा बनाने की दृष्टि से प्रयत्न करता रहता हूँ, पर उसका उपयोग है या नहीं, यह नहीं जानता।

पपीते के बीज भिजवा रहा हूँ। देवरी भी पत्र लिख दिया है।

पुस्तकें वर्धा में ही रखनी है। स्टॉक ले लिया गया अच्छा हुआ। ब्राऊन पेपर में बंडल बाँधकर उस पर नाम और सख्या लिखवा दी जाय तो अच्छा, ऐसा जमनालालजी का कहना रहा। वे १ से ६ तक वर्धा रहेंगे।

बंबई में आपसे नहीं, मुझसे ही अविनय हुआ था, इसलिए आप ही क्षमा करें। काम की जल्दी और समय के अभाव में ऐसी भूलें हो जाती हैं।

आपने घर की या छोटी-छोटी बातों में ध्यान नहीं देने की बात कही थी सो मेरे ध्यान में है और मैं उसके लिए कुछ योजना भी बना रहा हूँ, पर शांति से सोच सकूँ, ऐसी शाति नहीं मिलती। काम इतना अधिक रहता है कि मैं थक जाता हूँ। आराम की जरूरत है, पर ले सकूँ ऐसी स्थिति नहीं है।

घर पर ब्राम्हणी रसोई के लिए रख ली है, पर वे लोग निभा लें, तब है।

आपका भेजा हुआ ड्राफ्ट मिल गया। मैंने श्री जोहरीलाल जी मित्तल को रुपये के लिए तथा इस साल की मदद के लिए लिखा है। हिसाब 'जैनजगत' में प्रकाशित हो जायेगा।

शेअर के रुपये बाबत लिख दिया है। एक पुस्तक प्यारे राजा बेटा दूसरा हिस्सा अगले महीने में प्रकाशित होगी।

आप प्रसन्न होंगे। पत्र दे, सेवा सूचित करे।

रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब, पूना : १४-६-५८

आपका पत्र मिला। आपने मुझे भगवान् लिखकर जो गाली दी वह न दें तो अच्छा। मैं तो आपका छोटा भाई या आपका सेवक हूँ।

बंबई में मकान चार पाँच महीने के लिए मिला है। कायमी मकान तो लेना है। वह देख रहा हूँ।

पपोते के बीज भेज दिए। जल्से की नोटिस निकालने के पहले साहूजी से पत्र द्वारा आप पुछवा लें। मीटिंग उनके यहाँ ही हो। इस मीटिंग में तख्तमलजी आ सके तो अच्छा। उन्हे भी आप लिखें। यह मीटिंग ११ जुलाई के बाद रखे तो जैनजगत का हिसाब छपा हुआ अंक लोगों को मिल जावेगा।

जमनालालजी का इलाज होना चाहिए, पर वे १-१॥ महीना फ़ुरसत निकालें तभी होगा।

आराम की सख्त जरूरत है, पर मिलेगा ऐसा लक्षण नहीं दीखता। दिन ब दिन काम बढ़ता ही रहता है। पर कामों को टालना कठिन हो गया है। खासकर विद्यार्थियों तथा बेकारों को काम देने का काम इतना अधिक रहता है कि उसमें काफी समय चला जाता है।

आप प्रसन्न होंगे। पत्र दें, सेवा लिखे। चि० रतन को सोमवार को बंबई ले जाकर कॉलेज मे भर्ती करवा दूँगा। रिषभदास

प्रिय भाई साहब, पूना : २३-६-५८

आपसे फोन पर बात हुई। जैनजगत में श्री प्रेमजी के पोते के विवाह के समाचार नहीं आ सके, इसका मुझे रज है। समाचार आदि श्री शर्माजी को मैं दे देता हूँ जो श्री कनकमलजी को दिखाकर छापते हैं। मेरी शर्माजी से बात हुई, उन्होंने बताया कि जगह बिलकुल कम रहने से बहुत से समाचार रह गये सो अगले अक छापे जा सकेंगे।

इस बीच एक जरूरी बात रह गई। मैं साहूजी से मिला था। जुलाई में मीटिंग रखने बावत, सो उनका कहना पडा कि इस मीटिंग में श्री तख्तमलजी भी आवे और अब सब काम की सुव्यवस्था लगाना ठीक रहेगा, क्योंकि औद्योगिक कमेटी तथा छात्रवृत्तियों का काम ठीक से करना है तो उनका आना जरूरी है। मैं भी उनको लिखूँगा। आप भी मिले तो कहिये। श्री तख्तमलजी साहब बंबई आवें तो उनका प्रोग्राम निश्चित कर उनका सम्मान भी करना है, जिससे मंडल के काम का भी प्रभाव अच्छा पडेगा।

आशा है आप प्रसन्न होंगे। 'जैनजगत' के दोनों अक भिजवा रहा हूँ। रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब, पूना : २५ जून ५८

आपका २४-४-५८ का पत्र अभी मिला। भाई श्री कुदनमलजी के स्वर्गवास के समाचार जानकर बहुत दुःख हुआ। पर विधि के आगे कोई वश नहीं चलता। आई परिस्थिति में संतोष मानना ही पडता है। आपके भ्रातृवियोग में मेरी समवेदना है। भगवान् मृतात्मा को शान्ति प्रदान करें।

श्री प्रेमीजी के (पोते के) विवाह संबधी समाचार आगामी अक में अवश्य दूँगा। फोन आपको इसलिए किया था कि आपके पत्र में २० तारीख तक ही बबई में हैं, ऐसा था। यदि मुझे मालूम होता कि आप २४ तारीख तक रहनेवाले हैं तो मैं पत्र ही देता। दरअसल बात

तो मुझे करनी थी कि भारत जैन महामंडल के बारे में आप तख्तमलजी से बात करे। पर समय पर मैं भूल गया। खर्चे के बारे में आपने मेरा ध्यान आकर्षित किया, उसके लिए अनुग्रहीत हूँ।

'जैनजगत' से आपको संतोष है, यह जानकर उत्साह बढ़ा और उसे अच्छा बनाने का प्रयत्न करूँगा ही। पर अर्थ की समस्या सभी जगह आती ही है। अभी यहाँ जो काम होता है, वह मितव्ययता से करने का प्रयत्न चलता है, जिसमें कार्यकर्ता के ऊपर अन्याय भी करना पड़ रहा है। श्री शर्माजी को अपने लोग ८० रु० देते हैं, जिसमें उनका खर्चा चलना तो संभव नहीं है, पर वे एक साहित्यप्रेमी के कारण वह काम कर रहे हैं। यदि उनसे काम लेना हो तो उचित वेतन देना ही चाहिए और उसकी व्यवस्था भी कुछ करनी ही पडेगी। मित्तलजी का पत्र आया है कि ट्रस्ट की अगली मीटिंग में 'जैनजगत' के लिए सहायता देने का विचार होगा। रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब, पूना : १६-७-५८

आपका स्वास्थ्य अच्छा है, जानकर खुशी हुई। आपने जैन लड़के की अर्जी भेजी सो उसके लिए कोशिश करूँगा। आजकल सब जगह से छात्रवृत्तियाँ टेकनिकल लाइन की शिक्षा लेनेवालों को ही अधिकतर दी जाती हैं। बी. ए. और बी. कॉम. की शिक्षा पानेवालों का भविष्य उज्ज्वल नहीं है। उन्हें नौकरियाँ मिलने मे बहुत मुश्किल पड़ती है और आगे यह मुश्किल और बढ़नेवाली है। परंतु आपने लिखा, इसलिए मैं दो-चार जगह कोशिश करता हूँ। पर उन्हें कम-से-कम कितनी छात्रवृत्ति मिलने से काम चल जावेगा, यह नहीं लिखा। मैं उनसे पूछ रहा हूँ।

मीटिंग के बारे मे तख्तमलजी से पुछवाया है, पर मेरा इरादा एकान्त में जाने का है, इसलिए १५ अगस्त के बाद ही मैं मीटिंग में हाजिर रह सकूँगा। मीटिंग की तारीख भी आप बंबईवालों को लिखकर तय करवा ले तो ठीक रहेगा। रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब, पूना : १९-७-५८

आपके दो पत्र मिले। आपको यह शक कैसे हुआ कि मैं नाराजी के कारण एकान्तवास में रहने का विचार कर रहा हूँ। चि० रतन या उसकी माँ से बिलकुल नाराजी नहीं है। उल्टा चि० रतन बंबई में जिस प्रकार फुर्ती से अपने काम करती है और मैं वहाँ रहता हूँ तब मेरी सेवा करती है, उससे मैं बहुत प्रसन्न हूँ। वह पाँच साढे पाँच बजे उठती है और साढे सात तक सब काम पूरा करके रसोई बनाकर कॉलेज में जाती है। रसोई भी बहुत अच्छी बनाती है। उसको कुछ बंबई की बारिश के कारण असुविधा हुई और और मन भी नहीं लगा, पर बारिश की मौसम निकल जाने पर तथा वहाँ जान-पहचान हो जाने पर सब ठीक हो जावेगा। मैं उसके लिए अच्छे सुविधाजनक मकान की कोशिश में हूँ, जिससे उसे किसी प्रकार की असुविधा या अड़चन न हो।

घर पर भी सब तरह से संतोष ही है। फिर मैं एकान्तवास में क्यों रहना चाहता हूँ? क्या मुझे वैराग्य आ गया है और मैं घर-बार छोड़कर कुछ करना चाहता हूँ? यह बात नहीं है। मैं चित्त-शुद्धि का अभ्यास करना चाहता हूँ। एकान्त में आत्मचिंतन करना चाहता हूँ, जिससे जो कमियाँ मुझमें रह गई हों, वे दूर होवें और घर, व्यवहार तथा समाज में निर्दोष बनकर जीवन चला सकूँ। एक प्रकार से जैसे शरीर स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम आदि साधनों का उपयोग किया जाता है, ठीक उसी तरह प्राणायाम-ध्यान आदि के द्वारा चित्त का अभ्यास करना है। वह करके फिर जीवन-व्यवहार ठीक से चलाना है।

स्थान का अबतक निश्चय नहीं कर पाया। पर बंबई के पास इसलिए रहना है कि जो मुझे सिखावेंगे, उनका मार्गदर्शन मिले। वैसे तो मेरा गहरे जंगल, नदी के किनारे या तालाब के किनारे ही रहने का इरादा, था पर वैसा स्थान नजर नहीं आ रहा है, जहाँ मुझे कोई सात्विक भोजन पहुँचा दे। आसन, प्राणायाम के बाद दूध, मक्खन

जैसी चिकनाई न मिले, तो गर्मी बढ़ने का संभव रहता है। पहले अनुभव ऐसा आया कि कुछ बवासीर जैसी तकलीफ हो गई है। इसलिए बिना मिर्च-मसाले की सादी, किन्तु शरीर को पूरा पोषण मिले, ऐसी खूराक लेनी है। शरीर और मन दोनों स्वस्थ रहें, ऐसी साधना करनी है। संभव है कुछ दिन बाद सह्याद्रि की पहाड़ियों मे चला जाऊँ, पर मेरे पास ज्यादा समय नहीं, क्योंकि १५ सितबंर के बाद तो मुझे कम्पनी के काम मे लग जाना पडेगा। उसीमें सब कुछ करना है। उदयपुर की बात भी नजर में है, पर वहाँ पहाड़ी पर या जगल में कोई स्थान मिले तभी रहा जा सकता है। तीर्थ-स्थान में तो पूरा एकान्त मिलना संभव नहीं। पूरे एकान्त के बिना चित्त के संस्कारों, विचारों और वृत्तियों का परीक्षण संभव नहीं। प्रेमचदजी के दोनों कार्ड पहुँचे। इन्दौर आज मैं फिर पत्र दे रहा हूँ। आशा है वहाँ से मदद आ जावेगी, नहीं तो मैं वहाँ एक महीने के बाद जाऊँगा।

जैसे-तैसे करके एक अक तो फिर निकालने का प्रयत्न कर रहा हूँ। फिर आगे देखा जावेगा।

रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब,

पूना : २६-७-५८

आपका ता० २२-७-५८ का पत्र मिला। मैं जो चित्तशुद्धि का प्रयत्न करनेवाला हूँ, उसका उद्देश्य यही है कि जीवन-व्यवहार अच्छी तरह से चले, किसी प्रकार की गलती न होने पावे। किसी महान और गूढ़ तत्त्वों की खोज के लिए नहीं; सिर्फ अपने सुधार के प्रयत्न के सिवा और कोई दूसरा महत्त्व नहीं है। इसलिए मैं कोई महान योगी नहीं बनना चाहता हूँ। केवल कर्त्तव्यों का ठीक से पालन करने की भावना है। इसलिए आपको मुझे नमस्कार करने की नौबत कभी नहीं आवेगी। उल्टे आपको बडे भाई के नाते मैं ही नमन करता रहूँगा। अभी यह सिलसिला यहाँ चल रहा है, इसलिए मैं इंदौर नहीं जा सकता। फिर आगे देखा जायगा।

कुदनमलजी यहाँ आये थे और परसों मुझे मिले थे। आज तख्तमलजी पूना आ रहे हैं, शायद कल मैं वहाँ उनसे मिलने जाऊँगा। अगर मुलाकात होवे तो मीटिंग की बात निश्चित कर लूँगा। जब कोई शुभ प्रयत्न करता है, तो भगवान् कोई-न-कोई रास्ता निकाल ही देता है। आपके लिए रास्ता न निकल करके आप तकलीफ मे पड़ेगे, ऐसा मुझे नहीं लगता। हाँ, कुछ उपकार की आदत को अपनी शक्ति की मर्यादा समझकर कम करना पडेगा। यदि ऐसा हुआ तो चिंता या दुःख की कोई बात नहीं है। इस महान सृष्टि में हमारी शक्ति बहुत अल्प है। उस शक्ति से जितना बन पडे, उतना करना ही हमारे हाथ मे है। हम सारे ससार के दुःखों को दूर कर सकें, ऐसी हमारी शक्ति नहीं है। इसलिए कुछ-न-कुछ अपने स्वभाव मे बदल किये बिना हम लोग सुखी नहीं हो सकेंगे। हमने कुछ सुख और कुछ दुःख अपनी ही कल्पना और स्वभाव के कारण निर्माण किये हैं। मैं यह आपको उपदेश के लिए नहीं लिख रहा हूँ, बल्कि आपकी और मेरी एकसी ही स्थिति है, कोई खास फर्क नहीं है, इसलिए अपने को ही मैं यह कह रहा हूँ ऐसा ही समझें। आप तो वडे भाई के नाते मुझे भूल से बचाने का प्रयत्न करते ही रहते हैं। पर मैं आपकी कुछ भी सेवा नहीं कर पाता, इसका सदा रज रहता है। भगवान से यही प्रार्थना है कि मेरे हाथ से आपकी कुछ सेवा बन पडे। रिषभदास के प्रणाम

प्रिय श्री भाई साहब, पूना : १४-८-१९५८

आपका पत्र मिला। मैं कल उरली से आया हूँ। आज सवेरे श्रीतख्तमलजी का तार मिला। आपने जो कार्यक्रम लिखा था, वह रद्द हुआ है। १९ तारीख को मीटिंग रखी जा सकती है। मैंने कल धीरजभाई को लिखा था। उनका तार आया कि १९ के आगे के कार्यक्रम रद्द किये जायँ। मैं १६ को उन्हे बबई लाने का प्रयत्न करूँगा। यदि कार्य समिति की फार्मल मीटिंग रखने के लिए अपने पास

समय न रहे तो इन्फार्मल मीटिंग १९ को रखी जाय। तार आजही मिला, इसलिए मेरा कोई वश नहीं था।

९-८-५८ तक मौन चला। मौन से बहुत लाभ शारीरिक और मानसिक हुआ। उसके बाद ४-५ रोज उरली रह आया। वहाँ से कल दोपहर को ही आया। जैन जगत मिल गया होगा।

आप प्रसन्न होंगे। आप १८ तारीख को ही बंबई पधार जायँ, देरी हो तो १९ तारीख को पधारे। रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब, पूना : १-१०-५८

आपका २८-९-५८ का पत्र मिला। आपने आँख का ऑपरेशन जयपुर कराने का निश्चय किया, सो जाना। राजी-खुशी के समाचार देते रहिये। इंद्रलाल कपूरचंदजी पापड़ीवाल, हलदियों का रास्ता जयपुर को 'जैन जगत्' शुरू कर रहे हैं। आपने भूपाल के सभासदों की नामावली लिखने को कहा, सो श्री शर्माजी ने आपकी सूचना से ही नामावली श्री कुंदनमलजी लुणावत के पास उसी समय भेज दी थी। हम जैसे आपकी आज्ञा होती है, वैसा ही करते हैं। जब यहाँ वह नहीं है तो बार-बार आपके लिखने पर भी क्या किया जा सकता है?

मैंने साहूजी से कल मिलने का समय लिया है और बंबई की भारत जैन महामंडल की शाखा के विषय में उनसे चर्चा करनेवाला हूँ।

विगत अपराधों के लिए मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ। श्री महावीर जैन वाचनालय, महावीरजी को अंक आपकी सूचनानुसार भेज रहा हूँ। श्री पन्नालालजी बाँसल को अंक भेज दिया है।

आशा है, आप प्रसन्न होंगे। रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब, कोटा : १४-१०-५८

मैं २ अक्तूबर से टूर पर हूँ। बंबई से मैं जामनेर गया। साथ में दादा धामणस्कर थे। फिर वहा से भाई साहब राजमलजी को लेकर अकोला गया। वहाँ का काम करके और जवरीलालजी के बाल-बच्चों से मिलकर यवतमाल गया। और वहाँ का काम करके धामणगाँव। आपको वचन दिया था, वैसे ५ तारीख को वर्धा पहुँचने की तैयारी थी, पर आप जयपुर थे, इसलिए वहाँ से लौटकर कारंजा गया और वहाँ से खामगाँव होकर मलकापुर पहुँचा। मलकापुर में सुगनचंद्रजी साथ हुए और हम इन्दौर पहुँचे। इन्दौर से दूसरे दिन रवाना होकर भोपाल पहुँचे। भोपाल में दो रोज रहे। राजमलजी व सुगनचंद्रजी का इरादा मध्यप्रदेश, राजस्थान में शहर के पास कोई ५०-६० एकड़ जमीन सिंचाई की लेने का इरादा है। वह काम उन्होंने किया और सुगन-चद्रजी वापिस गये। हम सुजालपुर होकर इन्दौर पहुँचे। फिर कल इंदौर से कोटा के लिए पहुँचा। कोटा श्री बुधसिंहजी बाफणा के छोटे भाई को राजमलजी की पोती के लिए देखने आये थे। सवेरे कुनाडी जाकर मोतीलालजी साहब से मिल आया। यहाँ श्री प्रेमकुमारीजी तथा सत्येंद्र बाबू से भी मिलना हुआ। फिर चि० नरोत्तमलालजी व चि० सौ० शान्ताबाई से मिला। हम सब साथ गये थे। राजमलजी साहब, दादा धामणस्कर आदि थे। सबको चि० शान्ता का संसार देखकर बहुत ही खुशी हुई। चि० नरोत्तमलालजी को देखकर बहुत अच्छा लगा। भगवान् दोनों को सुखी रखे। बच्चा बहुत प्यारा लगा।

अब हम यहाँ से अजमेर, ब्यावर होकर उदयपुर जावेंगे। बाफणाजी १७ नवंबर को जामनेर बाई को देखने आवेंगे। इच्छा तो आपसे मिलने के लिए आने की थी, पर अब वीमे के काम के लिए घूमना जरूरी होने से उस काम में लग रहा हूँ।

आशा है आप प्रसन्न होंगे। लेख आपका 'जैन जगत' में छपा और मैंने उस लेख की कुछ प्रतियाँ निकालने को भी कहा था, सो आप लिखेंगे, वहाँ भिजवा दूँगा। रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब चिरञ्जीलालजी बंबई : ६-६-५९

आपका ४-६-५९ का पत्र मिला। पू० नाथजी का स्वास्थ्य पिछले रविवार तक तो सुधर रहा था। रविवार को ४॥ बजे से थोड़ा बिगडा। सर में दर्द हुआ। फिर परसों से तो सबेरे उठते ही भयानक दर्द होने लगा। व्यवस्था और डॉक्टरी इलाज तो बहुत अच्छा है, पर उन्हें दवाई माफक नहीं आती, क्योंकि उन्होंने पहले बहुत कम दवाई का इस्तेमाल किया है। कल रात ९ बजे से भयानक सरदर्द रहा। ब्लड प्रेशर का यह दर्द नहीं था। अम्लपित्त का भी हो सकता है। परसों तक तो फलों का रस तथा बार्लीवाटर या पतली चीज पर ही रखा था। परसों ही खाने को दिया। चिंता हो रही है। शायद १५-२० रोज और भी दवाखाने मे रहना पडे।

मैं रात को दवाखाने मे उनके पास रहता हूं। मेरी ड्यूटी ७ बजे शाम से ९ बजे सवेरे तक की रहती हैं। बाद मे नहा-धोकर भोजन कर ऑफिस जाता हूँ और ५ बजे वापिस आता हूँ। ७ बजे खा-पीकर दवाखाने मे उनकी सेवा मे रहता हू।

पहले गर्मी थी, इसलिए एअर कंडीशन रूम में रखा था। दो दिन से बारिश हो जाने से ठंडक है, इसलिए एअर कंडीशन मशीन बद रखी थी।

उनकी तबीयत यों तो १-१॥ महीने से नरम ही चल रही थी। रात को नींद नहीं आती थी और गर्मी के कारण बेचैनी रहती थी। पर उन्होंने उसी हालत में परिश्रम वैसे ही चालू रखे थे। कुछ चक्कर आने शुरू हुए। इसलिए वे मलाड मे अच्छी हवादार जगह थी, वहाँ गये। २५ तारीख को गये और २६ तारीख को उनका एक पैर लूला

सा हो गया। पैर ठीक हो गया। पर २७ को सबेरे ५। बजे फिट आयी और दूसरी ८ बजे आयी, इसलिए हास्पिटल में लाया गया।

आप सविस्तार समाचार उरली-आश्रमवालों को बता दें। मैंने आपको तथा सिद्धराजजी को पत्र दिया था। शायद अब मिला हो। मैं पू० नाथजी की तबीयत ठीक हुए बिना कहीं बाहर जा नहीं सकता। वैसे तो ६-७ तारीख को शांतिप्रसादजी ने बड़े आग्रहपूर्वक कलकत्ता बुलाया था। बीच में लालचन्दजी, चंपालालजी तथा शांतिलालजी बम्बई आये थे। १-२ रोज के लिए पूना ले जाना चाहते थे, पर पू० नाथजी भी नहीं चाहते कि मैं कहीं बाहर जाऊँ। रात को दूसरे कई भाई रहना चाहते थे, पर पू० नाथजी ने कहा कि रिषभदास ही रहेगा। इसलिए मेरा पूना जाना नहीं होगा।

मैं पू० माताजी तथा रामकृष्णजी से मिलने का प्रयत्न करूँगा। अभी रामकृष्णजी से फोन पर बात हो गई थी। उनकी तबीयत कुछ नरम-सी होने से वे ऑफिस में नहीं आये थे। सोमवार को वे बनारस जावेंगे, उसके पहले आपसे मिलना तो चाहते हैं।

आशा है आप प्रसन्न होंगे। श्री कृष्णचन्द्रजी, शरणप्रसादजी, बालकोबाजी तथा सिद्धराजजी से मेरा प्रणाम कहिये।

रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब, बम्बई : २७-७-५९

आपका पत्र बिना तारीख का मिला। मैं आज पूना से आया। चि० रतन की माँ की तबियत अस्वस्थ है, कमजोरी काफी है। खासकर उन्हें आराम की जरूरत है, पर रसोईवाला नहीं होने से आराम नहीं मिल पाता।

भाई प्रताप आज मिल करके हैदराबाद जा रहा है।

श्री पूनमचंदजी रांका की पैदल-यात्रा संबंधी चिट्ठी मुझे मिल गयी थी। श्री ज्ञानचंदजी लखनऊवाले मुझसे बंबई में मिलनेवाले हैं, लिखा सो जाना।

जैनी ट्रस्ट से ६०० का चैक आया सो जाना। चैक सीकरने पर आप पूना रुपये भेज ही देंगे।

६ अगस्त के बाद मीटिंग बुलाने का लिखा, सो मैं साहूजी से मिलकर आपको लिखूँगा। काम में वेग आना चाहिए लिखा, सो कार्य में वेग तो कार्यकर्ताओं से आ सकता है। जब कार्यकर्ताओं में वेग आवेगा, तब सब कुछ हो जावेगा।

रिषभदास

प्रिय भाई साहब, बम्बई : ८-७-[illegible]

आपका ७-७-५९ का पत्र मिला। भगतरामजी के पहले सब पत्रों का उत्तर उन्हे दे दिया था। उनके आपने भेजे हुए पत्र यहाँ मेरे पास नही हैं। पूना जाने पर भिजवा दूंगा।

जे. एल. जैनी ट्रस्ट को धन्यवाद का पत्र तथा रुपये भिंजवाने के लिए लिख रहा हूँ।

श्री बलदोटाजी से २०१, राजमलजी साहब से १०१, मेरे १०१, आपके १००, इस प्रकार छह सौ रुपये प्राप्त हुए। बारह सौ ये मिल जावेंगे। बाकी कुछ विज्ञापन से प्राप्त हो जावेंगे, ऐसी आशा है। दूसरे सज्जनों ने जो कबूल किया, वह भी मिलेगा ही। आशा तो है, काम चल जावेगा।

रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब, बम्बई : २९-९-६०

आपके दोनों पत्र मिले। समाचार ज्ञात हुए। यह जानकर अत्यंत संतोष हुआ कि आँख का ऑपरेशन सफल हो गया।

अणुव्रत-कान्फरेंस राजसमन्द मे १ तारीख को है।

सोहनलालजी को मैं फोन पर आपकी बात कह दूंगा।

श्री ताराचंदजी को दो बार फोन किया था, वे नहीं मिले। फिर फोन करूँगा।

रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब,　　　　　　　　　　　　　　बम्बई : १२-१०-६०

आपका ८ अक्तूबर ६० का पत्र मिला। देहली से श्री नानकचंदजी जैन ४५८९, डेपुटीगज, सदरबाजार, देहली का शिकायत का पत्र आया था। वह आपको भिजवाया। आप उनसे भी मिल लें। देहली का मामला काफी बिगड़ा हुआ दिखाई देता है। अब आप वहाँ हैं, सो सबको संतोष हो जावेगा।

आपने पत्र मंगवाया, पर वह पत्र आपको लिखने का मैं अपनी पात्रता नहीं मानता। मुझे भी अभी तो बहुत करना है। कर पाऊँगा, तभी कहना उचित होगा। कल मैं श्री कमलनयनजी से मिलने के लिए गया था। कुछ व्यवहार त्यागकर निवृत्ति की ओर जाने की जो मुद्दत निश्चित की थी, उससे पहले जाने का मन हो रहा था। उनकी सलाह ली। आपने अँगूर खाने प्रारम्भ किये, सो बहुत अच्छा किया। बादामों को दूध में घिसकर लें तो बहुत अच्छा है। अन्न कम करके फल, सब्जी, छाछ आदि का अधिक सेवन करें।

आप वर्धा कब तक पहुँचेंगे, मैं वहाँ आना चाहता हूँ। श्री चपालालजी की भाभीजी का स्वर्गवास हो गया, इसलिए बैठने जाना है। चाहता हू कि यदि आप भी वहाँ हों तो और भी अच्छा हो।

आशा है आप स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे। पत्र दें।　　　　रिषभदास

प्रिय भाई साहब,　　　　　　　　　　　　　　बंबई : २६-१०-६०

आशा है आप वर्धा पहुँच गये होंगे। दीपावली के अवसर पर आप महावीरजी थे तथा वहाँ आपने भक्ति-भाव-चिंतन किया होगा। यह बड़ी ही प्रसन्नता की बात है। यद्यपि मैं दीपावली के दिन तीर्थक्षेत्र में तो नहीं था, पर सोचता रहा कि अगला साल पिछले साल से कैसे अच्छा बीते। पिछले साल की भूलें फिर से कैसे न हों और किताब का नया संस्करण जैसे निर्दोष तथा अच्छा होता है, वैसे यह उम्र का एक

हिस्सा कैसे अच्छा हो। आशा है आप जैसे आत्मीयजनों के आशीर्वाद तथा शुभ कामनाओं से आगामी वर्ष अधिक निर्दोष होगा।

मैं पिछले कई दिनों से सोच रहा हूँ कि चार साल के बाद निवृत्ति लेनी ही है, तो पहले ही क्यों न लूँ। यदि अभी निवृत्ति लेकर बम्बई छोड़ देता हूँ, तो सादगी के साथ स्वाभिमानपूर्वक जीवन चल सके, ऐसे साधन हैं। आज जो सत्ता या साधन हाथ में हैं, उनसे जितना दूसरों को उपयोगी बन सकता हूँ, उतना नही बन पाऊँगा। भले ही शरीर से अधिक सेवा भी कर लूँ, फिर भी बाहर आना-जाना या खर्च करना संभव नहीं होगा। आज जिस तरह दूसरों को काम पर लगा सकता हूँ, संभव है वैसा न कर पाऊँ। पर शुद्धि और शाति निवृत्ति लेने से अधिक प्राप्त होगी।

मेरा विचार जैसे पहले निश्चित किया था, चिंचवड़ रहने का ही है। वहाँ की आबोहवा तथा परिश्रम की जिन्दगी से स्वास्थ्य अच्छा रहेगा और खर्च भी कम आवेगा। पर जब मुझे बडप्पन की आकाक्षा न हो, तो क्यों न ऐसा काम लेकर बैठ जाना चाहिए कि जिससे शरीर की सेवा भी बन पडे और शाति भी मिले। आज के व्यापार में पूर्ण शुद्धि संभव नहीं है। यद्यपि व्यवहार में शुद्धि से चलने का प्रयत्न है, फिर भी पूर्ण शुद्धि संभव नहीं है। इसलिए यह रास्ता छोडकर व्यवहार से, निवृत्ति से जो प्राप्त हो उस पर चलावें। यह प्रश्न मेरे सम्मुख है। शुद्धि से जो प्राप्त होगा वह आज से कम होगा, पर भूखों तो नहीं मरना पड़ेगा। फिर क्यों न वह रास्ता अपनाया जाय। ये सब विचार चल रहे हैं। निर्णय नहीं कर पा रहा हूँ। पर गभीर चिंतन और विचार के साथ ऐसा रास्ता लेना है जो सभी दृष्टि से श्रेयस्कर हो। आपसे भी राय चाहता हूँ। वह देने की कृपा करें।

२५१ रु० श्री धरमचंदजी सरावगी ने छात्रवृत्ति फंड में तथा १००१ रु० श्री साहू जैन ट्रस्ट ने भेजा, सो जानिये। छात्रवृत्ति फंड के आश्वासन ५००० रु० के हो गये हैं।

मैं वर्धा आना तो चाहता हूँ, पर हमारे मैनेजर साहब बाहर गाँव गये हुए हैं, इसलिए शायद आठ-दस रोज लग जायँ। चिंचवड़ में जो 'साहूजैन सभागृह' बना है, उसका उद्घाटन किसी बडे आदमी के हाथ से करवाना है। क्या आप बड़ा आदमी मिला देने में मदद करेंगे ? कृपया लिखें।

रिषभदास

प्रिय भाई साहब,

बंबई : १५-११-६०

मैं कल चादवड़ गया था। वहाँ मीटिंग थी। डायरियाँ वहाँ पहुँच गयीं और उनका बेचने का सिलसिला जमा रहा हूँ। कुछ लोगों को डायरियाँ बहुत पसंद आयीं और कइयों ने कहा कि यह नाहक की झंझट क्यों खड़ी की। यदि लागत की रक़म निकल जाती है, तो अच्छा है। उम्मीद तो है कि बिक्री हो जावेगी।

श्री मोहनलालजी चौधरी को मध्यप्रदेश मे भेजा है। आपका कार्यक्रम मालूम हुआ। आप २७ ता० को देहली जा रहे हैं। देहली का मामला सुलझा नहीं। आपके निवेदन से सतोष होने की ऐवज मे लोगों में असंतोष बढ़ा, ऐसा पत्रों से लग रहा है। आपकी श्री भगत-रामजी से क्या बातचीत हुई थी, कम-से-कम उनको तो सतोष है न ? देहली का मामला ऐसा बिगड़ जावेगा, ऐसी उम्मीद नहीं थी। जैन जगत में आपका निवेदन और····· ·का जीवन-परिचय छपने से लोग और भी नाराज हुए, ऐसा दीखता है। क्या किया जाय, हर जगह आपसी ईर्ष्या और द्वेष के कारण सामाजिक सेवा के कामों में भी रागद्वेष बहुत बढ़ गया है। सेवा से मनुष्य ऊँचा उठने की अपेक्षा नीचा ही गिरता हुआ दिखाई दे रहा है। यहाँ बम्बई में आजकल सेवा-कार्यों के लिए नाच-गाने के कार्यक्रम सास्कृतिक कार्यक्रम के नाम से रक्खे जाते हैं। उससे लाखों रूपया इकट्ठा किया जाता है। चायपार्टी और खाने मे हजारों का खर्च, होता है। इससे क्या सेवा होती है सो तो भगवान् ही जाने।

मैंने श्री चंपालालजी के साथ ७५ डायरियाँ वर्धा भेजी हैं। जिन्हें पसन्द आवे वे खरीद सकें इस दृष्टि से वहाँ भेजो हैं।

रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब, बम्बई : २५-१२-१९६०

आपने कल रात को तकलीफ उठाकर स्टेशन पर पधारने का कष्ट किया। आपकी इस कृपा के लिए मैं आभारी तो हूँ ही, पर शर्मिंदा भी हूँ। वास्तव मे मुझे आपकी सेवा करनी चाहिए, वह नहीं कर पाता। पर आपको मेरे कारण कष्ट ही भुगतना पड़ता है। आपके उपकारों को मैं कैसे फिटा पाऊँगा। मुझे कल रात को काफी विचार रहा।

जो आदमी १५-२० रोज पहले व्यापार या नौकर छोडने बैठा था उसे नए-नए कामों में उलझता हुआ देखकर आपको कुछ अचरज तो होता ही होगा, पर आपके साथ बैठकर सब बातें बतानी होगी कि यह मैंने क्यों किया और इसमें मुझे कितना सावधान रहना होगा।

पू० नाथजी ने निवृत्ति लेने के एवज मे यदि लोक-कल्याण के हेतु शुद्धि से व्यापार कर सकूँ, तो करने का आदेश दिया था। इसलिए यह प्रयोग करने का विचार चार साल के लिए किया। फिर शातिप्रसादजी की इच्छा ऐसी दिखाई दी कि इस कंपनी में वे रुपया लगाकर कमाई से भी सेवा-कार्य में मदद देना चाहते हैं। लोगों को काम सिखाकर काम पर लगाना, ऐसा उनका उद्देश्य है। मेरा भी उद्देश्य सेवा का ही होने से उनके आग्रह के बावजूद मैंने इस कंपनी में नौकरी करना मंजूर नहीं किया। मैं नौकरी तो 'जय भारत' में ही करूँगा। वैसी श्री रसिकलाल भाई से बात भी हो गयी है कि मुझें चार वर्ष 'जयभारत' मे ही निकालने हैं। फिर भी युनिवर्सल कम्पनी का काम मुझे जमाना है; वह जय भारत को या उसके काम को हानि न पहुँचाते हुए करना है। पर इस बात को लेकर यह बात स्पष्ट हो गई कि उनका मुझ पर बहुत स्नेह और कृपा है। ऐसा भरोसा मैंने

अपने जन्म में एक तो पू० सेठजी से पाया था और आज इनसे। उनका यह विश्वास दिन प्रति दिन बढ़कर उससे अधिक सेवा कर पाऊँ यही भगवान् से प्रार्थना है और इसमें आपका आशीर्वाद ही नहीं चाहता, पर आप मुझे सावधान करते रहें यह चाह है। पू० नाथजी ने तो सावधान किया ही, पर आप भी सावधान करते रहिये।

सचमुच मैं भगवान् का कृतज्ञ हूँ कि उसने मुझे अनेक मित्र और आत्मीयजनों का कृपापात्र बनाया। भगवान् मुझे अहंकार और भोग से बचावे। कलकत्ते से टिकट न मिलने के कारण एअर कंडीशन में आना पड़ा, पर मुझे सदा सावधान रहना है कि मैं कहीं बड़प्पन या भोग में न उलझ जाऊँ। यदि कहीं मेरी भूल होती हो, तो आपको सावधान करना है। आप जल्दी आवें तो आपसे बातें बहुत करनी है। सुख-दुःख की बात भला आपके बिना किससे कर सकता हूँ! पाचसौ रुपए सोहनलालजी दुगड़ ने छात्रवृत्ति फंड में बिना-मांगे ही दिये और सोहनलालजी सेठिया ने ५० रुपए महीने की छात्र-वृत्ति। पत्र दें, कृपा रखें। रिषभदास के प्रणाम

प्रिय भाई साहब, बम्बई : ३० जनवरी ६१

आपका २६-१-६१ का पत्र मिला। पढ़कर अत्यत चिंता हुई। श्री ......पर इस उम्र में यह धक्का बहुत बड़ा है। पर इस समय आपका लिखना ठीक है कि योग्य समय आने पर कोई उपाय सोचकर मदद तो करनी ही चाहिए। अपने मित्र के दुःख या सकट में यथा-संभव करना अपना कर्तव्य ही रहता है। प्रयत्न करना या सद्भाव रखना हमारा कर्तव्य तो है ही और वह निभावेंगे भी, पर हमारी इच्छा पूरी होना या कार्य में सफलता पाना अनेक बातों पर अवलम्बित रहता है।

पुस्तक-प्रकाशन विभाग के विपय में मैंने श्री रमणीकलाल भाई के पास कागज-पत्र भेजकर कहा था कि वे रुपये भिजवा दें। अका-

डंटेट को कुछ जानकारी चाहिए। इसलिए वह पत्र लिख रहे हैं। उसका खुलासा आने पर रकम भेज दी जावेगी।

जैनजगत में आपकी सूचना प्रकाशित करवा रहा हूँ। जैन-जगत आपको ठीक लगा, जिससे संतोष हुआ। श्री बाठियाजी के लेख से जयपुर के दिगम्बर भाइयों में कुछ हलचल पैदा हुई। उनका मानना रहा कि यह लेख विवादास्पद है। भाईजी गंगाबिसनजी वाला लेख कैसा लगा?

पू० नाथजी को इस बार आपका स्वास्थ्य देखकर चिन्ता हुई। मुझे उन्होंने कहा कि हम लोग आप पर जबरदस्ती करें कि आप प्रवास बिलकुल न करे और स्वास्थ्य अच्छा रक्खे। उन्होंने कहा कि चिरंजीलालजी से काम लेना या प्रवास करने देना भयानक हिंसा है। इसलिए मेरी ओर से भी कहो कि वे शरीर को और मन को स्वस्थ बनावें। दूसरों के दुःख को दूर करने के लिए भी वे बाहर न जावे। अपनी शरीर-शक्ति की मर्यादा समझकर वे घर बैठकर किसीको अपना अनुभव बता सकें, उतना ही काम करें, इससे अधिक नहीं। दूसरे का दुःख दूर करने की या समाज-सेवा की भी चिन्ता अब छोड़ देनी चाहिए। यह भी एक प्रकार का नशा है। वह त्यागना ही इष्ट है।

मुझे इससे अधिक कहने की हिम्मत नहीं होती, पर प्रार्थना करता हूँ कि अब आप शान्त चित्त से एक जगह रहकर भगवान् का भजन करें। चित्त को शुद्ध और निर्मल बनाने का प्रयास करें। इस बार मुझे भी आपका स्वास्थ्य देखकर चिन्ता ही हुई।

रिषभदास

प्रिय भाई साहब,

बंबई : १६ मार्च ६१

आपका १३ मार्च ६१ का पत्र मिला। समालोचना की अलग प्रतियाँ नहीं छपवाई। आपकी सूचनानुसार 'जैन जगत' भिजवा रहा हूँ।

आपका (बवासीर का) आपरेशन ठीक हो गया सो जानकर संतोष हुआ। आपको वहाँ क्लिनिक मे रहना होगा लिखा, सो रहकर अपना स्वास्थ्य अच्छा बनावे।

श्री जमनालालजी के (बवासीर के) आपरेशन के मुझे भी समाचार थे। सभी संप्रदायों की प्रमुख सस्थाओं ने मिलकर महावीर जयन्ती को सभी जगह अच्छी तरह से मनाने के लिए संयुक्त प्रयत्न करने का निश्चय किया। यहाँ श्रीप्रकाशजी व प्रो० रजनीशजी महावीर जयन्ती के अवसर पर व्याख्याता होंगे।

आशा है आप स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे। रिषभदास

प्रिय भाई साहब, बंबई : २-६-६१

आपका चंपापुर से लिखा हुआ २८-५-६१ का कृपा पत्र प्राप्त हुआ। आपने भागलपुर के मैनेजर साहब के पुत्र की छात्रवृत्ति के विषय में लिखा सो अपनी संस्था की ओर से मध्यप्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र तथा मैसूर प्रात के लडकों के लिए ही व्यवस्था की जाती है। बिहार, बंगाल, असम, उडीसा, यू० पी० में साहू जैन ट्रस्ट की ओर से छात्रवृत्ति दी जाती है। मैं मुनीमजी को पत्र दे रहा हूँ।

आपकी यात्रा सफलतापूर्वक सपन्न हुई होगी। समाचार विगतवार दें। यदि रिपोर्ट जैनजगत के लिए भिजवा सके, तो बड़ी कृपा होगी।

कलकत्ते में आप साहूजी से मिले होंगे। आशा है भेंट अच्छी हुई होगी। तिनसुकिया तथा कलकत्ता में मैंने जो पत्र लिखे थे, कुछ उपयोग हुआ ? प्रतापसिंहजी बैद ने क्या मदद की ?

रजिस्ट्रेशन बबई में करने से रजिस्ट्रार ने इनकार कर दिया। वकील ने बहुत प्रयत्न किया। इसलिए वर्धा से ही रजिस्ट्रेशन कराना पडेगा। वह कहता है कि पिछले साल दफ्तर बबई ट्रासफर करने का प्रस्ताव होता तो काम हो सकता था। इसलिए विवशता है। आपको कष्ट देना पड़ रहा है। इस नैया को आप ही पार लगा सकते हैं। अब आपके दर्शन कब होंगे ? रिषभदास

प्रिय भाई साहब, बंबई : २५ मई ६१

आपका १७-५-६१ का कृपा पत्र मिला। यहाँ पर भारत जैन महामण्डल को रजिस्टर्ड करने की पूरी कोशिश कर ली। चेरिटी कमिश्नर के पास वकील गये थे। उन्होने बताया कि प्रथम वर्धा में रजिस्टर करने पर यहाँ ट्रांसफर किया जा सकता है। आज कुछ भी नहीं हो सकता। आप यह तो जानते ही हैं कि मैं कानूनी झंझटों में कुछ भी जानकारी नहीं रखता। वकील जैसा कहते हैं, वही लिखना पड़ता है। आप ही इस झंझट से छुटकारा दिला सकते हैं। मैं तो इस मामले में निराश हूँ। आप जब वर्धा पधारेंगे, तब कोई रास्ता निकाल लें। यहाँ तो चेरिटी कमिश्नर कुछ भी सुनने को राजी नही है। बहुत प्रयत्न हुए। आपकी यात्रा सुखद हो रही होगी। कलकत्तावाले मित्रों को मैंने लिखा था। उनके समाचार आये थे। आशा है आप स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे।

रिषभदास

प्रिय भाईजी, बंबई : २३ जून ६१

आपका पत्र मिला। ब्लिट्ज पत्र से झगड़ा मोल लेने मे उसका ही लाभ है। उसका तो धन्धा ही है कि ऐसी बाते लिखकर उत्तेजना फैलाना और लोकप्रियता तथा पैसा पाना। वह लोगों से पैसा निकालता है और धमकियाँ देता है। फिर मैं साहूजी से इस विषय में सलाह करता हूँ।

यहाँ पर श्री शातिप्रसादजी आये थे। उनसे काफी बाते हुई। उन्होंने अक्तूबर मे या नवम्बर में जब अधिवेशन होगा, आना मंजूर कर लिया है। अब वहा तैयारी करने को लिख रहा हूँ। १७ जुलाई को लालचंदभाई विलायत से आवेंगे, तब तारीखें निश्चित कर लेंगे। श्री दूबे जी, मोहनलालजी भट्ट मिले थे। उनके काम के विषय मे मैंने बात की और नोट्स उन्हें दे दिये हैं। कानोड़ संस्था को एक हजार

रुपया साल पाच वर्ष तक देने की स्वीकृति दे दी है। तथा एक हजार रुपया देवरूख, रत्नागिरि बोर्डिंग को दिलाया।

इधर मण्डल के आजीवन सदस्य बढ़ाने का सिलसिला बहुत अच्छा चल रहा है। इन्दौर में २० आजीवन सदस्य बन गये। श्री चौधरीजी बहुत अच्छा काम कर रहे हैं।

जयपुर अधिवेशन अध्यक्ष के लिए बैरिस्टर डालमचदजी सेठिया का सुझाव साहूजी को पसन्द है। वे बडे भले आदमी हैं। फिर तेरापथी समाज के अब तक कोई अध्यक्ष नहीं बने थे। वे बन रहे हैं। ये सोहनलालजी सेठिया के बडे भाई है। रिषभदास

भाई प्रतापचद, बबई : ११-८-६१

तुम्हारा पत्र मिला। भाईजी का स्वास्थ्य सुधर रहा है, यह भगवान् की बडी कृपा समझो। अब उन्हें बहुत ध्यान रखना चाहिए। वे चिंता, उद्वेग तथा गुस्सा न करें। दूसरे के दुःख दूर करने की चिंता से भी मुक्त हो जायँ। जब शरीर ने धोखे की, खतरे की सूचना दे दी तो चेत जाना चाहिए। आराम से रहे और शरीर तथा मन को अच्छा रखें।

पूना के बाढ़-पीडितों के लिए प्रयत्न चल रहा है। ढाई लाख रुपया कर्ज देने का कार्यक्रम है। उसमें ७५ हजार रुपया अपने को जमा कराना होगा। तीन संस्थाओं ने जिम्मेदारी बाँट ली है। २५ हजार श्वेताम्बर कान्फरस, २५ स्थानकवासी कान्फरंस व २५ महामडल। मडल के पन्द्रह हजार हो गये हैं, दस करने हैं। इसके बाद कॉलनी के लिए करना है।

जैनजगत, जिसमें हिसाब छपा, भेज दिया गया था फिर और भेज रहा हूँ। रिषभदास

प्रिय भाई साहब, बंबई : २७-९-६१

आपका २५-९-६१ का क्षमापना पत्र मिला। अनुगृहीत हूँ। मैं भी आपसे जान-अनजान में हुई भूलों, दोषों और अपराधों के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

आपने एकाशन और उपवास किया और धर्म-ध्यान में समय बिताया लिखा सो जाना। धर्म भी खुद एक बहुत बड़ी दवा है। उससे बीमारियाँ दूर होती हैं, ऐसा अमेरिका में शोध लगा है। और यह विज्ञान भी विकसित हो रहा है। इस बार के जैनजगत में मैं इस विषय पर लिखने की सोच रहा हूँ।

सामूहिक क्षमापना का आयोजन यहाँ बहुत ही सफल रहा। चित्र-भानु जी, तेरापंथी मुनि चन्दनमलजी, स्था० साध्वी सुमतिकुवरजी, व चन्दनबालाजी आई थीं। आपको जानकर खुशी होगी कि चिमन-लाल चकुभाई और उनके साथी आजीवन सदस्य बन गये है और मण्डल के कामों को समर्थन दे रहे हैं। मूर्तिपूजक समाज के भी बड़े-बडे नेता सम्मिलित हो रहे हैं। मोहनलालजी चौधरी ने बम्बई में ६८ आजीवन सदस्य बना लिये है। मण्डल का कार्य-विस्तार बढ़ने के आसार दीख रहे हैं।

पूना-बाढ़ के लिए भी काफी रकम आई है और आ रही है। बीस हजार के ऊपर आये।

आप २४-९-६१ का और १-१०-६१ का 'धर्मयुग' पढ़िये। २४ के धर्मयुग में पारसनाथ तीर्थ पर वर्मा जी का बडा ही सुंदर लेख है। १ अक्तूबर के अंक में आपकी बेटी रतन का झवेरचंद मेघाणी के लेख का अनुवाद है। महात्माजी, कृपलानीजी के लेख भी पढ़ने योग्य हैं। मैंने 'कुष्ठ रोग' पर लिखा है।

४ अक्तूबर को मंडल की मीटिंग रक्खी है। श्री मदनलाल का व्यवहार श्री रामकृष्णजी के साथ संतोषजनक नहीं रहा। मन को वेदना

ही हुई। मेरा रामकृष्णजी के विषय में ख्याल बहुत ऊँचा है। उनको कष्ट हो, यह मुझे अच्छा नहीं लगता। पर क्या किया जाय, अपने लोग जिम्मेदारी का ख्याल नहीं रखते। अब उनके पर लग गये हैं। काश्मीर जा रहे हैं।

आप स्वस्थ एव प्रसन्न रहिए। मुझे भी चि० प्रताप पर पूरा विश्वास है। सपूत की तरह वही हम लोगों के दुःख मे काम आ सकता है। हमारा वह आसरा है। उसके लिए मेरे मन में ऊँचे ख्याल हैं। भगवान् उसे सुखी, स्वस्थ और अच्छा बनाए रक्खे।

आप प्रसन्न और निश्चित रहिये। आखिर सत्कर्मों के फल में तो हमारा विश्वास होना ही चाहिए। मैं तो उसे दूसरे रूप में देखता हूँ और भगवान् की सज्ञा देता हूँ। वर्णीजी के स्मारक मे एक सौ रुपया भेजा।

रिषभदास

प्रिय भाई साहब, बम्बई : ६ नवम्बर ६१

आपका पत्र नहीं सो दें। इन दिनों मैंने 'धर्मयुग' के लिए वृद्धों की समस्या पर लेख लिखने के लिए वृद्धों के विषय में परदेशों में लिखे साहित्य का काफी अध्ययन किया। इससे बुढापा कैसे सुख से कटे इस विषय पर काफी जानने को मिला। मनुष्य बिना किसी प्रश्न पर गहराई से पढ़े या उस विषय का उपलब्ध ज्ञान प्राप्त किये अधूरे ज्ञान के बल पर कुछ बात कहता है या करता है, वह कितना अज्ञानपूर्ण रहता है, यह अनुभव हुआ। हमने ऐसा मान लिया था कि व्यावहारिक कामों से अवकाश ग्रहण करना, निवृत्ति लेना ऊँची अवस्था है, जैसी हमारे पूर्वज मानते आये थे। उस निवृत्ति में कुछ जनसेवा और कुछ आत्म-विकास का प्रयास, ये दोनों विचार रहे हों, पर आज जो परिस्थिति और हमारी मनःस्थिति है, उसमें अवकाश ग्रहण करना श्रेयस्कर होगा या नहीं, प्रश्न ही है।

हमारे यहाँ गृहस्थी और संन्यास, प्रवृत्ति और निवृत्ति ये अवस्थाएँ मानी गयी हैं। गृहस्थी में परमार्थ नहीं सध सकता। इसलिए संन्यास को परमार्थ साधन का मार्ग समझा गया, पर आज इस विचार का फिर से प्रचार हो रहा है कि क्यों न गृहस्थी को ही परमार्थ-साधन का रूप दिया जाय—उसे आदर्श और आत्म-कल्याण कारक बनाया जाय। यदि इस प्रकार हमारी आदर्श तथा धर्ममय गिरस्ती रहती है तो निवृत्ति की जरूरत नहीं रहती।

हाँ, हमारे बुढ़ापे में करने के काम मे कुछ परिवर्तन हो जाना चाहिए। अगर काम के घण्टे घटाकर इस प्रकार विभाजन किया जाय, तो बुढ़ापा सुख सें कट सकता है। ४ घण्टा काम, ४ घण्टा आराम, ४ घण्टा सेवा के काम। पर जब काम से निवृत्ति लेते हैं तो सेवा में समय लगावे, इतना काम नहीं होता। स्वाध्याय, चिंतन तथा खेल में समय लगा नहीं सकते। खाली समय में या तो इधर-उधर की निकम्मी बातें होती हैं या बुरे विचार आते हैं। फिर रिटायर होने पर आदमी ऐसा मानने लगता है कि मैं काम का नहीं रहा। बोझ रूप हूँ। इस तरह उसका आत्मविश्वास नष्ट हो जाता है।

शरीर, बुद्धि और मन को बुढापे मे अच्छा रखने के उपाय सुझाये गये हैं। शरीर अच्छा रखना हो तो कम खाना, नियमित घूमना और व्यायाम, मात्रा में कम खाना चाहिए, पर स्वत्वयुक्त खाना चाहिए। आराम लिया जाय। दोपहर को एकाध घण्टा जरूर सोना चाहिए।

बुद्धि या मन अच्छा रखने के लिए मन को प्रसन्न तथा कषाय-मुक्त रखनां चाहिए। ममत्व कम हो। स्वभाव मे उदारता तथा सहन-शीलता रहे। धीरज से काम ले। मन शान्त रखे। सत्संगति या स्वाध्याय हो तो उसका शरीर पर भी अच्छा परिणाम होता है।

वैसे तो यह लेख ३ दिसम्बर के 'धर्मयुग' मे आवेगा। १२ नवम्बर के 'धर्मयुग' में बच्चों के ऊपर 'हमारा आगामी संस्करण' नामक लेख आ रहा है।

रिषभदास के प्रणाम

भाई प्रताप, बम्बई : २६-१०-६१

पत्र नहीं सो देना। मण्डल की चार तारीख को मीटिंग अच्छी तरह से हो गयी। श्रीमान सेठ राजमलजी यहाँ आये थे। ८-१० रोज रहे। फकीरचन्दजी भी बाद मे आये। मैं जामनेर, नागपुर गया था। थोड़ी देर वर्धा और धामणगाँव भी ठहरा। कुछ गड़बड़ी के कारण मैं घर पर नहीं जा सका। नागपुर में लोहे की रोलिंग मिल गंगाबिसनजी ने शुरू की। उसमें अभयराजजी साहब तथा मैं, दोनों डायरेक्टर हैं। सो उस मीटिंग के लिए गये थे।

भाईजी से कहना श्री रामकुमारजी एल-एल. बी की परीक्षा के लिए उदयपुर गये हैं। जाते समय मुझे मिले थे। बता रहे थे कि मेरे जन्म में अभयराजजी जैसा भला सेठ दूसरा नहीं मिला। बहुत तारीफ कर रहे थे।

भाईजी का स्वास्थ्य कैसा है। उन्हे आराम लेने देना। मै बुढ़ापे पर अध्ययन कर रहा हूँ। ३ या १० दिसम्बर के 'धर्मयुग' मे लेख आवेगा। १२ नवम्बर के अक में 'हमारा आगामी संस्करण' यह लेख आ रहा है।

दीवाली पर श्री रामकृष्णजी का व्यापारियों के लिए 'धर्मयुग' में लेख आवेगा। फिर ३ दिसम्बर को लालचन्दजी का। इसी प्रकार महात्माजी, पू० नाथजी आदि के लेख भी आवेंगे। रिषभदास

प्रिय भाई साहब, बम्बई : ३०-११-६१

आपका पत्र मिला। आपके ठहरने की व्यवस्था बलदोटा भुवन में कर ली है। चर्चगेट स्टेशन के सामने जो रास्ता जाता है, उसमे तीसरा मकान है। क्रास रोड जहाँ इनकम टैक्स ऑफिस वगैरह है, उसी गली में मकान है। पाँचवें माले पर उनका ऑफिस है। रिषभदास

भाई चिरंजीलालजी, बंबई : २४-१-६२

मैं मृत्यु के मुख से ही लौटा, यह कहना अतिशयोक्ति न होगी। १५ रोज तो बेसुध था। अब प्रकृति सुधर रही है, फिर भी १५ दिन दवाखाने में और रहना होगा।

इस बार जो घर तथा बाहर के लोगों ने सेवा की, वह अद्वितीय ही कही जावेगी। बम्बई की जनता ने भी अपूर्व प्रेम प्रदर्शित किया। अबतक किसी भी दवाखाने मे एक व्यक्ति के समाचार पूछने इतने लोग नहीं आये थे। रेकार्ड टूट गया। साहूजी, रामकृष्णजी, बलदोटाजी ने दो-दो चार-चार घटे बैठकर सब व्यवस्था की। जंवाइयों ने तो ऐसी सेवा की, जिसका मुकाबला हो ही नहीं सकता।

इस बीमारी के निमित्त से लोगों के प्रेम का दर्शन पाया, उससे मेरा ऋण बढ़ गया है। अब भगवान् से यही प्रार्थना है कि वह मुझे इस योग्य बनावे।

रिषभदास

प्रिय भाई साहब, पूना : १७-३-६२

आपका ७-३-६२ का पत्र मिला। ७-८ अप्रैल ६२ को जयपुर में महामंडल का अधिवेशन है। और आप वहाँ अवश्य पहुँच जावेंगे, लिखा सो जाना।

मैं भी लोगों को पत्र लिख रहा हूँ, आप भी लिखें। इस अधिवेशन पर आधिक लोगों का पहुँचना आवश्यक है। इसे सफल बनाना है। बबई से भी अधिक-से-अधिक लोग वहाँ पहुँचे, ऐसा प्रयत्न है।

मैं श्री रामजलजी साहब को भी पत्र लिख रहा हूँ।

चि. वर्षा ने तथा उसकी माँ ने ३-३ दिन के उपवास किये थे। उन्होंने बच्चे की तथा मेरी बीमारी मे उपवास का संकल्प किया था, इसलिए किये। कोई खास बात नहीं है।

मेरा स्वास्थ्य तो वैसे ठीक है, किन्तु लंबा प्रवास करने जैसा है या नहीं, यह प्रश्न है। बाकी स्वास्थ्य ठीक रहा तो और स्वास्थ्य ने इजाजत दी तो मेरा जयपुर आने का विचार है। रिषभदास

प्रिय भाई साहब, बम्बई : २६-४-६२

आपका पत्र नहीं सो देने की कृपा करें। आप जयपुर से सकुशल लौट आये होंगे। मैं यहाँ मजे में पहुँचा। जयपुर में आपके साथ विशेष बातचीत न होने का रंज रहा, पर मेरी तबीयत और वहाँ के कामकाज की गड़बड़ के कारण आपसे विशेष बात नहीं हो पायी। काफी दुःख रहा। अब जब मौका मिले तब साथ-साथ बैठकर एक दो रोज आराम से बात करें।

आपको एक कष्ट देना है। तत्त्वार्थ सूत्र की ३० प्रति रेलवे पार्सल से आबूरोड स्टेशन पर पेसेंजर गाड़ी से भिजवाना है। एक खोखे में भरकर अच्छा पैकिंग करके रसीद यहाँ भिजवा दें। रिषभदास

प्रिय भाई साहब, बम्बई : ७-५-६२

आपके दोनों पत्र मिले, तथा श्री रमणलाल भाई के नाम लिखा पत्र मिला। समाचार जाने। कांतिसागरजी बरी हो गये, अच्छा हुआ। आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता, यही हाल मेरा हो गया है। मैं भी बाहर बहुत कम आते-जाते रहता हू। २१ तारीख की मेल से साहु-साहब नागपुर जा रहे हैं। २२ तारीख को वहाँ वे रहेंगे। आप वर्धा स्टेशन पर मिल लें तो अच्छा।

कार्यकारिणी में इस बार श्री ताराचन्द भाई का नाम नहीं आया। आपने लिखा कि आपका इस्तीफा लेकर उनका नाम दे दिया जाय, सो मैं समझता हूँ कि मेरा इस्तीफा देना स्वास्थ्य की दृष्टि से श्रेयस्कर रहेगा और मैं काम करता भी रहूँगा। मीटिंग में जब जरूरी होगा, हाजिर हो

जाऊँगा। यह मैं जरा भी क्रोध में अथवा आवेश में नहीं लिख रहा हूँ। पर प्रेम से और स्वास्थ्य का ध्यान रखकर लिख रहा हूँ।

रिषभदास

प्रिय भाई साहब, बंबई : २३-५-६२

साहूजी साहब से मेल पर वर्धा मे मुलाकात हो गई होगी। सौराष्ट्र शाखा के लिए ५८००० रु० का चन्दा छात्रवृत्ति के लिए किया गया और १४ आजीवन सदस्य बने। वहाँ दो-ढाई लाख रुपये चन्दा होने की उमीद है।

मेरा स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहता। अब थोड़ा परिश्रम होता है तो फिर से तबीयत खराब होने का डर पैदा हो गया है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि मंडल का काम अच्छे काम करनेवालों को सौंपकर मैं मागें तब सलाह-मशविरा दिया करूँ, पर अब एक्टीव काम शायद मुझसे भी न हो सके। आप और मै अब बेकार बन गये हैं। आपकी तबीयत के समाचारों से चिंता ही होती है।

आपने सौराष्ट्र के योग्य किसी आदमी को लेने की बात कही, सो सौराष्ट्र से २-३ आदमी ले लिये हैं। लवणप्रसाद शहा, अमृतलाल दोशी आदि को। आपने मंडल के विषय में मैं मेरी मर्जी माफक करूँ लिखा सो अब तो वह मेरा भी सामर्थ्य नहीं रहा। मैं भी बीमारी के बाद अयोग्य बन गया हूँ। कहीं बाहर आ जा नहीं सकता। ज्यादा परिश्रम कर नहीं पाता। किताबे यहाँ भिजवा दें। रिषभदास

प्रिय भाई साहब, बंबई : २८-५-६२

आपका २६-५-६२ का स्नेहपूर्ण व आत्मीयता युक्त पत्र प्राप्त हुआ। मैं आपका अत्यंत आभारी हूँ।

आपकी और मेरी लगभग एकसी स्थिति है। अब हम लोग विशेष काम नहीं कर सकते। कल कोठारीजी, जयंतीभाई, रमणलाल सी० शहा

तथा लवणप्रसाद शहा आदि हम सब लोगों ने मिलकर मंडल के विषय में विचार किया। मडल व जैन जगत का आफिस का सब काम अब कालबादेवी आफिस से चले, ऐसा निर्णय किया। दूसरी बात मंडल के लिए २-४ लाख रुपये स्थायी फंड के रूप में एकत्र करने की योजना पर भी विचार हुआ। यदि वह कार्यक्रम सफल हो जाय, तो हमेशा के चन्दे की चिंता से मुक्ति मिल जाय। साहू साहब इजिप्त से आवेंगे तब उनसे उस कार्यक्रम के विषय में बात कर मैं इस सस्था को आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ बनाकर काम करनेवालों को सौंप दूंगा।

आपके और मेरे दोनों के इस्तीफे के विषय में यहाँ इन मित्रों के सन्मुख मैंने चर्चा की। उन्होंने यह बात कार्यकारिणी मे चर्चा के लिए रखने को कहा है। क्योंकि अब मेरा भी रहना जगह अटकाना ही है। साहित्य गुड्स से भी भिजवा सकते हैं। हिसाब-कागजात सब ५०५ कालबादेवी के पते पर भेजिये।

मंडल के विषय मे श्री जमनालालजी का मुझे भी पत्र था। इसमें दोष मै अपना ही मानता हूँ। मुझे २-४ रोज पहले जाकर काम करना चाहिए था, पर स्वास्थ्य ठीक न रहने से मैं पहले जा नहीं सका। इसलिए जो गये या उपस्थित थे, उन्होंने किया। उसपर सतोष मान लेना पड़ता है। दूसरा कर भी क्या सकते हैं। यदि हमे सोचना और सुझाव देना है, तो खुद को काम करना चाहिए, पर अब वह शक्ति बीमारी के बाद से खो दी है। पहले लगा था कि तबीयत बिलकुल ठीक हो गई, पर ८ रोज पहले थोडा ज्यादा काम करते ही फिर चक्कर आने लगे और सावधानी न ली जाती तो अचेत हो जाता। इसलिए जब अपने से अधिक हो नहीं सकता, तो जो करते हैं उससे सन्तोष मान लेना पड़ता है। आलोचना न तो आपने की और न मैं ही आलोचना की दृष्टि से कुछ कह सकता हूँ। क्योंकि मेरा तो यह मत है कि हम आलोचना करे तो सुधार करने की जिम्मेदारी भी हम पर

आ जाती है, जो कोई उठाने को तैयार नहीं। जो लोग काम करते हैं वह कुछ-न-कुछ अच्छा करते ही हैं। पिछले साल ५० लड़कों को छात्रवृत्तियाँ दिलवाई। पूना के लिए २० हजार रुपये एकत्र किये। 'जैन जगत' के ग्राहक और सदस्य बनाये। जगह-जगह शाखाएँ खुल रही है और कार्य की तैयारी हो रही है, तब हम दोष देकर करें भी क्या? जहाँ मंडल को हजार दो हजार रुपये एकत्र करने में कठिनाई होती थी, वहाँ हजारों रुपये एकत्र होते हैं। बंबई में कोई भी काम सब सम्प्रदाय मिलकर करने लगे है। महावीर जयंती की सभा मे हजारों लोग आये थे। इसलिए आप हमको तो चिंता छोड़ देनी चाहिए। जो कोई नये लोग इसमें आते हों वे काम संभालें। अब अपने बश का यह रोग नही रह गया है।

आप हैद्राबाद जा रहे हैं, सुनकर संतोष हुआ। कृपा रखें। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

रिषभदास

प्रिय भाई साहब,

बम्बई : २८-७-६२

श्री सोहनलालजी कोठारी का लड़का विदेश मे पढ़ रहा है और अभी उसके यहाँ आये बिना सम्बन्ध नहीं कर सकेंगे। इसके लिए एक साल का विलम्ब है।

श्री अजमेराजी आपसे मिले थे और उन्होंने जो बातें कहीं, वे ठीक ही होंगी।

श्री मोहनलालजी ने क्या कहा, इस विषय में उनके आने पर ही लिखा जा सकेगा।

अधिवेशन के समाचार 'जैन जगत' मे ठीक नहीं दिये जा सके यह बात बिलकुल सही है। कार्यकर्ता के फोटो या कोई रिपोर्ट मेरे पास आई नहीं। इस बार मेरी यह शक्ति नहीं थी कि मैं सब रिपोर्ट तैयार कर सकूँ। अधिवेशन के फोटो मुझे अभी २० रोज पहले मिले।

श्री सोहनलालजी और जिन्होंने पार्टियाँ दीं उनकी तारीफ नहीं की गई, यह बात सही है; पर यह तारीफ कोई लिखकर भेजे तो ही हो सकती है। क्योंकि अब मेरी शक्ति बहुत कम हो गई है। इसलिए हर बात को ध्यान मे रखकर देना यह मुझसे बन नहीं पडता। क्या किया जाय, जब स्वास्थ्य ठीक नहीं है तो यह सब गल्तियाँ हो ही जाती हैं। पर उसका इलाज नहीं है।

दफ्तर से मैंने तलाश किया। वहाँ अधिवेशन के बाद पत्र दिये गये, उनका उनसे उत्तर नहीं मिला था। मैं फिर उन्हे पत्र देने के लिए कहता हूँ।

श्री सौभाग्यमलजी जैन का ठपका वाजिब है।

आपने मंडल का जो काम किया, उसके लिए धन्यवाद तो मैं क्या दूँ। आप मंडल के मालिक हैं। रिपोर्ट भेजें तो जैनजगत में दे दूँ।

श्री ताराचंद भाई के पत्र का प्रतिलिपि भिजवा रहा हूँ।

आप यदि बोर्डिंग की रिपोर्ट तथा खर्च की जरूरत का पत्र भिजवा देते तो अच्छा होता। कार्यकारिणी के समक्ष रखकर रकम मजूर करवाई जा सकती थी।

देवरूख, रत्नागिरी वाले को ३३०० रूपए करवा दिये। ५००-७०० और करवा देंगे। आप प्रसन्न होंगे।

रिषभदास

प्रिय भाई साहब,

बम्बई : ३०-७-६२

आपका कृपा पत्र मिला। साहित्य ३ रुपए में देने बाबत पत्रक जैन जगत में छपाने का समाचार मिला। अंक तैयार हो गया है, फिर भी इस अंक मे छपना संभव हो तो भिजवा दूँगा।

आपने लिखा वैसा लेख लिखने का प्रयत्न करूँगा।

मेरा स्वास्थ्य सामान्य चल रहा है, बहुत अच्छा नहीं है। १२ अगस्त को मंडल की मीटिंग है। आप प्रसन्न होंगे।

रिषभदास

प्रिय भाई साहब, बम्बई : २-८-६२

आपका ३१-७-६२ का कृपा पत्र मिला। जयपुर के बारे में आपने जानकारी लिखी, वह अच्छा किया। आपको भी मैंने जानकारी ही दी है। कहाँ क्या बात हो रही है, उसका पता रहे इसलिए।

आपने अपने पत्र में लिखा था कि आपने मंडल का काम किया, सो मैंने यह लिखा था कि आपको धन्यवाद तो क्या दें, आप तो मंडल के मालिक "प्राण" ही हैं। यह कोई विचार करने की बात नहीं थी। आपने मंडल का कार्य किया लिखा था, उसके उत्तर में मैंने लिखा था और कोई बात नहीं'।

आपको ताराचंदभाई के पत्र की नकल केवल जानकारी के लिए भेज दी थी। और कोई बात नहीं।

मुझे यह जानकर अत्यत खुशी हुई कि आप इन बातों से उपर उठना चाहते हैं। सो बहुत उत्तम बात है। मन जितना शुद्ध और पवित्र बने, उतना अच्छा ही है।

बोर्डिंग की रिपोर्ट मिल गई है। वह मंडल की मीटिंग मे रख दी जावेगी। उस रिपोर्ट मे बालचंद ट्रस्ट से ५०० रु० मिले, उसका उल्लेख होता, तो अच्छा होता।

मै आपको सुधार की बात क्या लिखूँ। जिस व्यक्ति मे दोष मौजूद हों, वह दूसरे को सुधार की बात क्या लिखे।

मध्यप्रदेश के आजीवन सदस्य, संस्था तथा तीर्थस्थानों की लिस्ट आपने मगाई सो सस्था तथा आजीवन सदस्यों की लिस्ट तो भिजवा रहा हूँ, पर तीर्थस्थानों का ठीक पता नहीं है।

सुगनचंद्रजी साहब चाहते हैं कि श्री बोथराजी को किसी कमेटी में लेने के लिए प्रयत्न करूँगा। मैं श्री सुगनचंद्रजी साहब को भी लिख रहा हूँ। रिषभदास

प्रिय भाई साहब, बंबई : १०-१०-६२

आपका ३-८-६२ का पत्र मिला। आप उदयपुर पहुँच रहे हैं और आचार्य श्री तुलसीजी का दर्शन व सत्सग करेंगे, यह प्रसन्नता की बात है। आप जो सत्संग का प्रयत्न करते हैं, यह बहुत अच्छी बात है। मनुष्य सत्संगति से अच्छी बातें सीखता है और यही उसे जीवन में ऊँचे चढ़ाती है। बस प्रयत्न यही रहे कि सत्सगति में आये विचार स्थायी बन जायँ।

मेरी वन्दना आचार्य महाराज से कहे। मेरा भी उदयपुर ८-१० रोज के लिए आने का इरादा है। अभी तो नागपुर जाने की सोच रहा हूँ, बाद में उदयपुर जाऊँगा।

आप स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे। चि० सूरजबाई व प्रतापसिंहजी साहब मिले तो मेरे आशीर्वाद कहे। रिषभदास

प्रिय भाई साहब, बंबई : ५-६-६३

आपका कृपा पत्र मिला। मैंने श्री रमणलाल सी० शाह को फोन किया था। पर उनसे यही मालूम हुआ कि बहीखाते में जो कुछ है, उसके सिवा कुछ याद नहीं पड़ता। उन्होंने शर्मा को मेरे पास बही-खाते लेकर भेजा। उन्होंने बताया ६७ रुपये और कुछ पैसे आपकी तरफ लेने निकलते हैं और १५ रुपये कुछ पैसे देने निकलते हैं। मेरी समझ में कुछ नहीं आया, इसलिए जब कभी आप पधारेंगे, तब आप ही बात कर लें तो ठीक होगा।

मैंने अपने भविष्य के जीवन के विषय में अन्तिम निर्णय कल कर लिया। जयभारत से तो मैं रिटायर हो ही रहा हूँ, पर युनिवर्सल वाले चाहते थे कि मैं उनके यहाँ ज्वाइन हो जाऊँ। ज्वाई लोगों की और रामकृष्णजी आदि की सलाह तो यही थी कि मैं अभी कमाई का काम क्यों छोड़ूँ? और युनिवर्सल में जाऊँ, जहाँ रु०……मिलने की बात थी। लेकिन पू० नाथजी से अन्तिम आदेश मिल गया कि जब घर के

लोगों की अच्छी तरह व्यवस्था हो सकती हो तो फिर कमाई का लोभ छोड़ना ही चाहिए और इसलिए आज सबेरे निश्चित कर लिया कि ६० साल पूरे होने पर वानप्रस्थाश्रम का प्रारंभ कर दिया जाय। घर अब मेरा नहीं, पर सौ० राजकुमारी का रहे। उनका अच्छी तरह से जीवन-निर्वाह चले, इसलिए एक लाख रुपये की संपत्ति उनके पास हो ऐसी व्यवस्था कर दी जाय। चि० रतन को दस हजार रुपये दे दिये जायँ और मैं चिंचवड़ मे रहूँ। मेरे खर्च के लिए ढाई सौ रुपया मासिक की सीमा रहे। यह रकम राजकुमारी से न ली जाय, पर अलग रकम मे से व्यवस्था हो। सौ० राजकुमारी की संपत्ति की व्यवस्था तीनों जवाई, अभयराजजी व वसंत देखें। अपने ख्याल से ठीक व्यवस्था कर दी है, पर मनुष्य की व्यवस्था कभी निर्दोष नहीं हो सकती। अब आपका आशीर्वाद चाहिए कि जिससे मेरी साधना सफल हो।

रिषभदास

●

श्री प्रेमराजजी दोशी अजमेर के पत्र

अजमेर : पौष बदी १३,२०१२

श्रीमान् कुवर सा० श्री चिरंजीलालजी सा०

सेवा में प्रेमराज को सविनय जुहार बचावजो। कारट आपको मीलो। आपकी आख्या मे कमजोरी अधिक हुई सो अर्ज हमारी या है कि अगर मोतीयाबिन्द पूरो पक गयो होवे तो कारी करा लेबो श्रेष्ठ है। कारी अठै अजमेर मे डाक्टर अरजुन साहब बहुत अच्छी करे है। बहुत-सा जणा की आख्या में फायदो हुयो। अजमेर पधारो तो हमानं भी सेवा को मोको मीले। और आप और जगा भी करावो और हमारासुं नोकरी लेवो तो भी मैं हाजीर हूँ।

और आपने फरमाया कि सब ही (मित्रों से, सगा-सबधियों से अथवा कुटुंबियों से) मोहमाया रखनी नहीं है और परिग्रह का परिमाण भी कर लिया है। पढ़कर प्रसन्नता हुई। जैनधर्म तो सबसे पहले यही बात सिखाता है कि तू तेरा स्वरूप समझ। तू सत्यस्वरूप अखड अविनाशी चैतन्य ज्ञानवान ज्ञाता दृष्टा स्वभाव का स्वामी सर्व परद्रव्य से भिन्न आत्मा है। तेरा साथी इस संसार मे कोई नहीं। तेरा सुख-दुःख का कारण तू खुद है। जब तू कषायरूप परिणति करता है तब तू स्वतः दुःख पैदा करता है और जब क्षमादि धर्मों का स्वामी बनता है तब तू स्वतः सुखी होता है। इस प्रकार से जैनधर्म का उपदेश है। वास्तव में यही भावना रहनी चाहिए। आपके लिए और कोई श्रेयमार्ग नहीं है। मैं तो आपकी इन भावनाओं का बड़ा ही आदर करता हूँ और श्री परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि ऐसी भावना मेरी भी हो।

मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आपके वहाँ पर श्री मंदिरजी में १२ अनुप्रेक्षा श्री स्वामी कार्तिकेय महाराज की हैं। उसकी स्वाध्याय करें। ये बारह भावना वैराग्य की माता हैं और परिग्रह-परिमाण करना यह निराकुलता का मूल कारण है और संतोष प्राप्त कराता है। पापास्रव को भी रोकता है। संतोष आने से पुण्य का आस्रव होता है। यद्यपि पुण्य भी ससार का कारण है, फिर भी पाप से पुण्य अच्छा है। आत्मा का कल्याण शुद्धोपयोग से होगा। इन सब उपरोक्त साधनों का मूल कारण सम्यक्‌दर्शन (श्रद्धा) है, श्रद्धा करना है।

प्रश्न—श्रद्धा किसकी ?

उत्तर—आप्त (देव), आगम (शास्त्र), तपोभृत (गुरु) इन तीनों को पहले पहचानो। इनके पहचानने से ७ तत्त्व का भी भली प्रकार से (अभिप्राय युक्त) जानपना होता है। इनकी अभिप्राय युक्त श्रद्धा करने से सम्यक्त्व होता है। यही सर्व धर्मों का मूल है। इसके प्राप्त होने पर ही आगे भावों की निर्मलता होती है। यही निरा- कुलता का साधन है। मैंने ऐसा समझा है और शास्त्रकारों की भी यही आज्ञा है।

चिट्ठी को पढ़ने मे आपको कष्ट होगा, क्योंकि आपकी आंख्यां में कमजोरी है। परंतु आपसे राग है। यह राग-परिणामों से ही ऐसा व्यवहार होता है। चिट्ठी में कोई गलती हो, क्षमा करणा। हमारी आखिरी भावना यही होनी चाहिए—संयम समाहिमरणं जिनगुण संपत्ति होउ मम। अर्थात् संयमपूर्वक मैं इस पर्याय को छोड़ूँ और जिनेंद्र भगवान् की गुणरूपी सम्पत्ति मुझे प्राप्त हो।

और आपसे विशेष प्रार्थना है कि कुटुम्बसम्बन्धी नाता में भले ही कमी हो, परन्तु धर्मसम्बन्धी नाता रहे। अर्थात् यह विनश्वर शरीर को छोड़ते समय धर्म-साधन के निमित्त रूप आपस मे बने रहें।

फागुन सुदी १०, २०१७

पत्र आपका मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। अपने श्री रत्नकरण्ड श्रावकाचार तथा स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा ये तो दोनों ग्रथ श्रीमूल-संघ के आचार्यो के बनाये हुए हैं और अमितगति श्रावकाचार माथुरसंघ के आचार्य का बनाया हुआ है। श्री मूलसंघ में द्रविड संघ, काष्ठा-सघ, यापनीय-सघ, माथुर-संघ आदि की प्रामाणिकता नहीं मानी है। श्री फूलचन्दजी सा० पाटनीजी का धर्मध्यान अच्छा होता है। यह उनके पुण्यकर्म की महिमा है। जिनका होनहार अच्छा होता है, उनकी धर्म में रुचि स्वतः होती है। मैं भी यथाशक्ति धर्म-साधन करता हूँ और आपने मुझे धर्म-साधन के लिए प्रेरणा दी तथा वर्धा में ही धर्म-साधन के लिए आज्ञा फरमाई—इन स्नेह परिणामों का मैं पूरा-पूरा आभारी हूँ। आपका स्नेह बहुत याद आता है। मैं भी आपकी प्रेरणा से धर्म-साधन में अधिक समय लगाने की कोशिश करूँगा। आपके पास रहकर आपके अनुभव का लाभ मुझे मिलता—इससे मैं वंचित हूँ। इसका मुझे भी खेद है। श्री फूलचन्दजी सा० को कहना कि तात्त्विक चर्चा की बातों का समाधान करते रहें और मुझे भी लिखते रहे, ताकि मेरा भी ज्ञान मंजता रहे। मेरा उनको धर्म-स्नेह कहना।

आषाढ़ वदी ३०, २०१८

धर्म-साधन अच्छा हो रहा होगा। मैं भी यथाशक्ति धर्म-साधन में समय लगा रहा हूँ। परतु कई कारण कोरी गृहस्थी में ऐसे उपस्थित हो जाते हैं जो संक्लेश के कारण हो जाते हैं। फिर भी परिणामों की सावधानी रखने की कोशिश करता हूँ। पहले पत्र जो आपने दिया था, उसमें श्री मोहनलालजी सा० सेठी दुर्गवालों के धर्म-साधन में आपको सहयोग प्राप्त होने के लिए लिखा था। पढ़कर प्रसन्नता हुई। सेठी ०सा धार्मिक विचारों के हैं। उनकी सोहबत आपके लिए हितकर

होगी। मेरी स्वाध्याय यहाँ पर धर्म-मण्डली के साथ चलती है। श्री स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा मे धर्मानुप्रेक्षा की स्वाध्याय हो रही है। आपसे प्रार्थना है कि आप श्री पंडित प्रवर टोडरमलजी सा० का श्रीमोक्षमार्ग प्रकाश में ७ वाँ अध्याय श्री सेठीजी सा० के साथ स्वाध्याय करे या आप स्वयं पढ़ें। श्री सेठीजी सा० मिलें तो मेरा भी धर्मस्नेह पूर्वक जुहार कहें। योग्य सेवा लिखें।

सावन सुदी ६, २०१८
१७-८-६१

""""आपका धर्म-साधन अच्छी तरह होता होगा। होता है, उससे विशेष समय लगाना ही उचित है। मैं भी यथाशक्ति धर्म-साधन करता हूँ। पत्र दिरावें। योग्य सेवा लिखावें।

आश्विन बदी ११, २०१८

""""चिट्ठी पहले आपकी आयी तथा खमावणो पत्र भेजे सो पहुँचा दिये हैं। आपकी राजो-खुशी के समाचार दें। मैं आपकी कृपा से अच्छी तरह से हूँ। पत्र १ हप्ते में १ राजी-खुशी का दिरावैं।

मेरी अर्ज का ध्यान रखावैं। जितने भी संसार में द्रव्य (चेतन-अचेतन) हैं, उनसे मैं भिन्न हूँ, मैं ज्ञायक स्वभावी सबको जानने देखने वाला हूँ। सबही द्रव्य अपने-अपने में परिणमन करते हैं। मैं उनका कर्ता नहीं, न मैं उनका भोक्ता हूँ। मैं तो मेरे स्वभाव का कर्ता हूँ और मेरे ही भावों का भोक्ता हूँ। ऐसे विचारों से पर-द्रव्यों में उदासीनता उत्पन्न होती है। उदासीनता ही श्रेय मार्ग है। मेरी प्रार्थना पर ध्यान रखावै। श्री प्रतापचंद्रजी को मेरी शुभ आशीश कह देवें।

आश्विन सुदी १२, २०१८
२१-१०-६१

""""शरीर मे रुग्ण अवस्था का अभाव तथा नवीन रक्त संचार कार्य जारी होसी। दवा को साधन रखावसो। पूर्वज लोगों को

कहणो है कि 'एक तनदुरुस्ती हजार न्यामत'। आप खुद बुद्धिमान हो। मैं आप सूँ काईं अर्ज करूँ। मारा लायक सेवा लिखावसो। पत्र लौटती डाक सूँ राजीखुशी का दिरावसो।

२०-३-६२

.........आज दिन श्री मिलापचदजी सा० छावड़ा वकील सा० ने आपके राजी-खुशी के समाचार कहे। सुनकर प्रसन्नता हुई। और यह भी कहा कि आप अप्रैल की ७ ता० को जैपुर पधार रहे हैं। मैं उमेद करूँगा कि आप अजमेर होते हुए ही जैपुर पधारेंगे, या बड़ी लाइन से सो भी लिखावें। अजमेर कौन-सी गाड़ी से पधारेंगे, ताकि स्टेशन पर मैं हाजिर रहूँ। मैं आपकी असीम कृपा से राजी-खुशी हूँ। शरीर का साधन रखावें। योग्य सेवा लिखावें।

१-५-६२

अत्र कुशलं तत्रास्तु। पत्र आपका राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का अधिवेशन ता० २६-५-६२ उत्सव होना लिखा का आया। उसपर, मुझे वर्धा आने का आदेश मिला। उत्तर में निवेदन है कि मैं अवश्य आपकी आज्ञा का पालन करूँ, परंतु कई कारणवश मैं हाजिर नहीं हो सकता हूँ। क्षमा प्रदान करावें।

कुंवरसाहब, न तो दूसरों से लाभ मिलता है, न दूसरों से हानि होती है। अपने विचारों में परवस्तु को अपने से भिन्न जानकर अपने ज्ञायकभाव (जानने-देखनेरूप) में स्थिर होने का अभ्यास बढ़ाना ही सुख का कारण होता है। परवस्तु अपने-अपने द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव का निमित्त पाकर स्वयं परिणमन करती है। उस परिणमन को देखकर अन्य प्राणी मोहाधीन रागद्वेष परिणाम करके कर्म का आस्रव और बंध कर लेता है। कर्म का बंध होना ही संसार है और रागद्वेष परिणति का अभाव ही मोक्ष का साधन है। पूर्ण रागद्वेष का अभाव ही साध्य है। इसी तत्त्व को लेकर श्री आचार्यों ने आत्मा का हित साधन ज्ञायक

भावरूप रहना बताया है। जो पर-द्रव्य परिणमन करता है उसमें आप (आत्मा) को कर्ता बनने का निषेध कराया। अर्थात् कर्ता नहीं बनोगे तो भोक्ता भी नही बनोगे। संसार नहीं बढ़ेगा। क्योंकि पर-द्रव्य किसी अन्य द्रव्य के अधीन नहीं है। आपसे प्रार्थना है कि पुत्र, मित्र, स्त्री, धन, महल-मकान आदि से आप भिन्न अपने ज्ञानस्वरूप आत्मा को देखो। आत्मा चहुँओर से ज्ञानमयी है जैसे मिश्री हर जगह से मीठी है। लवण के पास रखने पर भी मिश्री का कोई कण लवणरूप नहीं होगा। इसी प्रकार शरीर के साथ एक क्षेत्रावगाही है, तो भी आत्मा ज्ञानस्वरूप ही रहेगा। क्योंकि ज्ञान में और आत्मा में अभेदता है।

वैशाख सुदी ७, २०१९
१-५-६२

""आपका कार्ड दो दिन पहले मिला। आपने लिखा कि मेरे कार्ड छपवायेंगे। उत्तर में निवेदन है कि कुँवर सा०, मैं तो शुद्ध हिन्दी लिखना भी नहीं जानता, न मुझे न्याय सस्कृत का ग्यान है, न मैंने कोई धार्मिक परीक्षा दी है। मैं तो केवल विद्वानों की धार्मिक बातें सुनकर किंचिन्मात्र धार्मिक ग्यान प्राप्त किया। उसको भी अकाट्य विद्वान सही करे तो प्रामाणिकता हो सकती है। अतः आपसे नम्र प्रार्थना है कि मेरी चिट्ठियों को छपा करके मुझे विद्वानों के सामने हास्य का पात्र न बनावें। कोई प्रकार से असावधानी के कारण धार्मिक भावों के लिखने मे गलती रही हो तो आप प्रश्न-उत्तर लिखकर मेरे ग्यान को सही करने की कृपा करें। मैं तो सिर्फ अजमेर मे ही पड़ा हूँ। आपने अनेक विद्वानों की तथा त्यागी वर्गों की सोबत की। अतः मेरी प्रार्थना पर ध्यान देंगे। आप कोई किसी भी प्रकार का धार्मिक प्रश्न लिखिये। मैं यहाँ पर विद्वानो से पूछकर उत्तर देने में सावधानी रखूँगा।

आप सुबह उठते ही यह विचार करो—मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ, मेरा क्या स्वरूप है, मेरा हित क्या है, मुझे कहाँ जाना है। आत्मा स्वयं उत्तर देगा। मैं चैतन्यस्वरूप हूँ। अपने स्वरूप को भूलकर अनन्त काल से संसार मे भ्रमण कर रहा हूँ। क्या कोई ससार से निकले हैं? हाँ सिद्ध परमात्मा क्या, सिद्ध समान मेरा स्वरूप है। इससे अपने स्वरूप का भान होगा। उस अवस्था को ही आप उपादेय समझेंगे तो स्वतः ही अन्य ज्ञेय पदार्थों से हेय बुद्धि होगी, स्व मे रुचि होगी। यहीं से मोक्ष महल की सीढ़ी (पैड़ी) पर चढ़ना है।

ज्येष्ठ बदी ६, २०१९
२५-५-६२

...आपसे अर्ज है कि आपके परिणामों में निर्मलता विशुद्धता है, उसका भंग न हो, उसका ध्यान आपको बना रहे। और आपके स्नेही वर्ग (में) श्री फूलचन्दजी पाटनी सा० हैं, उनके साथ स्वाध्याय का प्रसंग बनाया रखें। मैं भी समय निकालकर आशा करता हूँ कि आपकी सेवा मे हाजिर होऊँ, ताकि मेरे भी उपयोग में शातता प्राप्त हो।

२१-७-६२

.......आप जैपुर श्री कपूरचन्दजी के यहाँ शादी में पधारे। आपसे श्री फतहचन्दजी सेठी अजमेरवाले मिले। आपके राजी-खुशी के समाचार कहते थे। प्रसन्नता हुई। यहाँ पर बाई सूरज सवा महीने से औरतों के अस्पताल में है। पेट का आपरेशन डाक्टरनी सा० ने किया। परतु अभी कुछ फायदा नहीं है। उम्मीद करता हूँ कि साता कर्म के उदय आने पर आराम हो जावेगा। उसमें करीब डेढ़-दो महीना और लग जावेंगे और मैं आपकी असीम कृपा से राजी-खुशी हूँ। आपके राजी-खुशी के समाचार दें।

जब हम रेलगाड़ी में बैठते हैं उस वक्त अनेक जनों से मिलाप होता है और बैठने के बाद उनसे प्रेम भी हो जाता है। जब दूसरे

लोग अपना टिकट पूरा होने पर उतर जाते हैं उस वक्त इष्ट-वियोग का सा ही प्रतीत होता है। परंतु ज्ञानी जीव जिस वक्त शामिल थे उस वक्त भी जानते थे कि मैं इन सबसे भिन्न हूँ, यह मेरे से भिन्न हैं। यह श्रद्धा होने पर वियोग के समय अज्ञानी तो रोता है और ज्ञानी शात परिणामों का करता रहता है। इससे ज्ञानी के आर्त परिणाम नहीं होते। मेरी स्त्री के वियोग में मैंने आर्त परिणाम किया तब ज्ञानी पुरुषों ने श्री रत्नकरण्ड श्रावकाचार में श्री सदासुखजी सा० ने ध्यान का (जो) वर्णन किया उसमे इष्ट-वियोग अनिष्ट-संयोग नाम के आर्त-ध्यान को पढ़ाया। तब मुझे सच्चा ज्ञान मिला। धैर्यता मिली। शाति हुई।

आसोज बदी ८, २०१९
२२-९-६२

""चिट्ठी आपकी क्षमावणी की आई। आपने तेला तथा व्रतादिक किये, लिखा। पढ़कर प्रसन्नता हुई। व्रतादिक करना आत्मा को निर्मल बनाना है।

१. प्रश्न—व्रतादिक क्यों किये जावें ?

उत्तर—व्रत कहो या उपवास कहो, एक ही अर्थ है।

२. प्रश्न—उपवास किसको कहते हैं ?

उत्तर—आत्मा के समीप बसना, अर्थात् आत्मा अनादि काल से विभाव (रागद्वेष-काम-क्रोधादिक) परिणति में वास कर रहा है। उस परिणति से हटाकर आत्मा के स्वभाव भाव (क्षमा, शाति, सयम, तप, त्याग, ब्रह्मचर्य आदि) मे स्थित होना, उसको उपवास कहते हैं। उसका पर्यायवाची शब्द है–व्रत।

३. प्रश्न—व्रत से क्या लाभ होता है ?

उत्तर—अशुभ कर्मों का संवर और शुभ कर्मों का आस्रव। जितने अंशों से वीतराग परिणति होती है, उतने अंशों मे निर्जरा होती है। व्रत-उपवास से संवर-आस्रव-निर्जरा तीनों होते हैं।

४. प्रश्न—सम्यक्दर्शन के बिना भी क्या व्रत-उपवासादि मोक्ष मार्ग है ?

उत्तर—नहीं। सम्यक्दर्शन के वगैर मोक्षमार्ग नहीं। १८ दोष-रहित जिनेंद्र भगवान् की सच्ची श्रद्धा, हिंसारहित धर्म की धर्म श्रद्धा, निर्ग्रंथ गुरु को गुरु मानना। इन तीनों को भली प्रकार से जानकर सच्ची श्रद्धा करना ही व्यवहार सम्यक्दर्शन है। जो इनको जानता है, वह अपनी आत्मा को भी जानेगा।

५. प्रश्न—क्या अन्य देवों को देव, अन्य गुरुओं को गुरु, अन्य धर्म को धर्म मानने से सम्यक्त्व चला जाता है ?

उत्तर—आत्मा स्वय १८ दोषों से रहित है। १८ दोषसहित देव को देव मानने से लक्ष्य में विपरीतता आती है। परिग्रहयुक्त गुरु के शुक्ल-ध्यान नहीं होता। शुक्ल-ध्यान बिना मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती। हिंसारहित धर्म है। हिंसा मे धर्म मानना विपरीतता है।

६ प्रश्न—सम्यक्त्व (श्रद्धा) बिना जो तप, व्रत, संयम, उपवास पाला जाता है, क्या वह फलदायक नहीं ?

उत्तर—कोई मनुष्य अक तो लिखे नहीं और बिंदियाँ लगावे, तो क्या उसको कुछ मिलेगा ? एक लिखकर एक बिंदी भी लगाओ तो १० बन गये। इसी तरह से सम्यक्दर्शन (श्रद्धा) बिना पत्थर के भार समान है। अगर सच्ची श्रद्धा सहित है, तो मणियों के समान पूज्य है। सो ही गुणभद्र स्वामी ने आत्मानुशासन में कहा है।

क्षमा करना, तुलसीजी के पास गये तुलसीजी भी गुरु, वेदांतियों के पास गये, तुम भी गुरु, जैन के साधुओं के पास गये तुम भी गुरु। ऐसी क्रिया से सम्यक्दर्शन नहीं होता। इस श्रद्धा को मिथ्यात्व कहा

है। चारित्र से भ्रष्ट तो सुधर गये हैं, परन्तु दर्शन से भ्रष्ट पुरुष संसार परिभ्रमण करते हैं। इसके मायने यह नहीं कि जो चारित्र पाला जाय उसको भी छोड़ देवें। मेरा कहना है कि एक के बगैर बिंदी का क्या मोल मिलता है।

कभी रूबरू मिलें और दो-चार घंटा बातचीत हो तो प्रश्न-उत्तर से लाभ मिलता है। आप तो खुद समझदार हैं। मैं आपको क्या लिखूँ।

कार्तिक सुदी १, २०१९
३०-१०-६२

·······हम अठै श्री निर्वाण महोत्सव (वीर-निर्वाण) कार्तिक बदी ३० के प्रभात में आनंद से किया है। आप भी कीना होसी।

लोकरूढ़ि से मकानों की सफाई कराना आदि संसार के प्राणी करते हैं, परंतु आत्मा का घर जो ज्ञान-दर्शन स्वभाव है उसमें रागद्वेष मोहादि रूप मैल को निकालना जरूरी है। उस पर लक्ष्य नहीं जाता है। यही संसार का कारण है। मैंने आपको दवा यहाँ से दी थी। वह आपने ली होगी। अगर उस वक्त नहीं ली हो तो अब लेना अच्छा है। कारण सरदी की मौसम आ रही है। शरीर का साधन रखावें।

पौष बदी १३, २०१९

·······आज दिन पारसल एक डाक मारफत भेजा है, सो आप ले लेना। उसमें दवा है। उसमें से करीब डेढ़ तोला सुबह खा लेवें और एक तोला शाम को खा लेवें। यह दवा करीब १५ रोज में खतम हो जावेगी। अगर आपके अनुकूल रही तो और भेज दूँगा। इस वक्त यहाँ पर एकपोतिया लहसुन नहीं आती है, नहीं तो लहसुन भी मिला देता। खैर, तेल-गुड़-खटाई मत सेवन करना। आपको मेरे खयाल से फायदा ही होगा। दवा को जरूर-जरूर सेवन करना। भूल मत रखना।

पौष सुदी १०, २०१९
५-१-६३

......आपसे एक प्रश्न है कि जब तक शरीर है, तब तक यथोचित इस शरीर की रक्षा करना उचित है या नहीं ? श्री मुनीश्वर लोग भी पूर्णरूप से शरीर से विरक्त हैं, परंतु धर्म का साधन समझकर आहार देते ही हैं। आप खुद समझदार हैं। दवा के विषय में आपने लिखा कि प्रसाद के रूप में लेवेंगे, सो ठीक। जब शरीर विकृत रूप मे होवे तो सम्यक् प्रकार चिकित्सा से सुधारना ज्ञानियों का काम है। अब यहाँ पर लहसुन आने लग गया है। दवा लहसुन की बनाकर भेजूँगा सो आप सेवन करें और जो आपके पास दवा भेजी है, वह आप सेवन करें। भूल नहीं रखावे। आपने फरमाया कि फागण महीने में जैपुर आवेंगे, सो ठीक। निश्चित तारीख आप पधारें जो लिखावें, ताकि मैं भी शायद जैपुर हाजिर हो जाऊँ। कृपा रखावें, योग्य सेवा लिखावें।

१५-२-६३

...... आपका पत्र मिला। आपका अजमेर आने का विचार नहीं रहा, लिखा सो ठीक। आपने लिखा कि जात्रा में गये, परतु थक गये इसलिए विचार नहीं रहा। आप अपने शरीर का साधन रखावें। देह में जो चैतन्य प्रभुदेव है, उसको ध्यान में लेते हुए परद्रव्य में इष्ट-अनिष्ट कल्पना अनादि से हो रही है। इस कल्पना को छोड़ने का अभ्यास बढ़ावें, यही सच्ची उदासीनता है। इससे वीतरागभावों की जाग्रति होती है। यह भाव सुख के साधन हैं। पर-द्रव्य में कोई इष्ट-अनिष्ट नहीं होता। मोह के निमित्त से जो अपने अनुकूल परिणमन करता है उसमें इष्ट-बुद्धि नहीं करता है, उसमें अनिष्ट बुद्धि नहीं। वह भाव समता के घातक हैं और तामस को बढ़ानेवाले हैं। सुख का बीज पर-द्रव्यों में इष्ट-अनिष्ट की कल्पना को छोड़ना है। ज्ञानी जीव कषाय के परिणामों को महान् दुखदायी और मंद-कषाय भावों को भी पूर्ण

हितकर नहीं मानता। जब तक पूर्ण वीतरागभाव न हो तब तक वृद्ध पुरुष की लकड़ी के समान पकड़े रहता है।

चैत सुदी १३, २०२०

६-४-६३

........पत्र आपका मिला, श्री........से सगाई के विषय मे बातचीत की। उनका कहना है कि अभी हाल दो साल की पढ़ाई और है। दो साल वे शादी करना नहीं चाहते। दूसरी बात है कि बाई लड़के को पसन्द आ जावे तो मुझे कोई एतराज नहीं। अगर दोनों बात आपको अनुकूल लगे तो आप बाई का फोटो भिजावें। बाई कहाँ तक पढ़ी है सो भी लिखावें। वे आपसे खूब परिचित हैं।

मैं चैत सुदी ११ को बडवानीजी जातरा जाने को था, परंतु मैं विशेष कारण से नहीं जा सका। अब मेरा विचार वैशाख बदी १ तथा २ को जाने का है। आपको पत्र समाचार मैं किस स्थान पर लिखूँ सो भी आप लिखावें। आप काशी कब तक ठहरेंगे। आप अपने शरीर का साधन रखावें। मौसम पलटता हुआ है।

श्री सत्यभक्तजी के पत्र

प्रिय बड़जात्याजी, सादर जयसत्य ! सत्याश्रम, वर्धा : ३०-६-५२

१. कल शाम को बात करते-करते एक बात रह गयी। वह थी आपको सत्याश्रम का सदस्य बनाकर मंत्री बनाने की। पहिले पत्र में मैंने लिखा भी था। उस विषय में लिखना।

२. मकान के बारे में रात में वीणादेवी से सलाह हुई। जमीन १॥ एकड़ है। १० × १० के मुँह का काफी गहरा बँधा हुआ पक्का कुआँ है, पाँच आम के वृक्ष हैं, दो कमरे और छपरीवाला मकान है। ऊपर सीलिंग भी है, जिस पर मचान रखा जा सकता है। सस्ते के जमाने में इसमें ११५० रु० लगे थे। आज चार हजार से अधिक लगेंगे। गत वर्ष में

इसे दो हजार में बेचना चाहता था, पर लेनेवाले के पास १५००) से अधिक की गुंजाइश न थी। वह १५०० रु० नकद देकर लेने को तैयार था। पर मैं १८०० रु० से कम में देने को तैयार न था। मेरी इच्छा अयोध्या वगैरह से कुछ साधु बुलाकर साधु-कुटीर बनाने की थी। पर वह कुछ न हो सका और एक दिन चोर एक खिड़की ले गया। पुलिस में रिपोर्ट हुई, जाँच हुई। पर हुआ कुछ नहीं। फिर एक हफ्ते बाद चार खिड़की और ले गया। दरवाजे की भी कोशिश की। तब निरुपाय होकर मैंने चारों दरवाजे निकलवाकर मँगवा लिये। आज अगर आप वहाँ कोई आदमी रखना चाहें तो चारों दरवाजे तैयार हैं। उन्हे फिर फिट कराना पडेगा। खिड़कियों में अभी चटाइयाँ या ईंटों की जाली भरना पडेगा। चारों दरवाजे तथा ···मिट्टी मैं दे सकता हूँ। ईंटों के टुकडे भी वहाँ काफी पडे हैं। मरम्मत आदि का काम आप करा ले और किसीको रख दे।

३. यदि खरीदना चाहे तो हजार रुपया दे दें। मुझे ७५० रु० लगे थे। ६०० मूल्य, बीच का कमीशन, कचहरी का खर्च, पटेल का कमीशन आदि। पीछे से मौरूसी से प्रोप्राइटर हक कराया, उसका खर्च पड़ा। आपके पास रहेगा तो मौके पर काम आवेगा। यों हजार रुपये से ऊपर का तो कुआँ ही है। आदमियों को रखने की या खरीदने की जो बात आपको पसद हो, करें। ऊपर की पहिली बात का भी उत्तर दें। —सत्यभक्त

प्रिय बड़जातेजी, सादर जयसत्य ! २५-७-५२

१. इन्दौर से पाटनीजी का पत्र आया है। उन्हें आकोला का संबंध अधिक पसंद है। लड़की हृष्ट-पुष्ट और ऊंचे कद की है। इसलिए वर उसके अनुरूप होना चाहिए। सारी बाते पूछी हैं। आपने इस बात का खुलासा न किया हो तो कर दें। उनका पत्र आपके पास भी आया होगा।

२. उस दिन 'संगम' पढ़ लिया होगा। राजनीतिक मामलों में मतभेद रह सकता है। सत्य-समाज राजनीतिक संस्था नहीं है। इसलिए अमुक मात्रा मे राजनीतिक मतभेद, खासकर आर्थिक तथा शासन संबंधी, रहने पर भी सत्यसमाजीपन में कोई बाधा नहीं आती है। मंत्री बनने की यदि रुचि न हो तो मैं जोर नहीं डालता। हाँ सदस्य बनने में तो आपको आपत्ति है नहीं, फिर जैसी रुचि-इच्छा हो, सूचित करें।

३. उस मकान के बारे मे आप कहलानेवाले थे, पर कहलाया नही। मेरे सामने रुपयों का ऐसा सवाल नहीं है जैसी कि निश्चिन्त होकर आप उसकी कुछ व्यवस्था कर सकते हैं, मुझे चिंता रहती है। इसलिए दूसरे कार्य मे बाधा पडती है। इसीलिए आपसे कहा था। पहले से भी आपका विचार उस मकान को लेने का था ही, जैसा कि आपने प्रकट किया था। जैसा विचार हो सूचित करें।

४. राजनीति-समस्या भेजता हूँ। इसे भी पढ़ लें। पिछले दो प्रकरण बिलकुल ही नये हैं! —सत्यभक्त

श्री यशपालजी जैन के पत्र

मान्य भाईजी, नयी दिल्ली : ३-९-५९

सादर वंदे। आपका ३१ अगस्त का पत्र मिला। मुझे खेद है कि वर्धा से लौटने के बाद मैं बहुत ही व्यस्त रहा और इच्छा होते हुए भी आप सबको वर्धा पत्र न लिख सका। कृपया क्षमा करें।

अपने पत्र में आपने जो चिन्ता व्यक्त की है, उसके लिए मुझे कोई यथार्थ आधार दिखाई नहीं देता। भाई कनककुमार समझदार व्यक्ति हैं। मुझे मालूम हुआ है कि उन्होंने १ सितम्बर को अपनी थीसिस पेश कर दी है और अब १४ सितम्बर को वाइवा है। अनन्तर उनका क्या कार्यक्रम बनेगा, यह अभी अनिश्चित है। मैं उनकी ओर विशेष ध्यान रक्खूँगा। शाह सा० को कृपया मेरा नमस्कार निवेदन कर दीजिये और कह दीजिये कि वे मन को अधिक हैरान न करें।

वर्धा की मैं बड़ी ही सुखद स्मृतियाँ लेकर लौटा हूँ। आपकी आत्मीयता से तो मैं पहले से ही परिचित था, पर शाह सा० तथा उनके समूचे परिवार ने मुझे जो स्नेह दिया, उसे मैं कभी नहीं भूलूँगा। उनके समस्त परिवार को मेरी यथायोग्य।

इस मास आप आ ही रहे हैं। अक्तूबर के दूसरे सप्ताह में मैं बर्मा जाने का कार्यक्रम बना रहा हूँ। २०-२५ दिन वहाँ की यात्रा में लगेंगे। हो सकता है, वहाँ से बैंकोक और लाओस भी जाऊँ। —यशपाल

मान्य भाईजी, नई दिल्ली:८-२-६१

सादर वन्दे !

आपका ४ फरवरी का कार्ड मिला। इन दिनों व्यस्तता अधिक रहने के कारण ट्रस्टडीड के मसविदे को अंतिम रूप नहीं दे सका। अब उसे जल्दी ही ठीक करके भेजूँगा। स्वीकृति श्री तख्तमलजी की लेनी है। उस सिलसिले में श्री छगनलालजी भारुका उनको लिखने वाले थे। मुझे पता नहीं कि क्या हुआ। बाकी लोगों में तो सबकी स्वीकृति है। आप हाल ही में इधर आनेवाले हों तो सूचना दीजिये।

—यशपाल जैन

मान्य भाईजी, नई दिल्ली : ७-६-६२

सादर प्रणाम। इधर बहुत दिनों से आपकी कुशलता का समाचार नहीं मिला। आशा है, आप सानद होंगे।

कुछ समय पूर्व आपने चि० अन्नदा के लिए जयपुर-निवासी श्री सुभद्रकुमार पाटनी के अनुज चि० कमलकुमार को सुझाया था। पिछले दिनों जब हम लोग श्री मार्तण्डजी के पुत्र और पुत्री के विवाह में जयपुर गये तो वहाँ सुभद्रकुमार जी से मिलना हुआ। उन्होंने चि० कमल को भी बुला लिया था। लड़का हमें बहुत अच्छा लगा। उन्हें लड़की पसंद आई। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि २ जून को सगाई की रस्म हो गई।

इतना उपयुक्त लड़का और इतना सुन्दर घर सुझाने के लिए हम लोग आपके हृदय से आभारी है। वास्तव में जो कुछ हुआ है, उसका श्रेय आपको ही है। चि० अन्नदा के लिए आपकी जो आत्मीयता है और हम लोगों के लिए जो ममत्व है, उसीने यह कराया है। अब आप आशीर्वाद दीजिये कि विवाह अच्छी तरह सम्पन्न हो जाय। चि० कमलकुमार की माताजी का आग्रह है कि चातुर्मास के आरंभ होने से पूर्व, अर्थात् १३ जुलाई तक हो जाय। उन लोगों ने कमल से पूछा है। यदि जुलाई में विवाह न हुआ तो सितम्बर-अक्तूबर मे होगा।

अपने स्वास्थ्य के समाचार दीजिये, हम सबका प्रणाम।

—यशपाल जैन

मान्य भाईजी, सादर नमस्कार। नई दिल्ली : २४-७-६२

आपको कई दिन से पत्र लिखने की सोचता था, पर लिख नहीं पाया। लेकिन सच मानिये, इन दिनों आप बराबर मेरे सामने रहे है। आपका स्मरण करके मेरा चित्त गद्‌गद् होता रहा है, मैं किन शब्दो मे आपका आभार मानूँ! शब्दों मे आभार माना भी नहीं जा सकता। ऐसा सुन्दर घर और वर प्राप्त कराने का श्रेय आपको ही है। फिर पूर्णतया स्वस्थ न होते हुए भी आप विवाह मे पधारे और सब कुछ बडे सुचारु रूप से सम्पन्न कराया। इस सबके लिए मैं आपके सामने नत हूँ। आपके आने से न केवल अवसर की शोभा बढ़ी, अपितु मुझे बहुत बल मिला।

मेरी ईश्वर से एक ही प्रार्थना है और वह यह कि मैं सदा आपके स्नेह का इसी प्रकार पात्र बना रहूँ। जीवन मे बहुत-से लोग मिलते हैं, पर ऐसे बहुत कम होते हैं, जिनका हृदय हर घड़ी उन्मुक्त और स्पन्दन शील रहता हो। आप उन दुर्लभ व्यक्तियों में से हैं। आप जैसे सदाशयी व्यक्ति आज की दुनिया में इनेगिने हैं।

हम सबका प्रणाम स्वीकार कीजिये। आप दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें, ऐसी प्रभु से प्रार्थना है।

—यशपाल जैन

मान्य भाईजी, सादर नमस्कार। नई दिल्ली : १२-६-६३

आपका कार्ड यथा समय मिल गया था। श्रद्धेय राजेन्द्र बाबू पर आपके संस्मरणों की मैं प्रतीक्षा कर रहा हूँ। जितनी जल्दी भेज सकें, भेजने की कृपा कीजिये।

इस पत्र के साथ सौभाग्यवती उर्मि शाह के दो आवेदन-पत्र भेज रहा हूँ। इन्हे मैंने सीधा ट्रस्ट को नहीं भेजा है। आप इन पर जो कुछ सिफारिश करना चाहें, करके स्वयं ही ट्रस्टों को भिजवा दीजिएगा।

आवेदन-पत्रों की एक-एक प्रति श्री रिषभदासजी के लिए आपके पास भेज रहा हूँ। आप इन प्रतियों को उनके पास भिजवा दीजिये और उन्हें सूचित कर दीजिये कि वे इनके सिलसिले में किससे और क्या बात करें।

आपकी सहायता तथा आपके आशीर्वाद से वजीफा मिल जाय तो बड़ा अच्छा होगा। लड़की का भविष्य बन जायगा।

अपने स्वास्थ्य का आप ध्यान रखिये। आशा है, आप सपरिवार सानद होंगे। —यशपाल जैन

मान्य भाईजी, सादर वन्दे। नई दिल्ली : २०-६-६३

आपका १७ जून का पत्र और श्रद्धेय राजेन्द्र बाबू के संस्मरण मिले। सस्मरण बहुत अच्छे हैं। मैं इनका उपयोग विशेषाक में करूँगा। आपने सौभाग्यवती उर्मि के विषय मे दोनों ट्रस्टों को बहुत सुन्दर पत्र लिखे हैं। मुझे विश्वास है कि कुछ-न-कुछ अवश्य हो जायगा। यदि इसी वर्ष से छात्रवृत्ति मिल जाय तो बड़ा अच्छा होगा। आप कुछ समय बाद एक पत्र ट्रस्ट को और लिख दीजियेगा कि वे इस सत्र से ही कुछ कर सकें तो कर देने का अनुग्रह करें। आप श्री ऋषभदासजी को भी इस संबंध में कुछ लिखनेवाले थे। आशा है, लिख दिया होगा। न लिखा हो तो अब लिख दीजिये। —यशपाल जैन

श्रीमान् साहू बन्धुओं के पत्र

प्रिय श्री बड़जातेजी, कलकत्ता : १०-११-५९

आपका २ नवम्बर का पत्र मिला। भगवान की कृपा और आप जैसे मित्रों की शुभ कामनाओं से अपिलाट बोर्ड का ऐसा निर्णय हुआ है।

कृपया आपकी धर्मपत्नी को मेरा सादर जयजिनेंद्र कहें। उनकी कृपा के लिए मैं बहुत कृतज्ञ हूँ। ६००० रु० जो उन्होंने दान दिया है, वह मैं भिजवा रहा हूँ। कृपया पहुँच लिखें। जयजिनेन्द्र।

शांतिप्रसाद जैन

Shri Chiranjilal Badjate, Calcutta : 12-11-59
Wardha.
Dear Sir,

Under instructions from Syt. S. P. Jain we are sending herewith one draft no DLT 276082 of date for Rs. 6,000/- on the Punjab National Bank Ltd, in your favour, in respect of (i) Jain Dharmashala Building (Rs. 4250/-), (ii) Maha-rogi Seva Mandal, Wardha (Rs. 1000/-) and (iii) a well in Jain Boarding (Rs. 750/-).*

Please acknowledge receipt and send us receipts in the name of "Sahu Jain Trust" for our audit purposes. Yours faithfully,

Thanking you. for SAHU JAIN TRUST,
Accountant

---

* श्री चिरंजीलाल जी ने यह ड्राफ्ट वापस कर दिया।

Bombay

My dear Chiranjilalji, May 30, 1962

I am in receipt of your letter dated 26th May 1962

I am sorry to learn about the state of your health. May I request you to pay more attention to your health.

I will place your letter before the Executive Committee of Bharat Jain Mahamandal.

With kind regards,

Yours sincerely,
Shriyans Prasad

Bombay

My dear Syt Chiranjilalji, June 30,1962

Our Manager Mr. J B Jaini was in wardha recently I understand from him that he had discussed with you about the land and godown of Bharat Bank which were taken over by us in satisfaction of the debt of Mr. K. M Bhoot.

After consultation with you, he gives me an idea that Rs 23, 000/-can be got for both these properties May I know your opinion whether you suggest that these properties may be sold at this price

We have suffered a great loss in this transaction as the book debt even today is more than Rs. 73, 000/-without calculating any interest thereon.

I hope with your influence it will be possible to improve the price mentioned above. I am awaiting your opinion to pass my order on this subject.

Yours sincerely,

SHRIYANS PRASAD

ला० तनसुखरायजी जैन के पत्र

श्रीमान सेठ चिरंजीलालजी बडजातिया, देहली : १४-५-४६

सादर जयजिनेन्द्र।

जामनेर में जैन महामंडल का अधिवेशन बहुत सफल रहा जानकर अति प्रसन्नता हुई। यह सब आपके ही परिश्रम का फल है। कृपया श्रीमती शान्ताबाई रानीवाला का फोटो भेजे। हमारी हार्दिक इच्छा है कि उनका ब्लॉक 'वीर' मे प्रकाशित किया जाय।

आपको यह तो विदित ही है कि इस वर्ष मुझे अखिल भारत-वर्षीय दिगम्बर जैन परिषद ने प्रधान मन्त्री नियुक्त किया है। परिषद के सामने आर्थिक कठिनाई है, जिसके कारण हम 'वीर' को पीछे दो माह तक प्रकाशित न कर सके। अब फिर ६ मई से प्रकाशन आरम्भ हुआ है। मेरी हार्दिक इच्छा है कि 'वीर' भविष्य मे बन्द न हो और इसके लिए आपके सहयोग की अति आवश्यकता है। मेरा पूर्ण विश्वास है, आप अधिक से अधिक इसकी सहायता करा सकेंगे और इसके लिए मैं आपका अति आभारी हूँगा। —तनसुखराय जैन

मान्यवर सेठ साहिब, सादर जयजिनेन्द्र। दिल्ली : २९-७-१९६०

पत्र आपका मिला। आपने अपने रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा शुरू कर दी है सो ठीक है। आपका शरीर का ठीक रहना समाज और दुखियों के लिए अति आवश्यक है। जो लगन समाज की आपको है वह किसी बिरले में ही होगी। दुःखी और असहायों को जो आपसे सहायता मिलती है, उसकी जितनी प्रशंसा की जाय, थोड़ी है। वीर प्रभु से प्रार्थना है कि आप कम से कम सौ साल जीयें। कृपया अपने स्वास्थ्य का हाल लिखते रहिये। —तनसुखराय जैन

मान्यवर सेठ साहब, दिल्ली : २-१-६२

सादर जयजिनेन्द्र। कृपा पत्र आपका मिला। आपका स्वास्थ्य पूर्णतः ठीक है, जानकर प्रसन्नता हुई।

मैं सर्दी का पूरा ध्यान रख रहा हूँ। श्री राकाजी का स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा, जानकर बहुत चिन्ता हुई। भगवान से प्रार्थना है कि ऐसे सज्जन निःस्वार्थ महानुभावों को कोई कष्ट न आवे।

—तनसुखराय जैन

मान्यवर सेठ साहब, दिल्ली : ८-३-६२

सादर जयजिनेन्द्र। बहुत दिनों से आपका कोई पत्र नहीं। आशा है कि आप अच्छी तरह होंगे। स्वास्थ्य ठीक चल रहा होगा। मेरा स्वास्थ्य भी पहले से बहुत ठीक है। इधर कब तक आने का विचार है। कृपा दृष्टि बनाये रखें। —तनसुखराय जैन

श्री रघुवीरशरणजी दिवाकर के पत्र

पूज्य सेठजी साहब, सादर प्रणाम। रामपुर : २८-४-५६

आपका कृपा-पत्र मिला था और मैंने उसका विस्तृत उत्तर दिया था, पर भाई प्रतापचन्द्रजी के द्वारा मालूम हुआ कि आपको आपके पत्र का उत्तर नहीं मिला है। मुझे आश्चर्य है।

आप उन इने-गिने व्यक्तियों में से हैं, जिनके प्रति मेरे हृदय में असीम श्रद्धा और आदर भाव है और जिनसे मैंने प्रेरणाएँ ग्रहण की हैं। अतः नाराजगी की आशंका करना भी मेरे साथ अन्याय करना है। मैंने वास्तव में आपके पत्र का विस्तृत उत्तर दिया था, पर खेद है कि वह पत्र आज तक नहीं पहुँच सका।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मेरा वकालत का काम आशातीत रूप से सफल रहा है और बराबर प्रगति पर है। इस समय रु०……महीने का औसत पड़ जाता है। मुझे अभी १॥ वर्ष भी नहीं

हुआ हैं, पर आपके व बुजुर्गों के आशीर्वाद से ५-६ साल तक की स्टैण्डिग के वकीलों से आगे बढ़ गया हूँ। अब कम-से-कम रोटी-कपड़े की चिंता से मुक्त हूँ और लगता है कि जीवन में काफी भटकने के बाद अब मैं ठीक रूप से जम पाया हूँ।

प्रेम व श्याम दोनों ता० ४-५-५६ को मनोहरथाना जा रहे हैं, वहाँ वे शादी में शरीक होंगे और कुछ दिन रहकर फिर उदयपुर जायँगे। २ महीने मे लौटेंगे।

प्रेम ने सर्विस कर ली थी, लेकिन अब त्यागपत्र दे दिया है और अगले वर्ष सर्विस नहीं करेंगी। पारिवारिक जिम्मेदारियाँ ठीक तरह से नहीं निभ पाती हैं, सर्विस के साथ। और आर्थिक प्रश्न सामने नहीं है।

मेरी एक साध बहुत दिनों से है जो अभी तक पूरी नहीं हुई है। आपनें वादा भी कर रखा है। मैं चाहता हूँ, आप ३-४ सप्ताह या कम-से-कम १-२॥ सप्ताह मेरे पास रहे। पाखाने-पानी-हवा व सफाई की काफी अच्छी व्यवस्था यहाँ है। जुलाई के बाद कभी भी आप यहाँ रहने का प्रोग्राम बना सकेंगे, तो मुझे बहुत ही सुख मिलेगा।

कृपा पत्र दीजियेगा। पू० माताजी को प्रणाम, सबको यथायोग्य।

—रघुवीरशरण दिवाकर

आदरणीय सेठजी साहब, रामपुर : ९-१-५८

सादर प्रणाम। आशा है आप सब वहाँ सानन्द व सकुशल हैं, हम लोग भी यहाँ सकुशल हैं।

आपने लड़की देखने के लिए अपने भतीजे को दिसम्बर की छुट्टियों में भेजने की बावत लिखा था, लेकिन वे नहीं आये। मैं परसों मुरादाबाद गया था। वहाँ भाई नन्दकिशोर जैन, लड़की के पिता, ने मुझसे कहा कि आपके ही इंतजार मे और कहीं बातचीत नहीं चलाई जा रही है। अतः कृपया इस बारे में सूचित कीजिएगा तथा यदि विचार इधर सम्बन्ध करने का हो तो उन्हें शीघ्र भेजिएगा। वे मेरे पास आ जायें, मैं सब व्यवस्था कर दूँगा। उत्तर लौटती डाक से दीजिएगा।

श्री निर्मलप्रसादजी का पत्र मुझे मिला है। मैंने उन्हें उत्तर दे दिया है। मैंने यह भी लिखा है कि यदि खर्च ज्यादह आये तो ५०) तक की सहायता मैं भी कर सकता हूँ। विधवा विवाह के विषय पर साहित्य प्रकाशित कराने के सम्बन्ध में भी मैंने अपना दृष्टिकोण इस प्रकार स्पष्ट कर दिया है :

' विधवा विवाह के विषय पर ही साहित्य लिखने का एक समय था, पर आज विचारधारा इतनी आगे बढ़ गई है कि सिर्फ इसी विषय पर पुस्तक लिखना व छपाना शक्ति व द्रव्य का सदुपयोग नहीं माना जा सकता। हाँ यह हो सकता है कि व्यापक दृष्टिकोण से पुस्तक लिखी जाय और उसमे विधवा विवाह के विषय पर भी कुछ विवेचन हो। इसी दृष्टि से इस पुस्तक मे कुछ मैटर जोड़ा है। श्री बड़जात्याजी से बातचीत के बाद ही यह मैटर बढ़ाया गया था। आशा है इस बारे मे आपको कोई द्विविधा न होगी।"   —रघुवीरशरण दिवाकर

श्री मिश्रीलालजी गंगवाल के पत्र

प्रिय बड़जात्याजी,   भोपाल : २४ अक्टूबर १९५९

मेरी पत्नी के अचानक देहावसान के उदय हुए विषाद ने मेरी चेतना को ग्रसकर ऐसा पराभूत कर दिया कि मैं सरलता से अपने आप को सम्हाल ही नहीं सका। मन चिन्ता की लहरों के थपेडे खा रहा था। ऐसी विपत्ति के क्षणों में आपके द्वारा भेजे गये सवेदना और सहानुभूति के जाज्वल्यमान एव स्निग्ध कणों ने मुझे और मेरे परिवार को इस अकल्पित असह्य दुःख को बरदाश्त करने में काफी बल और धैर्य दिया है। इसके लिए मैं सपरिवार आपका अत्यन्त उपकृत हूँ।

—मिश्रीलाल गगवाल

प्रिय श्री चिरंजीलालजी,   भोपाल : २७ जून, १९६१

बरेली तहसील में बाडी के नजदीक अमरावत गाँव में स्थित जैन मूर्ति को म्युजियम में रखवाने के विषय में आपका पत्र दिनाक

१८-६-६१ का प्राप्त हुआ। मूर्ति को म्युजियम में मंगवाने के विषयमें आवश्यक करने के लिए मैं संबंधित विभाग को लिख रहा हूँ।

—मिश्रीलाल गंगवाल

श्री कस्तूरमलजी बाँठिया के पत्र

भाई श्री चिरंजीलालजी, इन्दौर : २०-२-५७

आशा है आप स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे और अपने मित्रों के चुनाव में सहायता करने में अवकाश भी नहीं पाते होंगे। मैं अभी यहीं रुका हुआ हूँ। बाई की इच्छा रही कि मैं उसके पास कुछ दिन और ठहर जाऊँ। अब शायद होली के बाद कोटा जाऊँ। कोटा जाने की कोई जल्दी नहीं है। लडकियों के पास रहते हुए यही अनुभव करता हूँ कि अपने पुत्रों ही के पास रह रहा हूँ।

कलकत्ते के तरुण पाक्षिक मे नागपुर में हुए मू० पू० जैन (तेरापंथी) साधु मागीलाल मालू का विवाह-समाचार पढ़ा। विवाह दरबारीलालजी ने कराया। इससे यह अनुमान लगाता हूँ कि यह वही व्यक्ति है जिसकी आप सहायता कर रहे थे। पर वह तो स्थानकवासी साधु था और जात का माली या तेली। यह तो ओसवाल मालूम होता है।

आज एक कष्ट दे रहा हूँ। यहाँ मुझे पढ़ने को कुछ नहीं मिल रहा है, क्योंकि जिनको मैं जानता हूँ वे पढ़ने-लिखने के शौकीन नहीं हैं। सरावगी बन्धुओं मे मेरी जान-पहचान नहीं है। इसलिए उनसे मुझे जैन साहित्य की पुस्तकें पढ़ने को प्राप्त नहीं हो सकतीं। आपके तो यहाँ कितने ही मित्र एव सम्बन्धी भी होंगे। मुझे हरिषेण का आराधना कथाकोश, सोमदेव सूरि का नीतिवाक्यामृत, पुण्यास्रव कथाकोश और भगवती आराधना आदि पुस्तकें पढ़ने की बडी इच्छा है, जो यहाँ के सभी दिगम्बर जैन मंदिरों से प्राप्त हो सकती हैं। क्या आप ऐसे एक-दो मित्रों से मुझे परिचय करा देंगे ? पुस्तकों के सग में

दिन बड़े आनन्द से बीत जाते हैं। आशा है आप अवश्य ही मेरी सहायता कर सकेंगे।

पत्र दें, स्वास्थ्य का खयाल रखें। —कस्तूरमल बाठिया

प्रिय भाई श्री चिरजीलालजी, यमुना नगर : २५-१-६१

वन्दे। आशा है आप सपरिवार स्वस्थ और प्रसन्न होंगे। 'जैन जगत' में भाई रिषभदासजी राका का लिखा आपका और श्री गगा-बिसनजी का तुलनात्मक रेखाचित्र पढकर बड़ी प्रसन्नता हुई। उनने बहुत वाणी-संयम से और संक्षेप में यह चित्र खींचा है।

आप दिल्ली से वर्धा ही लौट गये। हमें दर्शन न दे सके। आशा तो थोड़ी ही थी, फिर भी प्रतीक्षा तो थी ही, क्योंकि भगवान् भक्तों को भूलते नहीं। शायद मेरी भक्ति मे कमी या कपट रहा होगा।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि पिछले दिनों सन्त तारण-तरण-अनुयायी रजनीशजी से पत्र द्वारा विचार-विनिमय हुआ और कल ही उनसे सतलिखित चार ग्रथ (ब्र० शीतलप्रसादजी की टीका सहित) प्राप्त हुए हैं। अवकाश से उन्हे पढ़ूँगा। रजनीशजी अध्यात्म प्रेमी प्रतीत होते हैं और उनके अक्षर तो इतने सुन्दर कि उनके छपे होने का भ्रम होता है।

'महात्माजी और श्रीमद् राजचन्द्र' पर एक बड़ा लेख लिख रहा हूँ। महात्माजी ने जिन तीन व्यक्तियों से अपने जीवन को प्रभावित कहा, उनमें से एक राजचन्द्रजी थे। इन पर महात्माजी ने लिखा और कहा भी बहुत है। अफ्रीका से महात्माजी ने २७ प्रश्न राजचन्द्रजी को लिखे थे। उनके उत्तर और इसके अतिरिक्त दो पत्र भी राजचन्द्रजी के हैं। महात्माजी के लिखे पत्रों का पता नहीं चलता। फिर भी राजचन्द्रजो के वे पत्र प्रकाश में आने पर लोगों को पता चलेगा कि महात्माजी ने किसीको गुरु नहीं बनाया हो, फिर भी राजचन्द्रजी द्वारा उनमे आस्तिकता के विकास मे अपूर्व योगदान हुआ था।

कृपा बनाये रहे। सबसे यथायोग्य। —कस्तूरमल बाठिया

भाई श्री चिरंजीलालजी, नेपानगर (म० प्र०) : २६-१२-६२

सप्रेम प्रणाम । आपके साथ कुछ दिन वर्धा में रहने का प्रेमाग्रह, मुझे खेद है कि मैं पालन करने मे असमर्थ हूँ। इसका कारण भी आज आपसे स्पष्ट कह देने के लिए क्षमा चाहता हूँ।

यह तो आप जानते ही हैं कि मेरा आजकल निर्वाह बडी बाई कर रही हैं। मैं उस पर जितना भी कम भार डाला जाय, डालना चाहता हूँ। वर्धा आने के लिए मुझे उससे रेल-किराया आदि माँगना ही पडेगा और वह मुझे तीसरे दर्जे मे यात्रा करने नहीं देगी। मैं यह नहीं चाहता कि उस पर पहले दर्जे से वर्धा आने-जाने के किराये का भार डालूँ। आप यह भी मानेंगे कि आप जैसे मित्र मेरी यात्रा का खर्च दे यह भी उसको बुरा लगेगा और ऐसा बुरा लगाना मुझे उचित नहीं है। शेष जीवन मुझे उसके साथ रहकर ही बिताना है, अतः उसके और जँवाई साहब के भावों को किसी भी तरह से ठेस पहुँचाना मेरे लिए जरा भी उचित नहीं। ऐसी स्थिति मे मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप मुझे क्षमा करेंगे।

संसार की परिस्थितियों ने ही मुझे अर्थार्जन की समस्त प्रवृत्तियों से उचाट कर दिया। यदि गृहिणी जीवित होती तो मैं अर्थार्जन मे लगा ही रहता, क्योंकि सयम लेने की वैराग्य-वृत्ति तो मुझमें आज भी नहीं है। यह नहीं कि मैंने धनार्जन नहीं किया। परतु यह बेवकूफी मैंने अवश्य की कि कुछ सुरक्षित रखकर परिवारवालों पर खर्च करना चाहिए, सो वैसा नहीं किया। परंतु इसका दुख मैं नहीं करता, अन्यथा मेरा जीवन ही दूभर हो जाता। कर्म-योग से स्वास्थ्य ठीक रहा है, इसीलिए मैं समाधिपूर्वक रह रहा हूँ।

आपसे अपने हृदय की बात निःसंकोच होकर कह दी है। आशा है, इसको आप समझेंगे।

—कस्तूरमल बांठिया

भाई-श्री-चिरंजीलालजी, नेपानगर : ३०-५-६३

सप्रेम प्रणाम । आपका २९-५ का पत्र पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई। पर आप मुझे पूज्य लिखें, यह मुझे अच्छा नहीं लगता। अवस्था में हम दोनों समान हैं, पर गुणों मे आप मुझसे बहुत ऊँचे हैं। किताबी ज्ञान ज्ञान नहीं कहा जा सकता। आप सिद्धान्त के अनुसार जीये और जी रहे हैं। मुझसे अस्वस्थ-शरीरी होते हुए भी उस शरीर से पर-सेवा करते कभी जरा भी नहीं थकते। सदा सेवा के लिए दौड़ पड़ते हैं। सेवा का अवसर आपने कभी हाथ से जाने दिया हो, ऐसा मुझे तो मालूम नहीं है। यदि आप मुझे 'भाई' मात्र लिखेंगे, जैसा कि मैं आपको लिखता हूँ, तो वही मुझे अपने भाई के कर्तव्य-स्मरण कराता रहेगा। यह भी तो मुझसे बन नहीं पाये हैं।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि इन दिनों आपने डॉ॰ अवेडकरजी लिखित 'भगवान बुद्ध' का स्वाध्याय किया था। मेरे पढ़ने योग्य पुस्तक वह आपको लगी, तो मैं क्यों न पढ़ूँगा। आप अवश्य भिजवा दें।

आप पौने दो महीने के प्रवास से अभी ही लौटे हैं। मैं भी एक महीने छोटी बाई अंजना के पास इन्दौर में रह आया हूँ। उसने आग्रह पूर्वक बुलाया और बड़ी बाई ने भेज दिया, तो जाना ही पड़ा। ता॰ २०-५ को ही लौटा हूँ।

आपका स्वास्थ्य साधारण ही है। इस अवस्था में हम लोगों का साधारण स्वास्थ्य बना रहे, यही हमारा पुण्योदय मानना चाहिए। पिछले एक सप्ताह से ग्रीष्म ने अपना प्रभाव दिखा ही दिया। नहीं तो ऐसा लग रहा था कि अब के ग्रीष्म आयेगा ही नहीं। यहाँ तो दिन और रात खूब ही पवन चलता रहता है, फिर बिजली के पंखे भी। इसलिए गरमी ऐसी नहीं लगती।

'महावीरवाणी' के विषय मे श्री राकाजी से कुछ उत्तर आया होगा। मेरे पत्र का तो उत्तर ही नहीं दिया। इन दिनों वे बलदोटाजी के साथ बहुत व्यस्त होंगे। स्मरण करायें। —कस्तूरमल बांठिया

प्रिय भाई श्री चिरंजीलालजी, नेपानगर : २०-६-६३

सप्रेम प्रणाम। आपकी भेजी डा० अबेडकर लिखित 'भगवान् बुद्ध और उनका धर्म' पुस्तक पहुँची। एतदर्थ कृतज्ञ हूँ। पढ़कर यथा समय लौटा दूँगा।

मैं पं० बेचरदासजी को 'महावीरवाणी' के अनुवाद को जाँचने और संपादन करने का काम श्री जमनालालजी जैन को ही सौंप देने की प्रेरणा दे रहा हूँ। न जाने क्यों पं० बेचरदासजी को यह वहम हो गया कि श्री जमनालालजी उनके लिखे को बदल देंगे या काट देंगे। अभी पिछले दिनों जमनालालजी को इस विषय पर लिखे पत्र का उत्तर मेरे पास आया था। मैंने वह पंडितजी को विचार करने को भेजते हुए लिखा कि यह भ्रम आपको निकाल देना चाहिए। उत्तर की प्रतीक्षा में हूँ।

आपको भी श्री सिद्धराजजी ढड्ढा का उत्तर मिला होगा। सूचना की प्रतीक्षा में हूँ। रिषभदासजी राका अब इसमें जरा भी दिलचस्पी क्यों नहीं ले रहे हैं, समझ मे नहीं आता। पहले तो पडितजी ने सारा भार उन पर छोड़ दिया था। अब उनने मुनि अमरचंदजी पर सौपा है। क्या कारण होना चाहिए ? —कस्तूरमल बाठिया

भाई श्री चिरंजीलालजी, नेपानगर : २२-६-६३

सप्रेम प्रणाम। आपके आज मुझे दो कार्ड एक २० का दूसरा २१ का मिला। २१ के कार्ड मे जो निराशा जनक भाव आपने लिखे सो जान पड़ता है आपका ध्यान मेरी उस सूचना पर नहीं गया कि आपके पत्र पर सिद्धराजजी ढड्ढा नें जमनालालजी जैन से कह दिया कि महावीर-वाणी का काम निपटा दिया जाय और जमनालालजी ने मुझसे अनुवाद की टाइप कापी मंगवाई, सो मैंने तुरत गुजराती पुस्तक के साथ भेज दी, जो आज उन्हे मिल भी गयी होगी। यह सब आपके सिद्धराजजी ढड्ढा को लिखे पत्र का ही शुभ परिणाम है।

आपके आशीर्वाद से पं० बेचरदासजी भी जमनालालजी पर भार छोड़ देने को राजी हो गये हैं। सारी जिम्मेदारी मुझ पर डाल दी है। अब मैं जमनालालजी से यह काम करा ही लूँगा। उनने भी मेरे और आपके आग्रह से यह भार उठा लिया।

विजयेन्द्र सूरि के 'तीर्थंकर महावीर' दोनों भाग उनने ही मुझे भेज दिये थे और मैंने तभी खूब अच्छी तरह पढ़ लिये थे। मैं आपको सूचना देना भूल गया था। खैर, ज्ञान में आपकी सहायता हुई यह अच्छा ही हुआ। पुस्तक बड़ी सयत भाषा में लिखी है और तटस्थता से भी। यह बात दूसरी है कि आज के मानस के युवकों को, जैसे कि जमनालालजी जैन हैं, यह इतनी अच्छी नहीं लगे। वे भगवान् का चित्रण मानव-विकास का चाहते हैं, जब कि परपरा उन्हें परमात्मा मानकर ही चलती है। हम जैन इतने उदार नहीं हो सकते हैं।

माननीय श्री श्रीनिवासजी शास्त्री ने वाल्मीकि रामायण पर मद्रास की विद्वत् सभा में कोई ४० व्याख्यान अंग्रेजी में दिये, जो भगवान् राम के मानव रूप को ही प्रकाश में लाते हैं। व्याख्यानों की समाप्ति पर पंडितों ने एक सोने की थाली और दुशाला आदि शास्त्री जी को भेंट कर उनका सम्मान किया था। वह ग्रन्थ अंग्रेजी में है, नहीं तो आपको पढ़ने के लिए अवश्य कहता। —कस्तूरमल बांठिया

महावीर-ब्रह्मचर्याश्रम कारंजा के पत्र

प्रस्ताव : २६-१२-४७

वर्धा निवासी श्री. सेठ चिरंजीलालजी बड़जाते यानीं स्वयप्रेरणेनें अत्यंत औदार्यपूर्वक संस्थेच्या ध्रुवफडात १००१ एक हजार एक रुपयाची देणगी देण्याची स्वीकृति देऊन संपूर्ण रक्कम ता० १४-९-४७ रोजीं पाठवूनहि दिली. या प्रेमपुरस्सर दिलेल्या दानाबद्दल संस्थेच्या कार्यकारी मडळाची ही सभा श्री. सेठ साहेबाना अन्तःकरण पूर्वक धन्य-वाद देत आहे. व सस्थेच्या नियमाप्रमाणें सेठ साहेबाना सस्थेच्या व्यवस्थापक मंडळाचे "सभासद" निवडून घेत आहे.

बाहुबली : ५-४-५४

धर्मानुरागी भद्रपरिणामी श्री० चिरंजीलालजी बड़जाते यांसि—

स. ज. वि. वि.

आपण सदरहू संस्थेच्या रथोत्सवाच्या मंगल प्रसंगी सवड काढून एवढ्या लांब येणे केले व उत्सव साजरा करण्यांत भाग घेतला त्याबद्दल हीं संस्था आपली आभारी आहे.

तसेंच आपण स्वीकृति दिलेल्या ५०१) रु० मैकी ५०) रु० चा हप्ता हि त्याच वेळी दिला त्याबद्दल आम्ही आपणास धन्यवाद देत आहोत.

आपण ध. श्री. भिसीकर गुरुजी यांचेकडे दिलेल्या १० रु० पैकी सन्मतीच्या वर्गणीबद्दल ६ रु० आपल्या तर्फे वर्गणीचे जमा केले आहेत व ४ रु० आपल्या नावानें जमा केले आहेत.

या पत्रासोबत ५० रु० ची पावती पाठविली आहे तिचा स्वीकार व्हावा.

श्री ऋषभदासजी राका यानाहि आपण या सस्थे साठी कबूल केलेल्या दानाचा हप्ता पाठवून देण्याबद्दल जरूर प्रेरणा करावी ही नम्र विनन्ति.

पूज्य १०८ श्रीसमतभद्रमहाराजानी आपणास मंगल आशीर्वाद कलविळे आहेत. कळावे.

कारंजा : १६-१२-५०

सप्रेम जयजिनेंद्र व प्रणाम वि. वि. बाहुबली येथील उत्सवानतर डेप्युटेशन वगैरे रुपानें प्रवासात होतो. नुकतेच येणे कारंजास झाले आहे. आपण आमच्या विनतीस मान दिला व बाहुबली सारख्या अत्यंत दूरवर्ती ठिकाणीं आपण येणें केले त्या योगे निस्संशय आह्मासर्वांचा उत्साह वाढविला आहे. या बद्दल आपला अक्षरशः ऋणी आहे. प्रायः पुढारी वैयक्तिक कार्यापायीं सार्वजनिक कामामध्ये योग देत नाहींत—

त्यात रसहि घेत नाहींत. आपण मात्र यावेळी दाखविलेले प्रेम आम्ही विसरणार नाहीं. आपले निमित्तानेंच श्री ऋषभदासजी चे येणे झालें. त्याच्या विचारशीलतेचा रसास्वाद चाखावयास मिळाला. पुस्तकी ज्ञान ही बाब निराळी व अनुभव ही बाब निराली आहे. सध्या ही गोष्ट दुर्मिळ झाली आहे ती लाभली. त्याना पत्र पाठविले आहेच. आपणहि आमचेतर्फे त्याना धन्यवाद जरूर कळवावेत.

डेप्युटेशनमध्यें आश्रमला ईमारती साठी १० हजाराची स्वीकारता रथयात्रेसाठी व रथ व इतर ४ हजाराची स्वीकारता पू० महाराजाच्या प्रयत्नाने लाभली आहे.

आपल्या प्रेमाच्या छत्राखाली निरन्तर राहावयास मिले ही आतरिक इच्छा आहे. बाहुबळीहून निघताना पू० महाराज आपणास "सद्धर्मवृद्धि" कलविण्यास सागितले आहे व बाहुबळीला येणे केल्याबद्दल हार्दिक धन्यवादहि कलविण्यास सागितलें आहे.

दीपावली नन्तर पत्रद्वारे आपण कलविण्यास सागितले होते. त्याप्रमाणे विनति आहे. गतवर्षी कारंजा आश्रमवर नैसर्गिक प्रेमपूर्वक उदारशीलता दाखवून प्रतिवर्षी ३ दिवसाच्या जेवणाबद्दल ३० प्रमाणे ९०) रुपयाचे प्रथमवर्षा चे दान रोख दिले होते त्याप्रमाणे चाळू वर्षाचेहि पाठविण्याचा अनुग्रह करावा. तसेंच ध. श्री. ऋषभदासजी यानाहि आमची विनति आहे अनुकूलता पाहून पाठविण्याचे व्हावें. तगादा वाई नवें.

बाहुबळीस दान पाठविणार होता. पता वर दिलाच आहे. कळावे. आपले दानानें सस्थेकडून अधिक सेवा घडो ही इच्छा आहे. येथील कार्यकर्त्यांचा सादर प्रणाम.

—माणिकचन्द चवरे
बाहुबली : २५-९-६२

आपको ध० श्री० १०८ समन्तभद्र महाराज जी ने अनेक शुभाशीर्वाद कहे हैं। ध० ब्र० जयकुमार भीसीकर के पत्र से यह ज्ञात हुआ कि आपने पवित्र पर्यूषणपर्व में उपोषणव्रतादिकों का अनुष्ठान

करके उत्तमरीति से धर्माराधना की है। तथा 'मोक्षमार्ग प्रकाश' के स्वाध्याय मे भी प्रारम्भ से आखिर तक दिलचस्पी से भाग लिया। तथा यहाँ के प्रतिष्ठा महोत्सव के प्रीत्यर्थ एक कलश भी १०१) रुपयों का लेने की स्वीकृति दी। यह आपका सब उत्साह देखकर महाराजजी को परम संतोष हुआ। उन्होंने आपको अनेकशः धन्यवाद कहे हैं और उसी प्रकार द्वितीय प्रतिमा से भी अपनी आत्मा को ऊँचा उठाकर सप्तम प्रतिमा आदि उच्चपद धारण करने का सस्नेह आग्रह किया है।

हीरालालजी कोठारी के पत्र

श्रीमान बड़जातियाजी साहब, उदयपुर : ५-१-५५

जयजिनेन्द्र। आपके सुखद समाचार अक्सर प्रतापजी साहब द्वारा प्राप्त हो ही जाते हैं फिर भी आप प्रसन्न हैं, ऐसा मेरा विश्वास है। यह पत्र लिखने का खास कारण यह है कि आप तथा रांकाजी महामण्डल के अधिवेशन मे उदयपुर पधारे थे, तब मैंने आपके सामने एक होनहार स्वस्थ सुन्दर युवक का, जो चारटर्ड एकाउण्टेण्ट है, परिचय कराया था। वह युवक सामाजिक परम्परा को तोड़ वैश्य कुल में किसी अच्छी सुयोग्य शिक्षित कन्या के साथ विवाह करना चाहता है। उस वक्त आपके व रांकाजी के मन मे····की कन्या का सुझाव चल रहा था, परन्तु आपसे उसके पश्चात् इस सम्बन्ध में कुछ सुनने को नहीं प्राप्त होने से यह पत्र लिख आपसे निवेदन करता हूँ। उक्त कन्या या अन्यत्र सद्परिवार की सुसंस्कारी कन्या का आपके सामने ऐसा सुझाव हो, तो कृपया शीघ्र सूचना दें ताकि इस सम्बन्ध में आगे की कार्रवाई प्रारंभ हो सके। मैं इतना ही कह सकता हूँ कि ऐसा युवक सब तरह से यानी शिक्षा-दीक्षा, संस्कार तथा स्वास्थ्य एवं अच्छे परिवार वाला ढूँढने से ही मिलेगा।

—हीरालाल कोठारी

श्रद्धेय बड़जातिया साहब, उदयपुर : २८-९-५६

वन्दे । आपके पत्र मुझे यथा समय पर मिल जाते हैं । पर समय पर यानी तत्काल उत्तर नहीं भेज सका, इसके लिए क्षमा चाहता हूँ । आपका जो मेरे साथ स्नेह बन गया है, उसके लिए अत्यन्त आभारी हूँ ।

.........बहन के सम्बन्ध में आपने मुझे लिखा था वह संभव नहीं है । मैंने प्रतापसिंहजी से बात की, किन्तु यह उन्हें अनुकूल नहीं पडेगा । हमें भी बाई के साथ बडी सहानुभूति है, पर विवश ।

इसके अतिरिक्त नागपुर वाले एडवोकेट साहब की कन्या के सम्बन्ध में आपका पत्र पहले मिला था, तथा आप द्वारा फोटू भी प्राप्त हुआ । उसके लिए उनसे बात कर रहा हूँ । अभी कोई बात पक्की नहीं हो पाई है ।

आज आपका पत्र अभी फिर प्राप्त हुआ जिसके लिए अनेक धन्यवाद । उत्तर निम्न प्रकार है ।

१. संवत्सरी सम्बन्धित मन-वचन-कर्म से मैं भी आपसे परम्परा के अनुसार क्षमा-याचना करता हूँ । यूँ तो मैं हमेशा का खाता रोजमर्रा उठा देना पसन्द करता हूँ, फिर भी कहीं बकाया न निकल जावे, इस पर्व पर आपसे बारम्बार क्षमा-याचना करता हूँ ।

२. दीपावली पश्चात ट्रेक्टर देखने अवश्य प्रोग्राम उधर आने का बनावेंगे । आपका आग्रह और अनुग्रह दोनों ही टाला नहीं जा सकता ।

३. महात्मा भगवानदीन जी के पत्र की प्रतिलिपि पढ़ी । इस सम्बन्ध में विस्तृत समाचार अगले पत्र में लिखूँगा । प्रताप भैया मिलते रहते हैं । वे प्रसन्न हैं और हम सब लोग यहाँ प्रसन्न हैं । प्रतापसिंहजी साहब, बम्बई गये हुए हैं । सूरज बहन अपने बच्चों सहित कुशल हैं ।

आप भी इधर पधारने की चेष्टा रखें । शेष धन्यवाद ।

—हीरालाल कोठारी

श्रद्धेय चिरञ्जीलालजी सा०, उदयपुर : १-९-५९

जयहिन्द। आशा है आप स्वस्थ और प्रसन्न हैं। इधर आये को काफी अरसा हो गया, अब कब तक आना होगा। क्या प्रताप भैया इधर नहीं होने से हमें भूल जाना चाहते हैं ?

पत्र लिखने का अभिप्राय यह है कि आप सुना गया है बम्बई पहुँच रहे हैं और वहाँ श्री कमलनयनजी इत्यादि से मिलना भी होगा ही। ....ने आयुर्वेद सेवाश्रम के विरुद्ध कानूनी कार्रवाही कर रखी है। उसका ऐसा करना अत्यन्त अशोभनीय है, परन्तु लड़कपन ही ठहरा। आप उसकी तरफ न देख किसी प्रकार कमल-नयनजी को समझावें कि आप यही समझें कि आपका ही एक लड़का पिताद्रोही हो गया, फिर भी पिता का हृदय बच्चे के प्रति दया और सहानुभूति से भरा ही रहता है। .... के पास ....रुपये के सेवाश्रम के शेयर हैं। वह उन्हें दे देना चाहता है और बदले में .... की रकम मागता है। सोनीजी ने भी बहुत प्रयत्न किया और समझाया, परन्तु हठीला है। रकम मिल जाने पर सब ही मुकदमों को हटा लेगा, ऐसा उसका कहना है। परिस्थितियों को देखते हुए मेरी राय से ....की सफाई हो जाने से सारी चीजें व्यवस्थित हो सकेंगी और यही दूसरे लोगों का भी ख्याल है। वर्माजी की भी यही राय है। अतः आप किसी भी प्रकार बजाजजी को इस पर रजामन्द करा कर सारी उलझनें मिटाने का श्रेय लेने की पूरी चेष्टा करें। बलवन्तसिंहजी महता की भी यही राय है। यह काम आप बिना दूसरा नहीं कर सकता, ऐसा हमारा विश्वास है। आप यदि उचित समझें तो राका साहब का भी सहयोग लेकर कमलनयनजी साहब पर प्रभाव डालें, ऐसी मेरी प्रार्थना है। शेष कुशल। योग्य कार्य लिखें।

—हीरालाल कोठारी

विविध पत्रावली

आदरणीय बडजात्याजी सा०, कलकत्ता : २४-१२-४४

सादर प्रणाम।

पत्र आपका मिला। समाचार जाने। परसों मेरे पिताजी के स्वर्गवास का तार मिला। अचानक यह घटना मेरे लिए अत्यन्त दुःखप्रद रही। इसके पूर्व मेरे पास बीमारी तक की कोई खबर नहीं थी। यदि होती तो जरूर जाता। जैसी ईश्वर की इच्छा। मैं अब कोई खास परिस्थिति वश अभी न जाकर २५ दिन बाद ही इनके साथ-साथ जाऊँगा।

मुझे यहाँ जब कि मैं इनके साथ हूँ, तब तक तो ५०) रु० भोजन और परचुनी खर्च आदि दे देते हैं। और जब भीलवाडा कम्पनी का काम करूँगा तब सिर्फ ५०) रु० देते हैं। मुमकिन है इस बार भीलवाड़ा जाने पर कुछ तरक्की अवश्य मिलेगी। यह तो मेरी आय का हिसाब। मेरी शिक्षा का हाल यह है 'कि डिप्लोमा तो सिर्फ मेरे पास सस्कृत प्रथमा का है। हाईस्कूल और विशारद का फार्म भरा, कुछ पढ़ा भी, लेकिन परिस्थिति वश परीक्षा मे नहीं बैठ सका। इसकी पूर्ति आईन्दा वर्ष अवश्य करूँगा—और जो बातें आपने पूछीं वे सब मुझे मजूर हैं।

इन सबके परे मैं चाहता हूँ कि लड़की की मनस्थिति इतनी तैयार हो कि वह हमारी स्थिति को सह सके। चाहे फिर वह बहुत कम पढ़ी-लिखी, बहुत गरीब ही क्यों न हो। —गुलाबचन्द्र जैन

आदरणीय बड़जातियाजी साहब, लखनऊ: १०-११-४६

सादर जयजिनेन्द्र !

आपके भीलवाडा छोड़ने के दूसरे रोज ही मैं लखनऊ के लिए रवाना हो गया, पर दुर्भाग्यवश आपके आदेशानुसार श्री प्रेमराजजी साहब दोषी से अजमेर न मिल सका। आज गुलाबचंद का पत्र

भीलवाडे से आया। उससे ज्ञात हुआ कि श्रीमान् दोषी साहब भीलवाड़े पधारे थे और वे गुलाबचंद से मिले थे। पता नहीं उनको गुलाबचंद पसन्द आया या नहीं। लेकिन एक विषय के बारे में मैं आपको मालूम कराना चाहता हूँ कि भीलवाडे मे कुछ पुराने विचारों के ऐसे व्यक्ति हैं, जिनका काम ही यही है कि किसी भी व्यक्ति का हित नहीं होने देना और विशेष करके जिसकी आर्थिक अवस्था ठीक नहीं है उसका तो वे व्यक्ति किसी भी प्रकार भला नहीं होने देना चाहते। इस मनोवृत्ति के पीछे यह भावना रहती है कि समाज में उनकी सत्ता बनी रहे। गुलाबचंद कुछ सुधारक विचारों का होने के कारण ऐसे लोगों की न तो सत्ता ही स्वीकार करता है और न वे जो कुछ करते हैं, उसको ठीक ही समझता है और कई सामाजिक सुधार के अवसरों पर वह उनका प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष में विरोध करता है। अतः वे लोग सदैव इसके सम्बन्ध के मामले में रोडा अटकाते रहते हैं, ताकि गुलाब चंद उनसे दबता रहे। अतः हो सकता है श्रीमान् दोषी साहब को उन लोगों ने गुलाब के बारे मे कुछ गलत बातें बताई हों और दोषी साहब ने उनके कहने को सत्य मान लिया हो। अतः आप कोई गलत फहमी हो तो उसे दूर करने की कोशिश करें। यह सत्य बात है कि लडके की आर्थिक अवस्था बहुत अच्छी नहीं है, लेकिन लडका अपने पैरों पर आसानी से खड़ा रह सकता है और समाज मे सम्मान पूर्वक और सुख पूर्वक अपना जीवन यापन कर सकता है। लड़का स्वस्थ, सच्चरित्र और स्वावलम्बी है। आशा है आप श्रीमान् दोषी साहब को इस सम्बन्ध के लिए लिखेंगे। गुलाबचंद सदैव आपका आभारी रहेगा।

क्या आप मेरठ अधिवेशन में पधार रहे हैं? आयें तो अवश्य मिलियेगा। क्या श्री अनूपजी भी मेरठ आ रहे हैं। सबसे यथायोग्य। कार्य सेवा लिखें। —चैनसुख अजमेरा

प्रिय भाई श्री चिरंजीलालजी, अकोला : १ फरवरी, ४७

सादर वन्दे। आपका ता० १३-१२-४६ का पत्र दिल्ली से लौटने पर यहाँ मिला। हर्ष है। श्री रामनारायजी के पुत्र एवं कन्या के सबंध मे ध्यान रक्खूँगा।

बुलढाणा की बहन के बारे में समाचार जानकर आश्चर्य है, खेद भी। मैंने उनके बारे में कोई ऐसी बात नहीं की। हाँ चुनाव जैसे प्रसगों पर ऐसी बातें अक्सर उठ जाया करती हैं। आप उक्त बहन को अवश्य लिखे। उन्हे सान्त्वना होगी। मैं बुलढाने की ओर गया तो उस गलतीफहमी को अवश्य दूर करने का प्रयत्न करूँगा।

आशा है, आप प्रसन्न होंगे। मैं प्रसन्न हूँ। कृपा रक्खें। स्मरण के लिए आभारी। —ब्रिजलाल बियाणी

श्रद्धेय श्री चिरंजीलालजी, नागपुर : २०-७-४७

सादर नमस्ते। आपका ता० १५-७ का कृपा पत्र मिला। मैं बाहर गया था, परन्तु ता० १७-७ को ही आ गया। ता० १८ को प्रातःकाल श्री अनूपलाल के पिताश्री के दर्शन हुए। उन्हें विश्वास दिलाकर भेजा है कि यदि यह वर्ष श्री अनूप का कार्य मे व्यतीत हुआ तो भी अगले वर्ष में वह शिक्षा आदि पूर्ण करेगा ही। आज ही अनूप को भी मैंने पत्र लिखा है। अगले मास के प्रथम सप्ताह में उसे मिलने का भी योग है। उससे मैं बातचीत करूँगा ही।

आपको मैं पहिचानता हूँ या नहीं, इस विषय में आपने सन्देह प्रकट किया है। उससे मुझे दुःख हुआ। आपसे प्रत्यक्ष मिलने का सौभाग्य अल्पकाल ही क्यों न हो, वर्धा स्टेशन पर मैंने प्राप्त किया था। नाम से तथा श्री अनूप के श्वसुर इस नाते और उससे भी महत्त्वपूर्ण याने अपने देश के एक पुराने सच्चे हृदय के राष्ट्रभक्त इस दृष्टि से मैं आपको अच्छा जानता था और इसका मुझे गर्व है कि ऐसे विशुद्ध राष्ट्र-सेवक से उनके दामाद द्वारा क्यों न हो, मेरा अति निकट संबंध स्थापित है। —मा० स० गोलवलकर (गुरुजी)

पूज्यवर भाईजी साहब, सप्रेम प्रणाम। इन्दौर : २६-५-४९

कृपापत्र आपका बहुत दिनों से नहीं। चिन्ता है। मुझ गरीब से नाराज तो नहीं हो गये। चि० विद्याप्रकाश फर्स्टईयर मे सेकन्ड डिवीजन में पास हो गया है। तथा चालू तिमाही फीस ३०) भर दिये हैं। दूसरे साल में फर्स्ट डिवीजन की तैयारी शुरू कर दी है।

आपके पास फोटो भेजे थे, उसके बाद आपका कोई पत्र मिला नहीं, आप शायद बंबई गये।

इसकी चाल तथा आगे की पढ़ाई की ही रात-दिन चिन्ता है। आशा है आप आगे की पढ़ाई की चिन्ता रक्खेंगे। मेरा वसीला आप तक ही है।

जबलपुर के छविलालजी प्रेमचद जैन (दिगंबर जनरल स्टोर्स जवाहरगंज जबलपुर) यहाँ आये थे। उन्हें उनके सम्बन्धी वैद्य उत्तमचंदजी जैन पिंडरई (मंडला) से मालूम हुआ था कि अपने यहाँ लड़का है। यह लोग परवार हैं, लड़का उन्हें बहुत जँच गया है और सम्बन्ध करने को तैयार हैं, लड़की १५ वर्ष की अब होगी। हिन्दी मध्यमा पास है, अंग्रेजी इस साल ९ वीं क्लास की परीक्षा दी है। अब आगे इस साल मेट्रिक में बैठाने का विचार है। लड़की का फोटो आया है, फोटो से तो लड़की सुशील मालूम होती है। उन लोगों का विचार तो अषाढ़ में ही विवाह करने का है। किन्तु अषाढ़ में तो अपन कर नहीं सकते, आगे ठंड में कर सकेंगे।

इस बारे में आपकी क्या राय है? सो खूब सोच समझकर लिखें। क्योंकि हमारे तो आप ही माता-पिता हो। आपको आगे रहकर सब काम करना होगा।

वे लोग लड़की देखकर सम्बन्ध पक्का करने को वहाँ जल्दी बुला रहे हैं; जैसी आपकी आज्ञा हो वैसा साफ लिखें। यदि आपकी आज्ञा अनुकूल हो तो लड़की देखने और पक्का करने का काम आपके जिम्मे रहेगा, मैं आपके साथ सेवक बनकर चलूँगा।

यद्यपि अभी विवाह की जल्दी मुझे नहीं करना चाहिए, किन्तु धर्म-पत्नी सदा बीमार रहती है, उसकी इच्छा है इस बच्चे का काम मैं अपने सामने निपटा दूँ, इसलिए उसकी भी आपसे प्रार्थना है कि आप बुजुर्ग हैं, और बुजुर्ग बनकर ही इस कार्य को निपटा दें, अगर आपकी राय मे पसन्द हो तो।

कृपाकर उत्तर वापिसी डाक से देंगे। आपका जैसा भी उत्तर आवेगा, उस माफिक मैं उनको उत्तर दूँगा।

विवाह में देन-लेन का कुछ सवाल मैंने अभी उठाया नहीं है।

लड़की छविलालजी मामाजात भाई गोकुलप्रसाद की है। ३ बहिन है; एक बड़ा भाई है। बड़ी लड़की यही है। लड़की के पिता वृद्ध ओर बीमार होने के कारण सम्बन्ध जल्दी निपटाना चाहते है।

आप उचित समझो तो परभारे उनसे पत्र व्यवहार कर सकते हैं।

—मूलचन्द्र जैन

पूज्यपाद भाई साहब, प्रणाम। इन्दौर सिटी : २७-५-४९

कल की डाक से एक लिफाफा भेजा है। मिला होगा। उत्तर शीघ्र देंगे। दुबारा लिखने का कारण यों हुआ कि—

मेरी जो बच्ची १२ वर्ष की है, उसकी सगाई हमने इधर कर दी है, किन्तु अभी बीच में सहसकरणजी सेठी अपने किसी सिफारिशी लडके को लेकर आये थे। उनकी इच्छा थी कि बाई की सगाई वहाँ से छोड़कर उस लडके से कर दी जावे और बदले में अपने लड़के को दूसरी लडकी दिला दे। यह बात हमको नापसन्द पड़ी। इससे मन में सभव है वे बुरा मान गये हों इसलिए यह जबलपुर का समाचार मैंने उनको नहीं लिखा है, न अभी लिखूँगा। दूसरे नसीराबाद मे एक लडकी से अपने बाबू की बात चल रही है, वह भी उनको आपसी मन मुटाव के कारण पसंद नहीं है और हम लोगों को पसंद है। उनके दिल में इस समय मेरी हितचिंतकता कम है।

बम्बई, कलकत्ता, नागपुर, पटना, आगरा, ग्वालियर इन सब जगह ट्यूशन फीस २२५) रु० सालाना से लेकर ४००) रु० तक है, किन्तु इन्दौर के मेडिकल कॉलेज की ट्यूशन फीस २०२०) रु० सालाना है, किताबें और जनरल खर्चा मिलकर तीन हजार रुपये सालाना याने २५०) रु० माहवार है। और जगह उसे प्रवेश मिलना कठिन था, यहाँ सर सेठ सा०, सेठ हीरालालजी व रा० ब० राजकुमार सिंह जी के प्रयत्न से मिल पाया है।

आप हमारे परम हितैषी व सदा से ही अकारणबन्धु बने आये हैं। आपकी मीठी वाणी व आश्वासन से हमेशा प्रसन्नता मिली है। किसी प्रकार की आवश्यकता महसूस हो तो मैं यही सोचकर चलता हूँ कि पू० काकाजी को एक पत्र डालकर परिस्थिति से अवगत करा दूँगा और मेरी फिकर हट जावेगी। जिस वर्ष (आज से २ साल पहले) मैंने बी० ए० पास किया था उस वक्त मुझे अकोला स्टेशन पर आपके अचानक दर्शन हो गये थे। साथ में पू० तात्याजी (माणकचन्द्रजी चवरे) व पिताजी भी थे। पू० पिताजी ने केवल जरा सा ही जिक्र छेड़ा था कि सुमति इस वर्ष बी० ए० हो गया है व किसी अच्छी सी सर्विस मिलने पर एल्-एल्० बी० के लिए नागपुर भेजना चाहता हूँ—आपने उसी वक्त पू० पिताजी से कहा कि आप तो उसे आधी रात को मेरे पास भेज दीजियेगा और आप बेफिकर रहियेगा।

उस चर्चा को आज २ वर्ष पूरे बीत चुके हैं जितने समय में मैंने एम्० ए० कर किया है व एल्०-एल्० बी० प्रीवियस भी। एल्-एल्० बी० फाइनल अब मैं बाद मे करूँगा—अभी तो कोई ऐसा उपाय सोचना चाहता हूँ जिससे चि० त्रिलोक की M. B. B. S. की पढ़ाई होती रहे व घर भी चलता रहे। पू० पिताजी का स्वास्थ्य इन दिनों बहुत नरम रहता है। दिल की कमजोरी, ब्लड प्रेशर की अधिकता व मधुमेह की बीमारी इनसे वे त्रस्त ग्रस्त हैं। डॉ० मुखर्जी

का इलाज चालू रहता है—कमजोरी बहुत आ गई है। ऐसी सारी परिस्थिति में आपसे एक अत्यन्त नम्र प्रार्थना करना चाहता हूँ और वह है किसी अच्छी से अच्छी सर्विस के लिए—फिर वह आपके किसी Concern में नागपुर, बम्बई, कलकत्ता, देहली, भोपाल या और कहीं भी हो। आपके सामर्थ्य व शक्ति का मैं आपको ज्ञान नहीं कराना चाहता हूँ, किन्तु इतनी बात जरूर है कि यह बात आपकी कलम की एक फटकार से सुगमता से होनेवाली है। आप बुजुर्ग हैं व पूज्य हैं, अतः मेरी इस प्रार्थना में कोई गलती या अनधिकार चेष्टा हो तो आप मेरा कान पकड़ें—मैं आप बतायेंगे वैसा करूँगा।

भाई अनूपलाल जी तो अभी शायद् कलकत्ते ही हैं—उनका कार्य सुचारु रूप से चल रहा होगा।

पू० काकीजी सा० को सादर चरणस्पर्श व सबको सादर प्रणाम।

आशा है आप लौटती डाक से जवाब भेजकर मुझे अनुगृहीत करेंगे।

सुमतिचन्द्र

(सुपुत्र श्री पं०देवकीनन्दनजी सि० शास्त्री),

माधव कालेज, उज्जैन : ६-२-५१

परम मान्यवर श्रद्धास्पद श्री चिरंजीलालजी सा०, सादर प्रणाम।

बहुत लम्बा समय बीता, आपके दर्शन नहीं हुए आप सारे देश में भ्रमण करते हैं। इन्दौर या मालवे से क्या नाराजी है जो आप यहाँ कभी नहीं आते।

मेरे मित्र श्री अनूपलालजी कहाँ हैं? मेरा उन्हें सस्नेह अभिवादन पहुँचा दें। श्रीमती राजमतीदेवी की तबीयत कैसी रहती है? मिरज में लाभ हुआ या नहीं?

गये अगस्त से मैं माधव कालेज उज्जैन में कानून विभाग का अध्यक्ष हूँ और प्राध्यापक हूँ। विदेश-भ्रमण और शिक्षा के लिए यूरोप

जाना चाहता हूँ। किन्तु मेरे मनसूबे अभी शेखचिल्ली के मनसूबों के से ही हैं। कब कार्यरूप में परिणत होंगे, पता नहीं। पर उत्कट अभिलाषा कर रहा हूँ कि कोई अवसर शीघ्र आवे।

—गुलाबचन्द कासलीवाल

भाई साहब श्री चिरंजीलालजी, यवतमाल : ५-१-५५

सप्रेम जयजिनेन्द्र।

कल ही यहाँ आनन्दपूर्वक लौटा हूँ। आबू स्टेशन से मोटर द्वारा माऊँट आबू पहुँचा, देलवाडा में मन्दिरों का दर्शन करके वापस लौटा और अहमदाबाद-सूरत-भुसावल-अमरावती होते हुए आ गया। आपके साथ रहने से आनन्द रहा। कृपादृष्टि तो आपकी है ही, प्रेम वृद्धिगत होता रहे। आप भी सकुशल देहली, आगरा, मुरादाबाद, कोटा होकर लौटे होंगे।

आज ही मैंने मलकापुर वाले को पत्र दिया है कि जल्दी से आने का करें और धरणगाँव श्री देवीदास लालासा को, जिसकी लड़की और लड़के को आपने स्वयं देखा था। श्री चेतनलालजी को भी मैंने पत्र दिया है, जिनके यहाँ हम लोग गये थे। जल्दी से निर्णय करने को लिखा है। मैंने लिखा है कि वे हमारी लड़की लें और हम उनकी। वे कहते है कि हमारी लड़की बड़ी होगी। फिर भी मैंने विचार करने पर जोर दिया है। आप भी दोनों को लिख दें कि एक दूसरे की लड़की का सम्बन्ध कर लो।

····आप जिस दिन अकोला पहुँचेंगे, उस दिन मैं भी पहुँचने का प्रयत्न करूंगा।

—डी० जी० महाजन
(जैन रिसर्चइस्टीट्यूट)

प्रिय भाई साहब, बम्बई : १८-१-५५

मेरे अविवेक के कारण इस वक्त आपको काफी तकलीफ उठानी पड़ी, इसका मुझे खेद रहा।

आपका हिस्ट्री-कॉन्फरेंस के समय पत्र आया, उस वक्त मैं माथेरान था। ता० ३ को यहाँ आया, तब जवाब देना बेकार था, क्योंकि अहमदाबाद का आपका काम वहाँ पूरा हो गया था। और मैंने कल्पना की थी कि आप वहाँ से यहाँ पधारोगे। आशा है, आप माफ करेंगे।

सेठ राजमलजी और भीकमचन्दजी दौरा निकाल रहे हैं, बुलडाणा धर्मशाला के लिए। भीकमचन्दजी को मीटिंग की खबर नहीं पहुँची, ऐसा कहते थे। वे ता० ९ को बम्बई पहुँच गये थे, मगर हम लोगों से मिल नहीं सके और मीटिंग की खबर न मिलने से वे हाजिर नहीं रह सके। ता० ९ की रात को जब हम मुलुन्द से आये, तब मिले।

श्री मित्तलजी का पत्र आया है। कुछ कार्य में व्यस्त रहने के कारण वे उस टाइम पर मीटिंग मे उपस्थित न हो सके।

—ताराचन्द कोठारी का प्रणाम

प्रिय भाई साहब श्री चिरंजीलालजी, धूलिया : १९-६-५५

सप्रेम वन्दे।

कुशल पत्र आपका नहीं सो दे। आपको एक तकलीफ देता हूँ व उमीद है आप जरूर मुझे मदद करेंगे। मेरी हंसा नाम की एक लडकी है जो फिलहाल महिलाश्रम मे पढ़ती है। उसके लिए कोई अच्छा लड़का आपके ध्यान मे रखे। उदयपुर वाले श्री अमृतलालजी के लडके की वधु भी आपने देखी, ऐसा सुना है व अभी वह लोग आनन्दमय जीवन व्यतीत करते हैं। शायद श्रावण, भादों में हैद्राबाद जाने का विचार है, तब वर्धा आकर आपसे जरूर मिलूँगा। बाकी सब खैरियत। —विजयसिंह मेहता

श्री चिरंजीलालजी, सादर सप्रेम नमस्कार। नागपुर : २२-९-५५

आये हुए पत्र का उत्तर देना ही चाहिए, यह मेरा नियम रहा है। आपका एक पत्र (अनुत्तरित) मेरे सामने है—द्रुग से लिखा

हुआ दिनांक ९-७-५५ का। इसके पहिले उत्तर लिख नहीं सका, इसलिए क्षमा चाहता हूँ।

मेरी जगह जो वर्धा मे थी, बराबर वही यहाँ भी है। मुझको कोई तरक्की नहीं मिली। नागपुर आने में मुझको कोई खास खुशी हुई, ऐसा नहीं कहा जा सकता। वर्धा छोड़ने मे मुझको भी दुःख हुआ। लेकिन नौकरी जिनका पेशा है, उनको जगह के बारे में खुशी नाखुशी रखना मुमकिन नहीं है। जैन लोगों में कहावत है—उत्तम खेती मध्यम व्यापार और नीच नौकरी। क्या यह सच है? आपको तो तीनों का भी अनुभव है। इतने मे मेरा वर्धा आना सम्भव नहीं मालूम पड़ता।

आप यहाँ आयेंगे तो दर्शन देने की कृपा जरूर कीजियेगा। घर का पूरा पता तो मैंने लिख ही दिया है। आपके आने की खबर अगर पहिले मिलेगी, तो कहीं बाहर नहीं जाऊँगा, घर ही पर रहूँगा।

वहाँ के सब बडों को मेरे सादर प्रणाम और छोटों को अनेक उत्तम आशीर्वाद। आपके सुपुत्र विजयकुमारजी, किशोरकुमारजी को सप्रेम नमस्ते। श्री बाबूरावजी बर्वे तथा श्री शम्भूजी पड़ोळे इनको मैंने याद किया, यह अर्ज करना। उनको भी सप्रेम नमस्ते। आपकी वृद्धावस्था सुखी, स्वस्थ और निरामय हो, ऐसी परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ।

—विनायक गोविंद देशपाडे
(इन्कमटेक्स आफीसर)

श्रीमान चिरंजीलालजी सा० — आयुर्वेद सेवाश्रम
सेवा में वन्दे। — उदयपुर: २१-१-५६

इस समय मैं एक खास काम के लिए यह पत्र आपको लिख रहा हूँ। उदयपुर में मेरे मित्र भँवरलालजी तायलिया सा० मूलचन्द सुगनचन्द फर्म स्थित बंगला कारूलालजी कोठारी के बगले के पास फतह मेमोरियल के सामने रहते हैं।....ये मेरे परम मित्र हैं और सेठ

साहब के परिवार से भी संबंधित हैं। इनके एक बाई १६-१७ वर्ष की है जो इस समय हिन्दी के साथ अगले वर्ष मैट्रिक की परीक्षा देवेगी। उसके लिए अच्छा, योग्य, कुशल व्यापारी, चाहे धनी न हो, पर गरीब भी न हो, सुन्दर लड़का कम-से-कम २०—२२ वर्ष की आयुवाला मैट्रिक से ऊपर शिक्षित, कैरेक्टर वाला, होनहार पुराने खयालों से वंचित, उद्योगी, विकसित विचार रखता हो—ऐसे लड़के की तलाश है। क्या आप इस दिशा मे मेरी बहन की कुछ सहायता कर सकेंगे? कारण बरार—सी-पी० में अग्रवाल जातिवाले व्यवसायी एवं सम्पत्तिशील एवं अच्छे विचारवान् व्यक्ति हैं और सेठ साहब जैसे व्यक्तियों का उस प्रात में, उस समाज में पूर्ण संपर्क रहा है और उपरोक्त मित्र भी उसी प्रकार के विचार के हैं। इसलिए इस संयोग का मिल जाना स्वाभाविक बात है।

इसलिए आपको कोई अड्चन नहीं लग पाये तो इसको मेरा ही कार्य समझकर दिल्चस्पी से खोज निकालने का प्रयत्न कर मुझे उत्तर दिलाने की कृपा करेंगे।....यदि इस कार्य में आप सफल होते भी हैं तो उस परिवार के व्यक्ति जन्म-कुण्डली मे विश्वास रखते हैं या नहीं, यह भी आप व्यक्त करने की कृपा करे।

प्रतापजी आज सायं बम्बई गये हैं। ५—७ दिनों में आवेंगे।

—अमृतलाल

कारंजा : २१-१-५६

पूज्य काकाजी और काकीजी से मोतीलाल का पावाढोक।

कागद लिखने का मतलब यह है कि आपका बहुत दिनों से खत नहीं सो क्या बात है! आपने श्री माणिकचदजी को खत लिखा था कि हमारा लडका धर्म और गणित विषय में अच्छा तरवेज होना चाहिए। आज उन्होंने कहा कि काकाजी का हमको एक खत आया। उसमे ऊपर का मजकूर आपने लिखा था। सो मैं इन दोनों

विषयों में अच्छा तरबेज होकर अबके धूप काले की छुट्टी में घर जाऊँगा। मैं अभी अभिषेक करना सीख रहा हूँ और आगे तत्त्वार्थ सूत्र और भक्तामर सीखूँगा। मैं इसी साल चौथी कक्षा की परीक्षा देनेवाला हूँ और बाद में छठी की परीक्षा देनेवाला हूँ। दो परीक्षा होने के बाद मैं आपको मिलने के लिए वर्धा आऊँगा, सो जानें।

माताजी, भाभीजी, शाता बाई को मेरा पावाढोक।

विष्णुसावजी और घर के सब शिखरजी गये हैं। मैंने विष्णु सावजी से दो पैंट और दो शर्ट सिलाये हैं।

३६४, सिद्धारूढ़ प्रासाद

श्रीमान् सेठजी, बम्बई : १७-२-५६

ता० १४ का कृपा पत्र मिला। प्राकृतिक चिकित्सा कर रहे हैं, यह जानकर प्रसन्नता हुई। वजन ३६ पौंड कम हो गया है, यह तो ठीक है, पर आपने यह नहीं लिखा कि शरीर मे स्फूर्ति कैसी है और कमजोरी तो नहीं मालूम होती है। शक्ति बनाये रखने की आवश्यकता है। इस पर ध्यान दें।

स्वामि कार्तिकेयानुप्रेक्षा निर्णय सागर में छप रही है। अभी तैयार होने में कई महीने लगेंगे। कई वर्ष से यह अप्राप्य है। मेरे पास तो है नहीं। जैन सिद्धान्त प्रकाशिनी सस्था ने पिछली बार छपाई थी। तलाश कर रहा हूँ। यदि कहीं मिल सको तो भिजवा दूँगा।

आशा है आप सपरिवार प्रसन्न हैं। बंबई कब आइयेगा। आपको घटे हुए वजन में देखना चाहता हूँ। —नाथूराम प्रेमी

पूज्य काकाजी बड़जातेजी, धामनगाँव : २६-३-५६

सविनय जयजिनेन्द्र। आपका कृपा पत्र मिला। बोथराजी के समाचार हैं कि श्रीमान् दूगड़जी साहब का पत्र अमरावती इस प्रकार

आया कि ता० ११ शाम को वे नागपुर पधारकर श्री गोलवलकरजी गुरुजी के यहाँ ठहरेंगे। १२ को R. S. S. के कार्यक्रम। ता० १३ सुबह रवाना होकर (मोटर से अमरावती रोड) मोझरी। रात को वहाँ मुकाम। १४ सुबह अमरावती। वर्धा से पास होंगे यह समाचार आये तो मैं आपको पत्र दूँगा। पता निम्न प्रकार है : श्रीमान् सोहनलालजी साहब दूगड़, ५ ए लार्ड सिन्हा रोड, कलकत्ता।

अमरावती में ठहरने का इंतजाम जैन बोर्डिंग के पास ही एक मकान मे किया जा रहा है। सभा बोर्डिंग के बाजू श्री गुगलियाजी के पलाट्स में एवं जैन बोर्डिंग में (माल टेकड़ी रोड पर) होगी। अभी यही ठहरा है।

—सुगनचंद्र लूनावत

पो० कुनाड़ी : कोटा

प्यारे और आदरणीय बडजात्याजी साहब, ६-४-५६

सादर जयजिनेंद्र। हम लोग सब आपकी कृपा से प्रसन्न है। आशा है आप भी प्रसन्न होंगे। मुझे अफसोस है कि अब तो आपके कृपा पत्र बहुत ही कम आते हैं। मैं आपके पत्र पाकर गौरव का अनुभव करता हूँ। मुझको आप जैसे महानुभाव का सेवक बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, यह मेरी पुण्यवानी का ही फल है। आपके नेत्रों की आजकल कैसी स्थिति है? आपरेशन का क्या विचार है? सौ० शाता बाई की तबीयत कैसी है? आशा है अब वह अस्पताल से आ गयी होंगी! आजकल चि० सत्येन्द्र की परीक्षा चालू है, ता० २० अप्रैल तक रहेगी। मनोहरथाना में श्री गुलाबचंदजी की पोती का विवाह ता० ६ मई का है। हम सब लोगों को वहाँ जाना है। अब आप खुद पत्र नहीं लिखा करें। किसीसे लिखा लिया करे। कृपा पत्र दिया करें। श्री ब्यानजी साहब के चरणों में हम दोनों का नमस्कार।

—मोतीलाल पहाड्या

भाई चिरंजीलालजी, वर्धा : २३-६

मैं खुद २ रोज से आना चाहता था, पर कुछ स्वस्थ कम था। अब जरूर मिलूँगा।

वह भाषण मुझे भी अच्छा ही लगा था। प्रयत्न करता तो शायद और अच्छा बनता। जैसे महावीर को जैनियों ने केवल अपनी सम्पत्ति बनाकर उनका जागतिक महात्म्य कम करने में मदद पहुँचायी है, उसी तरह कहीं मारवाड़ी लोग भी स्व० जमनालालजी को केवल अपना ही समझकर उनका अ० भा० स्वरूप कम करने की भूल न करें। जमनालालजी न केवल देश के लोगों के थे, देश के पशु-पछियों के भी थे। इसीलिए उनके जाने के बाद से गोमाता की आँख के आँसू अब तक बंद नहीं हुए हैं। देखनेवालों को ही वे दीख सकते हैं।

—दामोदरदास मूँदड़ा

प्रिय चिरजीलालजी, राका कोलोनी, नागपुर : १९-९-५६

जयहिन्द। बादाम मिल गये। बहुत अच्छे हैं। जैसे चाहियें, वैसे ही है। यह तो कहो ये कहाँ से खरीदे और किस भाव? एक बार दिल्ली से आये थे, वे इतने अच्छे नहीं थे।

तुम कितने ही कमजोर क्यों न हो जाओ, पर लोग तुमसे काम लेना नहीं छोड़ेंगे और तुम हो कि काम करने से इन्कार नहीं करोगे। फिर मैं भी क्यों चूकूँ। लो, एक छोटा-सा काम बताता हूँ। वह काम जरूरी भी है और गैर-जरूरी भी है। जरूरी समझ लो तो जरूरी, नहीं तो गैर-जरूरी।

तुम मेरी बहिन को तो जानते ही हो। उसकी लड़की सुभद्रा, सुभद्रा की लड़की ज्ञान और ज्ञान की लड़की स्नेहलता और यह स्नेहलता है आजकल २२ वर्ष की। एम० ए० के आखिरी साल का इम्तहान दे रही है। लडकी देखने मे अच्छी, काम करने में होशियार,

छरहरे बदन की। उसके लिए लड़के की तलाश है। कोई नजर में हो तो बताओ। लड़की का बाप सरकारी नौकर है। अच्छे ओहदे पर है। जैन है यह लिखने की जरूरत नहीं।. रिश्ते में लडकी मेरी धेवती की लड़की होती है। (महात्मा) भगवानदीन

प्रिय श्री चिरंजीलालजी, बम्बई : ३०-९-५६

आपका कृपा पत्र मिला। पढ़कर समाचार मालूम किये। आपने जो चिन्ता व्यक्त की वह शायद ठीक भी हो सकती है। पर आज तो उसका पता नहीं लग सकता है न ? जब नई दिल्ली से समाचार आवे तब ही कुछ पता लग सकेगा। इतने आप दोनों को चिन्ता तो रहने वाली ही है। पर अब पीछे हटना तो और भी कमजोरी की निसानी है।

पगार के बारे मे लिखा सो जाना, इसका भी पता अभी नहीं लगा है। जो नियम होगा, वह मिल जायगा, ऐसा बतलाया है। आपनें ४००) से नीचे पगार हो तो स्वीकार नहीं करने की राय दी, सो जाना। पर मैं इधर काफी खर्च से तंग हो गया था और आप लोगों का कर्जदार भी हो गया था। ऐसी हालत मे जो भी पगार मिले वह १०००) के बराबर है। मेरी बेकारी के समय मे आपने ही २५०) की नौकरी बंबई में करने की राय दी थी और जब मैंने इन्कार किया था तब आप ही नाराज हुए थे। अतः अब पगार के लिए अडकर बैठना मैंने उचित नहीं समझा और बोर्ड में काम करना स्वीकार किया है। आप लोगों के आशीर्वाद से मुझे इसमें अवश्य सफलता मिलेगी। यह नौकरी नहीं है, मेरी कसौटी हो रही है। मैं भी दूसरी जगह काम कर सकता हूँ, इसका भी मुझे विश्वास हो जायगा। मेरे में जो दुर्गुण है वह भी शायद आहिस्ते-आहिस्ते कम हो जायँगे।

एक प्रकार से नई जिंदगी शुरू की है। जगह-जगह अफसरों को सलाम भी करता हूँ। हर बात पूछकर करने की आदत डाल रहा हूँ।

आप किसी बात की चिन्ता न करे, जो भाग्य मे लिखा है वही होगा। मनुष्य तो निमित्त मात्र है।

मैं श्री० कमलनयनजी से मिल लिया था और यहाँ नौकरी पर आया हूँ, यह भी बता दिया था। इसके बाद वह वर्धा गये थे और उसके बाद उनसे मिलना नहीं हुआ है। प्रति रविवार या छुट्टी में उनसे तथा रामकृष्णजी से मिलता रहूँगा। वह मेरी इस इस नौकरी से नाराज थोड़े ही हैं। यहाँ पर भी मैं आपकी कपनी का आदमी बन कर आया हूँ। बच्छराज कंपनी का लेबल लगा रखा है। उस कपनी के नाम पर ही यहाँ पहिचाना जाता हू। विजय मिला था। केस के लिए यहाँ आया है। आपका स्वास्थ्य किस तरह है? यहाँ पर कब तक आने का प्रोग्राम है? यहाँ पर वर्षा रविवार से हो रही है। वहाँ का क्या हाल है?

—पूनमचन्द बाठिया

श्रीमान् पू० बाबू चिरंजीलालजी बड़जाते, बुलडाना : ३-११-५६

सप्रेम प्रणाम। मैं प्रथम दीपावली के नव वर्ष का आपके लिए अभीष्ट चिंतन करता हूँ, और आपके लिए दीर्घायु चिंतन करता हूँ।

दूसरी बात मैंने आपसे पीछे कहा था कि मेरी इच्छा अब वकालत करने की नहीं है, कारण यह धन्धा बहुत गिर गया है। और बहुत ज्यादा ओव्हर क्राऊड भी हो गया है। और मुख्य बात बुलडाना जैसी छोटी-सी जगह मे मेरा चित्त नहीं लगता, और जब से मैंने मेरी पुत्री का विवाह लखनऊ कर दिया है तब से अब बुलडाना रहने की इच्छा भी नहीं रही।

मेरी इच्छा कानपुर या लखनऊ जैसी जगह, यदि आपका कोई बिजनेस हो, तो वहाँ काम करने की है। आपका माने श्रीमान् जमनालालजी तथा श्रीमान् कमलनयनजी का। आपको मालूम ही होगा कि मैं लखनऊ युनिवरसिटी का बी० काम्० याने कामर्स ग्रेज्युएट हूँ और आग्रा युनिवरसिटी का लॉ-ग्रेज्युएट हूँ। और २१ या २२ वर्ष से बुलडाना में वकालत करता हूँ। मेरी इच्छा तो सिलोन या बर्मा या चीन या जपान जाने की है। लेकिन वह कहाँ तक फलीभूत होगी,

यह मैं नहीं कह सकता। आपने पिछले वक्त मुझसे कहा था कि आप इस विषय में बाबू कमलनयनजी से बात करेंगे। क्या इस मामले में आप मेरी किसी प्रकार सहायता कर सकते हैं? बजाजजी का विजनेस बहुत बड़ा है। और आपकी तथा कमलनयनजी की बात भारत मे बड़ी-बड़ी जगह मानी जाती है। मैं कुछ विजनेस में रुपया कमाने की दृष्टि से नहीं जाना चाहता, लेकिन कुछ जीवन में बदल चाहता हूँ। मेरा कुटुम्ब सीमित है और खर्चा भी सीमित है। यदि इस मामले में मुझे आप कुछ मदद या मार्ग दर्शन करेंगे, तो आपका बड़ा ऋणी रहूँगा। आप यदि लिखे, तो मैं वर्धा आकर आपसे तथा बाबू कमलनयनजी से मुलाकात कर सकता हूँ। उम्मीद है कि आप मुझे बजाजजी के किसी बड़े कन्सर्न मे सेवा करने का सुअवसर देंगे। और आपकी उचित राय अवश्य और शीघ्रमेव लिखेंगे।

—बालकृष्ण गुप्ता वकील

स्नेही श्री चिरंजीलालजी भाई, अहमदाबाद : २०-८-५७

सादर प्रणाम। आपके दो पत्र साथ में मिले। आप सपरिवार कुशल होंगे। मैंने आपको लिखा ही है कि 'महावीरवाणी' (केवल हिन्दी अनुवाद) के तीन फार्म छप गये हैं। एक फार्म अब छपेगा। चार फार्म मे महावीर-वाणी पूरी हो जायगी। थोडा-सा सम्पादकीय हमारी तरफ से तथा श्री विनोबाजी का पुरोवचन यह सब मिलकर करीब आठ पन्ने होंगे।

१. आज या कल आपको देखने के लिए तीन फार्म भेजवा दूँगा।

२ महावीर भगवान् का चरित्र देने का आपका विचार है, तो उसको भी तैयार कर दूँगा। संक्षेप मे लिखूँगा। करीब ८-१२ पन्ने होंगे। जो आपने पुस्तकों की सूची भेजी है, यह भी पीछे छप जायगी। पुट्ठे पर अच्छी नहीं लगेगी, अतः इसको अन्दर परंतु अंत मे रखेंगे। २००० नकल (प्रतियाँ) छपवाई है महावीरवाणी की।

३. अब एक फार्म और बढ़ेगा। जब मैंने 'महावीरवाणी छापने का प्रेस मे तय किया, तब महावीर-चरित्र की बात न थी, अतः एक फार्म और बढ़ने से उसके ९० रुपये खर्च के बढ़ेंगे।

आपका पत्र आते ही मैं प्रेस के मैनेजर से मिल आया। उन्होंने बताया कि एक फार्म बढ़ने से ९० रुपया और अधिक लगेगा।

४. और यदि आप हमको पचास रुपया देना चाहे तो उसे भी गिनना अर्थात् इस प्रकार ९० + ५० = १४० रुपया और खर्च का रहा। यदि हमको आप ५०) न देना चाहें अथवा आपको उसका अधिक बोझ मालूम हो अथवा इससे किसी प्रकार की आपको तकलीफ थोडी-सी भी हो तो ५०) के लिए थोड़ा-सा भी आग्रह नहीं। हमारे लिए तो आपका स्नेह ही सबसे बड़ा रुपया है। अतः इसकी चिंता न करना।

५. आपने भाई यशपालजी को सस्ता साहित्य मंडल द्वारा हमारी गुजराती सटिप्पण महावीरवाणी छापने के लिए लिखा ही होगा तथा उसके योग्य पुरस्कार के लिए भी आप उनको सूचना कर देना। जो आप स्वयं ठीक समझे तथा भाई यशपालजी ठीक समझे, वह पुरस्कार हमको स्वीकार्य है। पत्र का उत्तर बंबई देना। —बेचरदास दोशी

पूज्य चाचाजी, इन्दौर : १३-१-५८

सादर प्रणाम। आपका ममतामय पत्र मिला। समझ मे नहीं आता कि मैं आपको क्या लिखूँ। आपको शायद मालूम नहीं कि मेरी बहन डा० सुमति, जिसका इसी गर्मी में विवाह हुआ था, कानपुर में ३ दिन की बीमारी के उपरान्त ही चल बसी। बहुत ही असहनीय घटना है। पता नहीं, ईश्वर ने किन पापों का हमें यह दण्ड दिया। इधर तो यह दुख है, उधर आपको यहाँ के आफिस का हाल मैंने थोड़ा-बहुत बताया ही था।

रहने पर मेरा क्या होगा, कौन मुझे सान्त्वना देगा, हिम्मत देगा? यह सोच कर रात को नींद खुल जाती है और भय लगने लगता है। आपको कुछ न कुछ इसकी व्यवस्था करनी ही होगी। आपके सिवा ये सारी बातें मैं और किसीसे नहीं कह सकती। सौ०...... .....अग्रवाल

श्री० पूज्य भाईजी चिरंजीलालजी, बुलडाणा : ४-१-५७

सेवा में सविनय प्रणाम। नूतन वर्षारंभ में आपने पत्र भेजा सो प्राप्त हुआ। आपका लिखना भी उचित है।

मैं विवाह-कार्य से निवृत्त होने के बाद से धर्मशाला-निर्माण सम्बन्धी विचार कर ही रहा हूँ। कुछ छोटी योजना, जो अपन पूर्ण कर सकेंगे, ऐसी बनाई है। अपनी धर्मशाला के सम्बन्ध मे दो हजार रु० फाड़ी, पाइप, पाट्या तैयार करने आदि में लग चुके है। अब अपने पास करीब ४५००) रुपये बचे हैं। टी० बी० सेनेटोरियम कमेटी के पास जो रकम २६००) करीब शिलक बची हुई है, जो अकाउण्ट पूज्य शास्त्रीजी के नाम पर बैंक में है, सो मीटिंग जनवरी २० के बाद श्री डी० सी० साहेब श्री देसाई, जो कमेटी के सभासद हैं, लेकर एक प्रस्ताव करके धर्मशाला के काम में दे दी जाय ऐसा प्रयत्न किया है। करीब दस हजार की रकम कम्पलीट अपन कर सकेंगे तो छोटी-सी धर्मशाला के चार कमरे जहाँ चार परिवार ठहर सकेंगे, ऐसे बनावेंगे। एक क्वार्टर में ३२००) रु० इस प्रकार चार क्वार्टर से १२८००) रु० जिसमे दो हजार अपने लग चुके हैं बाकी १०८०० की पूर्ति करनी है।

४५००) अपने पास शिलक
१६००) टी० बी० सेनेटोरियम कमेटी
———
६१००)

अब रही बात ४७००) इकट्ठे करने की, सो मैं यह रकम फरवरी के आखिरी तक पूरी कर सकूँगा। दो-तीन जगह जाकर ऐसी उम्मीद करता हूँ। आप भी और किसीको कह सके तो देखिये। और यदाकदा यह रकम नहीं भी वसूल हुई तो भी धर्मशाला का काम शुरू १ मार्च से हो जानेवाला है और मई के आखिर तक यह योजना पूर्ण करने का मैंने निश्चय किया है। इस योजना से आप सहमत नहीं हो सक, तो मुझे लिख देवें। तो फिर सबकी कितनी-कितनी रकम किस प्रकार लौटाई जावे, उस बाबत अपन विचार कर लेवेंगे।

रकम साल भर तो बैंक में ही पड़ी रखी थी। उसके बाद रकम आठ आना ब्याज से मैंने जमा करा दी है सो अपने को चाहे जब मिल सकती है। हाँ पाँच सौ रुपया श्री० चम्पालालजी खूबचन्दजी कोठारी के वहाँ जमा कराया था सो अपना काम शुरू होने पर उनसे माँग लेवेंगे। इति शुभम्। ता० ८ से १२ तक नागपुर पेशी होने के कारण रहूँगा।

—भीकमचन्द देशलहरा

आदरणीय श्री० काका सा०, प्रणाम।

सेधवा : १९-६-५८

आपको श्री० दामोदरदासजी मूँदड़ा का पत्र मिल गया होगा। अभी ता० १ जुलाई तक मैं यहाँ हूँ। ता० २ जुलाइ से आगे अगस्त माह तक मैं और मेरी पत्नी फातिमा धूलिया रहेंगे।

पूज्य विनोबाजी महाराष्ट्र-यात्रा के अन्तिम चरण के रूप में ५० दिन प० खानदेश में यात्रा करेंगे। धूलिया में उनका ४ दिन मुकाम रहेगा। उस समय एक शिविर होगा, जो तीन दिन चलेगा। देश के विभिन्न भागों से कोई ४०० कार्यकर्त्ता भाग लेंगे।

खानदेश और निमाड़ क्षेत्र घर और आँगन के जैसा है। इस लिए यह सोचा गया है कि हम लोग भी इस अवसर पर वहाँ काम करें। विनोबाजी की यात्रा का प्रबन्ध कैसा हो ? क्योंकि बारिश का समय रहेगा, तथा ग्रामदान की अपेक्षा कैसे पूरी हो, इन विषयों पर

विचार-विमर्श के लिए ता० १५-६ को धूलिया में एक बैठक हुई थी। धूलिया में इस आयोजन के हेतु हम समय दें, ऐसा तय हुआ है। यह आपकी जानकारी के लिए लिखा है।

उस जमीन का खसरा नं० और सर्वे नम्बर आदि की पूरी जानकारी आप भिजवा दें तो एक तारीख तय करके वितरण के नियमों के अनुसार उसका बँटवारा करा दिया जाय।

विशेष कुशल है। फातिमा आपको आदरपूर्वक प्रणाम कहती है। धूलिया के बाद गुजरात में वह बाबा के साथ ही रहेगी, ऐसा पूज्य विनोबाजी ने तय किया है। मेरे योग्य सेवा-कार्य लिखें। कृपा बनी रहे। —लक्ष्मीचन्द जैन

आदरणीय बडजात्याजी, कलकत्ता : २१-७-५८

सविनय प्रणाम। बाबूजी छोटेलालजी से मालूम हुआ था कि आप कलकत्ता पधारे, मगर मेरा दुर्भाग्य था कि आपके दर्शन न हो सके। मुझे अपने बारे में कहने लिखने में बड़ा संकोच होता है—मगर बाबूजी का ऐसा स्नेह मेरे पर है कि एक दिन उनसे मैं मन की बात कह बैठा। और उन्होंने उस वात्सल्य भाव से जो मेरे प्रति है, तुरन्त कहा कि वे आपको पत्र लिखेंगे और विश्वास है कि श्रीमान् तख्तमल जी सा० से जो पत्र श्री एम० पी० बिरलाजी के नाम चाहेंगे, प्राप्त कर लेंगे। पिताजी का भी पत्र आज मिला। उससे मालूम हुआ कि आप भोपाल जा रहे हैं। बाबूजी के पास यहाँ भी आपका पत्र आया।

बात यह है कि सतना में बिरलाजी की सीमेण्ट फैक्ट्री बन रही है जो दिसम्बर मास तक उत्पादन शुरू कर देगी। T. C. Sabu (श्री ताराचन्द साबू) एवं उनके ऊपर श्री M. P. Birla (श्री महावीर प्रसाद जी बिरला) उक्त फैक्ट्री का काम देखते हैं। मेरे एक सहयोगी जो मेरे साथ यहाँ कलकत्ता मे ही काम करते थे, वहाँ

पर नियुक्त हुए हैं। उनसे मैंने मुलाकात सतना में की थी, जब अभी मैं पिता जी को देखने कटनी गया था। उन्होंने कहा था श्री तख्तमलजी सा० का श्री बिरलां (Shri M P. Birla) पर बहुत अच्छा प्रभाव है। यदि वे तुम्हारे बारे में एक परिचयात्मक सिफारिशी चिट्ठी उनके नाम लिख देवेंगे तो काम बहुत अच्छी तरह जम जायेगा। तथा फैक्ट्री में प्रवेश सहूलियत से अच्छे पद पर मिल जायगा। अतएव बाबूजी ने आपके पास एक टाइप किया हुआ कागज भेजा होगा जिसमें सब डिटेल हैं। बात यह है कि विगत १ वर्ष से पिताजी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता—कलकत्ता और कटनी की दूरी बहुत है—इस समय मैं उनके निकट रहकर उनकी सेवा आदि विश्राम देना चाहता हूँ—इतनी दूर रह कर कोई भी बात सम्भव नहीं हो पाती। इससे मानसिक वेदना का अनुभव करता हूँ। अतएव एक मौका स्वदेश लौटने का है, जो भाग्य में हो तो। आपका आशीर्वाद, मेरे प्रति स्नेह और प्रयत्न से मैं कृतार्थ हूँ। यदि आप आवश्यकता समझें तो मिनिस्टर सा० से मैं आपके साथ या, आपके पत्र के साथ व्यक्तिगत मुलाकात करने को भी उत्सुक हूँ। जैसा आप उचित समझें, मुझे आदेश देवें।

और क्या लिखूँ? मेरे दिल में सतना जाने का जो आकर्षण है, वह आपके सामने है और जिस वेदना का मैं अनुभव करता हूँ, वह भी स्पष्ट है—सामाजिक क्षेत्र में कार्य करते उनका जीवन व्यतीत हुआ—स्वास्थ्य अच्छा नहीं वृद्धावस्था है—उस पर मेरी दूरी—मुझे और उन्हें मानसिक क्लेश देती है—उन्होंने कभी ऐसा व्यक्त नहीं किया। मैं उस वेदना का अनुभव करता हूँ।

आगे मेरा भाग्य!

'यही सोचता हूँ यदि उन्हे चिन्ता मुक्त करके इस अवस्था में विश्राम दे सका। तो जीवन सार्थक है, नहीं तो निरर्थक। आपके आदेश की प्रतीक्षा में।

—अमरचन्द्र

श्रीमान् व्याहीजी सा० चिरोंजीलालजी, कोटा : २०-८-५८

सप्रेम मिलन। आपका पत्र ता० १६ को मिला। पढ़कर बहुत हर्ष हुआ। महेन्द्र कुमार मेरा ही लड़का है। आपकी हमदर्दी से मैं बहुत २ आभारी हूँ। मनिआर्डर आप किसी भी पते पर भिजवा दें—
१. बालचन्द जैन टे. मा. दूकान कल्याणमल केवलचन्द क्लॉथ मर्चेन्ट भीममंडी कोटा ज.।

२. महेन्द्र कुमार जैन फर्स्टियर कोमर्स सेक्शन बी, गवर्नमेन्ट कॉलेज कोटा। शेष कुशल है। —बालचन्द जैन

श्रीमान् पूज्यवर काकाजी की सेवा में इन्दौर : १६-१२-५८

सादर प्रणाम।

आपका कृपा पत्र मिला और जाना कि आप मेरा भला सदा चाहते रहेंगे। इसके लिए मेरे शत-शत धन्यवाद समर्पित। आपने मेरे पत्र के अन्तिम परिच्छेद का उत्तर सीधा नहीं दिया। अगर वह मिल जाता तो सदेह की राह सुगम हो जाती। खैर—तो उस पत्र के उत्तर में पंक्तियाँ ही उचित हैं।

मुझसे छूटे हुए साहिल की खुशामद न हुई।
मुझसे रूठी हुई मंजिल की खुशामद न हुई॥
पीर के अंक मे कुछ और भी जी लेता मैं।
पर मेरे दिल से ही कातिल की खुशामद न हुई॥

पीर के देश मे इक सत्य सपन देख लिया।
फूल के वेश मे शूलों का सदन देख लिया॥
दिल को लगती है तब से होंठ की हँसी हलकी।
जब से विश्वास ने पीड़ा का वजन देख लिया॥

दर्द की सौगात सीने से लगाना भी कला है।
अश्रु की बरसात में हँस-हँस नहाना भी कला है॥
क्या हुआ जो छंद मेरे पीर मे भीगे हुए हैं।
यों व्यथा को गीत गा-गाकर सजाना भी कला है॥

दर्द ने जब से विहँसने की कला पाई है।
जिन्दगी मौत के पर्वत से उतर आई है॥
मेरी आहों और कराहों पै तरस मत खाना।
हर तड़प इक नये विश्वास की अंगड़ाई है॥

आशा है आप स्वस्थ और प्रसन्न होंगे। मैं कल परसों तक बुलडाना जाने का विचार रखता हूँ। सबको यथा योग्य प्रणाम और प्यार—शेष शुभ। योग्य सेवा से सूचित करें। आपका अपना—श्याम

पूज्य सेठजी, सादर वन्दे। श्रीनारायणपुरी (प्रयाग) : २८-६-६१

आप द्वारा विद्यामंदिर को भेजी हुई ५० रु० की सहायता मनीआर्डर से उचित समय पर प्राप्त हो गयी थी। इसके हेतु कोटिशः धन्यवाद। आप ही जैसे महान् आत्माओं के कारण संसार में सात्विकता टिकी हुई है। ऐसे तो एक-से-एक रुपये वाले हैं और उनमें भी अपनी कीर्ति के लिए लाखों-करोड़ों खर्च-करनेवाले भी बहुत है। परतु सात्विक कार्यों में व्यय करनेवाले—विद्यालय, अनाथालय आदि कार्यों में रुपये लगानेवाले आप जैसे महापुरुष बहुत कम हैं। माँगे विना ही आपने सहायता देने का वचन दिया और बिना माँगे भेजा, यह आपकी महानता ही है।

आप स्वस्थ हों तो सूचित करें, मैं कुछ समय के लिए आपके पास आ जाऊँ। रात दिन स्कूल के अतिरिक्त और कोई बात नहीं सूझती। हित का काम है, इससे दूसरे को लिखने अथवा कहने में संकोच नहीं होता। —देवीशकर तिवारी

श्रीमान भाई साहब श्री चिरंजीलालजी, सुजानगढ़ : २६-७-६१

सादर वन्दे। मेरा विचार स्वामीजी श्री सत्यभक्तजी से मिलने का हो रहा है। जयन्ती पर तो मैं जा न सका, स्वास्थ्य ठीक नहीं था। अब विचार कर रहा हूँ कि आप और स्वामीजी के दर्शन करूँ सो आप दोनों का जहाँ संयोग हो, लिखें। मौसम ठीक हो तो वर्धा आऊँ सो आप आप लोगों की सुविधानुसार प्रोग्राम लिखें, तब मैं आपके समक्ष उपस्थित होऊँ। स्वामीजी से मेरा जयसत्य अर्ज करें। यहाँ सब प्रसन्नता है। आपकी प्रसन्नता का पत्र दें। —बच्छराज सिंघी

श्रीमान् चिरंजीलालजी, दुर्ग : ९-८-६१

सादर जयजिनेश। पहले आपका कार्ड आया था, जिसमें तबियत खराब होकर ठीक होने के समाचार थे। चिंता जैसी बात नहीं लिखा था। परंतु अभी सुना कि तबियत फिर से खराब हो गई। इन समाचारों से बड़ी चिंता है।

प्रिय प्रताप, सुना है तुम आ गये हो। सावधानी रखना। चिकित्सा अच्छे अनुभवी वैद्य डॉक्टरों की हो। चिंता हो रही है। अच्छे होने के समाचार यथा समय बराबर देते रहो तो चिंता मिटे। एक कार्ड प्रतिदिन दे दिया करो। —मोहनलाल सेठी

आदरणीय बंधुवर, सिवनी : १०-८-६१

जयजिनेन्द्र। आपके सहसा रोगाक्रान्त होने का समाचार ज्ञात हुआ।* जिनेन्द्रदेव से प्रार्थना है कि शीघ्र ही आप स्वस्थता प्राप्त करें। अब आपको लौकिक चिन्ताओं से स्तीफा देकर आत्मा की संभाल में लगना चाहिए। स्व० हमारे बाबा रतनचंदजी का यह दोहा आपको शांतिप्रद लगेगा।

---

* श्री चिरंजीलाल जो जुलाई-अगस्त '६१ में अचानक पक्षाघात (लकवा) से पीड़ित हो गये थे।

तीन काल के जिनवरा, तीन काल के सिद्ध।
तीन काल के मुनिवरा, वंदों लोक प्रसिद्ध॥

मन तू सड़े शरीर में, क्या माने सुख चैन।
जहाँ नगारे कूच के बजत रहत दिन रैन॥

मेरी भूलों को क्षमा करें। —सुमेरुचंद्र दिवाकर

प्रिय महाशय, करनुल : १४-८-६१

मुझे यह सूचित करते हुए हर्ष है कि आप द्वारा भेजी हुई पुस्तकें मिलीं।

धन्य है आपको, जैन साहित्य प्रचार की सद्‌भावना की, जो कि तीन रुपये जैसी ना-जितनी कीमत में इतनी पुस्तकें (१७-१८) भेजते हैं। विशेष पुस्तकों के अध्ययन पर। —हजारीमल मुराजी जैन

काकाजी चिरंजीलालजी, खामगाँव : १०-११-६१

पावाढोक। आपका पत्र मिला। आपने लिखा कि आपकी खेती डूब गयी। सो यह तो ईश्वरी खेल है, इन्सान के हाथ की बात नहीं। आपने लिखा कि गेहूँ बोना है। पैसे की तंगी है। हमारे होते हुए आपको तंगी महसूस करने की जरूरत बिलकुल नहीं। आप जो आज्ञा करोगे, सो हम जरूर स्वीकार करेंगे।

ड्राफ्ट १ महाराष्ट्र बैंक का नं० ३३१८६० रुपया १००० (एक हजार) का भेजा है, सो स्वीकारना। रकम की जरूरत पडे तो लिखना।

आपकी उम्र काफी हो गयी है। अब आप उससे कब तक काम लेंगे। आप आराम करिये बगीचे में जाकर। वहाँ पर आपकी सेवा में मूलचन्द रहेगा। कोई फिकर मत करना। काकीजी को पावाढोक।

—दीपचन्द बड़जाते

आदरणीय बाबाजी, सादर प्रणाम। कामठी : २१-७-६१

आशा है आप पूर्णतया सकुशल होंगे। मैं यमुनानगर अपनी पत्नी के साथ गया था। श्री रामसरनदासजी से मिले थे। उनकी लड़की व Family सहारनपुर रहते हैं। वहाँ जाकर लड़की भी देखी। उम्र २३ साल। B.A इसी साल पास किया है। हमें पसंद है।

बिलारी वाले (पहली शादी वाले) हमारे विरुद्ध खूब Propoganda कर रहे है। उनके एक भाई लखमीचंद जैन देहरादून में लखनऊ वगैरह में सबको भड़का देते हैं। सच तो यह है कि हमें भी सच कहना पडेगा कि पहली वाली का सबध किसी कायस्थ से हो गया था और तलाक लेना पड़ा। वे लोग तो शादी कर चुके, लेकिन हम लोगों को बदनाम करते हैं। श्री रामसरनदासजी भी शायद देहरादून या और कहीं पर इस बाबत उनका Propoganda सुन चुके हैं। इसलिए हिचकिचाते है।

आप तो इस कुटुब को जानते ही हैं। अब आप ही उनके सदेह व धारणाओं को निर्मूल कर सकें तो सबंध हो सके। वैसे तो खुद उनकी एक लडकी Non-Jain के साथ संबध कर चुकी हैं। मैंने जो लिखा है, वैसा Impression मुझे मालूम पड़ा था। हो सकता है और कोई कारण हो। वैसे तो मैंने साफ कह दिया था कि हमे पैसे की गरज नहीं, अच्छी लडकी की है। —राजेन्द्रकुमार

आदरणीय काकाजी, सादर प्रणाम। सिकन्दराबाद : २६-१-६२

आशा है आप पूर्णतया सकुशल होंगे। आपके यहाँ से रवाना होते वक्त आपसे नहीं मिल सका, इसका दुख रहा।

बडे भाई सा० की तबियत खराब हो गई थी पिछले महीने। अब ठीक हैं। मेरे पास यहाँ हैं। हम लोग ३ ता० को नागपुर-दिल्ली ७ रोज को जा रहे हैं।

प्रतापचंद भाई सा० से मिलते रहते हैं। कुशल हैं।

अभी तक कोई योग्य सम्बन्ध भाई साहब के लिए नहीं मिला है। फिक्र है।

कुशल समाचार देवें व योग्य सेवा लिखें। नागपुर सब ठीक है– बडी बहिन पचमढ़ी हैं। (कैप्टेन) राजेन्द्रकुमार

श्रद्धेय श्री चिरंजीलालजी सा० बड़जाते, बबई : १९-८-६१

आज श्री रमणभाई शाह द्वारा आपके रुग्ण-अवस्था के समाचार प्राप्त हुए। श्रद्धेय श्री रमणभाईजी आपके स्वास्थ्य के बारे में पूरे चिन्तित हैं। आपने जो जैन जगत की सेवा की व आज से कई वर्ष पूर्व समाज की कुरूढ़ियों के विरुद्ध जो साहसिक कदम उठाया, उसके लिए समाज आपका ऋणी है।

आपके अदम्य उत्साह, विचारदृढ़ता, कार्यक्षमता आदि गुण हमारे लिए तथा समाज के लिए मार्गदर्शक रूप हैं।

मैं जो कुछ थोड़ा भी कार्य कर पा रहा हूँ, वह आपके जीवन की प्रेरणा का ही फल है।

मेरी इच्छा थी कि कोई कार्य से वर्धा आकर आपके पास कुछ टाइम ठहर कर समाज के बारे में चर्चा कर मार्गदर्शन प्राप्त करता। श्री वीर प्रभु आपको शीघ्र ही स्वस्थ कर मेरी इच्छा की पूर्ति करेंगे, ऐसी प्रार्थना है। श्री रमणभाई व मैं दोनों ही आपकी सुख साता पूछते हैं। निवेदन है कि ऐसे वक्त हमारे लायक कोई सेवा हो तो अवश्य याद फरमावें। —मोहनलाल चौधरी

श्रद्धेय बड़जातियाजी, बम्बई : ३१-१२-६१

आशा है आप सानन्द वर्धा पहुँच गये होंगे और प्रसन्न-चित्त होंगे। आपको यह खेद तथा चिन्तापूर्ण समाचार तो मिल ही गया होगा कि आपके जाने के दो-तीन ही दिन बाद श्री राकाजी बीमार हो गये और अस्पताल में हैं। उनके स्वास्थ्य की ओर से विशेष चिन्ता

है। मैं तीन-चार बार अस्पताल जाकर उनकी स्थिति मालूम करके आया हूँ। अभी भी उनसे मिलने की अनुज्ञा नहीं है। ब्लड-प्रेशर तो कम है, परन्तु temperature बहुत कम है और विचार-शक्ति अभी भी केन्द्रित नहीं है।

मुझे अपने भाग्य पर बड़ा विस्मय होता है। पता नहीं बीमार होने से पहिले उन्होंने श्री लालबहादुर जी शास्त्री के लिए पत्र लिखा था नहीं। श्री श्रेयान्स प्रसादजी से तो वह मिल पाये ही नहीं होंगे। आपने कहा कि आप उनसे टेलीफून से बात करेंगे सो आप कर पाये थे कि नहीं और अगर की थी तो क्या बातें हुईं? ऐसी स्थिति मे अगर आप ही श्री श्रेयान्स प्रसादजी को लिख सकें तो विचार कर लेना।

औरंगाबाद वाले लड़के के विषय में बातचीत की होगी। इस ओर क्या प्रगति हुई, लिखने की कृपा करना।

चारों ओर जैसी परिस्थिति बनती जा रही है, उससे मस्तिष्क बहुत व्यथित रहता है। देखो भविष्य क्या कराता है। —नेमकुमार जैन

श्रद्धेय बड़जातियाजी, बम्बई : २-५'६२

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मैंने बजाज इलेक्ट्रिकल्स में कमरशियल मैनेजर के पद पर कार्य आरम्भ कर दिया है। यह सब आपकी शुभ कामनाओं और आशीर्वाद का ही फल है। आशा है आप स्वस्थ तथा सानन्द होंगे। —नेमकुमार जैन

श्री रिषभदासजी राका, जयजिनेन्द्र। दुर्ग म० प्र० : ४-९-६२

मैं कई महीनों से बीमार हूँ। बीमारी में मदद करने की कई दिन पहिले आपकी चिट्ठी आई थी, मगर उस समय मुझे खास जरूरत नहीं थी। इसलिए मैंने मदद मागने से इन्कार किया था।

मगर अब मैं दाऊ विशेशरनाथ क्षय आरोग्य धाम, पी काटेज नं० ९ रायपुर म० प्र० में दाखिल हुआ हूँ। इस समय उसमे करीब दस रुपये रोज का खर्चा है। यानी तीन सौ रुपये मासिक अस्पताल का

खर्चा है। इसलिए मुझे आपकी सहायता की पूरी आवश्यकता है। इसलिए निवेदन है कि आप अपनी उदारता और दूसरों से सहायता दिलाने की उदारवृत्ति के द्वारा मुझे साल-छह महीनों के लिए सहायता दिलाने की मदद करें। मैं जानता हूँ कि आप अपने सहयोग से अनेक सेठों से मुझे मदद दिलाने की कोशिश करेंगे। आशा है मुझे निराश नहीं होना पडेगा।

—कृष्णलाल वर्मा

—लीलावती वर्मा

(श्री कृष्णलालजी वर्मा चिरजीलालजी के पुराने मित्रों में थे। उनका स्वर्गवास हो गया। उन्होंने जैन साहित्य की अच्छी सेवा की है।)

स्वनामधन्य भाई श्री चिरजीलालजी बडजाते बड़नगर (मालवा)

सस्नेह प्रणाम। १-११-६२

महामना! ठीक धनतेरस के दिन शाम को बाजार में एक मित्र की दूकान पर बैठा था। अचानक बच्छराज फैक्टरी के केशियर (रोकडिये) ने एक पारसल मेरे हाथ मे धर दी और यह कहने लगे कि वर्धा से सेठ चिरोंजीलालजी बडजात्या ने दी है।

मेरी मुरझाई हुई मन की लता फिर हरी-भरी हो उठी। मैं तो आपको भूल ही गया था। लेकिन आप मुझे न भूले। आतुरता से पारसल खोली तो एक दरजन किताबें निकलीं। सबसे पहिले आपका जीवन-चरित्र का एक-एक पन्ना बडे गौर से पढ़ा और मित्रों को भी पढ़ाया। अभिनदन व सहानुभूति का तो ताँता सा लग गया। वह देखते ही बनता है। कम-से-कम २५० तो मैंने एक-एक करके गिनी है, बाकी छपने से वञ्चित रह गई।

मैंने भी कई सज्जनों की जीवनियाँ पढ़ी हैं, परन्तु यह जीवनी* अपनी शान की एक ही है।

---

* 'समाज-गौरव चिरंजीलालजी।'

"गागर में समा गई है किरन आफताफ की।
जो बात की खुदा कसम ला जवाब की॥"

आपने वाकई पैसे का सही माने मे सद्उपयोग किया है। वरना....

धन है तो फिक्र भी है चोर डाकू की।
इससे बचा तो तमन्ना है वासना के चाकू की॥
समझ यही खाली जेब खाली हाथ रहता हूँ।
पाप की जड पैसा है, ऐसा मैं कहता हूँ॥

मेरा जन्म विक्रम सम्वत् १९४० अगहन कृष्ण ८ का है। इस वक्त ८० के लगभग हूँ। मैं स्वस्थ हूँ। बाजार मे पचास-साठ हजार रु० लगाकर एक कोठी बनाई गई है। उसीमे हम सब कुटुम्ब सहित करीब २५ जने बाल-बच्चों सहित रहते हैं। ३ दुकाने सराफी की हैं। मैं अपने बडे भ्राता के साथ रहता हूँ। एक वक्त भोजन, अष्टमी चौदस मौन सहित भोजन, दोनों वक्त सामायिक करता हूँ।

आपकी तारीफ किन शब्दो मे करूँ। वह शब्द मेरे पास नहीं से हैं। आप मानव के शरीर मे देवता हैं। आपकी उमर दराज हो और हम आपकी जिन्दगी से सबक ले। —गेन्दालाल जैन टोंग्या सराफ
बम्बई

आदरणीय काकाजी, ३१ दिम्सबर, १९६२

सविनय चरणस्पर्श। आशा है आप सकुशल पहुँच गए होंगे। आपने २८ तारीख की बैठक में आकर हम लोगों पर अपना विशेष अनुग्रह किया है। इसके लिए हम लोग आपके बहुत आभारी हैं। विश्वास दिलाते है कि हम अपनी तरफ से मेहनत करके 'ट्रस्ट' को बढ़ाने की और उसके लक्ष्य तक पहुँचाने की पूरी-पूरी कोशिश करेंगे और फिर आगे आप लोगों का आशीर्वाद तथा ईश्वर की इच्छा मे जो होगा, सो होगा।

समय-समय पर अपने बहूमूल्य परामर्श अवश्य सूचित करते रहें।

विद्याधर मोदी
(हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय)

यवतमाल : ६-३-६३

श्री० रा० रा० काकाजी यासी सा० न० वि० वि०। आपण पाठविलेले सर्व कागद पत्र व सर्टिफीकीट मिळाले—फार फार आभारी आहे—आपणास लाखो धन्यवाद—आपली कृपा अशीच निरन्तर राहो ही ईश्वरास प्रार्थना आहे—आपण अम्हास फार उपकृत व ॠणी करून ठेविले आहे. कळावे. लोभ असावा. ही विनति.

—राम शारंगपाणी

भाईजी,

बंबई : १५-५-६३

सादर प्रणाम। आपका कार्ड मिला। आप महान हैं। मानवों में मानव, मानवोचित गुणों में दुर्लभ। आपके हृदय की विशालता, सरलता, सहृदयता, परदुःखकातरता भगवान महावीर और बुद्ध जैसी है। आपकी सबसे क्रियात्मक रूपसे कौटुम्बिकता निभाने की वृत्ति लाखों मनुष्यों में से भी एक में नहीं मिलती। आपके विनय की मिसाल नहीं। आपकी याद करके ही जी भर आता है। आप स्वस्थ रहें, दीर्घ जीवी हों, यही मेरी सदैव-सदैव हार्दिक कामना है। —भानुकुमार जैन

●

ट्रस्टों द्वारा दान

श्री चिरंजीलालजी ने सही अर्थ मे अपने धन का सदुपयोग किया है। उनके हाथ मे पैसा हो और कहीं बिखेरने की आवश्यकता हो तो वह बिखर ही जायगा। पैसे का सच्चा आनन्द भी यही है। पानी संग्रहीत होकर सडने लगता है, बहता रहकर ही निर्मल, स्वच्छ रहता है। पैसे की भी यही बात है।

चिरजीलालजी के तीन ट्रस्ट हैं, जिनके द्वारा अब तक लगभग ३१ हजार रुपये का दान किया जा चुका है। यह तो मोटी-मोटी रकमें हैं। लेकिन ऐसा दान तो अव्यक्त ही है जो वे प्रतिदिन, प्रतिक्षण करते रहते है। संगी-साथियों की मदद, बीमारों की मदद, खिलाने-पिलाने की व्यवस्था, सहानुभूति, मेहमानों के लिए आत्मीयता, मिलना-जुलना, सहन करना आदि ऐसे काम है जिनको करके ही चिरंजीलालजी सुख पाते हैं। इस दान का मूल्याकन नहीं ही किया जा सकता।

यहाँ उनके ट्रस्टों द्वारा किये गये दान की सूची दी जा रही है :

दान की सूची

४७५०) व्यक्तिगत सहायता

४७००) भारत जैन महामण्डल (समय-समय पर)

४४५०) गो-सेवा कार्य मे खर्च

३५२५) छात्रवृत्ति

२६५०) सुगणाबाई जैन पुस्तकालय

[illegible]) महावीर ब्रह्मचर्याश्रम, कारंजा

१२०) [illegible]श्रम, वर्धा

[illegible]) जैन धर्मशाला, उग्रास (जयपुर)

५०५) जैन गुरुकुल, बाहुबली (महाराष्ट्र)

५०[illegible]) महात्मा गाधी स्मारक निधि

[illegible]) मुनि जिनविजयजी, चंदेरिया में कुआँ बनाने के लिए

५००) सिद्ध क्षेत्र मुक्तागिरि, पानी के लिए

४७५) सुगणाबाई जैन पाठशाला, वर्धा

४२६) जैन रिसर्च इन्स्टीट्यूट, यवतमाल

३८८) बाल मन्दिर, वर्धा

३००) महिलाश्रम, वर्धा

२६६) स्वावलंबी शिक्षण प्रसारक सघ, वर्धा

२०२) सत्येश्वर विद्यालय, वर्धा

१७५) हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम

१७१) दिगम्बर जैन परिषद, दिल्ली

१५७) जैन मंदिर, रामटेक (बिजली के लिए)

१५२) राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

१५२) अंतरीक्ष पार्श्वनाथ तीर्थ धर्मशाला, सिरपुर,

१५१) श्रावक प्रतिमा पुस्तक छपवाई

१५०) श्री सुमेरचन्द्र दिवाकर सिवनी ('आध्यात्मिक ज्योति' पुस्तक के लिए)

१५०) कल्पवृक्ष कार्यालय, उज्जैन

१२९) महारोगी सेवा मडल, वर्धा

१२५) श्री रघुवीरशरण दिवाकर, रामपुर ('अपरिग्रह दर्शन' पुस्तक प्रकाशन)

१२०) दिगम्बर जैन मदिर, वर्धा

११२) सूतिकागृह, वर्धा

१०८) वर्धा के तालाब की खुदाई मे
१०६) पोशाला, वर्धा
१०१) कस्तूरबा गांधी स्मारक फंड
१०१) बजाज भवन, सीकर
१०१) जैन साहित्य भण्डार, नागौर
१०१) जैन धर्मशाला, होशंगाबाद
१०१) मोहन-सोहन मुनि प्रवचन-प्रकाशन (श्री रतनचंद्र पहाडी)
१०१) केशरीमल कन्याशाला, वर्धा
१०१) सत्य समाज, उदयपुर
१०१) महात्मा भगवानदीन जी की थैली मे
१०१) हिन्दी मन्दिर पुस्तकालय, वर्धा
१०१) जैन छात्रालय, बड़वानी-तीर्थ
१०१) नागपुर प्रातीय दि० जैन खडेलवाल सभा
१०१) प्रतिष्ठा-महोत्सव बाहुबली
१०१) राष्ट्रभाषा प्रचार समिति (रजतजयंती समारोह)
१०१) श्री हीरासाव चवड़े के जन्म-दिवस पर
७५) पूना के बाढ़ पीडितों के लिए
५१) बाढ़-पीड़ितों के लिए
५१) 'माता' मासिक, गाजियाबाद
५१) जैन गुरुकुल, चिंचवड
५१) सर्वोदय कार्यालय, वर्धा
५१) दिगम्बर जैन मदिर, बोरगाँव (मजू)
५१) अभयदेवजी जयन्ती-फंड
५१) एक जैन मंदिर
५०) जैन संस्कृति सशोधन मंडल, वाराणसी
५०) जैन शिक्षण संस्था, कानोड

५०) दिगम्बर जैन सघ, मथुरा
५०) माध्यमिक विद्यालय, श्रीनारायण पुरी (प्रयाग)
४५) सुरक्षा फंड
४१) शीतल जैन एज्यूकेशन सोसाइटी
३६) दिगम्बर जैन तारणपथी सभा
३२) एक शरणार्थी भाई की दवा
२५) औषधालय, उग्रास
२५) जैन ब्रह्मचर्याश्रम, सोलापुर
२५) राष्ट्रीय सस्था, अमरावती
२५) हिन्दी गर्ल्स स्कूल, वर्धा
२५) शरणार्थी कैंप वर्धा (जल जाने पर
२५) मनोहरपंत देशपाडे सत्कार-समिति
२५) व्यवहार-शुद्धि आन्दोलन
२५) हरिजन छात्रालय, वर्धा
२५) सन्मति जैन निकेतन, वाराणसी
२५) पुस्तकालय, रींगस
२५) महिला मंडल, उदयपुर
२५) आचार्य शातिसागर जयती
२५) हाईस्कूल, आन्दोरी (वर्धा)
२५) श्वेतावर जैन मदिर, सिवनी
२५) विशालकीर्ति भट्टारक महाराज
२५) बाल सेवा मदिर, चादा
२१) दिगबर जैन बोर्डिंग, वर्धा
२०) हिस्ट्री काग्रेस

३१०५९) योग

व्यक्तिगत, फुटकर, प्रवास, छात्रवृत्ति जैन पाठशाला वर्धा, आतिथ्य सत्कार, हारी-बीमारी आदि संबंधी सहायता का क्रम निरंतर चलता ही रहता है। ऐसी भी कई सहायताएँ हैं जिनका हिसाब ही नहीं रखा जाता—वे अपने निजी खर्च में लिख दी जाती हैं। ट्रस्ट बनने के पूर्व जैन बोर्डिंग, जैन मंदिर, प्रतिष्ठा-महोत्सव, पुस्तक-प्रकाशन, युवक-युवतियों के ब्याह-शादियों आदि मे मदद स्वरूप जो कुछ किया गया है वह तो अलग ही है। असल में चिरंजीलालजी को दान देकर सुख होता है। धन से प्रेम होना एक बात है और धनसे चिपटना दूसरी। चिरंजीलालजी का स्वभाव प्रेमी है और वे मानते हैं कि धन का महत्त्व है, पर तभी जब वह किसीके काम आये, किसीका दुख-दर्द कम हो। आपकी धर्म पत्नी सौ० प्रमिलादेवी भी हमेशा दान-धर्म करती हैं। अभी दो साल पूर्व आपने जैन मंदिर में एक धर्मशाला बनवाई जिसमें ५ हजार रु० खर्च हुए। ●

अभिनन्दन-समारोह

दिनाक १२ सितम्बर १९६० के दिन श्री चिरजीलालजी ने अपने जीवन के ६५ वर्ष पूरे करके ६६ वें मे प्रवेश किया। सन् '२० से आप लगातार समाज और देश की सेवा मे लगे रहे। सेठ जमनालालजी बजाज के पुण्य सान्निध्य मे समाज और देश-सेवा की भावना उत्तरोत्तर बढती ही रही। देश और समाज का कोई काम हो, सदा चिरंजीलालजी तन-मन-धन से अगुआ रहे। ऐसे परोपकारी, हितैषी, सद्भावनाशील व्यक्ति के अभिनन्दन की भावना वर्धावासियों के मन में उत्पन्न हुई और एक समिति गठित हुई। वर्धा के सुकवि श्री रतन पहाडी इसके संयोजक थे।

यह अभिनन्दन-समारोह गांधी-चौक वर्धा में ता० १२ सितम्बर '६० को नागपुर हाईकोर्ट के भूतपूर्व न्यायपति श्री भवानीशकरजी नियोगी नागपुर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर वर्धा शहर का हर नागरिक अपने भीतर एक अद्भुत उल्लास और आनन्द का अनुभव कर रहा था। वर्धा की प्रायः समस्त सार्वजनिक और रचनात्मक सस्थाओं की तरफ से पुष्पमालाओं द्वारा चिरंजीलालजी का भावभीना, आत्मीय स्वागत किया गया। सबके सब लोग मानों अपनी झोली चिरंजीलालजी के प्यार और आशीर्वाद से भर लेना चाहते थे। सनातनी और क्रातिकारी, आस्तिक और नास्तिक, धनी और रंक सबके सब भेदभाव भूलकर चिरंजीलालजी में समा रहे थे।

समारोह मे बाहर से भी लगभग ५० सज्जन पधारे थे। सेठ राजमलजी ललवानी, श्री ताराचंदजी कोठारी, श्री रिषभदासजी राका, श्री फकीरचंदजी जैन, श्री पूनमचन्दजी नाहटा, श्री ज्ञानचंदजी जैन, श्री कृष्णलालजी वर्मा, प्रो० रजनीशजी, श्री बाबूलालजी डेरिया प्रभृति समाज-सेवक और गण्यमान्य नेता पधारे थे। चिरंजीलालजी के सगे-संबंधी, कुटुंबी तो सब ही थे।

इस अवसर पर बाहर से लगभग २५० संदेश प्राप्त हुए थे। देश के और समाज के अनेक नेताओं, धनपतियों, समाज-सेवकों तथा पत्र-कारों ने अपनी श्रद्धाजलियाँ भेजीं। आचार्य विनोबाजी, राष्ट्रपति डा० राजेंद्र बाबू से लेकर मामूली कर्मचारी तक ने आपके दीर्घायु की, स्वस्थता की, समाज सेवा की मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

समारोह-समिति की तरफ से चिरंजीलालजी को एक अभिनन्दन पत्र समर्पित किया गया, जिसमे उनकी सेवा, सहायता, परदुख-कातरता और सर्वोपरि मानवीयता की प्रशस्ति की गयी।

इसी अवसर पर चिरंजीलालजी को उनके सबंध मे लिखे गये सस्मरणों की एक जीवन-परिचायक पुस्तक श्री मनोहरपंत देशपांडेजी द्वारा समर्पित की गयी और उसकी प्रतियाँ अतिथियों को भेंट की गयी। आगत-अतिथियों और वर्धावासी उपस्थित नागरिकों के लिए मधुर 'जलपान' की अच्छी व्यवस्था थी।

यह एक ऐसा समारोह था, जो सबका अपना था, सब अपने मे चिरंजीलालजी को अभिव्यक्त कर रहे थे। ●

सितम्बर '६० को श्री चिरंजीलालजी का अभिनन्दन समारंभ हुआ। इस अवसर पर अनेक शुभ-संदेश प्राप्त हुए थे। चिरंजीलालजी ने अपना भी एक विनय-निवेदन पढ़ा था। उसकी कुछ सार-सामग्री यहाँ दी जा रही है।]

राष्ट्रसन्त आचार्य विनोबाजी :

१२ तारीख को आपके शरीर के ६५ साल पूरे हो रहे हैं। आप मुझसे एक ही दिन छोटे हैं। आपके साथ अब लगभग ४० साल का मेरा परिचय है। सेवामय जीवन की आपने कोशिश की। ईश्वर-कृपा से आपके भावी जीवन में और उत्कट दर्शन सेवाभाव का मिलेगा, ऐसी आशा करता हूँ। विनोबा का जय जगत्।

राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसादजी :

राष्ट्रपति भवन
नई दिल्ली
नवम्बर १९, १९६०

प्रिय श्री चिरंजीलालजी,

आपके जन्मदिन के विषय में जानने को मिला। आपके साथ सदा ऐसा सम्बन्ध रहा है कि हमारी शुभकामनाएँ तो सदा ही आपके साथ हैं, ऐसा आपको मान ही लेना चाहिए। अभिनन्दन-ग्रन्थ की प्रथा अब इतनी अधिक सामान्य और प्रचलित हो गयी है कि उसके शुभकामनाओं के संग्रह के निमित्त आदर करने को मैं विशेष महत्त्व नहीं देता। निजी रूप से आपके लिए वही भाव सदा है।

आपका जन्मदिन समारोह तो हो ही चुका है। देर से ही सही, मैं अपनी शुभकामनाएँ भेजता हूँ और आपके स्वास्थ्य तथा दीर्घायु की कामना करता हूँ।

आपका
राजेन्द्रप्रसाद

साहू शान्तिप्रसादजी जैन, कलकत्ता :

श्री चिरंजीलालजी बडजाते ने अपने यशस्वी जीवन के ६५ वर्ष पूरे किये हैं और इस अवसर पर जनता की ओर से उनका जो अभिनन्दन किया जा रहा है, वह वास्तव में देश और जनता का अपना ही सम्मान है, क्योंकि श्री बडजातेजी ने जब से समाजसेवा का व्रत लिया है, अपना सारा समय और सारी शक्ति दूसरों की सेवा के निमित्त ही अर्पित की है। मेरा और उनका जब भी निकट का सम्पर्क हुआ, मैंने पाया है कि उनका जीवन एक खुली कोठी है, और उनका व्यक्तित्व प्रेरणा का स्रोत है। मैंने उन्हे सभाओं का संचालन करते हुए भी देखा है। उनकी बड़ी भारी शक्ति है कि वह एक क्षण में सभा के सदस्यों से और जनता से तादात्म्य कर लेते हैं और फिर कठिन-से-कठिन मसले भी सहजता से सुलझ जाते हैं, क्योंकि उनके भाषण मे और व्यक्तित्व में सिद्धान्त ही प्रमुख होते हैं। व्यक्तियो को उनका स्नेह ही मिलता है। शरीरश्रम और छोटे से छोटे स्तर के आदमियों की सेवा उनकी पूजा है, यही उनकी उपासना-पद्धति है। मेरी कामना है कि बहुत-बहुत वर्षों तक हमें उनका सम्पर्क और प्रेरणा प्राप्त होती रहे।

श्री मा. स. गोलवलकर, सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ :

अधिकाधिक परिपक्व बुद्धि तथा आज तक की राष्ट्र-सेवा के अनुभव से तरुण पीढ़ियों का मार्गदर्शन करते रहने के लिए भगवान की कृपा से आपको उत्तम स्वास्थ्य, सर्व अनुकूलतायुक्त पूर्ण जीवन,

"शतायुर्वैपुरुषः" इस वचन के अनुसार प्राप्त हो, एतदर्थ मैं उस दयाघन के चरणकमलों में हृदय से प्रार्थना करता हूँ।

केदारनाथजी, बम्बई :

आपने अपने जीवन का बहुत-सा भाग सेवा-कार्य मे खर्च किया है, इसलिए मैं आपका अभिनन्दन करके आपको धन्यवाद देता हूँ। परमात्मा की कृपा से आपका जीवन सेवा-कार्य में ही व्यतीत होता रहे और उससे आपकी और जनता की उन्नति होती रहे, यही प्रार्थना है। परमात्मा आपको स्वाधीनता सहित दीर्घायुष्य प्रदान करे, यही शुभेच्छा।

श्री राधाकृष्ण बजाज, वर्धा :

श्री चिरजीलालजी का मेरा सबंध बचपन से है। सदा उन्होंने बडे भाई की तरह मुझे सभाला है। एक ही जीवन मे छोटे-बडे, गरीब, अमीर, सभी तरह का अनुभव किया है। बुरा करे, उसका भी भला करने की सदा इनकी वृत्ति रही है। जैन समाज की इन्होंने विशेष रूप से सेवा की है। वैसे इनकी सेवाएँ वर्धा में सभीको मिलती रही हैं। स्वभाव से गुस्सा जल्दी आता हो—फिर भी इनके गुस्से की सात्विकता से सभी परिचित हैं। इस कारण किसीको उस गुस्से का डर नहीं लगता। किसीका बिगाड करने की उनमें प्रेरणा नहीं होती है। स्थूल शरीर होने पर भी रात-दिन सफर करना, भारी से भारी भीड़ में थर्ड में ही जाना, मालिक एवं कपनी का एक पैसा भी अधिक खर्च न हो, ऐसी जिम्मेदारी महसूस करना, इनकी विशेषता है। आज के जमाने में ये गुण असामान्य हैं। घरेलू और संस्था के हित मे विरोध आवे, वहाँ सस्था के हितों को प्रधानता देने का इनका मानस रहता है। अपनी शक्तिनुसार या उससे कुछ अधिक ही दान इन्होंने दिया है। दान देने के आनन्द का ये अनुभव कर सकते हैं।

अपने अन्तिम दिनों मे सासारिक बातों को भूलकर बाह्य जीवन को कम करके अन्तर्मुख होने का प्रयत्न कर रहे हैं। भगवान् इन्हें अन्तर्मुख होने में सफलता दे और अन्तःसुख के आनन्द का अनुभव करावे। इस अवसर पर मैं उन्हे भक्तिभाव से प्रणाम करता हूँ।

श्री कमलनयन बजाज बंबई :

चिरंजीलालजी ने सबका भला चाहा। जीवन प्रयत्नो से उन्नत सेवामय किया। सतोप समाधान मिलाया। भगवान् उन्हे सुखी करे।

श्री रामकृष्ण बजाज बंबई :

जिन्दगीभर आपने काम ही काम किया है और तन-मन-धन से हमेशा दूसरो की मदद और सेवा करने मे अपना दिल और दिमाग लगाया है। मैं आशा करता हूँ कि अब जैसा आपने तय किया है— आप एक जगह शाति के साथ बैठकर शरीर और मन दोनो को ही आराम, चैन और शान्ति देने का प्रयत्न करेंगे।

श्री बाबूलाल डेरिया, बाबई :

अनेक बार भारत जैन महामंडल के अधिवेशनों में शामिल होने और बहुत बार श्री चिरञ्जीलालजी के साथ रहने के कारण सहज ही अंतर्ध्वनि प्रकट हो गयी कि अरे, यह तो मडल की माता है, जो निरंतर चलते-फिरते, उठते-बैठते, बोलते-चालते, प्यारे छोटे बेटे की नाईं मंडल को अपनी गोद मे लिये कश्मीर से कन्याकुमारी तक और गुजरात से असम तक इस सेवानिवृत्त अवस्था में भी घूम रहे हैं। इस ससार के यात्री ने जीवन-संग्राम मे जूझते हुए रेल को अपना निवास बना लिया है। साठ साल के निकट पहुँचानेवाली अवस्था मे भी प्रत्येक सम्मेलन में हाजिर! कहीं धार्मिक जलसा हुआ कि वहाँ उपस्थित! कहीं शादी-विवाह का निमत्रण किसी मित्र या थोडे-से भी परिचित के

यहाँ का मिला, सोचा कि यहाँ मंडल का कार्य हो सकता है, तो वहाँ हाज़िर।

इस प्रकार मन, वचन और कर्म से जीवन के संपूर्ण साधनों के साथ भूख-प्यास, जागरण, सुख-दुःख, लाभ-हानि, मान-अपमान को समान रूप से सहता हुआ सदा-सर्वदा जो मंडल को अपने इष्ट की भाँति मानकर उसकी सेवा करता है, उस निष्काम कर्मयोगी साधु-सन्यासी को 'माता चिरजीलाल' न कहा जाय, तो क्या कहें ! पिता में तो माता के सभी गुणों का संपूर्ण विकास नहीं हो पाता। लालन-पालन का भार तो माता ही वहन कर सकती है, जो भूखी-प्यासी अवस्था में भी खुद गीले में सोकर प्यारे बेटे को सूखे मे सुलाकर, अपने कलेजे का खून (दूध) पिला-पिलाकर उसको पालती है, अपना सारा स्वरूप उसे देकर स्वयं वृद्ध होकर उसे तरुण देख प्रसन्न होती है।

> "मेरे तन-मन-यौवन की कुर्बानी
> मेरे रक्ता बिन्दुओं की यह दुनिया है लासानो
> अरे मुझको कहते हैं माता।"

●

सेठजी का उपकार

[चिरंजीलाल बड़जाते]

सेठ जमनालालजी बजाज का संबंध मेरे साथ करीब २५ साल तक रहा। सन् १९१५ में जब मैं गोद आया, तभी से। उस समय सेठजी जेठमलजी बड़जाते फर्म के ट्रस्टी थे और उन्होंने ही मुझे जेठमलजी बड़जाते के नाम पर गोद लिया था।

मैं पहले मखमल व रेशमी विलायती कपड़े पहना करता था। सेठजी की प्रेरणा से मैंने विदेशी वस्त्रों को त्याग स्वदेशी को अपनाया और शुद्ध खादी पहनना शुरू किया। सादगी से रहने की आदत तभी से पड़ गयी।

मैं पहले बहुत ही कट्टरपंथी था। सेठजी की वजह से नयी विचार-धाराओं में ढला और सब धर्मों को आदर की दृष्टि से देखने लगा। विधवा-विवाह, जात-पाँत तोड़ना, मरण-भोज बन्द करना, पर्दा-प्रथा उठाना आदि कार्यों को करने और प्रचार में योग देने लगा।

नागपुर-कांग्रेस की स्वागतकारिणी के सेठजी अध्यक्ष बने। मैं कांग्रेस के कार्य में सन् १९१८ से भाग लेता था, पर इसके बाद कांग्रेस-संगठन में लग गया। सन् १९२१ के असहयोग-आन्दोलन में सेठजी ने बहुत काम किया तथा उनकी ही आज्ञा से मैं भी यह काम करने लगा।

सन् १९२७ में हमारा काम ठप हो गया। करीब एक लाख रुपये की उधारी अदालत में नालिश न करने से डूब गयी। करीब उतना ही

रुपया कांग्रेस तथा सामाजिक कार्यों में खर्च हो गया। व्यापार दूसरों के भरोसे चलता रहा, इसलिए उसमें काफी घाटा आया। एक लाख रुपयों पर कर्ज हो गया। मेरे मित्र, कुटुम्बी तथा अन्य सम्बन्धी दिवालिया बनने की सलाह देने लगे, परंतु सेठजी ने मुझे हिम्मत बँधायी और दिवालिया न बनने दिया। जायदाद बिकवाकर सबका पाई-पाई कर्ज चुकवा दिया। पचीस हजार रुपये अपने पास से कर्ज दिये।

सेठजी की प्रेरणा से सन् १९२७ में हरिजन-आदोलन में कुएँ और मंदिर खुलवाने के काम में लग गया। उस समय जातिवालों ने मेरा बहिष्कार कर दिया। इस समय माँ को सेठजी ने ही धीरज बँधाया।

सेठजी के उपकार की बात कहाँ तक कहूँ ? मैं अधिक पढ़ा-लिखा नहीं था, फिर भी सेठजी ने मुझे सौ रुपया मासिक देकर मेरा हौसला बढ़ाया, काम सिखाकर और सौंपकर मुझमें आत्मविश्वास पैदा किया और व्यावहारिक कार्यों में होशियार बनाकर धीरे-धीरे इस योग्य बना दिया कि मैं अपने पैरों पर अच्छी तरह से खड़ा हो सकूँ।

सेठजी ने सेवाग्राम का काम मुझे सौंपा और सबसे पहले मुझे मकान बनवाने का काम दिया। गाधीजी सेवाग्राम में घनघोर पानी बरसते हुए भी दिये हुए ठीक समय पर पहुँचे। मेरा गाधीजी के साथ जो सम्पर्क आया, वह जमनालालजी के कारण ही आया।

मेरी माँ की ७५०० रुपयों की संपत्ति का उन्होंने एक ट्रस्ट बना दिया था, जिसका मूल्य उनके जीवन-काल में ही ८०००० रुपये हो गया था। उसी संपत्ति से तथा खेती का काम करने से घर का खर्च भी चला और कुछ सेवा भी बन पड़ी।

मुझमें अनेक दोष थे। सेठजी के सत्संग से मेरा जीवन सुधरा। सेठजी समय-समय पर मुझे अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य सौंपते थे। श्री राजेन्द्रबाबू की जायदाद सँभालने तथा उनके कर्ज को चुकाने की

व्यवस्था करने के लिए मुझे जीरादेई तथा छपरा आदि स्थानों पर भेजा था। उस समय श्री राजेन्द्रबाबू तो सेवा के कामों में लगे हुए थे और इनके भाई बहुत उदार थे। सेठजी के मार्गदर्शन और सलाह से मैंने वह काम पूरा किया।

सेठजी को खेती के काम में बड़ी रुचि थी। उन्होंने बच्छराज खेतीज लि० नाम से एक कंपनी खोली, जिसका मुझे मैनेजिंग डायरेक्टर बनाया। अपने स्वर्गवास से १ वर्ष पहले, जब कि सेठजी ने रेल में बैठना छोड़ दिया था, बैलगाड़ी मे बैठकर दस-बारह गाँवों का उन्होंने भ्रमण किया और कंपनी की खेतीबाड़ी तथा गाय-बैल आदि देखकर बहुत प्रसन्न हुए। मृत्यु के आठ दिन पहले उन्होंने मुझे बुलवाया और कहा कि तुम गो-सेवा के कार्य में लग जाओ। परन्तु इसके साथ उन्होंने एक कड़ी शर्त लगायी कि घर-बार के साथ मेरा कोई संबंध न रहे, मैं पैसा कमाना छोड़ दूँ और जैन मुनियों की तरह रहूँ। मैं कभी हिम्मत करता, तो कभी अपनी कमजोरी देखकर डर जाता। एक दिन सेठजी हमारे घर आये और दाल-बाटी की रसोई बनवायी। भोजन कर चुकने के बाद मेरी पत्नी से कहा कि तू चिरंजीलाल को मेरे सिपुर्द कर दे और हमेशा के लिए उससे सम्बन्ध छोड़ दे। मेरी धर्मपत्नी ने अपनी लाचारी जतायी और माफी माँगी। उनकी यह बात आज भी याद आ जाती है।

मैंने हजारों साधु-सन्तों, मठों और तीर्थों के दर्शन किये हैं। पर मेरा जीवन सेठजी के कारण ही सुधरा और सुखी बना। उन्हींकी प्रेरणा से मैं दो बार जेल गया और अनेक सार्वजनिक कार्य करने के मुझे अवसर मिले। आज भी जीवन मे कभी कोई गलती होने लगती है, तो झट उनकी मूर्ति सामने आ खड़ी होती है और मुझे बचा लेती है। उन्हींकी प्रेरणा थी कि मुझसे अपनी संपत्ति के गो-सेवा और विद्यार्थियों के लिए ट्रस्ट हुए।

पू० सेठजी की इच्छा के अनुसार मैं सर्वसंगपरित्याग कर संपूर्ण रूप से सेवा-कार्य में तो नहीं लग पाया, पर नौकरी छोड़कर निवृत्ति ले ली है। पैसा कमाना छूटा, पर खर्चे की आदतें सुधर नहीं सकीं, जिन्हे सुधारने की कोशिश मे हूँ। फिर भी एकदम तो छूट नहीं सकतीं। पर सेठजी के सुपुत्र कमलनयनजी, रामकृष्णजी तथा उनके कुटुंवियों के प्रेम और आत्मीयता के कारण मेरा काम चल जाता है। इतना ही नहीं, वे मेरा जीवन सुखी बनाने का पूरा ध्यान रखते हैं।

आचार्य तुलसीजी के कारण परिग्रह-परिमाण-व्रत लेकर अपनी आय की सीमा बाँध ली है। लोगों को अब भी मुझसे सेवा-सहायता की बहुत अपेक्षा रहती है, पर मेरी लाचारी है, मैं अधिक कर नहीं पाता। मेरी यही कामना है कि सेठजी, जाजूजी और माताजी का स्मरण मुझे बल दे और मेरा अन्तिम जीवन शुद्ध, पवित्र और दूसरों के उपयोग में आनेवाला बने। मेरे मित्रों, आत्मीय स्वजनों से प्रार्थना है कि वे मेरा जीवन सफल बनाने में सहायता दें और कहीं भूल होती हो तो उसे बतायें, ताकि मैं निर्दोष बन सकूँ। ●

सेठजी के तीन पत्र

चि० चिरंजीलाल, भवाली : १९-४-३५

तुम्हारे ता० १५-४ के दोनों पत्र मिले। पूज्य राजेन्द्रबाबू का पत्र भी मिला। उन्हें तुम्हारे परिश्रम और उद्योग से सतोष हो रहा है। लेनदेन का मामला साफ हो जाने के बाद तुम बैंक और बिजली के काम की व्यवस्था बैठा लेवोगे तो मुझे सन्तोष हो जावेगा।

श्री रामप्रतापजी अग्रवाल वहाँ बडे व्यापारी हैं। उन्हे चाहो तो तुम मेरा यह पत्र बता देना। श्री मथुराबाबू को वन्देमातरम् कहना। उन्हे कहना लेनदेन और बैंक का मामला जल्दी निपट जाना जरूरी है। श्री ब्रिजकिशोर बाबू को प्रणाम। श्री जानकीदेवी, कमला, मदालसा यहाँ आ गये। यहाँ की आबहवा ठीक है।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

प्रिय चिरंजीलाल, पूना : १६-११-३९

तुम्हारा ९-११ का लंबा व भावपूर्ण पत्र मिला। तुम प्रयाग से वर्धा वापस आ गये होंगे। वर्धा में सगठन करना हो तो पहले से ज्यादा उच्च दर्जे के लोगों का वहाँ समुदाय संग्रह हुआ है। तुम्हे तो पू० विनोबा व जाजूजी का ज्यादा सम्बन्ध रखते रहना चाहिए। आपसी मतभेद ईर्षा-द्वेष तो आप ही कम हो जायेंगे। जब हमारे मन मे किसीका बुरा करने की व अन्याय करने की इच्छा नहीं है तो फिर ज्यादा विचार करने की जरूरत नहीं रहती।

श्री द्वारकादास को अच्छी जगह मिल जावे तो मुझे तो खुशी होवेगी, परन्तु वर्तमान परिस्थिति में मैं विशेष नहीं कर सकूँगा।

चि० प्रताप की शादी २८-११ को है सो बहुत ही सादगी और कम खर्चे में होनी चाहिए। बजट तो पू० जाजूजी, राधाकिसन की सलाह से बना लेना। कर्ज निकालकर शादी करना ही सिद्धात के विरुद्ध समझना चाहिए। पाँच-सात मित्र शादी में जावें। वह अपनी टिकट खुद लेकर जावें तो ही उनका सच्चा प्रेम समझा जा सकता है। चि० दामोदर के विवाह से तो खर्च कम ही होना चाहिए।

दो हजार का कर्ज अभी और रह गया। मेरी समझ तो थी कि तुम्हारा सारा कर्ज चुक गया है। खैर, चि० कमल को तो सारी स्थिति की बात कहते ही रहना। मेरे आने पर मुझे भी याद दिलाना। कोई रास्ता सोचेंगे।

मेरे पास कुछ दिन तुम्हारी रहने की भी इच्छा है। मेरी भी तुम्हें रखने की है। परन्तु इस समय तुम्हारी जरूरत नहीं है। जब जरूरत होवेगी मैं खयाल रखूँगा। बैंक का काम चलाकर तुम जमा सको तो अच्छी बात है।

भविष्य में तुम्हें कहाँ रहना चाहिए, क्या काम करना चाहिए, उसका विचार तो फिर करेंगे। जल्दी नहीं है।

मेरा व मदू का इलाज ठीक चल रहा है। ईश्वर किया तो....

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

प्रिय चिरंजीलाल, पूना : ५-१२-३९

तुम्हारा ता० १-१२ का पत्र मिला। तुमने विवाह की जो रिपोर्ट भेजी, वह देखी। लड़की अच्छी है, यह जानकर खुशी हुई।

तुमने बैंक का काम शुरू कर दिया, यह मालूम हुआ। हरएक माह की विशेष काम की रिपोर्ट मुझे भेज दिया करना। सो मालूम रहेगा।

कमल-सावित्री शनिवार को यहाँ आ गये हैं।

मेरा तथा मदालसा का इलाज ठीक चल रहा है।

वर्धा दुकान का दिवाली तक का आँकड़ा तैयार हो तो भिजवा देना। तुम बैंक के काम के लिए बम्बई की ओर आओ तो मेरे से भी आकर मिल जाना। शेअर वगैरह जो बेचने हो उसका भी.. .खयाल कर लिया जावेगा।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्

मेरी विनय*

बुजुर्गों तथा साथियो,

आज अपने को आप सबके बीच पाकर एक ओर जहाँ हर्ष का अनुभव हो रहा है, वहाँ भीतर-ही-भीतर संकोच से गड़ा भी जा रहा हूँ। आप सबके स्नेह की पूँजी पाकर सचमुच मैं अपने को धन्य महसूस करता हूँ। स्नेह की यह अजस्र धारा जिस तरह अब तक प्रवाहित रही है, वैसी ही आगे भी वह मुझे अपने स्पर्श से पावन करती रहेगी, ऐसी मेरी श्रद्धा है।

आज मेरे भौतिक या शारीरिक जीवन के ६५ वर्ष पूरे हो रहे हैं। मेरा विगत जीवन आप सबके समक्ष खुली किताब के रूप मे रहा है। मेरे जीवन को मुझसे अधिक आप लोग जानते हैं। कोई भी व्यक्ति स्वयं अपने बारे में वह सब कुछ नहीं व्यक्त कर सकता, जो उसे व्यक्त करना चाहिए। यह व्यक्ति की एक प्रकार से विशेषता ही है कि वह अपने बारे में कुछ 'भुलक्कड़' भी होता है। अगर भूलने का स्वभाव न हो, तो आदमी जिन्दा भी नहीं रह सकता। अपने प्रति न्याय भी नहीं कर सकता।

मैं जानता हूँ कि मेरी अनेक त्रुटियाँ और कमजोरियाँ हैं। शारीरिक दृष्टि से मेरा शरीर ही मेरे लिए भारी पड़ जाता है। वह मेरे वश में नहीं है। उठने-बैठने, खाने-पीने, सोने-जागने में शरीर के 'हुक्म'

---

* अभिनन्दन-समारोह के अन्त मे स्वागत और अभिनन्दन के उत्तर में दिया गया श्री चिरंजीलालजी का निवेदन : १२ सितम्बर '६०।

पर मुझे चलना पड़ता है। मन की यह हालत है कि कभी पाँच मिनट भी वह एकाग्र या शरीर से ऊपर नहीं उठ पाया है। मन की हार और जीत में मैं हारता और जीतता रहा हूँ। 'आत्मोन्नति' शब्द तो बड़ा प्यारा है और अपने पुराण-अध्यात्म ग्रन्थों के प्रति मेरी निष्ठा भी है, लेकिन वे कौनसी आँखें हैं, जो मेरे बारे मे कह सकती हैं कि मैं इस दिशा में कुछ इंच भी आगे बढ़ा हूँ ! यह सब तो आप लोगों के स्नेह तथा बुजुर्गों के आशीर्वाद का परिणाम है कि मैं योग्यता के अभाव मे भी स्नेह और आदर पाता रहा हूँ।

एक साधारण परिवार में, राजस्थान के एक देहात में, मेरा जन्म हुआ, बाल्यकाल बीता। पढ़ाई के नाम पर हिन्दी की दो कक्षाएँ भी मैं पूरी तरह नहीं पढ़ सका। सयोग की बात कि वर्धा में गोद आया। यह लगभग ४५ वर्ष पहले की बात है। मेरे लिए यहाँ सब कुछ नया और अद्भुत था।

स्व० जमनालालजी बजाज के मुझ पर अनन्त उपकार हैं। यों तो मनुष्य-जीवन विश्व के अनन्त उपकारों से लदा हुआ है ! क्षुद्राति-क्षुद्र कीटाणु भी हम पर उपकार की वर्षा करते रहते हैं। ऐसा कोई दिन नहीं जाता, जब मुझे जमनालालजी का स्मरण नहीं होता। मेरे जीवन में उनका स्थान सर्वोपरि है। अपने लिए मैं उन्हें किस विशेषण से सम्बोधित करूँ, यही समझ में नहीं आता। वे मेरे लिए वस्तुतः हनुमान् के राम और मीरा के गिरधर गोपाल थे। उन्हींकी प्रेरणा से मैं दत्तक आया और उन्होंने ही मुझे पुत्रवत् मानकर मेरे विकास क प्रयत्न किया।

समाज-सुधार, समाज-सेवा और देश-भक्ति की भावनाओं का संचार उन्हींकी संगति और प्रेरणा से मुझमें हुआ। उनके कारण मेरी इन कामों में हिम्मत बढ़ने लगी और उत्साह से ऐसे कामों में भाग लेने लगा। कट्टर तथा रूढ़िचुस्त विचारों के प्रहारों को भी मैं झेलता

रहा। सेठजी की प्रेरणा इतनी प्रबल और आत्मीय थी कि उसके आगे यह सब प्रहार हवा के झोंके की तरह आगे बढ़ गये और समय के सागर में लीन हो गये हैं !

आर्थिक संकट भी मुझ पर जबदस्त आया था। कपड़े का व्यापार ठप हो गया। लेना-पावना डूब गया और मैं कर्जदार हो गया। कुछ साथियों ने कानून के अनुसार मुझे दिवालिया होने की भी सलाह दी। लेकिन इस वक्त भी मुझे सेठजी ने ही उबारा। जब वह दृश्य आँखों के सामने आता है, तो मन श्रद्धा से अभिभूत हो उठता है ! उन्होंने सारे कारोबार को समझा और अपनी ओर से रकम देकर सबके कर्ज से मुझे मुक्त किया। महत्त्व घटना का नहीं है, भावना का है, दृष्टि का है। जमनालालजी में मनुष्य का निर्माण करने की, उसकी सुप्त शक्तियों को जाग्रत कर उनका समाज और देश के हित में उपयोग करने की अद्‌भुत शक्ति काम कर रही थी। बाद में तो उन्होंने मुझे अपने यहीं स्थान दे दिया और ऐसे-ऐसे काम मुझे सौंपे कि जिनसे मेरा आत्मविश्वास बढ़ा और मैं अपने पैरों पर खड़ा हो सका।

उन्हींकी प्रेरणा और विश्वास का बल मेरे साथ रहा। देश के बड़े-बडे कर्मठ त्यागी और नेताओं से संपर्क आया, उनके साथ काम करने का अवसर मिला। परमपूज्य डॉ० राजेन्द्रप्रसादजी तथा अन्य अनेक पूज्यजनों का स्नेह तथा आशीर्वाद पाकर यह नाचीज आज धन्यता अनुभव कर रहा है।

सेठजी के उपकारों की कथा बहुत लम्बी है। उनके साथ तो मैं लगभग २७ वर्ष रहा हूँ। इन वर्षों के एक-एक क्षण ने मुझे जो अनमोल सीखें दी हैं, उनका ब्योरा देने की शक्ति मुझमें नहीं है। स्व० जाजूजी तथा पूज्या माँ के आशीर्वाद भी मेरे साथ रहे हैं।

परिवारवालों ने जो आदर और बड़प्पन मुझे प्रदान किया है, मेरी अनेक दुर्बलताओं तथा भावुकताओं को मतभेद और संस्कार-भेद

के होते हुए भी बरदाश्त किया है, वह सचमुच मेरे लिए स्तुत्य है। धर्मपत्नी सौ० प्रमिलादेवी को तो मेरे कारण बहुत ही सहन करना पड़ा है। मैं जानता हूँ कि इसमें पुरुष का अहंकार नारी की सांस्कृतिक समर्पण-भावना पर हावी रहा है। अगर उनका साथ न मिला होता, तो मैं समाज-सेवा की बारहखड़ी तक भी नहीं पहुँच सकता था। पुत्रों और पुत्र-वधुओं ने भी मेरे कार्यों मे सदा सहयोग दिया है और उन सबकी विनयशीलता की मुझ पर काफी छाप पडी है। इसी तरह जैन-समाज का भी मुझ पर काफी अनुग्रह रहा है। मैंने चाहे जब, चाहे जिस भाषा में, जोश और आवेश में, उत्साह और जिज्ञासा में जो कुछ कहा है, वह सब स्नेहपूर्वक समाज ने सहन किया है। समाज की इस उदारता का मुझे बड़ा लाभ हुआ है। मैं समाज के सम्मुख श्रद्धावनत हूँ। समाज में अनेक सन्त, त्यागी, तपस्वी, मुनि, विद्वान्, उद्योगपति, धनवान् और उदाराशय महान् विभूतियाँ हैं। देश का भ्रमण करते हुए समाज के विविध वर्गों द्वारा मुझे जो प्रेम और आतिथ्य मिलता रहा, वह अद्‌भुत है। समाज में यह शक्ति अटूट है।

भारत जैन महामंडल मेरी प्रिय संस्था है। इसका उद्देश्य जैनों के सभी सम्प्रदायों में एकता, भाईचारा निर्माण करना है। पिछले २५ वर्षों से मैं इसके साथ जुडा हूँ। अब इसको अच्छे-अच्छे और साधनसपन्न साथी मिल गये हैं और यह सब देखकर मुझे विश्वास है कि मेरा सपना अब साकार होकर ही रहेगा। साम्प्रदायिक मनोमालिन्य, विद्वेष और भेदभाव दूर होकर सब मिल-जुलकर धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष की साधना करें, यही मेरी तमन्ना है।

ये सब बातें मैंने आपके सामने केवल अपने मन का भार हल्क करने के लिए रखी हैं। मेरा व्यक्तित्व कोई चीज नहीं है और मेरे पास कोई सन्देश भी नहीं है। मैं उन सब साथियों, संबधियों, बुजुर्गों के सम्मुख नतमस्तक होकर स्नेह की भिक्षा माँग रहा हूँ, जिन्होंने मेरे निर्माण और विकास में मदद की है। सेठजी के यहाँ काम करते

हुए जिन साथियों का संपर्क आया, उनको तो मैं कदापि नहीं भूल सकता। उनके तो मुझ पर इतने एहसान हैं कि उनकी गिनती ही नही हो सकती।

आज आप सब मित्रों ने मेरे ६६ वें जन्म-दिन पर मेरा जो अभिनन्दन किया, गौरव प्रदान किया, उसे मैं बड़ी श्रद्धा और प्यार से इसलिए स्वीकार कर रहा हूँ कि यह सम्मान और गौरव मेरा नहीं, बल्कि समाज का है।

मुझे आशीर्वाद दीजिये कि मेरा जीवन पवित्र, शुद्ध और उपयोगी बने।

मेरी शारीरिक शक्ति क्षण-क्षण पर जवाब दे रही है। चाहते हुए भी मैं अब प्रवास नहीं कर सकूँगा और आँखों से भी कम ही दीखता है। साथियों की भी सलाह है कि अब मुझे प्रवास का संयम करना चाहिए। चाहता तो हूँ कि शरीर को तो एक दिन टूटना ही है, तब क्यों न उससे पूरा काम लिया जाय; लेकिन यह भी एक मोह है। मोह-निवृत्ति बड़ी कठिन है। वह मुझ-जैसे के लिए सम्भव तो नहीं दीखती; लेकिन अब यही उपयुक्त है कि एक जगह बैठकर जो कुछ बन सके, सेवा की जाय।

मेरे व्यवहार के कारण सैकड़ों संगी-साथियों और मित्रों को तकलीफ हुई होगी, उनका नुकसान भी हुआ ही होगा। आदमी के स्वार्थ को क्षमा करने की भूमिका में पहुँचकर सब जन मुझे मैत्री और सौहार्द का दान देंगे, ऐसी अपेक्षा रखता हूँ। सबसे विनय है कि आप मेरी त्रुटियों को क्षमा करें और स्नेह दें।

वर्धा (महाराष्ट्र)
१२ सितम्बर, १९६०

मेरी भावना

[पण्डित जुगलकिशोरजी मुख्तार]

जिसने राग दोष कामादिक जीते सब जग जान लिया।
सब जीवोंको मोक्षमार्गका निस्पृह हो उपदेश दिया॥
बुद्ध वीर-जिन हरि-हर-ब्रह्मा या उसको स्वाधीन कहो।
भक्ति-भावसे प्रेरित हो यह चित्त उसीमें लीन रहो॥
विषयोंकी आशा नहिं जिनके साम्य-भाव धन रखते हैं।
निज-परके हित-साधनमें जो निश-दिन तत्पर रहते हैं॥
स्वार्थ-त्यागकी कठिन तपस्या बिना खेद जो करते है।
ऐसे ज्ञानी साधु जगतके दुख-समूहको हरते हैं॥
रहै सदा सत्संग उन्हीका ध्यान उन्हीका नित्य रहै।
उनही जैसी चर्यामे यह चित्त सदा अनुरक्त रहै॥
नहीं सताऊँ किसी जीवको झूठ कभी नहिं कहा करूँ।
परधन-वनितापर न लुभाऊँ, संतोषामृत पिया करूँ॥
अहंकारका भाव न रक्खूँ नही किसीपर क्रोध करूँ।
देख दूसरोंकी बढ़तीको कभी न ईर्षा-भाव धरूँ॥

रहे भावना ऐसी मेरी सरल-सत्य व्यवहार करूँ।
बने जहाँ तक इस जीवनमें औरोंका उपकार करूँ॥

मैत्रीभाव जगतमें मेरा सब जीवोंसे नित्य रहे।
दीन-दुखी जीवोंपर मेरे उरसे करुणा-स्रोत बहे॥

दुर्जन-क्रूर-कुमार्गरतोंपर क्षोभ नही मुझको आवे।
साम्यभाव रक्खूँ मैं उनपर, ऐसी परिणति हो जावे॥

गुणीजनोंको देख हृदयमें मेरे प्रेम उमड़ आवे।
बने जहाँतक उनकी सेवा करके यह मन सुख पावे॥

होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं द्रोह न मेरे उर आवे।
गुण-ग्रहणका भाव रहै नित दृष्टि न दोषोंपर जावे॥

कोई बुरा कहो या अच्छा लक्ष्मी आवे या जावे।
अनेक वर्षोंतक जीऊँ या मृत्यु आज ही आ जावे॥

अथवा कोई कैसा ही भय या लालच देने आवे।
तो भी न्याय-मार्गसे मेरा कभी न पद डिगने पावे॥

होकर सुखमें मग्न न फूले दुखमे कभी न घबरावे।
पर्वत नदी श्मशान भयानक अटवीसे नहिं भय खावे॥

रहे अडोल-अकंप निरंतर यह मन दृढ़तर बन जावे।
इष्टवियोग-अनिष्टयोगमे सहन-शीलता दिखलावे॥

सुखी रहैं सब जीव जगतके कोई कभी न घबरावे।
वैर-पाप अभिमान छोड़ जग नित्य नये मङ्गल गावे॥

घर घर चर्चा रहै धर्मकी दुष्कृत दुष्कर हो जावें।
ज्ञान-चरित उन्नत कर अपना मनुज-जन्म-फल सब पावें॥

ईति भीति व्यापे नहिं जगमें वृष्टि समयपर हुआ करे।
धर्मनिष्ठ होकर राजा भी न्याय प्रजाका किया करे॥

रोग-मरी-दुर्भिक्ष न फैले प्रजा शांतिसे जिया करे।
परम अहिंसा-धर्म जगतमें फैल सर्व-हित किया करे॥

फैले प्रेम परस्पर जगमे मोह दूर ही रहा करे।
अप्रिय कटुक कठोर शब्द नहीं कोई मुखसे कहा करे॥

बनकर सब 'युगवीर' हृदयसे देशोन्नति-रत रहा करे।
वस्तु-स्वरूप-विचार खुशीसे सब दुख-संकट सहा करें॥

●